उपोद्घात।

गुलामीका संक्षिप्त परिचय।

* "If slavery is not wrong, nothing is wrong!"
—*Abraham Lincon*

सत्रहवीं शताब्दिके आरम्भमें यूरोपियन लोग यूरोपके भिन्न भिन्न भागोंसे अमेरिकामें आकर बसने लगे। उस समय अमेरिका बिलकुल जंगली प्रदेश था, इस लिए जंगलोंको साफ करने तथा अन्य कामोंके लिए मजदूरोंकी बडी आवश्यकता प्रतीत होने लगी। अमेरिकामें बहुतसी जमीन पाकर, यूरोपसे आये हुए लोग, वहांके जमींदार बन गये, पर मजदूरोंके बिना उनका काम रुक गया। इस मौके पर पोर्तुगीजोंने अपना हाथ गरम करनेके लिए आफ्रिकाके नीग्रो या हबशियोंको जहाजों पर लाद लाद करके लाना और उन्हें अमेरिकामें बेचना आरंभ किया। आगे चलकर यह व्यापार धीरे धीरे अँगरेजोंके हाथ आ गया। हरसाल हजारों निरपराध मनुष्य भेड बकरियोंकी तरह बिकने लगे! नई दुनियामें या अमेरिकामें भावी विपत्तिका बीज इसी समय बोया गया।

सन् १७६५ के लगभग अँगरेजोंसे कुछ करोंके मामलेमें अमेरिकन औपनिवेशिकोंका मन-मोटाव हो गया और आगे चलकर यह झगडा इतना बढा कि दोनोंमें भयंकर युद्ध छिडनेके लक्षण दिखाई देने लगे। एडमंड बर्क और लार्ड चैथम (विलीयम पिट) ने बहुत कोशिश की कि युद्ध न हो, पर कोई नतीजा न हुआ और अन्तमें युद्ध छिड ही गया। आठ वर्ष 'तू तू, मैं मैं' में बीते और आखिर सन् १८७५ में

---

* अगर गुलामी पाप नहीं है तो पाप फिर कुछ है ही नहीं।
—अब्राहम लिंकन।

युद्धका 'मारू बाजा' भी बज उठा। एकही वर्ष बाद अर्थात् १७७६ में फिलाडेलफियाकी कांग्रेसने स्वतन्त्रताका घोषणापत्र (The Declaration of Independence) प्रकाशित कर दिया। इसके पश्चात् सात आठ वर्ष तक दोनोंमे घोर युद्ध हुआ और सन् १७८३ में वरसेलिसकी सन्धिके अनुसार अमेरिकाके तेरह राज्य स्वाधीन हो गये।

इस प्रकार अनेक क्लेशोंको सहकर, धन और रक्तको न्योछावर कर अमेरिकनोने यह साबित कर दिया कि 'प्रत्येक मनुष्य ईश्वरके न्यायसे स्वतन्त्र है।' इससे ससारमें बडा भारी आन्दोलन मच गया। परन्तु एक बातमें अमेरिकनोंने बडी भूल की। प्रत्येक मनुष्यकी स्वतन्त्रताका सिद्धान्त वे केवल गोराके लिए ही मानने लगे। नीग्रो या हबशियोको वे मनुष्य नहीं समझते थे और उन्हे स्वतन्त्रता देनेसे भी इनकार करते थे। प्राय सभी गोरे अमेरिकन नीग्रो लोगोंको अपनी सम्पत्ति समझते थे और काम भी उनसे इसी समझके अनुसार लेते थे। सुनते है कि अमेरिकाके पहले प्रेसिडेंट जार्ज वाशिंगटनके पास भी कुछ गुलाम थे।

अँगरेजोंको धीरे धीरे गुलामीमें बडा अन्याय दीखने लगा और वे इस अन्यायसे मुक्त होनेकी चेष्टा करने लगे। गुलामीका व्यापार रानी एलिजाबेथके शासनकालम आरम्भ हुआ था। तीसरे जार्जके शासनकालके आरभमे वह बहुत ही बढ गया था। कहते है कि उस समय अँगरेजी जहाजोंके द्वारा हरसाल पचास पचास हजार हब्शी गुलाम बनाकर लाये जाते थे। धीरे धीरे लोगोंके कानोंतक ये बाते पहुँचने लगीं कि ये हबशी आफ्रिकामें किस तरह पकडे जाते है, जहाजोंमे किसतरह भेड-बकरियोंकी नाईं भरे जाते है, उन पर कैसे कैसे अत्याचार किये जाते है और एटलांटिक-महासागरसे वेस्ट इंडीज और अमेरिकाम लाये जाकर वे किस तरह बेचे जाते है। इन बातोंका सुनकर लोगोंके रोंगटे खडे हो जाते थे।

गुलामी बन्द करनेके लिए विलियम विल्बर फोर्स नामक एक सज्जनने बडा उद्योग किया। इस सम्बन्धमे उन्होने सन् १७८८ में

पार्लियामेंटके सामने एक सूचना भी उपस्थित की, पर गुलामोका व्यापार करनेवालोंके विरोधसे वह सूचना स्वीकृत न हुई। किन्तु इससे विलबर फोर्स निराश न हुए, वे अपने उद्योगमें बराबर लगे रहे। सन् १८०६ में मि० फाक्सके प्रस्ताव करने पर गुलामोंका व्यापार तो बन्द हो गया, पर उस समय अँगरेजी राज्यमें आठ लाख गुलाम बाकी रह गये। अन्तमे सन् १८३३ में पार्लियामटने एक नियम बना कर सारे गुलामोंको स्वतत्र कर दिया और इस तरह मि० विलबर फोर्सके प्रयत्नोंकी सफलता हुई। इस काममें उन्होने लगातार ४५ वर्ष परिश्रम किया और अन्तमें गुलामोंकी स्वाधीनताका नियम बन जाने पर, अर्थात् अपने जीवनका महत्कार्य कर चुकने पर, चौथे ही रोज——७५ वर्षकी अवस्थामें——मि० विलबरफोर्स परलोक सिधार गये। अँगरेजी राज्यमें गुलामी न रहने देनेका प्राय सारा यश इन्हींको है।

चलिए, अब अमेरिकाके गुलामोंका इतिहास देखे। सबसे पहले टामस पेन नामक एक उदारचरित महात्माने ८ मार्च सन् १७७५ के दिन गुलामीके विरुद्ध अपना एक लेख प्रकाशित किया। इसके महीने, सवा महीने बाद, ता० १२ एप्रिल सन् १७७५ के दिन गुलामी मेटनेका उद्योग करनेवाली पहली सभा स्थापित हुई। इसके बाद टामस पेन तथा अन्य कई सज्जनोंके उद्योगसे ता० २ नवबर सन् १७७९ के रोज पेन्सिलवानिया राज्यमें–जहाँ कि छ हजार गुलाम थे–गुलामीको नाजायज बतलानेवाला कायदा पास हो गया। इसके बाद सन् १८८३ में, अमेरिकाके स्वाधीन हो जाने पर जार्ज वाशिंगटन, टामस जेफरसन और अलेकजाडर हैमिल्टन आदि सज्जनाने अमेरिकाकी जो स्वतत्र शासन-प्रणाली निश्चित की, उसकी मुख्य बातें ये थीं——सब मनुष्य समान और स्वतत्र है, सबके समान अधिकार है, कोई किसीका अधिकार नहीं छीन सकता। परतु जबतक अमेरिकामें गुलामीकी प्रथा बनी रही तबतक इन सिद्धान्तोंका पूर्णरूपसे पालन नहीं हुआ।

*उत्तरके राज्योंने तो गुलामीको अन्याय समझकर गुलामोंको स्वतन्त्र कर दिया, परन्तु दक्षिणके राज्योंने अपने गुलामोंको नहीं छोडा। इतना ही नहीं वे यह भी कहने लगे कि यदि हम लोगोंको गुलाम रखनेका अधिकार न दिया जायगा तो हम लोग यूनियन राज्यमें ही सम्मिलत न होंगे। समय बडा विकट था, देशमें एकता बनाये रखनेकी बडी आवश्यक्ता थी, इस लिए दाक्षिणी राज्यों पर गुलाम छोड देनेके लिए, बहुत जोर नहीं दिया जा सकता था। उत्तरके राज्य यह सोचकर चुप रह गये कि कुछ समय बाद दक्षिणी राज्य आप ही अपना अन्याय समझ कर गुलामोंको छोड देंगे। उत्तर प्रान्तके राज्योंमें शीत अधिक पडता था, इस लिए उन्हें खेती वगैरहके कामोंके लिए गुलामोंसे भी अधिक योग्य मजदूरोंकी आवश्यकता थी और इसी लिए गुलामोंकी स्वाधीनतासे उनकी कोई हानि न हुई। परन्तु दक्षिणी राज्योंकी दशा इससे बिलकुल विपरीत थी। वहाँ गरमी अधिक पडती थी और इस लिए बिना गुलामोंकी मददके खेतीका काम अच्छा नहीं हो सकता था। खेतों पर दोपहरकी झुलसाती हुई धूपमें एक ओवरसियरके हाथ नीचे सैकडों नीग्रो गुलाम लगातार पसीना बहाया करते थे और गोरे मालिक अपनी हवेलियोंमें आरामसे पडे रहते थे। यही कारण था कि दक्षिणी लोग गुलामीकी प्रथा बन्द करनेके विरुद्ध थे। सन् १८०५ में डोमिंगो प्रदेशके गुलामोंको बहुत ही कष्ट दिये गये। उस समय टामस पेनने प्रेसिडेंट जेफरसनके पास कई प्रार्थनापत्र और चिट्ठियाँ भेजी, पर उससे कोई विशेष लाभ नही हुआ। सन् १८०९ में टामस पेनका देहान्त हो गया। कहते हे कि उनकी उत्तरक्रियाके समय अपनी जातिकी ओरसे कृतज्ञता प्रकट करनेके लिए, दो नीग्रो उपस्थित हुए थे।

---

* अमेरिकाके नक्शे पर इलिनाइस राज्यके नीचे एक आडी रेखा खींचने पर संयुक्त राज्यके जो दो टुकडे हो जाते हैं उनमेंसे ऊपरके हिस्सेमें गुलामी नहीं थी और नीचेके हिस्सेमें अर्थात् दक्षिणमें थी। उत्तरके लोग गुलामीके विरुद्ध थे और दक्षिणके लोग पक्षमें थे।

ईश्वरके राज्यमें सत्य कभी दबा नहीं रह सकता, अन्तमे उसकी जय होती ही है। गुलामीको मेट देनेकी चेष्टा करनेवाले टामस पेनका तो देहान्त हो गया, पर उसी वर्ष गुलामीको सदाके लिए जमीनके अन्दर गाट देनेवाले महात्मा अब्राहम लिंकनका जन्म हुआ। एक बडे ही दरिद्र घरमें इनका जन्म हुआ था। जब अब्राहम कुछ बडे हुए तब उनकी योग्यता, सावधानता और पुरुषार्थ देखकर ओफट नामके एक व्यापारीने उन्हें अपना सहकारी बनाकर स्प्रिंगफील्डसे न्यूआरलीन्समें अपनी दूकान पर बुलवा लिया। न्यूआरलीन्स पहुँच कर अब्राहमने गुलामीका भयकर दृश्य देखा। वहाँ गुलामोंका एक बडा भारी बाजार लगा करता था। अब्राहमने वहीं पहले पहल अपनी आँखों देखा कि झुडके झुट गुलाम बेडियाँ पहनाकर एक कतारमे खडे किये जाते है और कोडोंकी मार मारकर उनकी पीठसे रक्तके फव्वारे उटाये जाते हे। और लोगोंको तो यह दृश्य देखनेकी आदत पड गई थी, इस लिए उन पर कुछ असर न होता था, पर अब्राहमके हृदयमें इससे बडी भारी चोट लगी। उस समय या उसके बाद भी मुँहसे एक शब्द भी उन्होंने इस विषयका नहीं निकाला, पर वे मन ही मन चिन्ता करते रहे। उस समय उनका अन्तःकरण पिघल गया और उनकी छातीमें गुलामीका काँटा चुभ गया जो गुलामीका सत्यानाश होने तक वहाँसे न निकला। गुलामी मेट देनेका उन्होने सकल्प किया और ईश्वरकी कृपासे वह सकल्प पूरा भी हुआ।

सन् १८३० के लगभग विलियम लायड गेरिसन नामक एक सुप्रसिद्ध सज्जनने सेंटलूई नगरसे ‘स्वातन्त्र्यदाता (Liberator)’ नामका एक समाचारपत्र निकलना आरभ किया। उसका उद्देश्य गुलामीके अन्यायाको सर्वसाधारण पर प्रकट करना था। परन्तु एक दिन कुछ गुंडोंने उसके आफिसमें घुसकर गेरिसन तथा कुछ नौकरों पर आक्रमण किया और उनमेंसे कुछको तो मार ही डाला।

इस प्रकारकी, बल्कि, इससे भी अधिक भयंकर घटनायें मिसेस एच बी स्टो नामकी एक विदुषीने देखीं और सुनीं। उनका हृदय बहुत दयालु और कोमल था। गुलामों पर जो अत्याचार होते थे उन्हें वे सह न सकती थीं, परन्तु वे बहुत दिनों तक यह सोच कर चुप रहीं कि ज्यों ज्यों लोगोंमें सुधार और ज्ञानका प्रचार होगा त्यों त्यों यह अन्याय कम होता जायगा, और अन्तमें बिलकुल मिट जायगा। किन्तु जब सन् १८५० में, भागे हुए गुलामोंको गिरफ्तार करके ले आनेका कानून बनानेकी चेष्टा होने लगी, धर्मकी ध्वजा उठानेवाले पादरी लोग भी लोगोंको उपदेश देने लगे कि मालिकके अत्याचारोंसे दुखी होकर भागे हुए गुलामोंको पकडवा देना धर्म है, और उत्तरी राज्योंके बडे बडे दयालु और प्रतिष्ठित लोग भी गुलामोंको पकडवा देनेके बारेमें धर्मशास्त्रोंके वचन संग्रह करने लगे, तब उस मनस्विनी महिलाको बहुत ही आश्चर्य और दुःख हुआ। अब उनसे चुप न रहा गया। उन्होंने गुलामीका असली रूप प्रकट करनेके लिए अपनी देखी और सुनी हुई बातोंके आधार पर 'टाम चाचाकी झोपडी (Uncle Tom's cabin)' नामक एक बहुत ही सुन्दर ग्रन्थ लिखा। गुलामोंको दिनभर खेतों पर किस प्रकार जी-तोड परिश्रम करना पडता था, जरा सी भूल होने पर भी ओवरसियर लोग कैसी निष्ठुरताके साथ चाबुकोंसे मार कर उनसे काम लेते थे, यदि वह ओवरसियर नीग्रो ही हुआ तो वह भी 'जातका बैरी जात'के न्यायसे अपने भाइयोंको कितना दुःख देता था, रातको भरपेट भोजन न देकर किस प्रकार एक छोटीसी झोपडीमें गुलाम लोग ठूँस दिये जाते थे, पति-पत्नी, भाई-बहन और मा-बेटेको धनके लालचसे जुदा जुदा मालिकोंको हाथ बेचकर उनकी कैसी दुर्दशा की जाती थी, युवती स्त्रियोंको नानाप्रकारके कष्ट देकर किस प्रकार उनका सतीत्व नष्ट किया जाता था, असह्य दुःखसे दुखी होकर भागे हुए गुलामोंके पीछे इनामके लालचसे किस प्रकार शिकारी कुत्ते और बदमाश लोग छोडे जाते थे, हाथ पैर जंजीरोंसे बाँधकर बाजारमें बेचनेके लिए ले जाते समय

उन्हें किस बेरहमीसे मारा जाता था, और इन सब अन्यायोंका, पादरी लोग बाइबलके आधारसे कैसे समर्थन करते थे, इत्यादि हृदयविदारक शरीरके रोंगटे खडे करनेवाले और अन्तःकरणको पिघलादेनेवाले दृश्योंका सत्य और यथार्थ वर्णन इस ग्रन्थमे किया गया है। इस ग्रन्थने हजारों अमेरिकन लोगोंके पाषाण-हृदयोंमें दयाका सोता बहा दिया और गुलामीका विरोध चारों ओर फैला दिया। गुलामीके अन्यायों और उसके असली रूपको जो लोग देखना चाहे वे इस ग्रन्थको अवश्य पढ़ें।

इस आन्दोलनका यह परिणाम हुआ कि देशमे दो प्रबल दल तैयार हो गये। एक दलका कहना था कि गुलामोंको छोड देना चाहिए और दूसरा दल कहता था कि उन्हें स्वाधीन कर देना ठीक नहीं, वे वर्तमान दशामे ही सुखी हैं। ये दोनों दल आपसमे बहुत दिनों तक झगटते रहे। सन् १८५६ के बाद अमेरिकाकी दशा और भी नाजुक हो चली। उस समय देश पर आनेवाली विपद्को दूर करनेमें समर्थ एक महापुरुष प्रेसिडेंट चुना गया। ये वे ही अब्राहम लिंकन थे जिनका उल्लेख पहले किया जा चुका है।

अमेरिकन लोगोंको अपने पूर्वसंचित पापोंको धो डालनेकी बडी आवश्यक्ता थी। सन् १८६० मे गुलामोंको स्वतन्त्रता देनेके लिए तथा अन्य कारणोंसे दक्षिण और उत्तरके राज्योंमें युद्ध (Civil war) छिड गया जो चार पाँच वर्षों तक जारी रहा। महात्मा लिंकनने इस बातकी प्राणपणसे चेष्टा की कि बिना युद्ध किये ही यह झगडा निपट जाय और युद्धसे अमेरिकाके दो टुकडे न हों, परन्तु बिना युद्धके झगटा निपटनेकी कोई सूरत ही न दिखाई दी। तब सन् १८६१ में प्रेसिडेंट लिंकनने युद्धके लिए ५ लाख स्वयंसैनिकोंकी सेना चाही।* दक्षिणके राज्योंने बलवेका झडा खडा कर दिया। सन् १८६२ के अप्रल मासमे

---

* अमेरिकामें स्थायी सेना (Standing army) नहीं रखी जाती। देश पर जब कोई विपद् आती है तब प्रेसिडेंट सर्व साधारणसे स्वयंसैनिक माँगते हैं और उस समय जो लडनेमे समर्थ होते हैं वे देशके झडेके नीचे आ खडे होते हैं।

गुलामी बन्द करनेका कायदा बना दिया गया। आरभमें बलवाइयोंने एक दो लडाईयाँ जीतीं और इससे उत्साहित होकर वे राजधानी वाशिंगटन पर चढ जानेका विचार करने लगे। तब प्रेसिडेंट लिंकनने और भी सैन्य संग्रह करके विद्रोहियोंको दबानेका प्रयत्न किया। युलिसीस एस ग्रेंट नामक एक चतुर सेनापतिके मिलने पर युद्धका रंग पलटा और बलवाइयोंका बल घटने लगा। निदान सितंबर सन् १८६२ में प्रेसिडेंट लिंकनने घोषित कर दिया कि, " आगामी वर्षप्रतिपदासे (१ जनवरी १८६३ से) गुलामी सदाके लिए मिट जायगी। " उसी वर्ष दिसंबरकी ३ री तारीखको उन्होंने यह भी घोषित किया कि " विपक्षके जो लोग हथियार रख देंगे और कानूनके पाबन्द होकर देशकी रक्षा करनेका वचन देंगे उनके अपराध क्षमा किये जायेंगे। " युद्ध हो रहा था, तो भी १८६३ की १ ली जनवरीको दास्यविमोचनका घोषणापत्र प्रकाशित किया गया। इस समय बलवाइयोंका जोर घट गया था, तो भी लडाई जारी थी। इसी समय प्रेसिडेंट लिंकनका शासनकाल पूरा हो गया। परन्तु सन् १८६५ के मार्च महीनेमें वे फिर प्रेसिडेंट चुन लिये गये। ९ वीं अप्रेलको बलवाइयोंके सेनापति जनरल लीने प्रेसिडंट लिंकनकी शरण ली और बलवेका अन्त हो गया। युद्धमें दोनो दलके लाखों आदमी काम आये, और करोडों रुपयोंकी आहुति हो गई, तब कहीं गुलामीका अन्त हुआ! इसतरह कोई तीस चालीस लाख मनुष्योंको स्वतन्त्रता मिली। सब लोग महात्मा लिंकनका यश गाने लगे। स्वाधीन हुए निग्रो लोग तो उन्हे साक्षात् ईश्वर ही मानने लगे!

इस तरह देशका संकट निवारण करके और अनेक महत्त्वपूर्ण कार्योंका सम्पादन करके प्रेसिडेंट लिंकन जिस समय दोनों दलोंमें मेल करानेका प्रयत्न कर रहे थे उसी समय १४ अप्रेलको फोर्ड थिएटरमें एक हत्यारेने गोली मारकर उनका अन्त कर दिया। इस प्रकार इस काममें महात्मा लिंकनका भी बलिदान हो गया!

आत्मोद्धार ।

पहला परिच्छेद ।

दासानुदास ।

मैं एक नीग्रो जातिका गुलाम था । वर्जीनियाके फैक्लिन परगनेमें रहनेवाले एक गुलाम-खान्दानमें मै पैदा हुआ । कब और किस खास जगह पर, सो मुझे याद नही, पर इतना याद आता है कि हेल्सफोर्डकी सडक पर डाकघरके पास ही कहीं मेरा जन्मस्थान है । मैं यह जिक्र १८५८ या ५९ का कर रहा हूँ । जन्मका महीना या तारीख स्मरण नहीं । हाँ, बचपनकी कुछ बातें याद आती है—वह खेत जहाँ मै काम करता था और वे झोपड़ियाँ मेरी आँखोंके सामने आजाती है ।

मै बडी ही जिल्लत (दुर्दशा) में पला हूँ । मेरे मालिक तो खैर, और मालिकोंसे नेक और दयालु थे, पर आखिर गुलामी ही तो थी । १४+१६ वर्गफुटकी एक कोठरीमें मै पैदा हुआ । वहीं अपनी मा, भाई और बहिनके साथ रहा करता था । बडी कठिनाईसे दिन कटते थे । कुछ दिनों बाद अमेरिकनोंमें गृह-विवाद उठा और उसमे गुलामजातिको स्वाधीनता मिली । तबसे हम लोग स्वाधीन हुए ।

मुझे अपने पुरखाओंका कुछ भी हाल मालूम नहीं, क्योंकि वह समय ही ऐसा था जब गुलामोंको अपने इतिहासकी जरूरत ही न जान

पडती थी। हॉ, लोगोंकी वार्ता सुन कर मैने यह अटकल लगाया था कि हम लोग आफ्रिकाके रहनेवाले है। जो लोग वहासे हमें ले आये उन्हाने राहमें जहाजों पर हम लोगोंको अनेक कष्ट दिये। मेरे बाप कौन थे सो भी मुझे मालूम नहीं। उनका नाम तक मुझे नहीं बतलाया गया। यह तो मै अटकलसे जान गया हूँ कि वे एक श्वेताङ्ग थे और उन्होंने मेरी मा पर मुग्ध हो उसे खरीद लिया था। तबसे वे मेरे और मेरी माके कर्ता धर्ता विधाता हुए। वे पासहीकी बसतीमें रहते थे। खैर, वे कोई हों, उन्होंने मेरे लिए कुछ भी नहीं किया था। पर मै उन्हें दोष नहीं लगाता, क्योंकि ऐसे पिता उस गुलामीके युगम एक दो नहीं, सैकडों हजारों थे।

हम लोगोंकी झोपडीमें खाली हमी लोग नहीं रहते थे। उसमें बसतीके सब गुलामोंकी रसोई भी बनती थी। रसोई बनानेका काम मेरी माके सुपुर्द था। घर बडा पुराना और गन्दा था। दीवारोंमें कई सूराख हो गये थे जिनमेंसे रोशनी आती थी और शीतकालमें ठढी ठढी हवा भी। झोपडीके दरवाजे बहुत छोटे थे और उनमें कई दरारें पड गई थीं। झोपडीके एक कोनेमें एक बडा भारी सूराख था जिसमेंसे बिल्लियॉ आया जाया करती थीं। सिविल-वार (युद्ध) शुरू होनेसे पहले वर्जीनियाकी हरेक हवेली और झोपडीमें ऐसा ही एक न एक 'बिटाल–बिल' रहा करता था। हम लोगोंके यहॉ तो ऐसे छ सात सूराख थे। खैर, आगे चलिए। फर्श मिट्टीका था। जाडेके दिनोंमें उसके बीचवाले गडहेमें शकरकदका गोदाम रहा करता था। इस गोदामको मैं कभी न भूलूँगा। धरने उठानेमें वहॉ मुझे बहुधा दो चार शकरकद मिल जाया करते थे और उन्हें भून कर मै बडे चावसे खाया करता था। रसोईका पूरा सरजाम न था। खुले चूल्होंपर रसोई पकानी पडती थी और जैसे जाडेके दिनोंमें सर्दीके मारे बदन ठिठुर जाता था वैसे ही गरमीके दिनोंमें आगके तापसे जी छटपटा जाता था।

मेरे बचपनके जीवनमें और दूसरे गुलामोंके जीवनमें कुछ भेद न था। मेरी मा मुझको या मेरे भाईबहिनको दिनमें तो देखने सुननेका समय पाती ही न थी, रातको सब काम कर चुकनेके बाद और सबेरे सरकारी काममें हाथ लगानेसे पहले वह हम लोगोंके लिए समय निकालती थी। उस समयकी मुझे याद आती है। जब, मेरी मा दोपहर रात बीतने पर हम लोगोंको जगा कर मुर्गीका मास खिला दिया करती थी। वह कहाँसे लाती थी सो मुझे कुछ मालूम नहीं, हो सकता है कि मालिककी पशुशालासे ले आती हो। आप लोग इस कामको चोरी कहेंगे, मै भी, अगर अब कोई ऐसा काम करे तो चोरी ही कहूँगा, पर जिस वक्तका हाल मै कह रहा हूँ उस वक्तको और उन कारणोंको देखते हुए इसे कोई चोरी साबित नहीं कर सकता। गुलामीमें तो ऐसा ही हुआ करता है। स्वाधीनताकी जबतक घोषणा नहीं हुई थी तबतक, मुझे याद नहीं आता कि हम लोग एक दिन भी कभी बिछौने पर लेटे हों। हम तीनों भाई बहिन मैले कुचैले चिथडों पर रात काटते थे।

आज कल कुछ लोग मेरे बचपनके खेल कूदकी बातें सुनना चाहते है। पर खेलकूद किस चिडियाका नाम है यह भी मुझे बचपनमें मालूम नहीं हुआ। जबसे होशमें हुआ तबसे अबतक काम ही काम करते बीता है। पर मे समझता हूँ कि अगर बचपनर्म में खेलने पाता तो इस वक्त बहुत कुछ काम कर सकता। अस्तु, मेरा समय विशेष करके आँगनमें झाडू देना, पानी भरना और उसे खेत पर पहुँचाना, सप्ताहमें एक बार चक्कीमें पिसानेके लिए अनाज ले जाना,–आदि कामोंमें ही बीतता था। इस अनाज ढोनेके कामसे तो मेरी नस नस ढीली हो जाती थी। चक्की वहाँसे तीन मील पर थी और अनाजके थैले घोडे पर लाद कर ले जाना पडता था। यदि राहमें किसी एक तर–

फका वजन ज्यादा होकर थैले खिसक पडते तो मेरी नानी मर जाती और मैं भी उनके साथ धम्मसे नीचे गिर पडता। मै अकेला तो इस लायक था नही कि उन्हें उठा कर फिर घोडेकी पीठ पर लाद देता। लाचार नीचे बैठ कर रोने लगता। निदान जब कोई मुसाफिर आ-निकलता तब उसकी मददसे उन्हें उठा कर राह तै करता था। ऐसी ऐसी मुसीबतोंसे कभी कभी घर आनेमें बहुत अबेर हो जाती थी। राहमें बडे घने जङ्गल पडते थे। उन जगलोंमें, मैने सुना था कि नौकरी छोड कर भागे हुए फौजी गोरे छिपे रहते है और अकेला पाने पर नीग्रो लडकोंके कान काट लेते है! और अबेर करके घर आनेसे लात जूता और गालियाँ मिलती थीं।

गुलामीमें मैने स्कूली तालीम (शिक्षा) कुछ भी नहीं पाई। हाँ, मै अपने मालिककी लडकीका पोथी-पत्रा लेकर स्कूलके फाटक तक कई बार गया हूँ। वहाँ लडके लडकियोंको पढाईमें मगन देखकर मेरे मनमें तरह तरहकी उमगे उठती थीं और दिल चाहता था कि मैं भी इसी तरह लिखना पढना सीख लूँ। मुझे इसीमें स्वर्गसुख मालूम होता था!

मुझे बहुत दिनोंतक यह बात मालूम भी नहीं थी कि हम लोग खरीदे हुए गुलाम है और न मुझे यही मालूम था कि हम लोगोंकी स्वाधीनताके लिए देशभरमें आन्दोलन हो रहा है। एक दिन सबेरे जागकर देखता हूँ कि मेरी मा हम लोगोंके सामने, घुटने टेककर भगवान्से प्रार्थना कर रही है,—" हे दीनबन्धो! सेनापति लिंकन और उसके सिपाहियोंकी जय हो। हे भगवन्! हे पतितपावन! हम लोगोंको इस गुलामीसे छुडाओ। हे दीनानाथ! हम दीनोंका उद्धार करो।' मेरे जातिबन्धुओंको काला अक्षर भैंस बराबर था, तो भी उन्हें अपनी हालत बखूबी मालूम थी और उस दासत्वपंकसे उठानेके लिए जो

आन्दोलन हो रहे थे उनका भी रत्ती रत्ती हाल उन्हें मालूम था। जबसे गैरिसन, लैनजॉय तथा अन्यान्य सज्जनोंने गुलामोंको स्वतंत्र करनेका बीडा उठाया तबसे दक्षिणके गुलाम उनके आन्दोलनकी बातें कानमें तेल डाल कर सुना करते थे। जब सिविल वार शुरू हुआ तब मैं बहुत छोटा था। पर अपनी मासे तथा और लोगोंसे उसकी बातें सुना करता था। गुलामोंकी बसतीमें ऐसा एक भी गुलाम न था जिसे आजादी या स्वतन्त्रताकी लडाईका हाल पेश्तरसे न मालूम हुआ हो। गुलामोंके लिए कोई भी बात हो जाती तो उसकी खबर बिजलीकी तेजीसे कानों कानों सब लोगोंमें फैल जाती थी।

हम लोग रेल-स्टेशनसे दूर थे। कोई समाचारपत्र भी हम लोगोंके पास न आता था। आसपास कोई बडा शहर भी न था। ऐसी हालतमें, जब लिंकन सयुक्त राज्यकी प्रेसिडेंटीके लिए उम्मेद्वार हुए, हमारी बसतीके गुलामोंको इस विषयकी बडी पेचीली बातोंका भी पूरा पूरा ज्ञान था। उत्तर और दक्षिणमें युद्ध छिड जाने पर हम लोग बखूबी जान गये थे कि युद्धका प्रधान कारण हम लोगोंकी गुलामी ही है। मेरे जातिभाइयोंको विश्वास हो गया था कि अगर उत्तरवाले जीत गये तो हम लोगोंकी बेडी टूट जायँगी। उत्तरकी हरेक जीत और दक्षिणकी हरेक हारकी ओर हम लोगोंकी ऑखें लगी हुई थीं। युद्धके सब समाचार हम लोगोंको मालूम हो जाते थे। कभी कभी तो गोरे मालिकों-से पहले ही नीग्रो गुलाम उन्हें जान लेते थे। इसका कारण यह था कि नीग्रो चपरासी ही डाकघरसे गोरे मालिकोंकी चिट्ठियाँ ले आया करता था। डाकघर बसतीसे करीब ३ मील फासिले पर था और सप्ताहमें एक या दो बार चिट्ठियॉ आया करती थीं। डाक आनेपर बहुतसे गोरे डाकघरमें जमा होते थे और वहां ताजे समाचारोंकी चर्चा किया करते थे। नीग्रो चपरासी उनकी बातोंसे खबर छान लेता और

राहमें जो गुलाम भाई उसे मिलते उन्हें, बतला देता था। इस तरह युद्धकी खबरें मालिकसे पहले गुलामोंको मालूम हो जाती थीं।

मेरे बचपनमें या जवानीमें ऐसा एक भी दिन मुझे याद नहीं आता जब परिवारके सब लोग एकत्र भोजन करने बैठे हों, या ईश्वरकी प्रार्थना करते हों, या हम सभीने सन्तोषके साथ भोजन ही किया हो। वर्जीनियाके गाँवोंमें और अन्यत्र भी जैसे गूँगे जानवर चरते फिरते हैं, और जहाँ जो मिल जाता है, खा लेते हैं, वैसा ही हम लोगोंके भी खाने पीनेका ढग था। कभी एकाध रोटीका टुकडा मिल गया तो कभी कच्चे गोश्तका, कभी एकाध बार दूध नसीब हुआ तो दूसरी बार कुछ आलूही खाके रह गये। मेज या काँटा चम्मच तो कुछ था नहीं—कुछ लोग मेजके बजाय अपने घुटनोंपर टीनकी थाली रख कर खाया करते थे।

मै जब बडा हुआ तब मालिकोंके भोजनके समय मुझे पखा झलकर मक्खियोंको हटाना पडता था। गोरे लोग प्राय: युद्ध और गुलामोंकी स्वाधीनता पर ही चर्चा किया करते थे। और मैं इन बातोंको बडे चावसे सुना करता था। एक बार मैंने अपने मालिकोंको 'जिञ्जर केक' नामक पक्वान्न खाते देखा। देखते ही मेरे मुँहसे लार टपक पडी और मैंने अपने मनमें ठान लिया कि स्वाधीन होने पर ऐसा माल भर-पेट जरूर खाऊँगा।

जब लडाई बढ चली तब गोरोंको खाना मिलना मुश्किल हो गया। उन्हे चाय, काफी, चीनी और तरह तरहकी चीजें खानेकी आदत पडी हुई थी और ये आती थीं दूर देशसे। लडाई छिडने पर इनका आना रुक गया। गोरे बडी विपदमें पडे। गुलामोंको इतनी तकलीफ नहीं हुई, उन्हें सिर्फ एक रोटीका टुकडा और सूअरका गोश्त मिलनेसे काम था जो वहीं गाँवमें मिल जाता था। दूसरेका मुँह ताकने-

की जरूरत न थी। पर गोरे मालिकोंकी दुर्दशा देखी नहीं जाती थी। उन्हें चायके लिए चीनी न मिलनेसे मैले गुडसे ही काम निकालना पडता था। बादको यह गुड भी मिलना दुश्वार हो गया। तब वे बिना मीठा डाले चाय पीने लगे। अन्तको जब असल चाय भी नसीब न हुई तब वे लोग फल्ली या भुना हुआ चिउडा या ऐसे ही किसी अन्नका चूर्ण लेकर काम चलाने लगे।

मैंने जिन्दगीमें पहले पहल जो जूता पहना वह काठका था। उसके ऊपरी भागमें कुछ चमडा जरूर लगा था। पर वह बहुत ही खुरदरा था। उसके पहननेसे पाँवोंमें बडी तकलीफ होती थी, लेकिन यह काठका जूता भी गनीमत समझिए। गुलामीमें जो कुरता पहिनना पडता था उसकी याद आनेसे अब भी रोंगटे खडे हो जाते हैं। मैं समझता हूँ, दाँत पकड़ कर उखाड़ डालनेसे, या नागफनीके काँटे बदनमें चुभनेसे जो तकलीफ होती है उससे कम तकलीफ इस कुरतेके पहननेमें न थी। वर्जीनियाके गुलामोंको खूब मोटे खुरदरे टाटका कुरता पहननेको मिलता था। नये कोरे कुरतेमें टाटके उठे हुए इतने काँटे रहते थे कि उनसे बडी ही वेदना होती थी। मेरा बदन मुलायम था—उस कुरतेको पहनना मेरे लिए बडी भारी मुसीबत थी। पर किया क्या जाता? पहनना हुआ तो उसी टाटके कुरतेको पहनो, नहीं तो, नगे रहो। मैं कहता हूँ कि अगर पहनना-न-पहनना भी मेरी मर्जी पर छोड दिया जाता तो कोई बात नहीं थी, मैं नगा रहना ही पसन्द करता। पर यह भी मेरे हाथमें न था। नगे रहनेकी तो मनाई थी। मेरा बडा भाई जॉन मुझ पर रहम खा जाता और नया कुरता खुद कुछ दिन स्वय पहनकर मुलायम होने पर मुझे पहननेको देता था। मेरे बचपनकी जिन्दगी इन्हीं कपडोंमें बीती है।

इन बातोंसे आप लोग सोचेंगे कि गुलाम अपने गोरे मालिकोंसे बडा

बैर रखते होंगे । इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारे मालिक हम लोगोंको गुलाम बनाये रखना चाहते थे और इसी लिए वे उत्तरवालोंसे लड रहे थे । परन्तु हम लोगोंमें और जहाँ जहाँ गुलामोंसे अच्छा सुलूक किया गया है, यह वैरभाव बिलकुल न था । हम लोग जानते थे कि अगर इन लोगोंकी जीत रही तो हम लोगोंको गुलामी ही करनी पडेगी, तो भी हम लोगोंने कभी उनसे वैर नहीं किया । हम लोग उनके सुखसे सुखी और दुःखसे दुखी रहते थे । हम लोगोंके हृदयमें उनके लिए बडी सहानुभूति थी । लडाईमें मेरा जवान मालिक मार्स बिली मारा गया और उसके घरके दो आदमी घायल हुए । जब यह खबर हम लोगोंने सुनी तब, उसके घरवालोंको जो दुःख हुआ उसका कहना ही क्या है, पर हम लोगोंको भी कुछ कम दुःख नहीं हुआ । हम लोगोंमेंसे कुछने उसकी सेवा शुश्रूषा की थी और कुछ उसके लँगोटिया यार थे । इस लिए उसकी मृत्युसे हम लोगोंको जो दुःख हुआ वह केवल दिखौआ न था । जब घायल जवान घर लाये गये तब हम लोग जी जानसे उनकी सेवा टहल करने लगे । कितनोंने रात रात जागकर उनकी सेवा की । यह स्नेह और यह दिली दर्द हम लोगोंकी उदार और सरल प्रकृतिका ही फल था । जब हमारे मालिक रणभूमिमें जाते तब गुलाम ही उनके गृह और परिवारकी रक्षा करते थे । मालिकके घर रातको सो रहनेके लिए जिस किसीका चुनाव होता वह समझता कि यह मेरा अहो भाग्य है । यदि कोई दुष्ट, युवती अथवा वृद्धा स्त्रियोंको कष्ट देने आ जाता तो बिना गुलामोंको मारे उसकी राह साफ न होती थी । क्या गुलामीमें और क्या आजादीमें, मेरे भाइयोंने कभी विश्वासघात नहीं किया । कमसे कम ऐसे उदाहरण बहुत ही बिरले मिलेंगे । इसके विपरीत घायल, असहाय, अनाथ मालिकों और उनके बालबच्चोंकी हरतरहसे मदद करनेवाले गुलामोंके दृष्टान्त

अनेक है। उनकी इज्जत और हुर्मत, जान और मालकी, जब काम पडा है, इन्होंने रक्षा की है। जिनके पास धन नहीं था, उन्हें धन दिया है। गोरे लडकोंको तालीम दिलानेके लिए गॉठके पैसे खुले हाथ खर्च किये हैं। एक साहूकारका लडका शराबखोरीसे बिलकुल तबाह हो गया था। उसकी तबाही इन्होंने हर तरहसे दूर की। इतना ही नहीं, गुलामीके दिनोंमें इन्होंने अपने मालिकोंसे जो वादे किये थे, उन्हें भी पूरा करके छोडा। एक उदाहरण मुझे याद आता है। वह गुलाम मुझे ओविओ शहरमें मिला था। उसने गुलामीके दिनोंमें अपने मालिकसे वादा किया था कि हर साल अमुक रकम अदा करके मै स्वाधीन हो जाऊँगा। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि स्वाधीनताकी घोषणा होने पर यह गुलाम भी स्वाधीन हो चुका, अब उसे गुलामीका वादा पूरा करनेकी जरूरत ही क्या थी? पर उसने वादेके अनुसार मालिकको कौडी कौडी सूदतक चुका दिया! मैने उससे कहा कि "जब तुम स्वाधीन हो चुके तब फिर ऐसा करनेकी क्या जरूरत थी?" इस पर उसने जवाब दिया कि "कानूनके अनुसार तो कोई जरूरत नहीं थी, पर मैने अपने मालिकसे वादा किया था और उसे पूरा करना मेरा धर्म था। अबतक मैने ऐसा कोई वादा नही किया जिसे पूरा न किया हो।" उसका मन गवाही देता था कि वह अपने वचनको जबतक पूरा न करेगा तबतक, वह स्वाधीनताका आनन्द न ले सकेगा।

आप कहेंगे, तो क्या नीग्रो लोग स्वाधीनता नहीं चाहते थे? क्या गुलामीकी जजीरसे उनका इतना नेह हो गया था? नहीं, ऐसा नामर्द आदमी मैंने एक भी न देखा।

जो बदनसीब आदमी या जाति गुलामीकी बेडियोंमें जकड गई है उस पर, मुझे रहम आता है। पर अपनी जातिकी गुलामीके विषयमें मैंने दक्षिणी गोरोंसे वैर रखना बहुत दिनोंसे छोड दिया है। गुलामी

जो चल पडी वह, किसी खास समाजने नहीं चलाई। बहुत अरसे तक तो सरकार ही इसका समर्थन करती रही थी। रेपब्लिककी सामाजिक और आर्थिक दशासे यह दासता जकड गई थी, इस लिए इसको एकाएक अलग कर देनेका काम देशके लिए कुछ सहज न था। और कुसस्कार तथा जातिद्वेषको अलग रख कर यदि हम असली हालत पर विचार करते है तो यह स्वीकार करना पडता है कि यद्यपि गुलामी सुनीति और दयालुताकी हत्या करनेवाली है, तो भी इस देशमें रहनेवाले करोडों नीग्रो ससारके किसी भी देशके उतने लोगोंसे अधिक बुद्धिमान्, नीतिमान्, होनहार और धार्म्मिक हैं। यह बात सही है कि हर साल सैकडों नीग्रो, जो या जिनके पूर्वज इस देशमें गुलामी करते थे, अब अपनी जन्मभूमिके लोगोंको अज्ञानकी खाईसे ऊपर उठानेके लिए उपदेशक बन कर आफ्रिका लौट रहे है, पर मेरे कहनेका मतलब यह नहीं है कि गुलामीकी प्रथा अच्छी है। कभी नहीं, मै उसे जरा भी पसन्द नहीं करता। हम लोग खूब अच्छी तरहसे जानते है कि यहॉ गुलामीका जो रिवाज चला वह कुछ हमारी भलाईके लिए नहीं था। असल बात यह थी कि हम लोगोंको गुलामीमें सडाकर इस देशवाले मालामाल होना चाहते थे। पर ईश्वर कीचडसे भी कैसे कमल पैदा करता है यह दिखलानेके लिए मैंने ये बातें कहीं। जब मुझसे लोग पूछते है, 'तुम इस महागरीबी, कुसस्कार और अज्ञानराशिमें रहकर अपनी जातिके भविष्यकी क्योकर आशा रखते हो?' तब मै गुलामीकी जजीरमें बधी हुई नीग्रो जाति और उसके उद्धारकी याद दिलाता हूँ और कहता हूं कि ईश्वर हमारे साथ है।

जबसे मै कुछ समझने बूझने लगा हूँ तबसे, मै जानता हूँ कि गुलामीमें मेरे भाइयोंके साथ जैसी निठुरता की गई वैसे उसके खट्टे फल गोरोंको भी चखने पडे है। गुलामोंका काम था, मिहनत करना और

गोरोंका, मौज उडाना। इसका फल यह हुआ कि गोरोंसे आत्मविश्वास और कर्तव जाता रहा। मेरे मालिकके कई लडके और लटकियाँ थीं। पर उनमेंसे एकने भी कोई ऐसा काम या धन्धा नहीं सीखा जिससे कुछ आमदनी हो। लडकियोंको इतना भी नहीं आता था कि वे रसोई बना लें, या कुछ लिख पढ सकें,अथवा घरका ही सब प्रबन्ध करे। यह सब काम गुलाम करते थे। बसतीके बाग बगीचोंके सुधारमें गुलामोंका कोई हिस्सा नहीं था, और वे अज्ञानी थे इसलिए यह समझनेका उनके लिए और कोई साधन ही न था कि अपने काम व्यवस्थित पद्धतिसे और अच्छीतरह क्योंकर किये जा सकते है। इसका फल यह हुआ कि बाग-बगीचोंकी देख भाल ठीक ठीक न होती थी। चहारदीवारें बिलकुल बेमरम्मत थी, दरवाजोंके कब्जे ढीले पड गये थे, खिडकियोंके कपाट फट गये थे। चारों ओर जमीन गीली हो रही थी और घरके आँगनमें भी घास और बरसाती पौधे उग आये थे। बसतीमें अन्नकी कमी नहीं थी—गुलाम—मालिक दोनोंको भरपूर अन्न मिलता था, पर इन्तजाम कुछ भी नही। इससे फिजूल खर्च तो बहुत होता था पर भोजनमें न शोभा थी और न आनन्द। स्वाधीनता मिलने पर गुलाम और मालिक दोनों एक ही लियाकतके हुए। हाँ, हैसियत गोरोंकी बडी थी, क्योंकि उन्हें किताबी इल्मके अलावे जमीनपर मालकियत भी हासिल थी। पर और सब बातोंमें दोनों ही बराबर हुए। गोरे मालिक और उनके लडके अपने बल पर कोई व्यवसाय कर नही सकते थे और शारीरिक परिश्रम करना तो अपनी शानके खिलाफ समझते थे। गुलाम, अलबत्ता कुछ हुनर रखते थे और मिहनतसे उनकी शानमें भी कसर न आती थी। हाँ, कुछ लोग मिहनतसे जरूर भागते थे।

अन्तको युद्ध समाप्त होने पर स्वाधीनताका सुदिन उदय हुआ। हम सब गुलामोंके लिए यह महापर्वके समान अत्यन्त पवित्र दिन

था। इस दिनकी, हम लोग बाट जोह रहे थे। कई महीनासे सारे देशमें इसका भविष्य गूंज रहा था। युद्धसे घर लौट जानेवाले सिपाहियाको हम लोग बार बार देखा करते थे। हम लोगोंकी बसतीसे, पलटनके सिपाही, कोई छुट्टी लेकर और कोई किसी हीलेसे, अक्सर गुजरते थे। कानों कानों युद्धकी छोटी मोटी सब खबरें चारों ओर फैल गई थीं। उत्तरवालोंकी चढाईके भयसे हमारे गोरे मालिकोंने चाँदी और अन्य कीमती वस्तुयें जमीनमें गाड रक्खी थीं और वहाँ गुलामोंको पहरे पर रखा था। गडेहुए धनको यदि हाथ लगानेका साहस कोई करता तो उसके प्राणों पर ही बीतती। उत्तरपक्षके सिपाहियोंको हम लोग दानापानी, कपडे लत्ते और जो कुछ जरूरत होती थी दे टालते थे, पर उन चीजोंको कभी हाथ भी न लगाने देते थे कि जो हमारे मालिकोंने हमे सौप दी थीं। ज्यो ज्यों वह स्वाधीनताका दिन निकट आने लगा त्यों त्यों हम लोगोंके यहाँ गाने बजानेकी धूम मचने लगी। प्राय हम लोग स्वाधीनताके भजन गाया करते थे। इन भजनोंको हम लोगोने इससे पहले भी कई बार गाया था, पर उस वक्त हमारे बडे बूढे बतलाते थे कि यह स्वाधीनता यहाँकी नहीं, ईश्वरके घरकी है। अब उन्होने स्वाँग उठा कर फेंक दिया और उसका असल मतलब जाहिर किया। अब लोग खुल्लम खुल्ला कहने लगे कि अपनी ऐहिक स्वाधीनता देखनेके लिए ही हम लोग अब तक जीते है। उस स्मरणीय दिनके एक रोज पहले हम लोगोंको बतलाया गया कि कल सबेरे मालिकके घर पर कोई अनहोनी बात होनेवाली है। रातको किसीको भी नींद नहीं आई। सबके चेहरों पर आश्चर्य और आनन्द झलकता था। दूसरे दिन बडे सबेरे सबको आज्ञा हुई कि वे मालिकके घर पर जमा हों। मै अपनी मा, भाई, बहन और अन्य दासोंके साथ वहाँ गया। देखा, मालिकके घरके लोग छत पर एकत्र हुए है। वहाँ-

से वे हम लोगोंको देखते थे और हम लोग भी उन्हें देख सकते थे। चेहरों पर बैर नहीं, उदासी छाई हुई थी। वे हम लोगोंका साथ छूटनेसे दुखी थे—आमदनीकी उन्हें इतनी फिक्र नहीं थी। उस प्रातःकालका स्मरण होनेसे वह स्वाधीनताका व्याख्यान याद आता है। एक विदेशी पुरुषने—शायद यह संयुक्त राज्यका कोई अधिकारी था—एक छोटीसी वक्तृता दी और एक लंबा कागज—शायद यही स्वाधीनताका घोषणापत्र था—पढ़ सुनाया। फिर हम लोगोंको बतलाया गया कि तुम लोग स्वाधीन हुए, अब चाहे जहाँ जा सकते हो और जो चाहो कर सकते हो। मेरी माता मेरे पास खड़ी थी। उसने झुककर अपने बच्चोंको चूम लिया और उसके गालोंपरसे प्रेमाश्रुओंकी धारा बहने लगी। उसने सब बातें समझा दीं और कहा कि इसी दिनके लिए मैं प्रतिदिन ईश्वरसे प्रार्थना किया करती थी और मुझे यह आशा नहीं थी कि यह सुदिन देखनेके लिए मैं जीती रहूँगी।

स्वाधीनताका घोषणापत्र सुन कर गुलामोंके आनन्दका पारावार न रहा। पर उनके मनमें गोरे मालिकोंसे कोई बैरभाव न था। उलटे उन्हें उन पर रहम आया। स्वाधीनताका समाचार सुन कर उन्हे जो अपार आनन्द हुआ वह बहुत देर तक टिकने न पाया। वे लोग अपनी झोपड़ियोंमें गये तब उनके चेहरों पर चिन्ता झलकने लगी। स्वाधीनताकी जिम्मेदारीने उन्हें आ घेरा। वे इस सोचमें पड़े कि, स्वाधीन तो हुए, पर अब करना क्या चाहिए? अपने और अपने परिवारका गुजारा कैसे हो? दस पद्रह वर्षका कोई बालक घोर जंगलमें आकर सामने जिस विपद्को देखता है वही विपद् हम लोगों पर आ पड़ी। घर-बार, रोजगार-हाल, बच्चोंकी परवरिश, उनकी तालीम, नागरिकोंके कर्त्तव्य, गिरजाघरोंकी स्थापना आदि बातें एकके बाद एक सामने आने लगीं। झोपड़ियोंमें लड़कोंका खेलना कूदना बन्द हो गया

और उदासी छा गई। कुछ लोगोंको तो यह स्वाधीनताका बोझ अन्दाजसे भी भारी मालूम हुआ। गुलामोंमें बहुतसे ७०।८० वर्षके बूढे थे। उनके जीवनका उत्तम अंश तो बीत ही चुका था। रहनेको कोई घर मिल जाना तो कठिन नहीं था, पर उन्हें कमा खानेमें बडा सन्देह था। इसलिए स्वाधीनताने उनके सामने एक बडा पेचीला मामला पेश कर दिया। अपने पुराने मालिक और उनके परिवारसे उनका बडा स्नेह हो गया था। इस स्नेहको तोडना ही उन्हें बहुत अखरने लगा। कुछ लोगोंने गुलामी करते करते पचास पचास साठ साठ वर्ष बिताये थे, ऐसे लोग अपने मालिकसे कब नाता तोड सकते थे? उन्हें तो अपने मालिकके घरका रास्ता ही मालूम था। बूढे गुलाम धीरे धीरे एक एक करके अपने मालिकोंके यहाँ जा जाकर उन्हींसे इस बातकी सलाह लेने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

दूसरा परिच्छेद ।

शैशव ।

स्वतंत्रता मिलनेपर बसतीके सब गुलामोंकी यह राय हुई कि अब दो बातें करनी चाहिए;—

१ हम लोगोंको अब अपना अपना नाम बदल डालना चाहिए ।

२ हम लोग स्वाधीन हुए सही, पर एक बार इसकी जाँच कर लेनी चाहिए और इस लिए यह जरूरी है कि हम कुछ दिनों तक अपनी पुरानी जगह छोड दें ।

इन दो बातों पर हम सबकी राय एक हुई और करीब करीब सारे दाक्षिणके गुलामोंकी यही राय थी ।

गुलामीके दिनोंमें हम लोग अपने नामोंके साथ अपने मालिकका नाम भी लिया करते थे या यों कहिए कि मालिकका नाम हम लोगोंका उपनाम या ‘ अल्ल ’ हुआ करता था । अब न जाने क्यों, सब लोगोंने यह सोचा कि यह अल्ल उडा देना चाहिए । बहुतसे लोगोंने ऐसा किया भी और एक नया उपनाम धारण कर लिया । गुलामीके दिनोंमें हम लोग एकहरे नामसे ही पुकारे जाते थे, जैसे जान, सुसान इत्यादि । कभी कभी गोरे मालिकके नामके साथ भी पुकारे जाते थे, पर वह भी इस तरह कि किसी स्वाधिन मनुष्यको कभी अच्छा न लगे—जान हचर या हचरका जान । पर अगर जान या सुसान किसी गोरेका नाम हुआ तो सिर्फ जान या सुसान कहना बेइज्जती समझी जाती थी । इस लिए हम लोगोंने अपने नामोंको और सुडौल बना लिया, जैसे जानका हुआ जान एस् लिंकन अथवा सुसानका जान एस् सुसान ।

उपनामके पहले जो एस् आया है उसका, कुछ मतलब नहीं है, काले लोगोंने उसे यो ही अल्लके तौर पर धारण कर लिया है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, स्वाधीनताकी जाँचके लिए बहुतसे लोगोंने पुरानी बसती कुछ दिनोंके लिए छोड दी। कुछ कालके पश्चात् बूढे गुलामोंमेंसे बहुतेरे फिर अपने पुराने स्थानों पर आ गये और अपने पुराने मालिकोंसे लिखापढी करके फिर उसी बसतीमें रहने लगे। मेरी माका पति याने मेरे भाई जानका बाप और मेरा सौतेला बाप किसी दूसरे मालिकका गुलाम था। वह हम लोगोंकी बसतीमें कभी एकाध बार आ जाता था। मुझे जहाँतक स्मरण है, वह बडे दिनोंकी छुट्टियोंमें आया करता था। जब सिविल वार शुरू हुआ तब, वह सयुक्त सैन्यके पीछे पीछे कुछ काल चलकर वेस्ट वर्जीनिया की नई रियासतमें भाग आया। स्वाधीनताकी घोषणा होने पर उसने मेरी माको वेस्ट वर्जीनियाके कनावा वेलीमे आ जानेके लिए कहला भेजा। उस समय वर्जीनियासे वेस्ट वर्जीनियामें जाना जरा टेढी खीर थी–राहमें कितने ही पहाड थे और रास्ता बडा बीहड था। जो कुछ कपडे लत्ते और असबाब हम लोगोंके पास था वह सब तो एक गाडीमें भर दिया गया, पर लडकोंको पैदल ही सैकडों मील सफर करनी पडी! अबतक, मेरा ख्याल है कि हम लोगोंकी बसतीसे कोई भी इतनी दूर नही गया था। इस लिए यह लंबी सफर हमलोगोंके जीवनमें एक बडी भारी घटना थी। चलते वक्त हम लोगोंको बडा दुःख हुआ, क्योंकि इतने दिन जिन लोगोंका साथ था उन्हें छोडना पडा। हम लोग बसती छोड कर गये सही, पर अपने गोरे मालिकको कभी न भूले। जबतक वे जीते थे तबतक बराबर उनके घरवालोंसे चिट्ठीपत्री किया करते थे और उसके बाद भी जान पहचान बनी रही। हम लोग कई सप्ताह सफर करते रहे और मार्गमें ही ईंधन जला

कर रसोई बना लेते थे । एक रोजकी याद आती है कि सफर करते हुए हम लोगोंने लकडीका एक पुराना झोपडा देखा, वह निर्जन था । मेरी माने उसीके अन्दर रसोईके लिए चूल्हा तैयार किया । यह विचार था कि खा पी करके रातको वहीं आराम करेंगे, और फिर सबेरे चल पडेंगे । मा चूल्हा बालने बैठ गई, हम लोग जरा दूर थे । इतनेहीमें ऊपर चिमनीसे कोई डेढ गजका एक लम्बा साँप नीचे आ गिरा और फूत्कार करता हुआ सरपट भागा । यह देख कर हम लोग घबराये और फौरन वहाँसे चल पडे । इस तरह बचते बचाते हम लोग माल्टन नामके गाँवमें आ पहुँचे । यह गाँव चार्लस्टनसे, जो इस रियासतकी राजधानी है, पाँच मील पर है ।

उस समय वेस्ट वर्जीनियाके उस हिस्सेमें नमककी खानें खोदी जाती थीं और यह माल्टन गाँव नमककी भट्टियोंसे चौतर्फा घिरा हुआ था । मेरे सौतेले बापको इन्हीं भट्टियोंमेंसे एक भट्टी पर काम मिल गया था और उसने हम लोगोंके रहनेके लिए एक कोठरी ले रक्खी थी। हम लोगोंका यह नया घर पुराने घरसे किसी कदर अच्छा नहीं था । एक बातमें तो वह और भी बुरा था । पुराना घर अच्छा तो नहीं था, पर इतना जरूर था कि वहाँ स्वच्छ वायु मिलती थी । और यहाँ यह हाल था कि चारो तरफ आदमियोंसे ठसाठस भरी हुई झोपडियाँ थीं और बीचमें हम लोग । सफाईका भी कोई बन्दोबस्त न था—इतना कूडा-करकट और मैला-कैला जमा होता था कि नाक दबाते दबाते नाकमें दम आ जाता । हम लोगोंके पडोसमें कुछ काले लोग भी थे और कंगाल, अपढ गोरे भी थे । शराबखोरी, जुआचोरी, बातबतगड, लडाई झगडे और नीच ब्योहार अक्सर देखनेमें आते थे । आसपास जितने लोग रहते थे, बल्कि यह कहना चाहिए कि उस बस्तीके प्राय: सभी लोग उन नमककी खानोंसे कोई न कोई ताल्लुक रखते ही

थे। मै अभी बच्चोंमें ही गिना जाता था, तो भी मेरे बापने मुझे और मेरे भाईको नमककी भट्टीमें काम करने भेज दिया। बडे सबेरे चार बजे मुझे काम पर डॅट जाना पडता था।

नमककी खानमें काम करते समय मै पुस्तकी विद्याकी एक बा सीखा। नमक भरनेवाले जब पीपोंमें नमक भर चुकते तब उन पर ए खास नबर डाल दिया जाता था। मेरे सौतेले बापके हिस्से अठारह का अक आया था। रोज जब काम खतम हो जाता तब, ए अफसर आकर सबके पीपों पर उनके नबर (जिसका जो नबर हुआ, डाल दिया करता था। अपने बापके पीपों पर अठारहका अक बराब देखते देखते मै उसे पहचानने लगा। और कोई अक्षर या अक मुझे नही आता था, पर अठारह (18) लिखना मै सीख गया था।

जबसे मैंने होश सभाले है तबसे मेरी यह इच्छा रही कि किसी तरह लिखना पढना सीख जाऊं। बचपनमें ही मेने यह निश्चय किया थ कि और चाहे कुछ भी मुझसे न बन पडे, पर इतना तो कमसे क जरूर करूँगा कि छोटी मोटी किताब और समाचारपत्र पढनेके योग हो जाऊँगा। जब वेस्ट वर्जीनियामें आकर हम लोग रहने लगे औ किसी कदर गुजारेका भी प्रबन्ध हो गया तब, मैने मासे कह कि “मुझे कहींसे एक पुस्तक ला दे।” वह वेब्स्टरकी ‘ब्यू ब्लैक–स्पेलिगबुक’ नामकी एक किताब ले आई। इसमें ‘Aa, Ba, Ca, Da,’ (आ, बा, का, डा,) इत्यादि अर्थरहि (नेमतलब) शब्द थे। यह पुस्तक वह कहाँसे और कैसे ले आई सो मुझे मालूम नहीं। बिलकुल पहली किताब यही मेरे हाथ लगी और मै झटपट इसे पढ जानेकी कोशिश करने लगा। मैने किसीके मुँ सुना था कि सबसे पहले वर्णमाला सीखनी पडती है। इस लिए अपनी बुद्धिके अनुसार मै वर्णमाला सीखनेका प्रयत्न करने लगा। को

सिसानेवाला तो था नहीं, क्योंकि मेरे आसपास जितने मेरे भाई लोग थे वे 'लिख लोढा पढ पत्थर' ही थे और गोरे, जो लिखे पढे थे उनके पास फटकने तकका मुझे साहस न होता था। सैर, किसी तरहसे हो मै एक दो सप्ताहोंमें वर्णमाला सीख गया। मेरी माने मुझे इस काममे बडी मदद दी, क्यों कि वह चाहती थी कि मै लिख पढ जाऊँ, यद्यपि वह स्वय कुछ लिख पढ नही सकती थी। वह बडी चतुर थी और इसलिए हर मौके पर उसने हम लोगोंकी हरतरहसे रक्षा की। सचमुच, अगर मैंने इस जिन्दगीमें कोई अच्छा काम किया है तो, वह अपनी माकी ही बदौलत।

जब म शिक्षा प्राप्त करनेका प्रयत्न कर रहा था, उस समय एक काले याने मेरी जातके ही एक लडकेसे मेरी जान पहचान हो गई। इसने आविओमें शिक्षा पाई थी और अब यह माल्टनम आ गया था। जब मेरे और भाइयोंको यह खबर लगी कि यह लिखा पढा भी है तब उन्होंने एक समाचारपत्र मँगवाया और शामको सब लोग उसे घेर कर उससे वह पत्र पढवाने लगे। स्त्री-पुरुष सब उस लडकेसे प्रसन्न थे। मुझे तो यह पडी थी कि कब मै इसके बराबर लिख पढ जाऊँ! मै बिलकुल अधीर हो उठा था। मेरा यह ख्याल हो गया कि इस लडकेके बराबर कोई सुखी नही और वैसा ही सुखी बननेकी मेरी कोशिश जारी थी।

अब हमारे जातभाई भी शिक्षाका महत्त्व समझने लगे और इस बातका प्रयत्न करने लगे कि काले लडकोंके लिए भी एक पाठशाला बन जाय। इस पर बडा आन्दोलन हुआ, क्योंकि वर्जीनियामे नीग्रो लडकोंकी पाठशाला एक बिलकुल नई बात थी। बडा विकट प्रश्न यह था कि शिक्षक कहाँसे लाया जाय। वहीं एक लडका था जिसे लोग लिखा पढा समझते थे, पर वह लडका ही था, इस लिए उसे शिक्षक बनाने-

की बात जहाँकी तहाँ ही रह गई । इसी बीच ओविओसे एक नवयुवक आ पहुँचा । यह पहले सिपहगीरी करता था पर और ि हियोंकी तरह अनपढा न था । लोगोंको जब मालूम हुआ कि यह अच्छा लिखा पढा आदमी है तब उन्होंने उसे अपनी पहली पाठशालाका पहला शिक्षक नियत कर दिया । अब तक नीग्रो बालकोंके लिए मुफ्त पाठशालायें खुली नहीं थीं और इस लिए इस शिक्षकके साथ यह तै हुआ था कि सब लोग मिलकर चन्देसे इसे महीने महीने कुछ रुपये दें और भोजनके लिए बारी बारीसे एक एक दिन बुलावें । इससे शिक्षकको भा बडा सुभीता था, क्यो कि जिस रोज जिसके यहाँ शिक्षक जीमने जाते वह उस रोज अपने यहाँ बडी तेयारी करता था । मुझे स्मरण है कि जब हम लोगोंकी बारी आती तब मे शिक्षकके आनेकी बाट जोहता हुआ बैठा रहता था और जब तक वे न आते मुझे कल नहीं पडती थी ।

किसी जातिकी उन्नतिके विषयमे विचार करते हुए यह एक बडे ही महत्त्वका प्रश्न मालूम होता है कि सब लोग—सारी जाति—प नेके लिए पाठशालाम भरती हो । शिक्षाके लिए मेरे जातभाइयोंने जो उत्साह प्रकट किया वह निस्सन्देह अपूर्व था । मै तो यह कहता हूँ कि जिन लोगोंने स्वय अपनी आँखों नहीं देखा वे उसका अन्दाज भी न कर सकेंगे । सौ पचास लडके नहीं, सारी जाति पाठशालामें भरती होकर पढने लगी । क्या बूढे और क्या बालक, सभी बडे उत्साहसे पढते थे । शिक्षक भी मिलने लगे और दिनकी कौन कहे, रातको भी, पाठशालायें ठसाठस भर जाने लगीं । हम लोगोंमें जो वृद्ध थे उनमे भी यह आकाक्षा पैदा हुई कि इस लोक की यात्रा समाप्त करनेसे पहले लिख पढकर बाइबल (इजील) पढन योग्य हो जावें ! साठ साठ सत्तर सत्तर वर्षकी वृद्धी स्त्रियाँ औ

पुरुष नाइट-स्कूलोंमें आकर पढ़ने लगे। स्वाधीनताकी घोषणा होनेके पश्चात् रविवारकी पाठशालायें खुलने लगीं, और इन पाठशालाओंमें जो खास किताब पढ़ाई जाती थी वह 'स्पेलिंग बुक' याने हिज्जाकी किताब थी। रातकी और रविवारकी पाठशालाओंमें इतनी रेलपेल हुआ करती थी कि बहुतोंको निराश होकर लौट जाना पड़ता था।

कनावा वेलीमें पाठशाला स्थापित हुई, पर मेरी आशा पर पानी फिर गया। मैं कुछ महीनों तक नमककी भट्टीमें काम करता था। इससे मेरे बापकी आमदनी बढ़ती थी, इसलिए कमाना छोड़ पढ़ने जानेसे उसने मुझे रोक दिया। मुझे ऐसा दुःख हुआ कि कह नहीं सकता। जब पाठशालासे लौटते हुए लड़कोंको देखता तो मेरी छाती फटने लगती थी। पर मैं करता ही क्या? स्पेलिंगबुक पर खूब कसके मिहनत करने लगा।

मेरी निराशासे माको भी बड़ा दुःख हुआ। उससे जहाँ तक बन पड़ता वह मुझे दिलासा देती और मेरी शिक्षाके लिए किसी न किसी फिक्रमें रहा करती थी। कुछ दिनोंके बाद ऐसा प्रबन्ध हो गया कि मैं दिन भर मजदूरी कर चुकने पर रातको शिक्षकसे पाठ (सबक) लेने लगा। रातके पाठ इतने अच्छे होते कि दिनमें पढ़नेवाले लड़कोंसे मैं जियादा सीख गया। इस अनुभवसे रातकी पाठशाला कितना काम करती है, यह मैं खूब जान गया, और इस कारण आगे चलकर टस्केजी और हेम्पटनके नाइट-स्कूलोंमें मैं बराबर पढ़ा करता था। पर इस समय लड़कईसे हो या और किसी कारणसे हो, मुझे दिनके स्कूलमें ही जाकर पढ़नेकी लगी थी, और इसकी कोशिश भी मैंने ऐसी की कि एक भी मौका हाथसे न जाने दिया। अन्तमें मेरी इच्छा पूर्ण हुई, और कुछ महीनोंके लिए मुझे दिनकी पाठशालामें पढ़नेकी इजाजत मिल गई।

बडे सवेरे उठकर भट्ठी पर नौ बजेतक काम करता, और दो पहर पाठशालासे छुट्टी मिलने पर काम पर आ जाता और फिर दो घ भट्ठीका काम करता था।

भट्ठीसे पाठशाला कुछ फासले पर थी। पाठशाला नौ बजे खुल जात थी और मैं नो बजेतक भट्ठी पर ही रहता था। इससे पाठशालामें पहुँचनेसे पहले ही वहाँ पढाई शुरू हो जाती थी। यह असुविधा दूर करने के लिए मैंने एक ऐसा काम किया जिसके लिए लोग मुझे दोष लगावेंगे, पर जो कुछ हुआ उसे बिना कहे मुझसे रहा नहीं जाता। सच बातका बडा बल है। बात छिपानेसे शायद ही कभी किसीको लाभ होता होगा। भट्ठीके आफिसमें एक घडी थी। इसी घडीके हिसाबसे सैकडों नहीं, इससे भी जियादा लोग अपना अपना काम शुरू और बन्द करते थे। मैंने यह सोचा कि ८॥ वाली सुई अगर मैं ९ पर हटा दूँ तो मैं समय पर स्कूलमें जा सकूँगा। बस मैं रोज सवेरे ऐसा ह करने लगा। धीरे धीरे मैनेजरको इस बातका सन्देह हुआ कि कों लडका घडीमें हाथ लगाता है। जब ऐसा सन्देह हुआ तब उन्हों घडी वहाँसे हटा कर एक सन्दूकमे रख दी और उसमें ताला लग दिया। खैर, मैंने यह काम सिर्फ इसलिए किया था कि म वक्त प स्कूलमें पहुँच सकूँ—इसलिए नहीं कि और लोगोंको इससे कुछ असुविधा हो।

पहले पहल जब मैं पाठशालामें जाने लगा तब दो अटचन म सामने आईं। एक तो यह कि सब लडके सादी या सटी टोपी पहन कर पाठशालामें आते थे और मेरे पास तो टोपी ही नहीं थी। जबतक मैं स्कूलमें नहीं गया था तबतक, मुझे टोपीकी जरूरत ही नजर न आई। पर अब और लडकोंकी पोशाक देख कर मैं भी बेचैन हो गया। अपनी मासे कहा, पर जैसी टोपियाँ उस वक्त नीग्रो लोग पहनते थे वैसी टोपी खरीदनेके लिए उसके पास दाम नहीं थे। पर उस

वक्त उसने दिलासा देकर मुझे सन्तुष्ट कर दिया। कुछ दिनों बाद उसने एक खुरदरे कपडेके दो टुकडोंको जोड कर एक टोपी सी दी। इस तरह मुझे सबसे पहली टोपी मिली और उस पर मुझे बडा फक्र (अभिमान) हुआ!

इस टोपीके मामलेमें मेरी माने मुझे जो एक बात सिखला दी उसे मैं कभी न भूला, और जहाँ तक मुझसे बन पडा है उसे दूसरोंको भी सिखलानेकी चेष्टा की है। जब जब इस घटनाका स्मरण आता है तब तब मुझे इस बातका बडा अभिमान होता है कि जो चीज हमारे पास नहीं है उसे साफ साफ 'नहीं' कह देने और बतला देनेकी दृढता मेरी मामे थी। बहुतसे लोगोंके पास उस वक्तके फैशनकी टोपियाँ खरीदनेके लिए दाम नही थे, पर कर्ज करके उन्होंने उन टोपियोंको खरीदा था। पर मेरी माने जिस चीजको खरीदनेके लिए उसके पास दाम नही थे उसके लिए कभी कर्ज नहीं किया। इसके बाद मेने कई बार सादी और खटी टोपियाँ खरीदी, परन्तु जो अभिमान मुझे माताकी दी हुई उस दो टुकडाकी टोपी पर है वह और किसी टोपी पर नही। मेरे जिन जिन साथियोंने फैशनवाली टोपी पहनी, और घरकी बनी हुई टोपी पहनने पर मेरी हँसी उडाई उनमेंसे बहुतेरोंको आगे चलकर जेलकी हवा खानी पडी, और मुझे अब बडे दुःखसे कहना पडता है कि उनमेंसे बहुतेरोंको किसी भी तरहकी टोपी खरीदनेकी शक्ति नहीं रह गई है।

दूसरी अडचन नामके बारेमें थी। बचपनमे लोग मुझे 'बुकर' कहकर पुकारते थे। पाठशालामें मै जबतक भरती नहीं हुआ था तबतक, मुझे और एक नाम धारण करनेकी आवश्यकता भी न जान पडी थी। किन्तु जब पाठशालामें हाजिरी हुई और मैंने सुना कि किसीके दो नाम है और किसी किसीके तीन तीन तब मे सोचने लगा कि मेरा तो एक ही नाम है और जब मास्तर साहब मुझसे

मेरे दो नाम पूछेंगे तब मै क्या जवाब दूंगा। आखिर जब नाम लिखानेका वक्त आया तब मुझे एक तदबीर सूझी और मेरा विश्वास हो गया कि यह मौका मै अवश्य मार लूँगा। जब मास्टर साहबने पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है, तो मैने शान्तचित्तसे उत्तर दिया—' बुकर वाशिगटन '। मानो इसी नामसे लोग मुझे हमेशा पुकारते हों। और आगे मेरा यही नाम प्रसिद्ध हुआ। कुछ दिनों बाद मुझे यह भी मालूम हुआ कि मेरी माने मेरा नाम ' बुकर टेलीफेरो ' रक्खा था। यह दूसरा नाम अबतक क्यों गुम रहा सो मुझे मालूम नहीं। पर जैसे ही मुझे खबर लगी कि मेरा दूसरा नाम टेलीफेरो है, वैसे ही, मै उसे चलाने लगा और इस तरह मेरा पूरा नाम ' बुकर टेलीफेरो वाशिगटन ' हुआ। मै समझता हूँ कि ऐसे इने गिने ही लोग होंगे जिन्हें मेरी तरह अपना नाम आप रखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ हो।

कई बार मेरे मनमें यह विचार उठा है कि अगर मै किसी बडे खान्दानमें पैदा होता तो बडी बहार आती, पर अगर सचमुच ही कहीं मै किसी अमीरका लडका होता तो अपने पुरुषार्थको भूलकर मै शाही ठाठके दलदलमें ही धँस जाता। कुछ वर्ष पहले मैने यह निश्चय किया कि मै किसी बडे घरानेका अभिमान नही कर सका तो क्या हुआ?—मै स्वय कुछ ऐसे सत्कार्य करूँगा जिन पर मेरे लडके फक्र करें और, और भी बडे काम करनेके लिए उत्साहित हों।

नीग्रो लोगोंके विषयमें किसीको बिना समझे बूझे एकाएक अपना राय खिलाफ न कर लेना चाहिए। नीग्रो लोगोंको जिन मुसीबतों, नाउम्मेदियों और तरह तरहकी मोहमायाओंसे सामना करना पडता है उन्हें वे ही जानते हैं—और लोगोंको उसका अन्दाज भी नहीं। जब कोई गोरा किसी कामको उठा लेना है तब, यह मान लिया जाता है कि वह जरूर कामयाब होगा। पर नीग्रोकी दशा इसके बिलकुल विप-

रीत है। अगर कोई नीग्रो-बच्चा किसी काममें कामयाब होता है तो लोग दाँतों उँगली दबाते है और कहते है कि इसने यह काम कैसे कर लिया? तात्पर्य यह है कि नीग्रो जाति ही बदनाम है।

किसी व्यक्ति या जातिकी उन्नतिमे कुलीनता भी बडी सहायक होती है। नीग्रो लोगोंसे और कुलीनतासे अब तक कोई सरोकार न था। नीग्रो लोगोंको अपना इतिहास मालूम नहीं—उनके बापदादा कौन थे, उन्होंने क्या पुरुषार्थ किया इत्यादि बाते, उन्होने अपने कानोंसे कभी सुनी तक नही। ऐसी हालतमें यह कैसे सभव है कि गोरोंकी तरह उन्हें भी अपने कुलका अभिमान हो। बहुतसे लोग इस बातको भूल जाते है और नीग्रो युवकोंकी चालचलन पर दृष्टि रखकर उनकी और गोरोंकी उन्नतिका मुकाबला किया करते है। अब मेरा ही उदाहरण लीजिए। मेरी नानी या दादी कौन थी, मै नही जानता। मेरे चचा, मामा, फुआ, फूफी, चचेरे भाई और चचेरी बहनें थीं, पर वे सब इस वक्त कहाँ हैं और क्या करते है इसकी, मुझे खबर तक नही है। नीग्रो लोगोंका तो यह हाल है। गोरोंकी हालत इससे कही अच्छी है। जीवनमें अगर नाकामयाबी हुई तो उन्हें इस बातका डर रहता है कि ऐसा होनेसे कुलकीर्तिमे कलकका टीका लग जायगा, और अकेली यही एक बात उन्हे बुरे कर्मोंके करनेसे बारबार बचाती है। अपने कुलका इतिहास कैसे कैसे सत्कार्योंसे भरा हुआ है और ऐसे अच्छे कुलमें हमने जन्म पाया है, ये विचार प्रयत्नशील पुरुषोंके मार्गकी बाधायें दूर करनेमें बडी मदद देते है।

दिनका बहुत थोडा समय मै स्कूलमें दे सकता था और मेरी हाजिरी भी वक्त पर न होने पाती थी। कुछ ही दिनों बाद मेरा दिनका स्कूल जाना बन्द हो गया, और सारा समय फिर काम करनेमें बीतने लगा। मै फिर नाइट (रात) स्कूलमें भरती हुआ। सच पूछिए तो दिनमें काम कर

चुकने पर रातकी पढाईसे ही मुझे जो कुछ शिक्षा प्राप्त हुई सो हुई मैने बहुत कोशिश की कि कोई अच्छे मास्टर मिलें, पर अच्छे मिलना बडा ही मुश्किल था। कभी कभी तो यहां तक नौबत है कि रातको पढानेवाले कोई मास्टर मिले भी, तो उनके इल्मकी मेरे ही जितनी देख, मुझे ऐसी नाउम्मेदी हुआ करती थी कि कह नही सकता। कई बार मुझे रातका सबक सुनानेके लिए दौड जाना पडता था। पर मुझे अध्यवसायमे दृढ विश्वास था बीसो बार मुझे ऐसी निराशा और उदासी हुई कि जिसकी नहीं, पर मैने कभी अपने इस निश्चयको टलने न दिया कि चाहे भी हो, मै शिक्षा अवश्य प्राप्त करूगा।

जब हम लोग वेस्ट वर्जीनियामें आये तब बडी ही गरीबीमे बिताते थे। पर इस हालतमें भी मेरी माने एक अनाथ अपने यहाँ रख लिया। ठीक वही मसल हुई कि "आप मिया माँगते द्वार खडे दरवेश'" आगे चल कर हम लोगोने इसका नाम जेम्स बी वाशिंगटन रक्खा। जबसे हमारे यहाँ वह आया तबसे परिवारका ही एक आदमी होकर रहने लगा।

कुछ दिन नमककी भट्टी पर काम करनेके बाद मुझे एक कोयलेकी खानमें काम करना पडा। उस खानसे कलके लिए कोयला जुटाया जाता था। खानमे काम करनेसे मे बहुत डरता था। इस कामसे तन्दुरुस्ती बिलकुल खराब हो जाती है। दिन भर काम करते करते इतना मैल बदन पर जम जाता था कि वह सहजमें साफ न हो सकता था। इसके सिवाय खानसे कोयले खोदे जानेका स्थान एक मील दूर था—सुरगके अंधेरेमें एक मील चलने पर तो कोयलेसे भेंट होती थी। वहाँ कोयलेकी कई गुफाये थी जिनको पहचानना बडा कठिन था। इसलिए अँधेरेमें बहुत भटकना पडता था। राह अक्सर

भूल जाती थी और तब मेरी छाती धडधडाने लगती और कही चिराग भी गुल हो गया और मेरे पास दियासलाई भी न हुई तो मेरे देवता ही कूच कर जाते। जब तक कोई आदमी चिराग लेकर वहाँ न आता तबतक उस अँधेरी भूलभुलैयासे मेरा छुटकारा न होने पाता था। मौत तो हर दम सिर पर सवार रहती थी। कभी कभी कोयलेकी चट्टान धँस जानेसे बहुतोंकी जान जाती थी। कभी सुरगकी बारूद समयके पहले ही भभक उठनेसे बहुतेरे लोग बेमौत मर जाते थे।

उन दिनों अच्छे अच्छे होनहार बालक खानो पर काम करनेके लिए भेज दिये जाते थे, पर उनकी शिक्षाका कोई प्रबन्ध न किया जाता था और प्रायः इसका ऐसा बुरा परिणाम होता था कि जो लडके बचपनसे ही खानोंका काम करते थे वे खानोंका ही काम करने लायक रह जाते थे—न उनके शरीरकी कभी उन्नति होती और न मनकी ही। वे खानके ही आदी हो जाते और उनकी सारी जिन्दगी इसी काममे बीतती थी।

उस समय और उसके बाद युवा होने पर मै प्राय गोरे लडकोंकी मनोवृत्तियो और महत्त्वाकाक्षाओंको मन-ही-मन समझनेकी कोशिश किया करता था और देखता था कि उनकी उन्नतिके लिए कोई कार्यक्षेत्र रुका नही है और वे जो चाहे विचार सकते है जो चाहें कर सकते है। वे काग्रेसके सभासद हो सकते थे, किसी प्रदेशके गवर्नर हो सकते थे, बिशप (मुख्य पादरी) हो सकते थे और सयुक्तराज्यके कर्ता धर्ता भी हो सकते थे। और यह सब उनके जन्म और वर्णकी बदौलत था। इनसे मै ईर्ष्या किया करता था और सोचता था कि अगर मै भी इनकी तरह एक गोरा लडका होता तो बहुत अच्छा होता। उस हालतमें मैं क्या क्या करता, बिलकुल नीचेसे आरभ कर किस तरह सबसे ऊँचे स्थान पर पहुँच जाता इन बातोंको मै अक्सर सोचा करता था।

पर जैसे जैसे मेरी उम्र बढती गई वैसे वैसे गोरे लडकोंकी तरह होनेकी इच्छा कम होने लगी। मैं अब जानने लगा कि किसी मनुष्यके यशका मूल्य इस बातसे नहीं आंका जा सक्ता कि उसने अपने जीवनमें कौनसा पद प्राप्त कर लिया है, किन्तु यश प्राप्त करनेके मार्गमें उसने कितनी विघ्नबाधाओंसे लडझगडकर उन्हें पददलित कर डाला है, इसीसे उसके यशका मूल्य ठहराया जा सक्ता है। अर्थात् जिसने अपनी जिन्दगीमें जितनी ही अधिक विघ्नबाधाओंसे डट कर सामना किया हो उसे उतना ही अधिक पुरुषार्थी समझना चाहिए। इस दृष्टिसे विचार करने पर मेरा यह निश्चय होता है कि एक नीग्रो होना ही संसार-यात्रामें विजय पानेके लिए सबसे अच्छा स्थान है। नीग्रो जाति किसीको प्यारी नहीं, इस लिए जीवनके आरंभसे ही विघ्नबाधाओंको हटानेका काम नीग्रो बालक पर आ पडता है, अर्थात् उसकी विजययात्रा जन्मसे ही आरंभ होती है। नीग्रो युवाओंको विख्यात होनेके लिए गोरे युवकोंसे बहुत अधिक प्रयत्न करने पडते हैं, इसमें सन्देह नहीं, पर इस कठिन और असाधारण विकट मार्गसे जानेवाले नीग्रो युवाओंमें जो आत्मबल, आत्मविश्वास और योग्यता आ जाती है वह सुगमतासे अपने गौर वर्णकी बदौलत ही बडप्पन पानेवालोंमें कदापि नहीं आ सक्ती, और इस लिए नीग्रो होना भी एक बडा भारी लाभ है।

चाहे जिस दृष्टिसे देखा जाय, दूसरी किसी भी उच्च जातिका मनुष्य होनेकी अपेक्षा, जिस जातिमें मैं पैदा हुआ हूँ उसी जातिका मैं एक मनुष्य रहूँ, अब मुझे यही इष्ट जान पडता है। मुझे यह सुन कर बडा दुःख हुआ है कि एक विशिष्ट जातिके कुछ लोगोंने राष्ट्रीय अधिकारका दावा किया है। इन लोगों पर मुझे बडी दया आती है, क्योंकि उच्च जाति या वर्ण होनेसे क्या होता है? जब तक योग्यता न हो तब तक, उन्नति हो ही नहीं सक्ती, और मेरा यह विश्वास है कि किसीका वर्ण चाहे कैसा ही

हो, अत्यन्त हीन जातिमें भी क्यों न पैदा हुआ हो वह अपनी योग्यतासे अवश्य आगे निकल जायगा। योग्यता और श्रेष्ठता–फिर वह किसी रंगके चमड़ेमें हो–अन्तमें पहचानी जाती है और उसीका बोलबाला होता है। यह सनातन नियम है और सारे संसारमें इसका अमल होता है। अत्याचारसे इस समय जो जातियाँ पीड़ित हैं, अन्तमें उनकी विजय होगी। इस सनातन सिद्धान्त पर भरोसा करके उन्हें धीरताके साथ अपना बल और योग्यता बढ़ानेकी चेष्टा करनी चाहिए। मैं यह इस लिए नहीं कहता कि आप लोग मेरी ओर देखें, बल्कि मैं चाहता हूँ कि मुझे जिस जातिमें पैदा होने पर फक्र (गर्व) है उस जातिकी ओर आप जरा ध्यान दें।

तीसरा परिच्छेद ।

शिक्षाके लिए प्रयत्न ।

एक रोज मै कोयलेकी खानमें काम कर रहा था और थोडी दूर पर दो मजदूर कुछ बातचीत कर रहे थे । उससे मुझे पता लगा कि काले नीग्रो लोगोंके लिए एक बडा भारी स्कूल खुलनेवाला है । एक छोटीसी पाठशाला तो हमारे गॉवमें भी थी, पर एक बडा स्कूल या कालेज खुलनेका समाचार यह पहला ही सुना गया ।

कोयलेकी खानमें ये बातें हो रही थीं, अर्थात् उन मजदूरोंको यह मालूम नहीं था कि उनकी बातें एक तीसरा आदमी भी सुन रहा है ! अँधेरेमें किसको दिखाई दे ? मै और भी पास आ गया और उनकी बातें सुनने लगा । मैने एकको दूसरेसे यह कहते हुए सुना कि स्कूल स्थापित हो चुका है और यही नहीं, बल्कि चतुर विद्यार्थी कुछ काम करके अपने उदरनिर्वाहका भी प्रबन्ध कर सकते है और इसके साथ उन्हे कोई धन्धा भी सिखाया जानेवाला है ।

वे उस स्कूलकी ज्यों ज्यों कैफियत बयान करने लगे त्यों त्यों, मेरी यह धारणा होती चली कि अगर ससारमें कोई महत्त्वका स्थान है तो वह स्कूल ही है ! उस स्कूलका नाम भी मैने सुना और मन हीं-मन कहा कि हैम्पटन नार्मल एण्ड एग्रिकल्चरल इन्स्टिट्यूट (यह स्कूलका नाम था) में जो आनन्द है वह स्वर्गके सुखको भी मात करता है ! मै अभी यह नहीं जानता था कि यह स्कूल कहाँ है, यहाँसे कितनी दूर है, और वहाँ कैसे कोई जा सकता है, तो भी मैने तुरत वहाँ जाना ठान लिया । एक हैम्पटनकी धुन ही मुझ पर सवार हो गई। रात दिन मै वहींके स्वप्न देखने लगा ।

कुछ महीने और मै खानमें काम करता रहा। इसी बीच मैने सुना कि नमककी भट्ठी और कोयलेकी खानके मालिक जनरल लेविस रफनरके यहाँ (घर पर) एक जगह खाली हुई है। जनरल रफनरकी पत्नी उत्तर अमेरिकाके वरमॉन्ट स्थानकी रहनेवाली थीं और उनका नाम वायोला रफनर था। उनके बारेमें यह बात मशहूर थी कि वे अपने मातहतके लडकोंसे बडा कडा ब्योहार रखती है। यह कडाई देखकर दो तीन महीनेसे जियादा कोई नौकर वहाँ टिकता न था। सब लोग इसी एक सबबसे उनकी नौकरी छोड दिया करते थे। मैने सोचा कि कोयलेकी खानमें काम करनेसे तो वहाँ काम करना कुछ आसान जरूर होगा, इसलिए उनके यहाँ नौकरी करना मैने ठान लिया, और मेरी माने भी उस जगहके लिए मेरी तरफसे कोशिश की। मै पाँच डॉलर * मासिक वेतन पर वहाँ नियत किया गया।

रफनर बीबीकी कडाईके बारेमे मै इतना सुन चुका था कि उन्हे मिलते मुझे डर लगता था, और जब मै उनके सामने आया तब तो मेरी देहमें कॅपकॅपी ही भर गई। तो भी कुछ सप्ताह काम कर चुकने पर उनका मुझे अच्छी तरह परिचय हो गया। सबसे पहले मैने यह जाना कि हरेक चीज साफ और सुथरी रखनी चाहिए और सब काम ठिकानेसे और ढगके साथ होने चाहिए, उसी तरह हर काम ईमान और सफाईके साथ होना चाहिए, तब तो वे प्रसन्न रहती है, और नहीं तो, उनका दिमाग बिगट जाता है। वे चाहती थीं कि कोई बेगारी या टालमटोल न करे, घरकी चीजें बे-करीने रक्खी न हो, तात्पर्य, सचाई और सफाईको वे बहुत पसन्द करती थीं। और उनकी यह पसन्दगी कुछ बुरी न थी।

हैम्पटनको जानेसे पहले, मैने कबतक रफनर बीबीके यहाँ काम

---

* एक डॉलर=तीन रुपये।

किया सो मुझे ठीक याद नहीं, तो भी मै समझता हूँ कि साल साल मैने उनके साथ बिताया होगा। यह तो मै कई बार कह उ हूँ और फिर भी कहता हूँ कि रफनर बीबीके यहाँ मैने जो ता पाई वह जिन्दगी भर मेरे काम आई। अब भी अगर मै कहीं के टुकडोंको फैले हुए देखता हूँ तो झट बटोर लेता हूँ, ऑगनमें करकट देखता हूँ तो चट उसे साफ करता हूँ, छहदीवारके छह निकल पडे हा तो फौरन उन्हें जहॉके तहॉ लगा देता हूँ। गन्दी होको मै देख नही सकता, बे-बटनका कोट मुझे अच्छा नहीं किसीके कपडे पर अगर तेलके धब्बे पडे हुए देखता हूँ तो मेरा जी लाता है और मै लोगोको ये बातें मौके मौके पर बतला भी देता हूँ।

शुरू शुरूमें मै रफनर बीबीसे डरता था, पर वह समय भी जल्द आ गया जब, मै उन्हें अपना एक परम हितू समझने लगा। जब उन्हें भी मुझ पर विश्वास हो गया तब, वे मुझे बहुत प्यार करने लगीं। जाडेके मौसिममें उन्होंने मुझे एक घटे भर स्कूलमें जाकर पढनेकी इजा जत दे दी। पर मैने जियादातर रातहीको पढा। पढानेके लिए कुछ रुपये खर्च करनेसे कोई न कोई मास्टर मिल जाते थे। रफनर बीबी मुझे शिक्षा पानेके लिए बराबर उत्साहित करती थीं। उनके यहाँ रहते हुए ही मैने अपनी पहली लाइब्रेरी जुटाना शुरू किया। एक लकडीका सन्दूक मुझे मिल गया, उसके एक तरफका हिस्सा मैने काट डाला और उसीकी चिप्पियाँ बना कर उस सन्दूकमें लगा दीं। अब जो कोई पुस्तक मुझे मिलती उसे मै इसीमें रखने लगा, और इसीको मै अपनी लाइब्रेरी कहा करता था।

इस तरह पर रफनर बीबीके यहाँ बडे आनन्दसे दिन कटते थे। ता भी हैम्पटन जानेकी धुन अब भी सवार थी। हैम्पटन किस तरफ है और वहाँ जानेमे कितना खर्च लगेगा सो भी मुझे मालूम नहीं था। पर

१८७२ की बरसातमें मैने वहाँ जानेकी चेष्टा की। इस कार्यमें सिवा मेरी माताके, और किसीकी भी मेरे साथ सहानुभूति न थी। मेरी माको भी थोडी देरके लिए मेरा यह प्रयत्न मृगजलका पीछा करना ही जान पडा। वह कुछ दुखित भी हुई, पर कोई न कोई सूरत निकाल कर मैने उससे जानेकी आज्ञा ले ली। अबतक मैने जो कुछ कमाई की थी उसमेंसे कुछ ही डालर मेरे पास रह गये थे, बाकी सब मेरे बापने और परिवारके और लोगोंने खर्च कर डाले थे। अब मुझे कपडे खरीदने थे, राहका खर्च चलाना था, और पास तो कुछ ही रुपये थे। मेरे भाई जानने भर सक मेरी मदत की, पर वह कोई बडी भारी मदद नही थी। एक तो उसे खानमें बहुत वेतन मिलता नहीं था, और जो कुछ मिलता था, वह घरमें खर्च हो जाता था।

मै जब हैम्पटन जानेकी तैयारी करने लगा तब बूढे नीग्रो लोगोंने बडी ममता दिखाई और ऐसा प्यार किया कि मै गद्गद् हो गया। इन लोगोंकी जवानी गुलामीमें बीती थी, इन्हें यह आशा नहीं थी कि हमारी जातिका कोई होनहार युवक छात्रालयमें पढनेके लिए जायगा। इन बूढे लोगोमेंसे किसीने मुझे निक्ल (ढाई आने), किसीने पाव डालर (बारह आने) और किसीने रूमाल भेंट किया।

निदान वह दिन भी उदय हुआ और मैने हैम्पटनके लिए प्रस्थान किया। जितने कपडे मिल गये उतने एक थैलेमें भर लिये। इन दिनो मेरी माकी तबियत एकाएक खराब हो चली थी और वह दिनोदिन कमजोर होती जाती थी। मुझे इस बातकी आशा न रही कि मै उससे फिर मिल सकूँगा और इस कारण इस मातृवियोगसे मुझे दुःसह दुःख हुआ, परन्तु उसने बडी धीरतासे इस प्रसगको झेल लिया। उन दिनों वेस्ट वर्जीनियासे ईस्ट वर्जीनिया तक बराबर रेलगाडीका रास्ता नही था। कुछ दूर रेलगाडी थी और बाकी सफर डाककी शिकरममे तै करनी पडती थी।

माल्डनसे हैम्पटन अनुमान ५०० मील है। घरसे रवाना हुए बहुत देर नहीं हुई थी। इतनेमें मुझे यह मालूम हुआ कि मे हैम्पटन तकका काफी किराया नहीं है। राहमें जो एक घटना है गई उसे तो मैं कभी न भूलूँगा। एक दिन दो पहरके वक्त एक पुर शिकरममें सवार हो मैं एक पहाडी रास्तेसे जा रहा था। शाम होते ह वह गाडी एक मामूली होटलके पास ठहर गई। उस गाडीमें, मेरे सिव और सब मुसफिर गोरे थे। मैंने समझा कि शिकरम मुसाफिरोंके लिए ही यह होटल बना है। चमडेके रगसे कित उलट फेर हो जाता है, इसका मैंने विचार नहीं किया था। आ सब मुसाफिरोंके टिकनेका जब प्रबन्ध हो गया और भोजनकी भ तैयारी हुई तब, मैं चुपकेसे वहाँके मैनेजरके पास गया। भोजन य आरामके खातिर एक पैसा भी मेरे पास नहीं था जो, मै दे सकता पर किसी न किसी सूरतसे मै मैनेजरको खुश करना चाहता था। बात यह थी कि इस मौसिममें वर्जीनियाके पहाडोंपर बडी ठड पडती है और इस लिए रातको ठडसे बचने और आरामके लिए कोई ठिकान मिलना जरूरी था। मैनेजरने मुझे देखकर ही–बिना कुछ पूछता किए ही कोरा जवाब सुना दिया कि ‘जाओ, तुम्हारे लिए यहाँ ज नहीं है!” अपने शरीरके रगका मतलब समझनेका मेरे लिए य पहला ही मौका था! इधर उधर टहल कर मैंने बदनमें कुछ गरमी पै की, और किसी तरह वह रात बिताई। हैम्पटन जानेकी धुनमें मु उस होटलवालेसे वैर करनेका या असतुष्ट होनेका वक्त ही न मिला।

कुछ राह पैदल चला और कुछ गाडीवानकी दयासे गाडी पर सवा हो चला, और इस तरह बहुत दिनों बाद वर्जीनियाके रिचम शहरमें आ पहुँचा। यहाँसे अब हैम्पटन ८२ मील था। आधी रात का वक्त था, मार्गके परिश्रमसे शरीरकी नस नस ढीली हो गई थी भूखकी ज्वाला पेटमें धधक रही थी, और ऐसे समय रिचमड नगर

पहुँचा। आज तक मैंने कोई बडा शहर नहीं देखा था और इससे मेरी मुसीबत और भी बढी। मेरे पास खर्चके लिए एक दमडी भी न थी, किसीसे जान न पहचान, शहरके रास्ते भी कभी आँखों न देखे थे। कहाँ जाऊँ, क्या करूँ, कुछ समझमें न आता था। कई लोगोंसे मैंने गिडगिडाकर कहा, 'भाई! कहीं रहनेका ठिकाना हो तो बताओ,' पर बिना दामके कोई बात न करता था और दामके नाम मेरे पास एक फूटी कौडी भी न थी! लाचार मैं राहमें ही चहलकदमी करने लगा। कई दूकान मुझे देख पडीं। वहाँ खानेकी चीजें रक्खी हुई थीं और इस ढगसे रक्खी थीं कि मन खानेको दौड जाय। उन चीजोंमेंसे मुझे उस समय अगर कोई एक भी भर पेट खानेको मिलती तो, आगे मुझे जो कुछ मिलनेवाला था वह सब दे देनेके लिए मैं तैयार हो जाता! परन्तु उस वक्त मुझे कुछ भी खानेको न मिला!

आधी रातके बाद भी बहुत देर तक शायद मैं वहाँ टहलता ही रहा। आखिर मैं इतना थक गया कि फिर एक कदम चलना मुश्किल हो गया। मैं थका, माँदा, भूखा, सब कुछ हुआ, पर एक बात नहीं हुई—मैंने हिम्मत न हारी! टहलते टहलते मैं एक चबूतरेके पास आया और वहाँ कुछ ठहर गया। इधर उधर एक बार नजर दौडाकर कि कोई मुझे देखता तो नहीं है, मैं उस चबूतरेके नीचे आ गया, और कपडोंके थैलेको सिरहाने रख कर वहीं लेट गया। लोगोंके पैरोंकी आहट मुझे रात भर सुनाई देती रही। दूसरे दिन सबेरे बदनमें कुछ फुरती मालूम हुई, पर बहुत दिन हुए थे कि मैंने पेट भर खाया नहीं था जिससे बहुत तेज भूख लगी। जब पौ फटी और साफ साफ दिखने लगा तब, मैंने इधर उधर देखा तो पास ही एक बडा जहाज दिखाई दिया। उस परसे लोहा उतारा जा रहा था। मैं फौरन उस जहाजकी तरफ चल पडा और खाना कमानेकी गरजसे जहाजके कप्तानके पास जा कर

लोहा उतारनेकी इजाजत माँगने लगा। उस गोरे दयालु कप्तानने पर रहम खाके इजाजत देदी। भोजनके योग्य दाम कमानेके लिए बहुत देर तक काम करना पडा, और अब मुझे याद आता है। उस वक्त जो भोजन मैने किया उसका मजा ही कुछ और था!

मेरे कामसे कप्तान साहब इतने सन्तुष्ट हुए कि उन्होंने मुझसे 'अगर तुम चाहो तो, रोज काम किया करो और अपनी मजदूरी जाया करो।' यह काम मिलनेसे मै भी खुश हुआ। कुछ दिन काम करता रहा। जो मजदूरी मिलती उससे भोजनका खर्च था–पास कुछ जमा न कर सका। मै हर बातमें किफायत किया था जिससे शीघ्र ही हेम्पटन जा सकूँ। मेरे सोनेका ठिकाना वही तरा था जहाँ पहले दिन सोया था। आगे कई वर्ष बाद काले नीग्रो लोगोंने मेरा बडा स्वागत किया। स्वागतके लिए, हजार लोग इक्के हुए थे, और स्वागतका स्थान उसी पुराने पास ही था। म यह स्वीकार करता हूँ कि लोगोंने हृदयसे और प्रेमसे मेरा स्वागत किया, पर मेरा मन उस वक्त भी उसी वाली पटरीहींकी तरफ दौडता था कि जहाँ पहले पहल मुझे मिली थी।

हैम्पटनको जाने योग्य राहखर्च जमा होते ही मैने पहले उस गोरे कप्तानको धन्यवाद दिया और फिर हेम्पटनकी राह ली। राहमें ऐसी वारदाद नहीं हुई जिसका उल्लेख किया जाय, मे सही हैम्पटन जा पहुँचा, इस समय मेरे पास सिर्फ ५० सेंट (२५ आने) बचे और इसी रकमसे मैने अपनी पढाई शुरू की। हैम्पटनकी सफरमें कई ऐसी कष्टप्रद हुई कि जिनकी मुझे अबतक याद हे, पर जब मैंने हैम्पटन आकर उस विद्यालयभवनके दर्शन किए तब मैने समझा कि आज सब परिश्रम और कष्ट सफल हुए। विद्यालयके दर्शनसे मुझ पर जो अ

डा उसका अन्दाज अगर विद्यालय बनानेके लिए दान देनेवाले लोग कर सके तो, मै समझता हू कि वे ऐसे दान देनेमें और भी उत्साहित होंगे ।

विद्यालयको देखकर मैने सोचा कि दुनियामे यही सबसे बडी और सुन्दर हवेली है इसके दर्शनसे मुझमें नवीन चैतन्य भर गया । यहाँसे मेरा नया जीवन आरम्भ हुआ । अब मेरे लिए जीवनका अर्थ भी नया हो गया । मेरे लिए वह स्वर्ग ही बन गया और मैने यह निश्चय किया कि ससारका उपकार करनेकी योग्यता प्राप्त करनेमे यहाँसे जो कुछ मिल सकता है उसे लेनेमें, मै कोई बात उठा न रक्खूँगा ।

हैम्पटनके विद्यालयमें पहुंच कर, मै वहाँकी मुख्य अध्यापिकाके पास गया और उनसे मैने प्रार्थना की कि मुझे किसी दर्जेमें भरती कर लीजिए । बहुत दिनोसे न मुझे अच्छा खाना मिला था, न मै कपडे ही बदल सका था, नहाने तककी सुविधा नही हुई थी । ऐसी हालतमे मै उनके पास गया और उनके चेहरेसे ही मालूम किया कि मुझे भरती करनेके बारेमें उनके मनमें कोई निश्चय नही होता है । मन-ही-मन मैने यह भी विचार किया कि अगर ये मुझे कोई आवारा लडका समझती हो तो कोई ताज्जुब नहीं । कुछ देरतक उन्होने मुझे न यह बतलाया कि मै तुम्हे भरती किये लेती हूँ और न यही कि तुम भरती नहीं किये जाओगे—दोनोमें से एक भी नही । मै उनके पीछे पीछे चल कर उन्हे यह दिखलानेकी कोशिश, अपनी शक्तिभर कर रहा था कि मुझमे कहाँतक योग्यता है । बीचहीमे जब मैने और विद्यार्थियोंको भरती करते हुए देखा तब मुझे बहुत ही दुःख हुआ, क्योंकि मुझे इस बातका दृढ विश्वास था कि अगर मुझे अपनी लियाक्त दिखलानेका मोका दिया जाय तो मै इन लडकोंसे किसी बातमें कम न रहूँगा ।

कुछ घंटे बाद मुख्य अध्यापिकाने मुझसे कहा, "पासका कमरा झाड़ दे

कर साफ करना होगा, झाड़ू लो और कूटा निकालकर बाहर फेंक दो। अब मैंने समझा कि यह मौका आया। मुझे अबतक कोई आज्ञा नहीं मिली जिससे, मुझे इतना आनन्द हुआ हो! बटोर कर फेंक देनेका काम मै बडी खूबीके साथ करता रफनर बीबीके यहाँ मुझे यह तालीम मिल चुकी थी।

मैंने उस रेसिटेशनरूमम—सबक सुनानेके कमरेमे—तीन बार दी। अनन्तर धूल झाडनेका कपडा लेकर मने उस कमरेको चार बार साफ किया। इसके अलावे हरेक चीजको उठा कर नीचेका गर्द दूर किया और कोने अतरे तकसे सब कमरा साफ सुथरा करके रख दिया। कमरा साफ करनेके मेरे कामसे मुख्य पिका यदि प्रसन्न हुई तो मेरी राह साफ होनेकी मुझे आशा और अगर अप्रसन्न हुई तो मैंने सोचा कि मेरे लिए कोई सहारा न जायगा। खैर, मेने अध्यापिकासे जाकर कहा कि कमरा साफ चुका। वे उत्तर अमेरिकाकी रहनेवाली थीं और जानती थीं कि कूडा जमा हुआ करता है। उन्होने कमरेमें आकर फर्श और को देखा। फिर उन्होंने अपना रूमाल निकाल कर उसे खभे, और बेंच पर रगडा। फर्श या किसी लकडीकी चीज पर जब एक भी कण धूलका नजर न आया तब उन्होंने शान्त चित्तसे “ मै समझती हूँ कि तुम इस पाठशालामे भरती होनेके योग्य हो।

बस, हो चुका मेरा काम! ससारके भाग्यशाली पुरुषोंमें भरती हो गया! मेरा जीवन आज सफल हुआ! उस कमरेको देकर साफ करना, मेरे लिए, कालेजकी प्रवेशपरीक्षा थी और विश्वास है कि हारवर्ड अथवा येल विश्वविद्यालयकी प्रवेशपरीक्षा करनेवाले किसी युवकको मेरे जैसा आनन्द न हुआ होगा। इसके मैंने कई परीक्षायें पास कीं, पर मै यही समझता हूँ कि उन परीक्षाओंमें यही उत्तम हुई।

हैम्पटनके विद्यालयमें प्रवेश करते समय मुझे जो अनुभव हुआ उसे, ने यहाँ प्रकट किया है। ऐसा अनुभव शायद बिरलोंको ही प्राप्त हुआ ोगा, परन्तु उस वक्त मुझे जिन कठिनाइयोंसे सामना करना पडा था वैसी ठिनाइयोसे मै समझता हूँ कि बहुतोंको सामना करना पडा होगा—म्पटनके तथा दूसरे विद्यालयोंमें भरती होनेवाले सैकडों विद्यार्थियोंने री ही जैसी कठिनाइयाँ भोगी होंगी। चाहे जो हो, उस समय शिक्षा ाप्त करनेके लिए हमारी जातिके बहुतसे युवकोंने रकम कसी थी।

हैम्पटन विद्यालयसे उत्तीर्ण होनेमे उस कमरेकी सफाईने मेरी बडी मदद की। मुख्य अध्यापिका मिस मेरी एफ मैकीने मुझे दरवानकी जगह पर मुकर्रर किया और मै बडी खुशीसे उस जगह पर तैनात हुआ, क्योंकि उस जगह पर काम करके मै अपने भोजन लायक कमा सकता था। इस काममें मिहनत तो बहुत थी और कष्ट भी अनेक थे तो भी मैने यह काम छोडा नहीं। मुझे कई कमरोंकी निगरानी करनी पडती थी और रातको कई घटे इस कामको करनेके बाद आग सुलगाने और अपना सबक याद करनेके लिए सबेरे चार बजे फिर उठना पडता था। जबतक मै हैम्पटनमें था तब तक और उसके बाद भी मुख्य अध्यापिका मिस मेरी एफ मैकीने समय पडने पर मेरी बडी सहायता की है। उनकी सलाहसे मेरी हिम्मत बढती थी और उनकी बातोंसे मुझमें बल आ जाता था।

हैम्पटन-विद्यालयके दर्शनसे मुझ पर कैसा अच्छा परिणाम हुआ उसका वर्णन तो मै कर ही चुका हूँ, परन्तु जिसने मुझ पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और स्थिरस्थायी परिणाम किया उस पुरुषके विषयमे मैने अबतक कुछ भी जिक्र नहीं किया। जिसकी मुलाकातको मै एक बडी इज्जत समझता हूँ, वह एक अत्यन्त उदार और महात्मा पुरुष था। अब उसका स्वर्गवास हो गया है, पर उसकी आत्मा मेरे हृदयमन्दिरमें

विराज रही है और उसका नाम जनरल एस्. सी आर्मस्ट्राग, म
जिह्वाको अब भी पवित्र कर रहा है।

मै इस बातमें अपना सौभाग्य समझता हूँ कि यूरोप और अमेरिका
सैकडों सच्छील पुरुपोंसे मेरी मुलाकात हुई, पर यह बात कहनेमें मै ज
भी नहीं हिचकता कि मने अबतक जनरल आर्मस्ट्रागका कोई नमूना
देखा। गुलामोंकी यमपुरी और कोयलेकी खानसे बचकर आये हु
मुझ जैसे नातजुर्बकार (अनुभवहीन) को जनरल आर्मस्ट्राग ज
सत्पुरुपका समागम होना एक बडे सम्मान और अधिकारकी बात था
पहले पहल जब म उनके पास गया तो मेरा यह विश्वास हो गया कि
ये पहुँचे हुए महात्मा ह। उनके चेहरेसे और बात करनेके ढगसे दै
तेज टपक रहा था। जब मै हैम्पटनमें आया तबसे उनके देहान्त
तक, मुझे उनका सत्सग हुआ, और ज्यों ज्यों उनसे मेरा परिचय
बढता गया त्यों त्यों, उनके विपयमें मेरी श्रद्धा बढती ही गई। हैम्पटनकी
भारी इमारतो, विद्यालय, कक्षाओं, शिक्षकों और उद्योगोंसे जितने लाभ
होते हे वे अकेले जनरल आर्मस्ट्रागके सत्सगसे प्राप्त हो सकते है। मेरा त
यह विश्वास है कि विद्यालयसे मिलनेवाली शिक्षासे कहीं अधिक अ उ
और उपकारी शिक्षा सत्सगसे प्राप्त होती हे और ज्यों ज्यों मेरी उम्र
ढलती जाती है त्यों त्यों मेरी यह धारणा दृढसे दृढतर होती जाती है
कि पुस्तकों ओर मूल्यवान् सरजामसे प्राप्त होनेवाली शिक्षा, सत्पुरुषोंके
समागमसे प्राप्त होनेवाली शिक्षाके सामने कोई चीज ही नहीं है। पुस्तकोंका
अभ्यास करानेके बदले यदि हम लोगोंकी पाठशालाओंमें मनुष्यों
और वस्तुओंका अभ्यास कराया जाय तो मै समझता हूँ कि उससे
कई गुना अधिक लाभ हो।

जनरल आर्मस्ट्रागने अपनी आयुके अन्तिम दो महीने मेरे टस्केजीके
मकानमें बिताये। उस वक्त उन्हें लकवा मार गया था। उनसे बोला नहीं
जाता था और शरीर बिल्कुल सुन्न हो गया था। उनको इतनी तक

लीफ थी तो भी—इस हालतमें भी, जिस कामको उन्होंने उठाया था उसके लिए, वे दिन रात प्रयत्न कर रहे थे। ऐसा अपने आपको भूल जानेवाला आदमी मैंने दूसरा नहीं देखा। मै नहीं समझता कि स्वार्थने कभी उन्हें स्पर्श किया हो। हैम्पटन-विद्यालयके लिए काम करते हुए जो आनन्द उन्हें प्राप्त होता वही आनन्द, उन्हें दक्षिणके किसी भी परोपकारी कार्यमें सहायता करते हुए भी होता था। सिविल वारमें वे दक्षिणके गोरोंसे लड पडे थे सही, पर उसके बाद उन गोरोंके बारेमें एक भी अपशब्द उनके मुँहसे निकलता मैंने नहीं सुना। इसके विपरीत इस बातका वे अवश्य विचार किया करते थे कि दक्षिणके गोरोंके लिए म क्या कर सकता हूँ।

हैम्पटनके विद्यार्थियों पर उनका जो प्रभाव था, अथवा उनके प्रति विद्यार्थियोंकी जो श्रद्धा थी, उसका वर्णन करना बडा ही कठिन काम है। उनके विद्यार्थी सचमुच ही उन्हे ईश्वरके समान मानते थे। वे जिस कामको उठा लेते थे उसे पूरा कर छोडते थे। उन्हें किसी काममें नाकामयाब (असफल) होते मैंने नहीं देखा। ऐसा भी कभी न हुआ कि उन्होंने किसीसे कोई प्रार्थना की हो और वह स्वीकृत न हुई हो। अलबामामें जब वे मेरे यहाँ मेहमान थे तब उन्हें लकवेकी बीमारी थी और इसलिए उन्हें पहियेदार कुर्सी पर बैठाके टहलाना पडता था। उस समयका जिक्र है कि एक रोज उनके एक पुराने शिष्यको उनकी कुर्सी एक ऊँची पहाडी पर ले जानी पडी थी और इस काममें उसको बहुत ही कष्ट और परिश्रम उठाना पडा था। किन्तु जब कुर्सी पहाडीकी चोटी पर पहुँच गई तब, उस शिष्यने प्रसन्नतासे कहा,—" मुझे इस बातका बडा हर्ष है कि जनरल साहबकी मृत्युके पहले मुझे उनके लिए एक ऐसा कठिन काम करनेका अवसर मिला।"

जिस समय मै हैम्पटनके विद्यालयमें पढता था उस समय वहाँका

छात्रालय (बोर्डिंग हाऊस) इतना भर गया था कि नवीन छात्रोंका वहाँ कदम रखनेकी जगह नहीं थी। यह असुविधा दूर करनेके लिए जनरल साहबने यह निश्चय किया कि कुछ नये खेमे गाडे जायें और उनसे कोठरियोंका काम लिया जाय। विद्यार्थियोंमे यह बात फैल गई कि गरमी भर, पुराने विद्यार्थियोंमेंसे यदि कुछ विद्यार्थी खेमोंमें डेरा डालेंगे तो जनरल आर्मस्ट्राग प्रसन्न होंगे। इस खबरको सुनते ही प्राय सबके सब विद्यार्थी खेमोंमें जा रहनेके लिए तैयार हो गये।

इन्ही विद्यार्थियोंमें मै भी एक था। उस साल बहुत ही तेज गरमी पडी थी और उन खेमोंमें हम लोगोंके प्राण छटपटाते थे। हम लोगोंको किस कदर तकलीफ हुई सो आर्मस्ट्राग कुछ भी नहीं जानते थे, क्योकि हम लोगोंने कभी , बातकी शिकायत ही नही की। जनरल आर्मस्ट्राग हम लोगोंसे प्रसन्न है, एक बात, और दूसरी बात यह कि हम लोगो द्वारा इस प्रकारसे नये विद्यार्थियोंकी शिक्षाका प्रबन्ध होता है–इन दो बातोंसे बढकर आनन्द देनेवाली तीसरी बात ही कौनसी है? कई बार जब रातके ठढी ठडी हवासे बदन ठिठुरने लगता, हवाके झोकोंसे खेमे ही उड़ जाते, और हम लोगोंको सारी रात उस ठढमें कॉंपते हुए बितानी पड़ती थी तब जनरल आर्मस्ट्राग तडके ही खेमोंकी ओर आते और उनके आनन्द देनेवाले, उत्साह बढानेवाले और स्नेहभरे शब्दोंको सुनते ही हम लोग सारे क्लेश भूल जाते थे।

मैने जनरल आर्मस्ट्रागके प्रति अपनी भक्ति प्रकट की है, और मुझे यह भी कहना चाहिए कि प्रभु ईसा मसीहके समान जिन उदार स्त्री पुरुषोंने नीग्रो पाठशालाओंमें पढानेका भार अपने सिर उठाया था उन्हींमें, ये भी एक दृष्टान्तस्वरूप पुरुष थे। नीग्रो पाठशालाओंमें जिन स्त्रीपुरुषोंने पढानेका काम उठाया था उनसे, अधिक अच्छे, पवित्र शीलवान् और स्वार्थत्यागी स्त्री-पुरुष ससारके इतिहासमें ढूँढे न मिलेंगे।

हैम्पटनमें रहते हुए मैंने कई नई बातें सीखीं। मै तो यही सोचता था कि किसी नई दुनियामे आ गया हूँ। ठीक समय पर भोजन करना, भोजनके वक्त मेज पर कपड़ा बिछाना, मुँह पोछनेके लिए रूमाल काममे लाना, नहानेके लिए टब और दँतवनके लिए ब्रश-से काम लेना, गद्दे पर साफ़ चादर बिछाना, इत्यादि बातें ऐसी थीं जो मेरे बापदादोंके भी वर्तावमे कभी न आई थीं।

हैम्पटन-विद्यालयमें मैने यह जाना कि नहानेसे क्या लाभ है और उसका कितना महत्त्व है। स्नान शरीरको नीरोग बना देता है, यही नहीं किन्तु आत्माभिमान और सद्गुणोंकी वृद्धि करता है। स्नानके इन लाभोंको मैंने यहीं जाना। हैम्पटनसे विदा होनेपर दक्षिणमें और अन्यत्र भी जहाँ जहाँकी मैंने यात्रा की है वहाँ वहाँ नित्य स्नान करनेका नियम जारी रक्खा है। कभी कभी मुझे ऐसे घरोंमे रहना पड़ा है कि जहाँ सिर्फ एक ही कोठरी है और उसमे बहुतसे लोग रहते हैं, ऐसी जगहोंमे नहाना कठिन होता था। तब मै जंगलमें जाकर किसी नदीनालेमें स्नान कर आता था। हरेक घरमे स्नानका कोई प्रबन्ध अवश्य होना चाहिए, यह बात मैने अपने जात भाइयोंको बार बार बतलाई है।

मै जब हैम्पटनमें था तब कुछ दिनों तक मेरे पास एक ही जोड़ा मोजे थे। ये जब मैले हो जाते तब रातको मै उन्हें धोता था और दूसरे दिन पहननेकी गरजसे आग पर सुखा लिया करता था।

हैम्पटनमें मेरे भोजनका खर्च मासिक १० डालर था। इसके बारेमे यह तै हुआ था कि कुछ रकम तो मै नकद दूँ और बाकी मेरे काममे समझ ली जाया करे। पर जब पहले पहल मै यहाँ आया तो मेरे पास, मै बतला ही चुका हूँ कि ५० सेंट थे। मेरे भाई जानने कुछ रुपये भेज दिये थे, पर तो भी मेरे पास नकद देनेके लिए काफी

खर्च नहीं था। इस लिए मैंने दरबानीका काम ऐसा अच्छा दिखलान
संकल्प किया कि अधिकारियोंको मेरे कामकी जरूरत जान पडे
मैं अपना काम इस खूबीसे करने लगा कि मुझे जल्द ही यह सूच
दी गई कि तुम्हारे काम पर तुम्हारा भोजन-खर्च माफ कर दि
जायगा। शिक्षाका खर्च वार्षिक ७० डालर था, और यह रकम दे
मेरे सामर्थ्यके बाहरका काम था। मुझे भोजनखर्चके अलावे यदि
७० डालर और भी देने पडते तो मुझे वह छात्रालय ही छोड देना पडत
जबतक मैं हैम्पटनमें था तबतक मेरी पढाईका खर्च जनरल आर्मस्ट्र
मुझपर दया करके एक रईस मि एच ग्रिफीट्स मार्गनसे दिला दि
करते थे। हैम्पटनकी पढाई समाप्त होने पर और अपने जीवनकाय
हाथ लगा देने पर मैं कई बार मि मार्गनसे मिला हूँ।

हैम्पटनमें आ जाने पर कुछ ही दिनोंमें पुस्तकों और कपडा
मुझे बडी असुविधा होने लगी। एक असुविधाको तो मैंने किसी त
उडा दिया, याने किसी दूसरे लडकेसे पुस्तकें मँगनी माँगकर
लेता था। पर कपडोंके लिए क्या करता? मेरे पास कपडाकी क
थी और जो कपडे थे भी, वे मेरे उस छोटेसे थैलेमें थे। जनरल आ
स्ट्राग सब लडकोंको एक कतारमें खडे कर देखा करते थे। यह देख
तो मेरी चिन्ता और भी बढी। जूते ब्रश वगैरह देकर बिलकुल साफ र
पडते थे, कोटके बटन टूटे हुए न हों, और कपडा पर तेलके दाग र
न पावें–यह उनकी सख्त ताकीद थी। अब मैं बडी आफतमें फँ
क्योंकि मेरे पास एक ही सेट कपडे थे और उन्हीं कपडोंको पहने म
भर सब काम करता था। अब साफ कपडे लाऊँ तो कहाँसे ला
पढनेको मैं बडी चिन्तापूर्वक पढता था और मेरी पढाई देखकर
मास्टर भी मुझसे प्रसन्न थे, पर कपडोंके लिए लाचार था। अ
भगवानकी दया आई और मुझे कुछ कपडे मिल गये। मेरे शिक्षक

ही इस बातकी चिन्ता हुई कि इसे कपडे दिला देने चाहिए। इसी समय उत्तर प्रान्तसे कपडोंकी कई पेटियाँ आईं। उनमेंसे कुछ पुराने कपडे मुझे दिला दिये गये। इन कपडोंने सैकडों अनाथ, पर योग्य विद्यार्थियोंका बडा उपकार किया। मैं समझता हूँ कि अगर ये कपडे मुझे न मिलते तो हैम्पटनमें शायद ही मेरा निर्वाह हो सकता।

हैम्पटन जानेसे पूर्व, मुझे याद नहीं आता कि मैं कभी दो चादरोंवाले बिछौने पर भी सोया था। उन दिनों हैम्पटनके विद्यालयमें जगह बहुत थोडी थी। मेरे कमरेमें मेरे सिवाय और सात लडके थे। इनमेंसे बहुतेरे वहाँ मुद्दतके थे। पहले पहल तो चादरोंका गोरखधन्धा मेरी समझमें ही न आया। पहली रातको तो मैं उन दोनों चादरोंके बीचमें सोया और दूसरी रातको उन दोनोंके ऊपर सोया। फिर और लडकोंसे मैंने जान लिया कि चादरोंको किस तरह काममें लाना चाहिए, और फिर दूसरोंको भी उनका उपयोग बतलाने लगा।

हैम्पटनमें जितने विद्यार्थी थे उन सबसे मैं छोटा था। बहुतसे विद्यार्थी दाढी मोछवाले भी थे। कई स्त्रियाँ भी थीं। चालीस चालीस वर्षके भी कुछ विद्यार्थी थे। विद्यार्थी और विद्यार्थिनी मिला कर, उस समय मेरे सहपाठियोंकी संख्या ३००।४०० थी। ये सब शिक्षा प्राप्त करनेके लिए दिनरात परिश्रम करते थे। इनका एक एक मिनिट काममें या लिखने पढनेमें बीतता था। इन लोगोंको मालूम हो गया था कि संसारमें सुखी और कृतकार्य होनेके लिए शिक्षाकी बडी भारी जरूरत होती है। कुछ विद्यार्थी तो इतने बूढे थे कि वे अपनी कक्षाकी पुस्तकें भी बडी कठिनाईसे समझते थे और उनकी विद्यालाभकी चेष्टा देखकर औरोंको दया आती थी। उन्होंने अपनी प्रीति और आस्थासे पुस्तकसम्बन्धी ज्ञानके अभावकी पूर्ति की। उनमेंसे बहुतेरे मेरे जैसे ही कंगाल थे। उन्हें केवल पुस्तकोंसे ही नहीं, दरिद्रतासे भी जूझना पडता था। जिन

चीजोंके बिना किसीका काम नहीं चल सकता ऐसी चीजें भी, पास नहीं थीं । कितनोंको अपने वृद्ध मातापिताओंके भोजन प्रबन्ध करना पडता था और बहुतेरोंको अपने परिवारकी पडती थी ।

अपने गाँवके लोगोंकी दुर्दशा देखकर इन विद्यार्थियोंके हृदय रहे थे । ये चाहते थे कि हमारे हाथों हमारे भाइयोंका कुछ हो । इसके लिए योग्यता और अधिकार प्राप्त करनेका इन्होंने किया था । किसीको भी अपनी फिक्र नहीं थी । विद्यालयके और नौकरचाकर असाधारण मनुष्य थे । मनुष्य नहीं, देवता कहना चाहिए ! वे विद्यार्थियोंके लिए रात दिन परिश्रम थे । उन्हे तो विद्यार्थियोंकी सहायता करनेहीमे–फिर वह किसी क्यों न हो– सुख मिलता था । सिविल वारके बाद उत्तर गोरे शिक्षकोने नीग्रो लोगोंकी शिक्षाके सबधमें जो काम किया है इतिहासके पृष्ठों पर सुनहले अक्षरोंसे लिखा जाने योग्य है । सन्देह नही कि दक्षिण अमेरिकाके लोग भी शीघ्र ही इस परिचय पा जायँगे और उन्हें भी इसका महत्त्व मालूम होगा ।

चौथा परिच्छेद।

असहायाकी सहायता।

हैम्पटनमें साल भर खूब पढाई हुई। इसके बाद ही एक नई मुश्किलीसे सामना पडा। छुट्टीका समय आया और सब विद्यार्थी अपने अपने घर जानेकी तैयारी करने लगे। छुट्टियोंमें प्राय सभी विद्यार्थी अपने घर चले जाते थे, वहाँ कोई रहने नहीं पाता था। किसी कारणवश कुछ विद्यार्थी न जा सकते तो उन्हें विद्यालयके अधिकारियोंसे वहाँ रहनेकी इजाजत लेनी पढती थी जो बडी कठिनाईसे मिलती थी। जब सब लोग तैयारी करने लगे तब, मैं भी घर जानेके लिए तरसने लगा। पर मेरे पास क्या घर और क्या बाहर, कहीं जानेके लिए दाम ही न थे।

आखिर एक तदबीर सूझी। मुझे कहींसे एक पुराना कोट मिल गया। मुझे वह बडा कीमती मालूम होता था। राहखर्चके लिए मै उसे बेचनेके लिए तैयार हुआ। मेरी प्रकृतिमें कुछ अभिमान भी था—अभिमान क्या था, लडकई थी और इसलिए मैं अपने सहपाठियोंसे अपने खर्चकी तगी सदा छिपाये रहता था—मैने कभी उनपर यह बात जाहिर न होने दी कि कहीं सैर करने जानेके लिए मेरे पास खर्च नहीं है। हैम्पटन गाँवके कुछ लोगोंको मैंने बतलाया कि मुझे एक कोट बेचना है। बडी मुश्किलसे एक काला मनुष्य कोट देखनेके लिए मेरे स्थान पर आनेको तैयार हुआ। इससे मुझे कुछ अशा बँध गई। दूसरे दिन सबेरे ठीक समय पर वह आ पहुँचा। उसने एक बार कोटको अच्छी तरह देखा और पूछा, ‘ बतलाओ, कितनेमें दोगे ? ’ इसपर मैंने जवाब दिया कि ‘ इसकी कीमत तीन डालरसे क्या कम होगी। ’ कोट उसे जँचा

और मैने समझा कि कीमत भी उसे वाजिब मालूम हुई है। पर वह था
धूर्त, उसने कहा,—'अच्छा, यह कोट मैं ले लेता हूँ और नव
सेंट (ढाई आने) भी दिये देता हूँ, बाकी दाम पीछे दे दूँगा।
वक्त मेरे दिलका जो हाल हुआ उसका अन्दाज करनाकुछ
नहीं है।

इस तरह जब मै निराश हुआ तब बाहर जाकर कुछ
आशा भी मैने छोड दी। मै बहुत चाहता था कि किसी ऐसी
जाऊँ जहाँ काम करके अपने लिए कपडे और जरूरी चीजें
लाऊँ। सब लोग अपने अपने घर चले गये और इससे मुझे और
अधिक दुःख हुआ।

हेम्पटन गाँव और उसके आसपास मैने कामके लिए बहुत तलाश
अन्तमें फारेट्स मनरोके एक होटलमें, काम मिल गया। मजदूरी
मिलती थी उससे भोजन-खर्च चलता था, बचत बहुत ही थोडी
थी। शामसुबह भोजनके वक्त मुझे वहाँ हाजिर रहना पडता था
बीचका समय पढने लिखनेमें बीतता था। इस प्रकार गरमीकी छुट्टि
मैने अपनी अवस्था बहुत कुछ सुधार ली।

प्रथम वर्ष जब समाप्त हुआ तब, मेरी तरफ विद्यालयके सा
डालर निकलते थे। काम करके मै यह रकम अदा न कर सका।
यह इच्छा थी कि गरमीकी छुट्टियोमें मजदूरी करके यह ऋण दे डा
कर्जेका बोझ मुझे बेइज्जती मालूम होती थी और इस हालतमें मैं
मुँह किसीको दिखलाना न चाहता था। मैने बडी किफायतसे
खर्च चलाया। अपने कपडे अपने हाथों धोये, और जरूरी कपडे
नना भी मैने त्याग दिया। इतना करके भी मै छुट्टियोंके अन्तमें
डालर जमा न कर सका।

होटलमें एक दिन मुझे एक मेजके नीचे दस डालरका एक
करकराता नोट मिल गया। मुझे बडा हर्ष हुआ। उस जगह पर

कियत नहीं थी, इसलिए मैने वह नोट अपने मालिकको दिखलाना चेत समझा। देखकर वह भी बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने मुझसे ा, ‘ यह जगह अपनी है और इसलिए इसे रख लेनेका अपना हक ।’ उसने नोट रख लिया। मुझे यह कहनेमें कोई संकोच नहीं कि से एक बार मेरे हृदय पर फिर चोट लगी। यह मैं न कहूँगा कि मैं राश हो गया—मेरी हिम्मत टूट गई, क्योंकि इससे पहले मैंने जो कुछ धनेका—सिद्ध करनेका निश्चय किया था उसके विषयमें मैं कभी हिम्मत ी हारा था। हरेक काम मैंने इसी भरोसे पर शुरू किया है कि मैं वश्य सफल मनोरथ हूँगा। बहुतसे नाकामयाब लोग जब कभी अपनी कामयाबीका (असफलताका) सबब बतलाते थे तब बिना बीचमें दखल ये मुझसे रहा न जाता था। जिस पुरुषके मुँहसे मैं कामयाबी सिल करनेके उपाय सुनता था उस पर मेरी श्रद्धा बैठ जाती थी। स वक्त मुझ पर जो मुसीबत थी उसका सामना करनेके लिए मैं तैयार आ। सप्ताहके अन्तमें मैं हैम्पटन-विद्यालयके खजाञ्ची, जनरल जे फ बी मार्शलके पास गया और उन्हें मैंने अपनी रामकहानी सुनाई। न्होंने मुझसे कहा, ‘ कोई हरज नहीं, जब तुम्हारे पास उतनी रकम ाजाय तब दे देना, घबरानेकी कोई बात नहीं है। मुझे तुम्हारे ऊपर वेश्वास है।’ इन शब्दोंको सुनकर मुझे बहुत संतोष हुआ। दूसरे ाल भी मैं दरबानका काम करता रहा।

हैम्पटनके विद्यालयमें मैंने पढ़ा सही, पर विद्यालयमें जो कुछ मैंने ीखा वह, वहाँ जो शिक्षा और अनुभव मैंने प्राप्त किया उसका, एक ग मात्र था। वहाके शिक्षकोंका स्वार्थत्याग देखकर मेरे हृदय पर डा ही अच्छा परिणाम हुआ। उस समय मेरी समझमे यह नहीं आता ा कि दूसरोंके लिए इस प्रकार त्याग करनेसे ये लोग क्योकर सुखी ाते है। पर दुसरा साल समाप्त होनेसे पहले ही मुझे यह अनुभव होने गा कि जो लोग दूसरोंके लिए अपना शरीर घिसते है वे ही सबसे

अधिक सुखी हुआ करते है । तभीसे मै इस शिक्षाको स्मरण र चेष्टा कर रहा हूँ ।

हैम्पटनमे उत्तम जानवर और मुर्गे पैदा करनेकी पद्धतिका वा निरीक्षण करके मैने एक नया पाठ सीख लिया । जिस किसीको इस परवरिशका नया ढग देखनेका अवसर मिला है वह मामूली चौपायें रखनेसे कभी सन्तुष्ट न होगा ।

दूसरे वर्षमें मैने एक और शिक्षा पाई । बाइबलका उपयोग उ महत्ता मे समझने लगा । यह शिक्षा मुझे पोर्टलैडकी मिस नार्थरो र नाम्नी एक अध्यापिकासे मिली । इससे पहले मै बाइबलकी कोई प नही करता था । पर अब तो सिर्फ अपनी आत्मिक उन्नतिके लिए बल्कि साहित्यकी दृष्टिसे भी मै उसे पढने लगा । उसका अब मुझ ऐसा दृढ सस्कार हो गया है कि मै रोज सवेरे उसके एकाध अध्याय पाठ कर लेता हूँ तब दूसरा काम देखता हूँ ।

मुझे यदि व्याख्यान देना कुछ आ गया है तो, यह भी मिस लार्ड की कृपा है । जब उन्हें यह मालूम हुआ कि व्याख्यान देनेकी त मेरा झुकाव है तभीसे वे मुझे इस विषयकी एक एक बात बतलाने ल उन्होंने ही मुझे खास तौर पर शिक्षा दी कि व्याख्यान देते समय प्रकार श्वासोच्छ्वास करना चाहिए, वाक्यमें कहाँ जोर देना ब और स्पष्ट उच्चारण कैसे करना होता है, इत्यादि । मै यह चाहता था कि लोगोंके सामने व्याख्यान देने लगूँ, परन्तु इसके मुझे ऐसी हवस न थी कि बुरा भला जैसा बने वैसा ही बकने लगूँ । स लोगोंके सामने ऐसे व्याख्यान दना कि जिनसे कोई लाभ नहीं, ब बुरा और भद्दा काम है । परन्तु बचपनसे मेरी यही इच्छा रही ससारकी उन्नतिमें म भी हाथ बटाऊँ, और इस कार्यके लिए मै ल सामने कुछ कह सकूँ ।

हैम्पटनकी वादविवाद सभा (Debating Society) से मुझे बडी प्रसन्नता होती थी। इस सभाके अधिवेशन प्रति शनिवारको सध्या समय हुआ करते थे, और जबतक मै हैम्पटनमे था, बराबर इस सभामे जाया करता था। मै सिर्फ इसी सभाके अधिवेशनोंमें उपस्थित नहीं रहता था, बल्कि एक और सभाके स्थापित करनेमें भी मै कारणीभत हुआ था। शामका भोजन होने पर हम सब विद्यार्थियोको २० मिनिटकी छुट्टी मिलती थी और यह समय गपशपमें ही बीता करता था। इसलिए वादविवाद और वक्तृत्वमें योग्यता प्राप्त करनेके हेतु हम लोगोंमेंसे बीस विद्यार्थियोंने एक सभा संगठित की। इस प्रकार बीस मिनिटका उपयोग करनेसे हम लोगोंको जो लाभ हुआ वह बहुत ही कम लोगोंको हुआ होगा।

दूसरे वर्षके अन्तमें मेरी माने और मेरे भाई जानने कुछ रुपये भेज दिये थे, और एक शिक्षकने भी कुछ सहायता कर दी थी जिससे मै छुट्टियामें अपने घर माल्डन जा सका। घर पहुँच कर मैंने देखा कि नमककी भट्टियाँ बन्द है और खानवाले मजदूरोंने हडताल टालकर कोयलेकी खानें भी बन्द कर दी है। मेने यह मालूम कर लिया कि जब मजदूरोंके पास दो तीन महीनोके वेतनकी रकम जमा हो जाती है, तब ऐसी हडताल हो जाया करती है। हडताल पडनेपर उन्हें अपनी अपनी बचतका रुपया खर्च करना पडता था, और जब सब रुपये खतम हो जाते थे तब उन्हें उसी मजदूरी पर फिर वही काम करना पडता था, या किसी दूरकी खानपर काम करनेके लिए पैसे खर्च करके जाना पडता था। दोनों हालतोंमें हडतालका फल खट्टा ही होता था। मै यह जानता था कि हडतालसे पहले खानके मजदूरोंका बहुतसा रुपया बंकमें जमा रहता था, पर जबसे मजदूरोंका पक्ष लेकर आन्दोलन मचानेवालोंने उन्हे अपने अधीन कर लिया तबसे, बडी किफायतशारीसे रहनेवाले लोग भी अपनी बचतसे हाथ धोने लगे।

मैं दो वर्ष बाद घर आया था, मुझमें बहुत कुछ सुधार गया था, यह देख कर मेरी माताको और परिवारके सभी लोगोंको हर्ष हुआ। मेरे वापिस आनेसे नीग्रो मात्रको, विशेषतः बूढ़ोंको आनन्द हुआ वह अपूर्व था। मुझे घर घर जा कर लोगोंसे पडा, उनके यहाँ भोजन करना पडा और हैम्पटनके अनुभवकी सुनानी पडी। इसके अतिरिक्त गिरजाघरमें, रविवारकी पाठशालामें, कई अन्य स्थानोंमें मुझे व्याख्यान भी देने पडे। पर जिस तलाशमें मैं था वह न मिली—कोई ऐसा काम न मिला जिससे मैं कमा लेता। हडतालके कारण कोई काम ही न था। हैम्पटन वापिस लिए मुझे राहखर्चकी जरूरत थी, पर छुट्टीका पहला एक महीना दौडधूपहीमें बीत गया।

इसी महीनेके अन्तमें मैं कामकी तलाशमें मकानसे बहुत दूर स्थान पर गया, परन्तु वहाँ भी कोई काम न मिला और रातके मैं घर लौटनेके लिए लाचार हुआ। जब मकान डेढ दो मीलके पर रह गया और चलते चलते मैं इतना थक गया कि आगे एक चलनेकी भी मुझमें शक्ति नहीं रही तब पासहीके एक मकानमें, बिलकुल बेमरम्मत पडा था, रात काटनेकी गरजसे घुस गया। कोई तीन बजे मेरा भाई जान वहाँ आया और उसने मुझे जगा हलकी आवाजसे कहा, ‘ कल रातको माका देहान्त हो गया ।’

इस दुःसमाचारने मेरे हृदय पर गहरी चोट पहुँचाई—मुझे बडा दुःख हुआ। कुछ वर्षोंसे मेरी मा बीमार थी सही, पर जिस रोज उससे बिदा होकर इधर कामकी तलाशमें चला आया उस रोज यह नहीं जानता था कि मैं अब इसे जीती न देख सकूँगा। मेरी इच्छा सदा ही रहा करती थी कि अन्त समयमें मैं उसकी सेवा शुश्रू करूँगा। हैम्पटनमें मैं बडे परिश्रमसे पढता था और यह सोचता कि खूब मिहनतसे पढकर मैं अपनी अवस्था सुधारूँगा और

ाको खुशी करूँगा। उसने कई बार कहा भी था कि मेरे लड़के अच्छा लिख पढ़कर खूब तरक्की करें और मैं उन्हें अच्छी अवस्थाम ेखनेके लिए जीती रहूँ।

मेरी माके मरनेपर कुछ ही दिनोंमें हमारे छोटे घरमें बड़ा कुप्रबन्ध ो गया। मेरी बहिन आमन्दाने अपनी शक्ति भर सब कुछ किया, र आखिर वह लड़की ही थी, घर सँभाल न सकी और मेरे सौतेले ापके पास इतना धन न था कि वह कोई नौकरानी रख लेता। हम ोगोंको कभी तो अच्छा भोजन मिल जाता और कभी बिल्कुल ही मिलता था। प्राय हम लोग एक कटोरीमें 'टोमेटो' और कुछ तले बिस्कुट, इतना ही भोजन पाने लगे। कपड़ोंकी भी यही दुर्दशा ई। सब बात ही बिगड़ गई। जिन्दगीमें सबसे अधिक दुःखदायी अव-र मेरे लिए यही था।

मेरी मदद करनेवाली रफनर बीबी मुझे अकसर अपने यहाँ प्रेमसे ुलाती थीं। इस मुसीबतमें भी उन्होंने मेरी कई तरहसे मदद की। ुट्टी समाप्त होनेसे पहले उन्होंने मुझे एक काम दिया। इसी वक्त मेरे रसे कुछ दूर एक खान पर भी मुझे काम मिला जिससे मेरे पास कुछ कम हो गई।

एक बार मुझे यह भी आशंका हुई थी कि अब मैं शायद हैम्पटन ा जा सकूँगा। परन्तु वहाँ लौट जानेकी इच्छा इतनी प्रबल हो उठी के उसके सामने सब विघ्नोंको तुच्छ समझकर मैं प्रयत्न करने लगा। ाड़ेके लिए मुझे कुछ कपड़ोंकी जरूरत थी। पर यह जरूरत रफा ा हुई। मेरे भाई जानने मुझे कुछ कपड़े ला दिये सही, पर वे काफी ा थे। न धन था, न कपड़े ही थे, पर एक बातसे मैं खुश था। ैम्पटन जानेके लिए राहखर्च मेरे पास काफी था। मुझे इस बातका ो पूरा भरोसा था कि जहाँ एक बार मैं वहाँ पहुँचा, तहाँ रवानका काम करके गुजारा कर लूँगा।

हैम्पटन-विद्यालय खुलनेसे तीन सप्ताह पहले मुझे मिस मेरी
एक पत्र मिला । उसे पढकर मुझे बडा हर्ष हुआ । उस
उन्होंने लिखा था कि मै तुमसे भवनको साफ सुथरा करने और
चीजे करीनेसे रखनेके काममें मदद लेना चाहती हूँ, इसलिए वि
खुलनेसे दो हफ्ते पहले ही यहाँ आ जाओ । बस, मेरा काम हो
खजानेमें अपने नाम कुछ रकम जमा करा सकनेका यह अच्छा अ
हाथ लगा । मैने हैम्पटनके लिए उसी समय प्रस्थान कर दिया ।

इन दो सप्ताहोंमें मैंने जो कुछ सीखा, उसे मै कभी न भू
मिस मैकी उत्तर प्रान्तके एक पुराने और नामवर कुलमें
हुई थीं, तथापि वे मेरे साथ खिडकियोंको साफ करतीं,
देती, बिस्तरोंको साफ रखतीं और कोई ऐसा काम नहीं था
वे किनारा कसती हों । खिडकियोके ऊपरके झरोखे जबतक
साफ न होते तबतक वे सन्तुष्ट न होती थीं । यह काम वे ह
छुट्टियोमें किया करती थीं ।

उस समय मे उनके कार्यका महत्त्व न समझता था । मे नहीं
सकता था कि उनके जैसी लिखी पढी, प्रभाववाली और कुली
एक अभागी जातिकी उन्नतिमें सहायता पहुँचानेके लिए इस
सेवाके कार्य क्यों करती है और इसमें इतना आनन्द क्यों मानत
परन्तु आगे मे परिश्रमसे इतना प्यार करने लगा कि किसी
पाठशालासे, कि जहाँ लडकोंको परिश्रमकी महत्ता न सिखलाई न
हो, एक पल भी मेरी पटती नहीं थी ।

हैम्पटनके आन्तिम वर्षमें दरवानका काम कर चुकनेके बाद मुझे ज
समय मिलता था उसका प्रत्येक मिनिट मै लिखने पढनेमें निताता
मैने यह निश्चय किया था कि परीक्षामें मेरा नम्बर बहुत ऊपर
और उपाधिदान-समारम्भमें मेरा नाम माननीयोंकी (Honour

र्चामे लिखा जाय। मेरा यह निश्चय सफल हुआ । १८७५ के
न मासमें मेरी हैम्पटनकी पढाई समाप्त हुई। हैम्पटनमें रहनेसे मुझे
बडे भारी लाभ हुए —

(१) मेरे सौभाग्यसे जनरल एस सी आर्मस्ट्राग जैसे अद्वितीय,
द्दार, सच्छील और परोपकारी महात्माके साथ मेरा समागम रहा।

(२) हैम्पटनमें ही पहले पहल मुझे यह ज्ञान हुआ कि यथार्थ
क्षासे मनुष्य कितनी उन्नति कर लेता है। हैम्पटन जानेसे पहले शि-
ाके विषयमें मेरा भी उतना ही ज्ञान था जितना कि साधारण लोगोंका।
समझता था कि ऐसी जिन्दगी, कि जिसमें शारीरिक परिश्रम करनेकी
ावश्यकता नही, और बडे आनन्दसे–आरामसे–दिन कटते है, शिक्षा
हाती है। हैम्पटनमें जाकर मैने सीखा कि परिश्रम करना न लज्जाका
ाम हे और न निन्दाका, हमें उससे प्रेम करना चाहिए। परिश्रम
रनेसे धन मिलता है, इसीलिए नही, बल्कि ससारको जिस बातकी
जरूरत है उसे करनेकी योग्यता हममें भी है इस प्रकारका जो आत्म-
वेश्वास है उसके लिए, स्वतत्रताके लिए और परिश्रमके लिए ही परि-
श्रमसे प्रेम करना मैने हैम्पटनमें सीखा। उसी विद्यालयमें मैने पहले
हल उस आनन्दका अनुभव किया जो परोपकारमें जीवन दे देनेसे
मिलता है। और यह बात भी मैंने उसी विद्यालयमे सीखी कि दूसरोंको
उपयोगी और सुखी बनानेमें जो लोग हद कर देते है वे ही सबसे अधिक
ाग्यशाली है।

मेरी पढाई समाप्त हुई उस समय, मेरे पास कुछ नहीं था। रुपयेकी
जरूरत थी। उस मौके पर कानेक्टिकटके होटलमें मैने
और विद्यार्थियोंके साथ खिदमदगारकी नौकरी कर ली।
यह होटल गरमीके दिनोंमें खुला करती थी। कानेक्टिकट तक
जानेके लिए मैने किसी तरह कुछ प्रबन्ध कर लिया था। होटलमें जा
कर मुझे मालूम हुआ कि मै खिदमदगारीका काम बिलकुल नही जानता,

फिर भी वहाँका मुख्य खिदमदगार मुझसे बडा खुश हुआ उसने मुझे चार पाँच बडे आदमियोंके मेजका प्रबन्ध सौंप दि परन्तु जब भोजन करनेवालाने देखा कि मैं बिलकुल नौसिखुआ —मुझे कुछ भी नहीं आता है तब तो उन्होंने मेरी खूब ही हँसी उ शुरू की—उन्होंने इतना तंग किया कि मुझे वहाँसे नौ दो ग्यारह ह पडा और उन बेचारोंको भी भोजनके लिए हाथपर हाथ धरके बैठ र पडा। इसका परिणाम यह हुआ कि खिदमदगारी तो मुझसे छीन गई, और परोसी थालियाँ उठाने रखनेका काम मेरे जिम्मे किया ग

पर मेरा तो यह निश्चय हो गया था कि किसी न किसी तरहसे ि मदगारका काम सीख लूँगा, और कुछ ही सप्ताहोंमें मैंने वह सीख भी लिया। इससे फिर मुझे खिदमदगारीका काम मिला। बाद, मुझे इसी भोजनालयमें मेहमानके नाते कई बार ठहरनेका अ प्राप्त हुआ है।

होटलका मौसिम बीत चुकने पर मै माल्डनमें अपने घर आया। आते ही मे नीग्रो लोगोंकी पाठशालामें शिक्षक नियत हुआ। मेरे नके सुखसमयका यह पहला अवसर था। मुझे इस बातसे बडी प्रस हुई कि अब मुझे अपने गाँवकी उन्नति करनेका अच्छा मौका मिल ग म पहलेसे ही यह जानता था कि इस गाँवके युवकोंको पुस्तकस ज्ञानके अलावे और भी बहुतसी बातोंकी आवश्यकता है। मै सबेरे आ अपना काम शुरू करता था और रातको दस दस बजेतक बैठा था तो भी काम खतम न होता था। रोजकी पढाईके सिवाय मैंने लड़ बाल सँवारना, बदन साफ रखना, कपडे धोना, इत्यादि बातें सिखलाईं। ब्रशसे रगडकर दाँत साफ करना और स्नान करना, इ बातोंकी ओर मैंने उनका ध्यान विशेष करके दिलाया। पढाईके ि मैने बडी बारीकीसे ब्रशका काम—करतब देखा है और मुझे इस विश्वास हुआ है कि यह भी उन्नतिके प्रधान साधनोंमेंसे एक है।

इस गाँवमें अनेक लोग ऐसे थे जो दिन भर काम करते थे और पढनेके लिए तरसते थे। इनके लिए मैंने नाइट स्कूल (रातका स्कूल) खोला। शुरूसे ही इस स्कूलमें उतनी ही भीड होने लगी जितनी कि दिनकी पाठशालामें होती थी। विद्यार्थियोंमें सभी उम्रके स्त्री पुरुष थे। ५०।६० वर्षके बूढे भी थे। ये लोग पढनेके लिए जैसी जी जानसे चेष्टा करते थे उसे देखकर हृदय पिघल जाता था।

रातका स्कूल और दिनका स्कूल चलाकर ही मैं स्वस्थ न हुआ। मैंने एक वाचनालय (लाइब्रेरी) और एक वादविवाद सभा भी स्थापित की। इसके सिवाय दो सण्डे स्कूलोंमें (रविवारकी पाठशालाओंमें) भी मैं पढाया करता था। दोपहरको माल्डनके स्कूलमें और रातको, माल्डनसे तीन मील दूर एक स्कूल था वहाँ, पढाया करता था। कई लडकोंको मैं घर पर भी पढाता था इसलिए कि वे माल्डन स्कूलमें दाखिल कराने लायक हो जायँ। वेतनका विचार किये बिना जिस किसीको विद्यालाभ करनेकी इच्छा होती थी उसीको, मैं पढा दिया करता था। किसी असहायकी सहायता करनेका अवसर आते ही मुझे बडा हर्ष होता था। पब्लिक फंडसे मुझे थोडासा वेतन मिलता था।

हैम्पटनमें पढते समय मेरे भाई जानने अपनी शक्तिभर मेरी मदद की। यही नहीं, किन्तु परिवारका खर्च चलानेके लिए उसने अपना सब समय कोयलेकी खान पर बिता दिया। मुझे मदद करनेके लिए उसने जान बूझकर अपने लिखने पढनेकी तरफ ध्यान न दिया। अब मुझे बडी इच्छा हुई कि हैम्पटनमें दाखिल करानेके लिए उसकी सहायता करूँ और फिर वहाँका खर्च चलानेके लिए अपनी कमाईमेंसे कुछ बचत किया करूँ। इन दोनों बातोंमें मुझे कामयाबी हुई। तीन सालमें मेरे बडे भाईने हैम्पटनकी पढाई खतम की और अब वह टस्केजीकी शिल्पव्यवसाय-शाखाका मुख्य मैनेजर है। वह जब हैम्पटनसे

लोट आया तब हम दोनोंने अपना धन और श्रम इकठा करके दत्तक भाई जेम्सको हैम्पटनमे भेज दिया और वह भी अब पोस्ट-मास्टर है । १८७७ अर्थात् मेरे माल्डनवासका दूसरा वर्ष भी मैं पहले वर्षकी तरह बिताया ।

जब हम लोगोंका घर माल्डनमें था तब 'कु क्लक्स क्लान Ku Kl Klan' नामकी एक सभाका बडा जोर था । यह सभा गोरोंकी और इसकी शाखायें भी अनेक थीं । इसका उद्देश्य था, काले लोगों व्योहारोंकी देखभाल करना और राजनीतिक क्षेत्रमे उन्हें आगे न ब देना । 'पट्रोलर्स–Patrollers' लोगोंके बारेमें मै सुन चुका था इन कु-क्लक्सवालोंके भी वैसे ही थोक रहते थे । बिना पासके एक ब तीसे दूसरी बसतीमें जाने न देना, बिना पासके और बिना कि गोरेके उपस्थित हुए कोई सभा न होने देना, इत्यादि बातोंमें गुलामों कार्योंका निरीक्षण करनेवाले लोग पट्रोलर्स कहे जाते थे ।

पट्रोलर्सकी तरह 'कु-क्लक्स-क्लान' का सारा काम प्राय: रातको हुआ करता था । पर पट्रोलर्ससे ये लोग शैतानी ज्यादा करते इनका असल मतलब यह था कि नीग्रो लोगोंकी राजनीतिक अभिलाषा नष्ट हो जानी चाहिए । पर ये इतनेसे ही सन्तुष्ट नहीं चाहते थे । ये हमारे गिरजाघरों और स्कूलोंको भी जला डालते और बहुतसे निरपराधी मनुष्योंको बडा दुःख देते थे । इनके न जाने कितने काले लोग कालके ग्रास बन गये !

इन लोगोंकी इस कार्रवाईसे मेरा खुन खौलता था । एक बार माल्ड कालों और गोरोंके बीच जो मुठभेट हुई थी उसे मैने देखी है । तरफ़ अनुमान एकएक सौ जवान थे । दोनों तरफके लोग जखमी मेरी मददगारिन रफनर बीबीके पतिको तो बडी गहरी चोट आई । रफनरने काले लोगोंको बचानेकी चेष्टा की और इसी अपराधके

मीन पर पटके जा कर उनपर ऐसी बेदम मार पडी कि फिर वे चगे ही हुए। दो जातियोंके बीचकी इस लडाईको देखकर मेरा मन यह गवाही ने लगा कि इस देशमें मेरी जातिवालोंको कोई आशा नही है। मै मझता हूँ कि कु-क्लुक्सका समय नवसगठन-कालमें अतिशय काले ब्बेके समान है।

कु-क्लुक्स-क्लानके समयके बाद जो कुछ अच्छी बाते हुई है उनकी रफ ध्यान दिलानेके लिए ही मैने दक्षिण अमेरिकाके इतिहासके इस द्वेगजनक अंशका विषय यहाँ छेडा। आज दक्षिण अमेरिकामें वैसे ोग नही है, और पहले थे इस बातको भी लोग भूल गये है। दक्षिण मेरिकामें अब बहुत ही थोडे स्थान ऐसे है जहाँ इन लोगोंकी सभायें ल सकें।

पाँचवाँ परिच्छेद ।

नवसगठन काल ।

सन् १८६७ से १८७८ के बीचके समयको नवसगठन सज्ञा दी जा सकती है । मैने हेम्पटनमें विद्यार्थीके नाते वेस्ट-वर्जीनियामें शिक्षकके नाते जो समय व्यतीत किया वह नवसगठन कालके अन्दर आ जाता है। इस कालमे काले लोग ग्रीक भाषाओको पढने और नोकरी करनेकी धुनमें थे ।

जिन लोगोने कई पीढी गुलामी की और उससे भी पहले पीढीतक निरे जङ्गली ही थे वे शिक्षाका ठीक ठीक अर्थ नहीं सकते । दक्षिण प्रान्तके प्रत्येक स्थानमे सब उम्र और हैसियतके इनमे ६०।७० वर्षके बूढे भी थे—दिनकी और रातकी पाठशाला भीड कर देते थे । उस समय लोगोंमें शिक्षा प्राप्त करनेकी अत्यन्त प्रशसनीय और उत्साहवर्धक थी, परन्तु सर्व साधारणका खयाल था कि थोडासा लिख पढ लेनेसे ही ससारके सब क्लेशों आपदाओसे छुटकारा मिल जायगा और बिना हाथ पैर हिलाये जिन्दगी कट जायगी । अगर कहीं उसने ग्रीक और लैटिन तो फिर क्या पूछना है, जो कुछ बात और इज्जत है वह उसीकी वह देवता समझा जाने लगेगा । मुझे स्वय इस बातका अनुभव है पहले पहल जब एक काले आदमीको, जो ग्रीक-लैटिन कुछ जानता था, मैने देखा तो मै भी उसके जैसा बन जानेकी इच्छा लगा था, क्योंकि मैं समझता था कि बस, इससे बडा आदमी कोई है ही नहीं ।

यों तो हमारे लिखे पढे अनेक लोग शिक्षक या उपदेशका काम ते थे, और उनमें सदाचारी और लोकहितके चाहनेवाले स्त्री-पुरुष थे, तो भी वहुतसे लोग ऐसे थे जो मजेमे गुजारा करनेके लिए ही कामको करते थे। कई एक शिक्षक तो अपना नाम लिख लेनेके तिरिक्त कुछ जानते ही न थे। ऐसे एक महात्मा मेरे पडो-ँ नौकरी ढूँढते ढूँढते आ गये थे। वहाँ यह प्रश्न उठा कि पृथ्वी गोल है या चिपटी ?" होनहार शिक्षक महाशयसे पूछा था कि, "आप लडकोको क्या बतलावेंगे ?" उन्होने जवाब दिया—आप लोगोंकी बहुसम्मति जिधर होगी मै वही सिखला दूँगा—पृथ्वी ल है, यह भी सिखलानेको मै तैयार हूँ और यह भी सिखला सकता कि पृथ्वी चिपटी है !"

यह तो शिक्षकोंकी अवस्था थी । अब धर्मका उपदेश करनेवालोंका ी हाल सुनिए। इनकी दशा तो और भी गई वीती थी। ऐसे निरक्षर-ट्टाचार्य और कुसस्कारपूर्ण दुराचारी लोग शायद और किसी विभागमे हीं मिलते। योग्यता हो या न हो, वे मानते यही थे कि "हमें ईश्व-ने उपदेश करनेका आदेश भेजा है।" धर्मप्रचार करनेका आदेश जैस तिसको मिलने लगा ! दो तीन दिन भी स्कूलमें जाकर नही पढा कि धर्मगुरुका कार्य करने लगे। 'आदेश' मिलनेका ढग भी बडा विचित्र था। गिर्जाघरमें लोग इकट्ठे हुए है और ऐसे समय एक आदमी मेज-के ऊपर धडामसे गिर पडता है। बहुत देरतक कुछ बोलता नही, ालता नहीं—एकदम सुन्न ! इसीसे चारो ओर यह खबर फैल जाती कि अमुक मनुष्यको 'आदेश' हुआ है। हरेक नीग्रो-गाँवमें ऐसी घट-नाय सप्ताहम दो चार बार हो जाया करती थी। अगर एक बारमें वह धर्मगुरु बननेको तैयार न हो सका तो वह फिर गिरता था या गिराया जाता था। इस तरह दो तीन बार गिरने पडनेसे उसे 'आदेश' मानना

ही पढता था। मुझे बडा भय था कि कहीं यह बला मुझ पर जाय, क्योंकि मै भी पढनेवालोंमेंसे एक था। पर मुझ पर कृपा थी जो इस मुसीबतसे मै बचा रहा।

धर्मगुरुओंकी सख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढने लगी। एक जाघरके बाबत तो मुझे याद है कि उसमें कुल लोग २००, और उनमें धर्मगुरु थे २०। पर अब इन धर्मगुरुओंका बहुत चरित्रसुधार हो रहा है और मै समझता हूँ कि २०-२५ उनमेंसे नालायकोंकी सख्या बहुत कुछ कम हो जायगी। अब शकी लीला पहलेकी तरह नहीं हुआ करती और रोजगार तरफ भी लोग झुकते जाते है। धर्मगुरुओंकी अपेक्षा शिक्षकोंका अधिक सुधरा हुआ है।

नवसगठन कालमे नीग्रो लोगोंकी दशा एक नन्हें बालककीसी वह जैसे अपनी माके ही भरोसे रहता है वैसे ही हर बातमें ये सयुक्त सरकारका (Federal Govt) मुँह ताकते थे। ऐसा स्वाभाविक भी था। क्योंकि सयुक्त सरकारने उन्हें स्वाधीनता दी और सारा राष्ट्र नीग्रो लोगोंके परिश्रमोसे दो शताब्दियातक बल्कि भी अधिक, बराबर लाभ उठाता रहा था। जब सरकारने हमें नता दे दी तो, उसका यह कर्त्तव्य होता है कि वह अपनी प्रजा कर्तव्यशील नागरिक बनानेके लिए सर्वसाधारणमे शिक्षाका यथा प्रबन्ध कर दे। मै यह समझता था कि रियासतोंने शिक्षाके लिए कुछ किया सो किया पर इसके साथ ही, मुख्य सरकारको पूरा सार्वत्रिक प्रबन्ध कर देना चाहिए था। ऐसा न करना मेरी झमें बडा भारी पाप था।

किसीका दोष ढूँढ निकालना और यह बतलाना कि क्या जाना उचित था, बहुत आसान है। पर उस समयकी हालत दे

लगता है कि सरकारने जो कुछ किया वही उचित था। पर मुझे कहना ही पडता है कि अगर कोई ऐसा रास्ता निकाल दिया जाता अमुक श्रेणीतक शिक्षा अथवा अमुक रकम तककी हैसियत ने पर अथवा दोनों ही होने पर वोट देनेका अधिकार मिल सकता है र काली तथा गोरी दोनों जातियों पर वोट-सबधी नियमका ईमान और वाईसे अमल किया जाता तो इसमें सरकारकी विशेष बुद्धिमानी मझी जाती।

नवसगठन कालमें मेरी उम्र कुछ अधिक नही थी—पचीसी ही पार र रहा था, पर मै यह समझता था कि बडी गलतियां हो रही है, न्तु जैसी हालत इस वक्त है वह अधिक दिन न रहने पायेगी। मेरी ह धारणा थी कि सगठन-पालिसी मेरी जातिके लिए ठीक नहीं है। सकी उठान ही ऐसी नीव पर की गई है जो अस्वाभाविक है और जसमें बडे दावपेच हैं। मैने देखा कि हम लोगोंको अपढ और अजान तला कर गोरे लोगोंको बडी बडी नौकरियाँ दी जाती है। उत्तर अमेरिकाके कुछ लोगोंको यह सूझी थी कि दक्षिणमें गोरे लोगोंका जो मरतबा है उससे बडा मरतबा नीग्रो लोगोंको दिलाना चाहिए, अर्थात् उनसे बडे ओहदों पर इन्हें नौकरी मिलनी चाहिए। ऐसा करके वे दक्षिणवालोंको नीचा दिखाना चाहते थे। पर मुझे तो इसमें नीग्रो लोगोंकी ही हानि देख पडी। इसके सिवाय राजनीतिक आन्दोलनमें फँसकर मेरे भाइयोंने अपने समीपके व्यवसायमें पक्के बनना और कुछ कमा खाना छोड दिया। वास्तवमें देखा जाय तो यह उनका मुख्य काम होना चाहिए था।

राजनीतिक कार्योंके मोहने मुझे ऐसा घेरा था कि मै उसके जालमें फँस जाता। पर मैं समझता था कि कर्मन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय और अन्तकरण अथवा, शरीर, मस्तक और हृदय (Hand bead and hoart) की

यथेष्ट शिक्षा पर उन्नतिकी नींव दृढ करनेसे मैं अपनी विशेष और यथार्थ कल्याण कर सकूँगा, और इसी विचारन जालमें फँसनेसे मुझे बचाया । कुछ नीग्रो लोग रियासतकी व स्थापक सभाके सदस्य होते थे, कुछ लोगोंको बडी अफसरी थी, पर उन्हें एक अक्षर भी पढना नहीं आता था, और चरित्र भी बहुत निर्बल था । दक्षिण अमेरिकाके एक शहरके चलते हुए मैंने सुना कि कुछ मजदूर किसीको पुकार रह ये लोग ईंटोंकी एक दुखडी इमारतपर काम कर रहे थे और किसी गवर्नरको पुकार कर कह रहे थे कि, ‘ जल्दी करो, और इ आओ । ’ मैंने कई बार ये शब्द सुने कि ‘ गवर्नर, जल्दी क गवर्नर, जल्दी करो ! ’ जिन गवर्नर महाराजकी इतनी थी उनका पता लगाना मैंने जरूरी समझा । पता लगानेसे मालूम कि वह एक काला आदमी था और एक बार वह अपनी लेफ्टनेंट गवर्नर हुआ था ।

इससे यह न समझना चाहिए कि सभी काले अधिकारी ऐसे ही उनमें भूतपूर्व सिनेटर बी के ब्रुस, गवर्नर पिकबॅक, तथा और भी सज्जन बडे ही योग्य और उपयोगी पुरुष थे । सभी लोग बेइमान समझे जाते थे, उनमेंसे कुछ लोग जार्जियाके भूतपूर्व गवर्नर साहब जैसे उदार और परोपकारी भी थे ।

अब यह कहनेकी अवश्यकता ही न रही कि अपढ नवसिखुए काले लोगोंने ऐसी ऐसी गलतियाँ कीं कि हद नहीं, परन्तु मेरी समझमें और लोग भी उस हालतम ही गलतियाँ करते । दक्षिण प्रान्तके बहुतेरे गोरे लोगोंका खयाल है कि अब अगर नीग्रो लोगोंको कुछ राजनीतिक अधि कार दिये जायँगे तो फिर वैसा ही बखेडा खडा होगा जैसा कि नवसंगठन कालमें हुआ था । परन्तु मुझे तो ऐसा भय बिलकुल नहीं है

रूके पैतीस वर्षोंमें जो बात नहीं थी वह अब हुई है—नीग्रो जवान
ब अधिक बुद्धिमान् और शक्तिमान् हुआ है और वह इस बातको सम-
ने लगा है कि दक्षिणके गोरेको नाराज करनेसे हमारा काम न बनेगा।
नोंदिन मेरी यह धारणा दृढ होती जाती है कि काले और गोरे
लोंके लिए वोटका समान अधिकार और निर्वाचनका एक ही मार्ग होना
ाहिए जिसमें आजकलकी तरह टालमटोल और दुटप्पी ब्योहारके लिए
गह ही न हो—ऐसा होगा तभी नीग्रो जातिके राजनीतिक प्रश्नोंका निब-
रा होगा। दक्षिणमें रहकर, वहाँका हाल अपनी आँखों देखकर मुझे
ह विश्वास हो गया है कि इसके विपरीत उपायका अवलम्बन करना
ग्रो लोगोंसे, गोरोंसे और सयुक्त राज्यकी सब रियासतोंसे अन्याय करना
—यह गुलामीसे कुछ कम पाप नही है और इस पापका बदला हमें
सी न किसी समय देना ही पडेगा।

माल्डनमें मै दो वर्षतक शिक्षकका काम करता रहा। वहाँ रहते हुए
ने अपने दो भाइयोके सिवाय और भी कितने ही स्त्री-पुरुषोंको हैम्पटन-
ालयमें भरती करा दिया और फिर १८७८ के शरद्दतुमे मैने कोल-
ियाके वाशिंगटन नामक स्थानमें जाकर अभ्यास—अध्ययन करना
ना। वहाँ मैं आठ महीने रहा। वहाँके अभ्याससे भी मुझे बडा लाभ
आ और कुछ अच्छे पुरुषोंसे समागम भी हुआ। वहाँके विद्यालयमें
ल्प-शिक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं था, और इससे मुझे दो तरहके नमूने
खनेका अच्छा मौका मिला। हैम्पटनके विद्यालयमे सिर्फ शिल्पशिक्षा ही
जाती थी। उसे मैं देख चुका था और उसका परिणाम भी समझ
का था। अब वाशिंगटनकी अशिल्पशिक्षासे वहाँकी शिल्पशिक्षाका
ाबला कर सकता था। वाशिंगटनके विद्यालयमें पढनेवाले कुछ पैसेवाले
। उनकी पोशाक भी अच्छी हुआ करती थी, यही नहीं बल्कि बिलकुल
जा फेशनसे ही वे रहा करते थे। यहाँके कुछ विद्यार्थी अधिक बुद्धि-

मान् होते थे । हैम्पटनका तो यह नियम था कि विद्यार्थीकी पढाईक खर्च विद्यालयके अधिकारी ही दिलाते थे। पर उन्हें भोजन, वस्त्र, पुस्त और घरके किरायेका प्रबन्ध खुद करना पडता था। इसका खर्च कु तो वे अपने कामसे कटा देते थे और कुछ नक्द भी देते थे। वाशिं टनके विद्यार्थियोंकी अवस्था इससे निराली थी। इन्हें भोजनादिके खर्च तो चिन्ता ही नहीं थी, रहा प्राइवेट खर्च, सो वह भी कहीं न कहींसे मि जाता था। हैम्पटनमें उन्हें मिहनत करके कमाना पडता था और इ उनके चरित्रगठनमें बडी मदद होती थी। वाशिंगटनके विद्यार्थी अ बल पर खडे होना बहुत कम जानते थे। बाहरी भूलभुलैयामें ही वे रहते थे। तात्पर्य, मैने यह देखा कि हैम्पटनके विद्यार्थी अपनी शि बडी सुदृढ नींव पर आरभ करते थे और यहॉंके विद्यार्थियोंमें वह ब नही थी। यहॉंके विद्यार्थियोंकी पढाई समाप्त होने पर उन्हें लैटिन ग्रीक भाषाका ज्ञान अधिक होता था, पर जीविकानिर्वाह और व्य हारका ज्ञान कम होता था। हैम्पटनके विद्यार्थी पढाई समाप्त क देहातोंम जाकर बडे शौकसे अपनी जातिके लोगोंके लिए काम क थे। यहॉंके विद्यार्थियोंको आरामतलबीकी आदत पड जाती थी इसलिए वे परिश्रमसे भागते थे। होटलमें खिदमतगारी करना या प मानकारोंमें* पोर्टर होना ही उनके जीवनकी इतिकर्तव्यता हो जाती

मै जब वाशिंगटनमें पढता था तब, दक्षिणसे आये हुए काले ल यह शहर ठसाठस भर गया था। बहुतसे लोग तो इसी गरजसे आय कि वाशिंगटनमें जाकर जरा मजा-मौज उडावें। कुछ लोगोंको सरकारी काम मिल गये थे, और बहुतसे लोग नौकरीकी तल आये थे। बहुतसे काले लोग-इनमें बहुतेरे बडे होशियार बुद्धिमान् थे-अमेरिकाकी पार्लियामेंट—House of Repre atives—में सदस्य थे, और आनरेबल ब्री के ब्रूस नामके सज्जन सिनेटमें थे। इन सब कारणोंसे काले लोगोंके लिए वाशिगटन शहर बडा ही मनोहर और प्रिय हुआ था। इसके सिवाय, वे यह भी जानते थे कि कोलंबिया प्रदेशमें कानूनकी सुनाई होती है। वाशिगटनके काले लोगोंकी सार्वजनिक पाठशालायें अन्य स्थानोंकी पाठशालाओंसे बहुत अच्छी होती थीं। यहाँ मैंने अपने जातिभाइयोंकी दशाका भली भाँति निरीक्षण किया। उनमें कई तो बडे लायक आदमी थे, तो भी बहुतेरोंका दिखौआपन देखकर मुझे बडी चिन्ता हुई। कितने ही काले नवयुवक ऐसे थे कि जिनकी आमदनी सप्ताहमें चार डालरसे अधिक नहीं, पर वे रविवारके दिन ऐसा शाही खर्च किया करते थे मानो इनके पास रुपयोंकी कमी नहीं—पेन्सिलबनियाकी सडक पर गाडीमें बैठ इधर उधर टहलनेमें दो चार डालर खर्च करना इनके लिए मामूली बात थी। सरकारसे ७५ या १०० डालर मासिक वेतन पानेवाले और हर महीने कर्जका बोझ बढानेवाले कितने ही युवकोंको मैंने अपनी आँखों देखा। मैंने ऐसे भी लोगोंको देखा है कि जो पहले प्रतिनिधि सभा याने पार्लियामेंटमें प्रतिनिधि बनकर बैठते थे, और अब बिलकुल निकम्मे कंगाल रोटीके मुँहताज हो रहे हैं। कितने ही लोग छोटी छोटी बातोंके लिए भी सरकारका मुँह ताकते थे। इस तरहके लोगोंमें अपनी हालत बदलनेकी इच्छा बहुत कम थी और जो थी भी, उसे पूर्ण करना वे सरकार पर ही छोडे बैठे थे। उस समय और उसके बाद भी, कई बार मैंने सूचित किया कि ऐसे लोगोंको किसी न किसी तरह यहाँसे उठाकर देहातोंमें छोड देना चाहिए और वहाँकी सुदृढ तथा विश्वस्त भूमाताके अंक पर ही इनकी 'रोपाई' होनी चाहिए। सारे विजयी राष्ट्रों और लोगोंने यहींसे अपनी उन्नतिको आरंभ किया है। आरंभमें तो यह उन्नतिका मार्ग बडा विकट और लंबा पड़ा मालूम होगा, पर यही सच्चा और सीधा मार्ग है।

---

* अमरिकामें यह एक तरहकी गाडी होती है जिसमें सोनेका सुभीता रह

वाशिंगटनमें मैने कुछ लडकियांको देखा । उनकी माताय कपडे धोनेका काम करती थीं । उन लडकियोंने भी यह काम उसी पुरान लकीर पर सीख लिया था । बादको ये लडकियाँ स्कूलोंमें जाने लगी और वहाँ सात आठ वर्ष रहीं । पढाई समाप्त होने पर उन्हें कानी पोशाकों, कीमती टोपियों और कीमती जूतोंकी जरूरत पढने लगी तात्पर्य, उनकी आवश्यकतायें बढीं, पर उन्हें रफा करनेकी लियाक न आई ! सात आठ वर्ष पढने लिखनेमें बीतनेसे अब अपना पुरा रोजगार करनेम उनकी तबियत न लगती थी, उस रोजगारस उन्हाने हाथ धोये । परिणाम यह हुआ कि उनमसे कितनी ही लडकि तबाह हो गईं । लडकियोंको अगर मानसिक शिक्षाके साथ (मेरी सम झम भाषा, या गणित, इनमेंसे किसी एक विषयका ज्ञान करा देना चाहि जिसमें मन सुदृढ और सुसस्कृत हो,) धोबीके व्यवसायकी आधुनि शिक्षा या ऐसा ही कोई दूसरा काम सिखलाया जाता तो म समझ हूँ कि बडा लाभ हुआ होता ।

छठा परिच्छेद।

कृष्णवर्ण और ताम्रवर्ण जाति।

जब मैं वाशिंगटनमें रहता था उस समय, इस बातका बडा आन्दोलन हो रहा था कि वेस्ट वर्जीनियाकी राजधानी वीलिंगसे हटाकर किसी मध्यवर्ती स्थानमें लाई जानी चाहिए। इस आन्दोलनका यह परिणाम हुआ कि सरकारने तीन शहर चुने और यह घोषित किया कि इनमेंसे जिस शहरके लिए अधिक सम्मति होगी वहीं राजधानी की जायगी। इन शहरोंमें मेरे गाँव माल्डनके समीप लगभग पाँच मीलके फासले पर चार्लस्टन नामक स्थान पडता था। वाशिंगटन विद्यालयकी मेरी पढाई समाप्त होनेके समय चार्लस्टनके गोरोंकी पचायतसे मुझे इस लिए निमत्रण आया कि मैं वहाँ जाकर चार्लस्टनकी तरफसे उद्योग करूँ। मुझे इस निमन्त्रणसे आश्चर्य और आनन्द दोनों हुए। मैंने निमन्त्रण स्वीकार किया, और रियासतके कई हिस्सोंमें बराबर मैं तीन महीने तक व्याख्यानोंकी झडी लगाये रहा। चार्लस्टनको इस काममें कामयाबी हुई और इस समय वहीं सरकारकी अटल राजधानी है।

इस आन्दोलनमें मेरा व्याख्यान कुछ मशहूर हो गया और इस लिए बहुतेरोंने चाहा कि मैं राजनीतिक कार्योंमें किसी तरह योग देने लगूँ। पर मैं इससे दूर ही रहना चाहता था, क्योंकि मुझे इस बातका पूरा विश्वास था कि मैं और किसी भी कामसे अपनी जातिकी इससे अधिक सेवा कर सकूँगा। उस समय मुझे अपने लोगोंके लिए शिक्षा, व्यवसाय और जायदादका कोई आधार निर्माण करनेकी बडी आवश्यकता मालूम होती थी, और इस लिए राजकीय अधिकार प्राप्त करनेके बदले उक्त त्रिपुटी या तीन बातोंके लिए प्रयत्न करनेमें विशेष लाभ था। अगर

वाशिंगटनमें मैने कुछ लटकियोको देखा । उनकी मातायें कपडे धोनेका काम करती थीं । उन लडकियोंने भी यह काम उसी पुराना लकीर पर सीख लिया था । बादको ये लडकियाँ स्कूलोंमे जाने लगीं आर वहाँ सात आठ वर्ष रही । पढाई समाप्त होने पर उन्हें कीमती पोशाकों, कीमती टोपियों और कीमती जूतोंकी जरूरत पडने लगी । तात्पर्य, उनकी आवश्यकतायें बढीं, पर उन्हें रफा करनेकी लियाकत न आई ! सात आठ वर्ष पढने लिखनेमें बीतनेसे अब अपना पुराना रोजगार करनेमें उनकी तबियत न लगती थी, उस रोजगारसे भी उन्हाने हाथ धोये । परिणाम यह हुआ कि उनमेंसे कितनी ही लडकियाँ तबाह हो गईं । लडकियोंको अगर मानसिक शिक्षाके साथ (मेरी समझमें भाषा, या गणित, इनमेंसे किसी एक विषयका ज्ञान करा देना चाहिए जिसमें मन सुदृढ और सुसस्कृत हो,) धोबीके व्यवसायकी आधुनिक शिक्षा या ऐसा ही कोई दूसरा काम सिखलाया जाता तो मे समझता हूँ कि बटा लाभ हुआ होता ।

छठा परिच्छेद।

कृष्णवर्ण और ताम्रवर्ण जाति।

जब मै वाशिंगटनमें रहता था उस समय, इस बातका बडा आन्दोलन हो रहा था कि वेस्ट वर्जीनियाकी राजधानी वीलिंगसे हटाकर किसी मध्यवर्ती स्थानमें लाई जानी चाहिए। इस आन्दोलनका यह परिणाम हुआ कि सरकारने तीन शहर चुने और यह घोषित किया कि इनमेंसे जिस शहरके लिए अधिक सम्मति होगी वहीं राजधानी की जायगी। इन शहरोंमें मेरे गाँव माल्टनके समीप लगभग पाँच मीलके फासले पर चार्ल्स्टन नामक स्थान पडता था। वाशिंगटन विद्यालयकी मेरी पढाई समाप्त होनेके समय चार्लस्टनके गोरोंकी पचायतसे मुझे इस लिए निमन्त्रण आया कि मै वहाँ जाकर चार्लस्टनकी तरफसे उद्योग करूँ। मुझे इस निमन्त्रणसे आश्चर्य और आनन्द दोनों हुए। मैंने निमन्त्रण स्वीकार किया, और रियासतके कई हिस्सोंमे बराबर मै तीन महीने तक व्याख्यानोंकी झडी लगाये रहा। चार्लस्टनको इस काममें कामयाबी हुई और इस समय वही सरकारकी अटल राजधानी है।

इस आन्दोलनमे मेरा व्याख्यान कुछ मशहूर हो गया और इस लिए बहुतेरोंने चाहा कि मैं राजनीतिक कार्योंमें किसी तरह योग देने लगूँ। पर मैं इससे दूर ही रहना चाहता था, क्योंकि मुझे इस बातका पूरा विश्वास था कि मै और किसी भी कामसे अपनी जातिकी इससे अधिक सेवा कर सकूँगा। उस समय मुझे अपने लोगोंके लिए शिक्षा, व्यवसाय और जायदादका कोई आधार निर्माण करनेकी बडी आवश्यकता मालूम होती थी, और इस लिए राजकीय अधिकार प्राप्त करनेके बदले उक्त त्रिपुटी या तीन बातोके लिए प्रयत्न करनेमें विशेष लाभ था। अगर

मेरी बात पूछिए तो राजनीतिक क्षेत्रमें मुझे कामयाबी अवश्य होती, परन्तु यह कामयाबी एक तरहकी खुदगरजी (स्वार्थपरता) ही थी, और अगर मैं इसीके पीछे पड जाता तो अपने समाजकी उन्नतिमें हाथ बँटानेके कर्तव्यसे विमुख हो जाता।

नीग्रो-समाजकी इस उन्नतिके समयमें, स्कूल और कालेजमें जानेवाले बहुतेरे विद्यार्थी आगे चल कर बडे बडे वकील या प्रतिनिधि सभाके सदस्य बनना चाहते थे और बहुतसी स्त्रियाँ वाद्यनकलाकी अध्यापिका बनना चाहती थीं, परन्तु मेरा विचार कुछ और ही था। मैंने निश्चय किया था कि पहले अच्छे वकील, योग्य प्रतिनिधि और गायनवादन कलाके उत्तम अध्यापक निर्माण करनेकी भूमिका तैयार करनी चाहिए।

गुलामीके दिनोंमें एक बूढे नीग्रोको सरगी सीखनेकी बडी इच्छा हुई और उसने एक तरुण संगीत-मास्टरसे प्रार्थना की, परन्तु मास्टरको यह विश्वास नहीं होता था कि यह बूढा सरगी सीख जायगा। इस लिए उसने उसे नाउम्मेद करनेकी गरजसे कहा, “ जेक चचा, मैं आपको सरगी तो सिखला दूँगा, पर पहले सबकके लिए मैं आपसे तीन, दूसरेके लिए दो और तीसरेके लिए सिर्फ पाव डालर लूँगा। ” जेक चचा बोले, “ ठीक है, मुझे मंजूर है, पर पहले मुझे आप अखीरका सबक ही दीजिए। ” इस वक्त भी लोगोंकी ऐसी ही परिस्थिति हो रही था।

रियासतकी राजधानी बदलने पर मुझे एक और आमन्त्रण मिला, और उससे मुझे बहुत ही आश्चर्य और आनन्द हुआ। जनरल आर्मस्ट्रांगने इस अर्थका एक पत्र भेजा कि हैम्पटनमें आगामी उपाधिदान सभारंभके समय ग्रेजुएट हुए विद्यार्थियोंको तुम कुछ उपदेश दो। मैंने कभी स्वप्नमें भी इस बहुमानकी कल्पना नहीं की थी। मैंने अपनी शक्तिभर चिन्तापूर्वक एक स्पीच तैयार की। इस स्पीचके लिए मैंने ‘The force that wins’ अर्थात् ‘ यशस्वी शक्ति ’ यह विषय चुना था।

छ वर्ष पहले मै जिस रास्तेसे हैम्पटनके विद्यालयमे विद्यार्थीके नाते भरती होनेके लिए गया था, इस बार स्पीच देनेके लिए भी मै उसी रास्तेसे गया, पर इस बार मै रेलगाडीमे सवार था। मेरी पहली सफरमें और इस सफरमें कितना अन्तर है! पॉच वर्षकी अवधिमें शायद ही किसी मनुष्यकी अवस्थामें इतना परिवर्तन हुआ होगा।

हैम्पटनमें शिक्षक और विद्यार्थी, दोनोंने ही शुद्ध अन्तःकरणसे मेरा स्वागत किया। वहॉ मैने देखा कि विद्यालयने पहलेसे कहीं अधिक उन्नति की है और नीग्रो लोगोंकी हालत सुधारने और जरूरतोंको रफा करनेमें उसकी उपयोगिता दिनोंदिन बढ रही है, शिक्षाप्रणालीमें भी बहुत कुछ सुधार हो रहा है। हैम्पटन-विद्यालय किसी नमूनेकी नकल नहीं था, बल्कि उसमें नीग्रो लोगोंकी अवस्था सुधारने और उनकी आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेके विचारसे ही जनरल आर्मस्ट्रागके उदार नेतृत्वमें सुधारका प्रत्येक कार्य हुआ करता था। अपढ लोगोंमें शिक्षाप्रचार तथा अन्य परोपकारके कार्य करते समय शिक्षित लोग प्राय पुरानी लकीर ही पीटते जाते हैं। वे इस बातको भूल जाते है कि हमे किन लोगोंमें काम करना है, उनकी क्या क्या आवश्यकतायें है, और उनकी शिक्षाका ध्येय क्या होना चाहिए। इन बातोंको भूल कर वे एक ही शिक्षाप्रणालीके सॉचेमें नये पुराने विद्यार्थियोंको ढालते जाते है, परन्तु हैम्पटनमें यह बात न थी।

उपाधिदानसमारभके समय मैने जो व्याख्यान दिया उससे लोग बहुत प्रसन्न हुए और बहुतोंने अपनी प्रसन्नता प्रकट करके मुझे खूब ही उत्साहित किया। मै शीघ्र ही वेस्ट वर्जीनियामे अपने गॉवको वापिस चला आया, और फिर पाठशालामें पढानेका विचार करने लगा। इसी बीच अर्थात् १८७९ में एकाएक मुझे जनरल आर्मस्ट्रागका पत्र फिर मिला। उन्होंने इस पत्रमें शिक्षकका काम करने और रही सही पढाई पूरी

करनेके लिए चले आनेको लिखा था। वेस्ट वर्जीनियाम शिक्षकका काम करते समय मैने अपने दो भाइयोंके अतिरिक्त और चार युवकोंको हैम्पटन-विद्यालयमें भरती करानेके लिए बडी तैयारी की थी। इसका फल यह हुआ कि जब ये विद्यार्थी हैम्पटन पहुँचे तो उनकी योग्यता देखकर शिक्षक इतने प्रसन्न हुए कि उनको उन्होंने एकदम ऊपरके दर्जेमें भरती कर लिया। मै समझता हूँ कि यही देखकर हैम्पटनके विद्यालयमे मुझे शिक्षकका काम करनेके लिए बुलाया था।

मैंने जिन विद्यार्थियोंको हैम्पटन भेजा उनमेंसे एकका नाम है डाक्टर सेमुएल ई कर्टने। ये इस समय बोस्टन शहरके बडे डाक्टरोंमें गिने जाते है और वहाँके स्कूल-बोर्डके मेबर भी हे।

इस समय जनरल आर्मस्ट्रागने इडियन लोगोंको पहले पहल शिक्षा देनेका प्रयोग करना आरभ किया था। उस समय बहुत कम लोगोंको यह आशा थी कि इडियन लोग भी लिख पढकर कुछ काम लायक हो जायेंगे। जनरल आर्मस्ट्रागके मनमें यह समाई कि यह प्रयोग विशाल परिमाण पर और ढंगके साथ करना चाहिए। पश्चिम प्रान्तके जगलोंमेंसे वे जगली और बिल्कुल अपढ ऐसे एक सौसे भी ज्यादा इडियन ले आये, उनमे बहुतेरे युवा भी थे। जनरल आर्मस्ट्राग चाहते थे कि मै उन सब इडियनोंका पितृवत् पालक बनूँ-अर्थात् एक ही मकानमें उनके साथ रहकर उनकी शिक्षा, चालढाल और रहनसहनकी देखभाल किया करूँ। इस कार्यमें मोहकता अवश्य थी, पर वेस्ट वर्जीनियाके कार्यमे मैं इतना मगन हो गया था कि उसे छोड देना मेरे लिए बडे भारी कष्टका कारण था, पर मेंने दिलको मजबूत करके उस कामको छोड ही दिया, क्याकि जनरल आर्मस्ट्रागकी आज्ञाको म टाल नहीं सकता था।

हैम्पटन जाने पर मैं ७५ इंडियन विद्यार्थियोंके साथ एक मकानमें रहने लगा। मै ही अकेला एक ऐसा आदमी था जो उनकी जातिके बाहर था। शुरू-शुरूमें मुझे बडा सन्देह था कि इस कार्यमें मै कैसे कामयाब हो सकूँगा। मै भली भाँति जानता था कि इंडियनोंके दिमाग हम लोगोंसे बहुत ऊँचे है। वे अपनेको गोरोंसे भी बडे मानते थे—इसीसे अन्दाज किया जा सकता है कि गुलामीको महत्पाप समझनेवाले इंडियन गुलामीमें पले हुए नीग्रो लोगोंको क्या समझते होंगे। गुलामीके दिनोंमें इंडियन लोगोंके भी बहुतसे गुलाम थे। इन सब बातोंके सिवाय सब लोगोंको यह विश्वास हो गया था कि इंडियन लोगोंको पढ़ाने और सुधारनेकी चेष्टा कभी फलवती नहीं हो सकती। यह सब होते हुए भी मैंने यह प्रण कर लिया कि मे दिल लगाकर, सावधानीके साथ काम करूँगा और सफलता प्राप्त किये विना न रहूँगा। कुछ ही दिनोंमें इन इंडियनोंको मेरा विश्वास हो गया—वे मुझसे प्रेम करने लगे और मुझे आदरकी दृष्टिसे देखने लगे। इंडियनोंके विषयमे और लोग चाहे जो कहें, परन्तु मेरा अनुभव तो यह है कि और मनुष्योंके समान वे भी मनुष्य हैं, उनके साथ अच्छा बर्ताव करनेसे वे प्रसन्न रहते हैं और बुरा वर्ताव करनेसे नाराज होते है। जब उन्हें मेरा परिचय हो गया तब, वे मुझे सुखी करनेका प्रयत्न भी करने लगे। पर उन्हें अपने लंबे बालोंसे, कम्बल ओढनेसे और तबाकू पीनेसे इतनी प्रीति थी कि वे इन बातोंको छोडना पसन्द नहीं करते थे, और ऐसे ही कारणोंसे गोरे लोग उन्हें असभ्य और जगली समझते थे।

अँगरेजी भाषा सीखनेमें इंडियन बहुत पिछड जाते थे सही, पर और और विषयोंमें तथा कलाकौशल सीखनेमें काले नीग्रो और लाल इंडियन विद्यार्थियोंमें कोई बडा भारी अन्तर न था। मै इस बातसे

देखिए कि वे किस ढगसे मिलते हैं, तब मेरे उक्त कथनकी यथार्थता प्रकट हो जायगी । मेरे कथनका तात्पर्य जार्ज वाशिगटनके विषयमें कही गई एक बातसे विशेष स्प होता है । रास्तेमें जार्ज वाशिंगटनको देखकर एक नीग्रोने शिष्टाचारसे अपनी टोपी ऊपर उठाई । जार्ज वाशिगटनने भी इसके उत्तरमें अपनी टोपी उठाई । इस पर उनके कई गोरे मित्रोंने उनसे कहा, “ आप इतने बडे आदमी होकर एक अदने काले आदमीके सामने टोपी उठाते है, यह ठीक नही है । ” इस पर जार्ज वाशिगटनने जवाब दिया–“ क्या आप समझते है कि मै किसी काले आदमीको अपनेसे बढकर विनयशील बन जाने दूँगा ? ”

जिस समय मै हैम्पटनमें इडियन युवाओंकी निगरानी करता था, मेरे देखनेमें एक दो अवसर ऐसे आये जिनसे अमेरिकाके वर्णभेदकी विचित्रताका पता लग जाता है । एक इडियन लडका बीमार हुआ । उसे मुझे वाशिगटन ले जाना पडा, और वह अपने पश्चिमाञ्चलके अरण्यप्रदेशमें वापिस पहुँचा दिया जाय इसके लिए उसे उस प्रदेशके सेक्रेटरीके हवाले करके उससे रसीद लेनी पडी । उस समय मुझे ससारकी रीतिनीतिसे विशेष परिचय नहीं था । मै वाशिगटनको जा रहा था । रास्तेमें स्टीमरमें, भोजनकी घटी बजी । और सब लोग भोजन करनेके लिए चले गये, पर मै नहीं गया–सबके निपटनेकी राह देखता रहा । जब सब मुसाफिर भोजन कर चुके तब मै उस लडकेके साथ भोजनगृहमें गया । पर वहाँका एक आदमी मुझसे बडी शिष्टताके साथ बोला–“उस लडकेको तो भोजन मिलेगा पर आपको नहीं। ” उस लडकेका और मेरा रग एकहीसा था, पर न जाने उस आदमीने हम दोनोंकी जाति कैसे पहचान ली । इस काममें वह बडा चतुर था इसमे सन्देह नहीं । हैम्पटन–विद्यालयके अधिकारियोने मुझसे कह दिया था कि वाशिगटन

कर तुम अमुक होटलमें ठहरना। उस होटलमें पैर रखते ही एक क्लर्कने पष्ट शब्दोंमें कह दिया कि उस इंडियनको तो यहाँ जगह मिल ी पर तुम्हारे लिए कोई प्रबन्ध न हो सकेगा।

के बाद, इसी तरहका एक और उदाहरण देखनेमें आया। एक एक गाँवमें गया था। उस समय वहाँ इतनी खलबली मच रही थी न्वाबीका अमल होनेमें थोड़ी ही कसर थी। इस खलबलीका कारण भी मजेदार था। एक काले रंगका आदमी वहाँके होटलमें आ टिका था। वह मरक्कोका रहनेवाला था और अपने सुभीतेके लिए अँगरेजी भाषा बोलता था। एक नीग्रो आदमी गोरोंके होटलमें आके ठहरे और अँगरेजी बोले! यह उस गाँवके गोरोंसे न सहा गया, पर पीछे जब यह मालूम हुआ कि वह अमेरिकन नीग्रो नहीं है तब लोगोंको शान्ति हुई। उस मनुष्यको भी यह शिक्षा मिल गई कि अब यहाँ अँगरेजी बोलनेका काम नहीं।

इंडियन विद्यार्थियोंके साथ एक वर्ष बिता चुकने पर मुझे हैम्पटनमें एक और मौका मिला। पिछली बातोंको सोचनेसे यही कहना पड़ता है कि आगे चल कर टस्केजीमें योग्यतापूर्वक काम करनेके लिए जिस तैयारीकी आवश्यकता थी वह हासिल करनेके लिए ही ईश्वरने मानो यह अवसर दिया। बहुतसे स्त्री-पुरुषोंको विद्या प्राप्त करनेकी बड़ी अभिलाषा थी, पर उनमें भोजन-वस्त्र और पुस्तकोंका खर्च जुटानेकी सामर्थ्य न थी। जनरल आर्मस्ट्रांगको यह बात मालूम थी और इसलिए वे चाहते थे कि हैम्पटन–विद्यालयके साथ ही एक नाइट स्कूल खोला जाय और उसमें बुद्धिवान् और होनहार स्त्री-पुरुषोंकी पढ़ाईका प्रबन्ध हो—दिनमें ये लोग दस घंटे काम किया करें और रातको दो घंटे स्कूलमें पढ़ें। इन लोगोंको मेहनताना इतना दिया जाना तै हुआ कि उसमेंसे भोजनखर्चके बाद कुछ बचत हो जाय, जो स्कूलके खजा-

नेमें जमा की जाय, और एक दो वर्ष नाइटस्कूलमें पढकर जब ये दिनकी पाठशालामें भरती किये जायँ, यह बचत उनके भोजन-खर्चके लिए दी जाय। यह एक ऐसी योजना थी कि जिससे, विद्यार्थियोंको हर तरहसे, अर्थात् शिक्षा, पुस्तकों, चरित्रबल और व्यवसायकी दृष्टिसे लाभ ही लाभ था।

जनरल आर्मस्ट्रागने यह नाइट स्कूल मुझे सौंप दिया और मैंने भी उसे खुशीसे लिया। शुरू-शुरूमें ऐसे बारह स्त्री-पुरुष भरती हुए जिन्हें पढनेकी बडी उत्कठा थी और जो शरीरसे सुदृढ भी थे। दिनको पुरुष आरेसे लकडी चीरनेका और स्त्रियाँ कपडे धोनेका काम करता थीं। दोनों काम कुछ आसान नहीं थे, पर मुझे इन विद्यार्थियोंने जितना प्रसन्न किया उतना और किसीने भी नहीं किया। ये अच्छे छात्र थे और इन्होंने अपने कामोंको भली भाँति सीखा। लिखने प नेसे इनको इतना स्नेह हो गया था कि नींद लेनेकी घटी बजनेसे व लाचार होकर अपना बस्ता बाँधते थे, और कभी कभी तो सोनेका समय हो जाने पर भी पढते रहते थे।

इन लोगोंने दिनमें जी-तोड मिहनत करने और रातको पढनेमें ऐसा अपूर्व उत्साह दिखाया कि मैंने इन लोगोंका नाम ही ‘ The Plucky Class–अनूठा दर्जा रख दिया। यह नाम तुरन्त फैल गया। नाइट स्कूलमें जो विद्यार्थी कुछ दिन रह कर अपनी कुछ करामत दिखलाता था उसे मैं इस प्रकारका सरटिफिकेट देता था—

“ जेम्स स्मिथको सरटिफिकेट दिया जाता है कि यह हैम्पटन विद्यालयके अनूठे दर्जेका विद्यार्थी है, यह परिश्रमपूर्वक विद्याप्राप्तिके कार्यमें कभी विचलित नहीं हुआ—बराबर टिका रहा है। ”

विद्यार्थी इस सरटिफिकेटकी बडी कदर करने लगे, और इससे नाइट स्कूलका यश दिनोंदिन बढने लगा। कुछ ही सप्ताहोंमें नाइटस्कूलके

विद्यार्थियोंकी सख्या २५ हो गई। इन विद्यार्थियोंने पढनेके बाद अपनी अच्छी उन्नति की। प्राय: सभी इस समय दक्षिण प्रान्तमें अच्छे अच्छे ओहदोंपर काम कर रहे हैं। हैम्पटन-विद्यालयका नाइट स्कूल जब शुरू हुआ तब उसमें सिर्फ १२ विद्यार्थी थे, पर अब उसमें तीन चार सौ छात्र पढते है, और हैम्पटन-विद्यालयमें नाइट स्कूल एक बडे महत्त्वकी सस्था गिनी जाती है।

सातवाँ परिच्छेद।

टस्केजीमें आरम्भके दिन।

हैम्पटनमे जब मेरे जिम्मे नाइट स्कूल और इंडियन विद्यार्थिया देख भाल थी तब मै वहांके शिक्षकोसे कुछ पढ़ता भी रहता था मेरे उन शिक्षकोंमें जनरल आर्मस्ट्रांगके बादके (आजकलके) प्रिन पल रे डाक्टर एच बी फ्रिसेल् भी एक थे।

सन् १८८१ के मई मासमें, अर्थात् नाइट स्कूलका काम शुरू हो एक वर्ष बाद मुझे अकस्मात् अपने जीवनके मुख्य कार्यको शुरू क नेका अवसर प्राप्त हुआ। एक दिन रातको, नित्य प्रार्थना समाप्त हो पश्चात् जनरल आर्मस्ट्रांगने यह बात छेड़ी कि अलबामा रियास टस्केजी नामक छोटेसे ग्राममे काले लोगोंके लिए एक नार्मलस्कूल खु नेवाला है, मुझसे अलबामाके कुछ सज्जनोंने किसी ऐसे मनुष्य सिफारिश करनेके लिए लिखा है जो इस पाठशालाको चला। उन लोगोंने शायद यह समझ रक्खा था कि इस कामके ल। काला आदमी न मिलेगा, और इसलिए उन्होंने जनरल किसी गोरे मनुष्यकी सिफारिश चाही थी। दूसरे दिन जनरल गने मुझे अपने दफ्तरमें बुलाकर पूछा—" अलबामाके विद्यालयका कर लोगे ? " मैने बड़े हर्षके साथ उत्तर दिया कि " कोशिश क मेरे हाथ है। " तब जनरल आर्मस्ट्रांगने उन सज्जनोंको चिट्ठी लि कि " कोई गोरा आदमी मिलना तो मुश्किल है, पर यदि आप किसी काले आदमीको पसद करें तो मै एक आदमीका नाम ऊँगा। " यह लिख कर उन्होंने मेरा नाम भी लिख दिया।

कई दिन बीत गये, पर इस चिट्ठीका कोई जबाब ही न आग कुछ काल पश्चात् एक दिन, जब कि प्रार्थनामन्दिरमें हम लोग

ुए थे, एक सिपाही जनरल आर्मस्ट्रागके पास एक तार ले आया। प्रार्थना हो ुकने पर उन्होंने वह तार सबको पढ़ सुनाया। उसमें लिखा था— ‘बुकर टी वाशिंगटनका रखना हमें स्वीकृत है, आप उन्हें शीघ्र ेजिए।”

विद्यार्थियों और शिक्षकोंको बड़ा आनन्द हुआ, और उन्होंने मुझे ादियसे बधाई दी। मै भी टस्केजी जानेको तुरत तैयार हो गया। पहले ा वेस्ट वर्जीनियामे अपने घर गया। वहाँ कुछ दिन रह कर फिर मै स्केजीको रवाना हुआ। टस्केजी एक छोटासा गाँव था। उसकी आ- ादी दो हजार थी और उनमें आधे लोग काले थे। यह आधा हिस्सा क्षिण प्रान्तके कृष्ण कटिबन्धमें (Black Belt) गिना जाता था। स्केजी जिस प्रदेशमें बसा था वहाँ कालों और गोरोंकी सख्या, ीन काले और एक गोरा, इस हिसाबसे थी। पड़ोसके कुछ प्रदेशमें ालोंकी सरया इससे भी अधिक अर्थात् ६ काले और एक १ गोरा, स हिसाबसे थी।

कृष्ण कटिबन्ध क्या चीज है ? इस विषयमें मुझसे कई बार कई ोगोंने प्रश्न किये है। पहले तो इस शब्दसे देशकी काली भूमि ही समझी जाती थी। दक्षिण अमेरिकामें काली और उपजाऊ भूमि बहुत ै। वहाँ गुलामोंको ले जाकर गोरे मालिक उनसे खूब लाभ उठाते े। धीरे धीरे वहाँ गुलामोंकी बहुत बड़ी आबादी हो गई। जब युद्ध शुरू हुआ तन यही शब्द राजनीतिक अर्थमें लिया जाने लगा, अर्थात् जिस प्रदेशमे गोरोंसे कालोंकी सरया अधिक है उस प्रदेशका ही कृष्ण कटिबन्ध नाम पड़ गया।

जब तक मे टस्केजीमें पहुँचा नहीं था तब तक, यही सोचता था कि पाठशालाके लिए मकान और जिन जिन चीजोंकी जरूरत होती है वे सन चीजें जुट गई होगी, पर वहाँ जाकर देखा तो पाठशालाके

सातवॉ परिच्छेद।

टस्केजीमे आरम्मके दिन।

हैम्पटनमें जब मेरे जिम्मे नाइट स्कूल और इडियन विद्यार्थियंक
देख भाल थी तब मै वहॉके शिक्षकोंसे कुछ पढता भी रहता था।
मेरे उन शिक्षकोंमें जनरल आर्मस्ट्रागके बादके (आजकलके) प्रिंसि
पल रे डाक्टर एच बी फ्रिसेल भी एक थे।

सन् १८८१ के मई मासमें, अर्थात् नाइट स्कूलका काम शुरू होन
एक वर्ष बाद मुझे अकस्मात् अपने जीवनके मुख्य कार्यको शुरू क
नेका अवसर प्राप्त हुआ। एक दिन रातको, नित्य प्रार्थना समाप्त होनेके
पश्चात् जनरल आर्मस्ट्रागने यह बात छेडी कि अलबामा रियासतके
टस्केजी नामक छोटेसे ग्राममें काले लोगोंके लिए एक नार्मलस्कूल खुल
नेवाला है, मुझसे अलबामाके कुछ सज्जनोंने किसी ऐसे मनुष्यकी
सिफारिश करनेके लिए लिखा है जो इस पाठशालाको चला सके।
उन लोगोने शायद यह समझ रक्खा था कि इस कामके लायक कोई
काला आदमी न मिलेगा, और इसलिए उन्होने जनरल आर्मस्ट्राग
किसी गोरे मनुष्यकी सिफारिश चाही थी। दूसरे दिन जनरल आर्मस्ट्रा
गने मुझे अपने दफ्तरमें बुलाकर पूछा–" अलबामाके विद्यालयका काम
कर लोगे ? " मैने बडे हर्षके साथ उत्तर दिया कि " कोशिश करना
मेरे हाथ है। " तब जनरल आर्मस्ट्रागने उन सज्जनोंको चिट्ठी लिखी
कि " कोई गोरा आदमी मिलना तो मुश्किल है, पर यदि आप ल
किसी काले आदमीको पसद करें तो मै एक आदमीका नाम बतला
ऊँगा। " यह लिख कर उन्होंने मेरा नाम भी लिख दिया।

कई दिन बीत गये, पर इस चिट्ठीका कोई जवाब **ही न**
कुछ काल पश्चात् एक दिन, जब कि प्रार्थनामन्दिरमे हम **लोग**

दशामे मै निराश हुआ। पर काले लोगोंको बडी खुशी हुई–यह सुनकर बडा हर्ष हुआ कि अब यहाँ एक स्कूल खुलनेवाला है, और वे अपनी शक्तिभर मेरी सहायता करनेके लिए तैयार हो गये।

अब मेरा पहला काम यह हुआ कि पाठशालाके लिए कोई स्थान तलाश करूँ। ढूँढते ढूँढते कालोंके 'मेथाडिस्ट' चर्चके पास एक जगह मिली। एक पुराना बेमरम्मत मकान था, इसमें पाठशाला हो सकती थी, और वह चर्च (गिरजाघर) सभाभवनके काममें आ सकता था। गिरजाघर और मकान दोनों ही अतिशय जीर्ण थे। मुझे याद आता है कि जब कभी पानी बरसता था तब पुराने विद्यार्थियोंमेंसे एकाध लडका अपना पाठ छोडकर मेरे पास आकर मेरे सिर पर छाता पकडे रहता था और इस हालतमें मै विद्यार्थियोंके पाठ सुनता था। कई बार तो ऐसा हुआ है कि मै भोजन करने बैठा हूँ और पानी बरसने लगा है। ऐसे समय मेरी स्त्री मुझ पर छाताकी छाया किये खडी रहती थी। इससे आप लोग समझ जायँगे कि स्कूलके मकानकी हालत कितनी खराब थी।

अलबामाके काले लोग राजनीतिक बातोंमे बहुत योग दिया करते थे और चाहते थे कि मै भी उनके पक्षमें जा मिलूँ। राजनीतिक कामोंमें वे दूसरोंका अधिक विश्वास नहीं करते थे। लोग अकसर मेरी चर्चा किया करते थे, क्योंकि उन्हें यह मालूम नही था कि मेरे क्या विचार है। उन लोगोंने मेरे विचारोंको जाननेके लिए मेरे पास एक आदमी प्रतिनिधि बना कर भेजा था। वह आकर मुझसे कहने लगा, "हम लोग चाहते है कि आप भी हम लोगोंके पक्षमे ही अपनी सम्मति दिया करें। हमे समाचारपत्र पढना तो इतना नहीं आता, पर यह मालूम है कि अपना मत कैसे देना चाहिए। और हम चाहते है कि आप भी हम लोगोंके समान मत दिया करें। हम लोग पहले यह खूब अच्छी तरहसे देख लेते है कि गोरा क्या कहता है—किस ओर अपनी

न तो कोई मकान था, और न कोई सामान ही। यह देखकर मैं कुछ निराश हो गया। परन्तु ऐसे लोगोंकी वहाँ कमी न थी जो सचमुच ही ज्ञानके प्यासे और इस कार्यसे हार्दिक सहानुभूति रखनेवाले थे। इस्से मुझे बहुत कुछ ढाढस मिला।

पाठशालाके लिए टस्केजी बडी अच्छी जगह थी। यह गाँव नीग्र लोगोंकी बसतीके बीचमें था और यहाँ एकान्तका भी बडा सुख था। रेलवेकी मुख्य सडकसे यह पाँच मीलके फासले पर था। रेलवेकी दूसरी एक छोटीसी शाखा गाँवतक आ गई थी। गुलामीके दिनोंमें और उसके बाद भी यह स्थान गोरे लोगोंकी शिक्षाका केन्द्र रहा है। इस बडा काम हुआ, क्योंकि मने देखा है कि विद्या और विनय दोनोंमें—यहाँके गोरे सबसे बढकर हे। काले लोग अपढ जरूर थे, प उन्होंने और शहरोंके निम्नश्रेणीके लोगोंमें फैली हुई बुराइयोंसे अपन शरीरोंको नहीं बिगाड रक्खा था। दोनों जातिके लोगोंका परस्पर व्यवहार बहुत अच्छा था। उदाहरणार्थ, उस गाँवमें लोहेकी जो सबसे बडी दूकान थी उसे एक काले और गोरे आदमीने मिलकर खोला था, उसम दोनोंका बराबर हिस्सा था और दोनों ही उसका कामकाज देखते थे। जबतक उनमेंसे एकका देहान्त नहीं हुआ तबतक, यह साझेकी दूकान बराबर चलती रही।

मेरे टस्केजी आनेके एक वर्ष पहले, टस्केजीके कुछ सज्जनोंने हैम टन-विद्यालयका कार्य देखकर अपने गाँवमे भी एक आदर्श विद्यालय खोलना चाहा और इसके लिए उन्होने अपने यहाँके प्रतिनिधियोंके द्वारा सरकारसे सहायताकी प्रार्थना की। सरकारने यह प्रार्थना स्वीका की और इस काममें दो हजार डालर खर्च करनेकी मजूरी दे दी, प मैने यहाँ आकर देखा कि यह रकम तो शिक्षकोंके वेतनमें ही खर्च हो जायगी, मकान और सरजामके लिये कुछ बचेगा ही नहीं। इ

शामें मै निराश हुआ । पर काले लोगोंको बडी खुशी हुई–यह सुनकर डा हर्ष हुआ कि अब यहाँ एक स्कूल खुलनेवाला है, और वे अपनी क्तिभर मेरी सहायता करनेके लिए तैयार हो गये ।

अब मेरा पहला काम यह हुआ कि पाठशालाके लिए कोई स्थान लाश करूँ । ढूँढते ढूँढते कालोंके ' मेथाडिस्ट ' चर्चके पास एक जगह मेली । एक पुराना बेमरम्मत मकान था, इसमें पाठशाला हो सकती ी, और वह चर्च (गिरजाघर) सभाभवनके काममे आ सकता था । गिरजाघर और मकान दोनों ही अतिशय जीर्ण थे । मुझे याद आता है के जब कभी पानी बरसता था तब पुराने विद्यार्थियोंमेंसे एकाध लडका पना पाठ छोडकर मेरे पास आकर मेरे सिर पर छाता पकडे रहता था और इस हालतमें म विद्यार्थियोंके पाठ सुनता था । कई बार तो ऐसा हुआ है कि मै भोजन करने बैठा हूँ और पानी बरसने लगा है । ऐसे समय मेरी स्त्री मुझ पर छाताकी छाया किये खडी रहती थी । इससे आप लोग समझ जायेंगे कि स्कूलके मकानकी हालत कितनी खराब थी ।

अलबामाके काले लोग राजनीतिक बातोंमें बहुत योग दिया करते थे और चाहते थे कि मै भी उनके पक्षमें जा मिलूँ । राजनीतिक कामोंमें वे दूसरोंका अधिक विश्वास नहीं करते थे । लोग अकसर मेरी चर्चा किया करते थे, क्योंकि उन्हें यह मालूम नहीं था कि मेरे क्या विचार है । उन लोगोंने मेरे विचारोंको जाननेके लिए मेरे पास एक आदमी प्रतिनिधि बना कर भेजा था । वह आकर मुझसे कहने लगा, " हम लोग चाहते ह कि आप भी हम लोगोके पक्षमें ही अपनी सम्मति दिया करें । हमें समाचारपत्र पढना तो इतना नही आता, पर यह मालूम है कि अपना मत कैसे देना चाहिए । और हम चाहते है कि आप भी हम लोगोके समान मत दिया करें । हम लोग पहले यह खूब अच्छी तरहसे देख लेते है कि गोरा क्या कहता है—किस ओर अपनी

सम्मति देता है। जब हम जान लेते है कि गोरेने अमुक ओरसे सम्मति दी है तब हम लोग ठीक उससे उलटी अपनी सम्मति दे देते है। तब हम समझते हैं कि हमने उचित सम्मति दी।" नीग्रो लोगोंकी उस सम यह दशा थी। पर अब मुझे यह कहते हर्ष होता है कि गोरेके विरु सम्मति देना, फिर उसमें लाभ हो या नुकसान, यह जो पुरानी री थी वह अब दिनोंदिन मिट रही है और अब मेरे भाई य जानने लगे है कि राय ऐसी देनी चाहिए जिससे दोनों जातियों लाभ हो।

यह मै कह चुका हूँ कि १८८१ के जून मासमें मे टस्केजीमें आद पाठशालाके लिए जगह ढूँढने, देहातके लोगोंकी रहन सहन देखने, जिन लोगोंको मै चाहता था कि स्कूलमें आवे उन लोगोंमें, पाठ- चर्चा फैलानेमें ही मेने पहला महीना बिताया। एक खच्चर और गाडीके साथ मैने देहातोमें भ्रमण किया। मै काले लोगोंके साथ करता और उन्हींकी झोपडियोमें रहता था। इस तरह मैने उनके रे उनकी पाठशालाये और उनके गिरजाघर देखे। किसीको मेरे आने सूचना पहलेसे नही मिलती थी, इससे मुझे उनकी असली हा देखनेको मिल जाती थी।

गाँवोंमें प्राय सभी लोग एक ही कोठरीमें सोया करते थे और क कभी मेहमानोंकी भी उसी कोठरीम खातिर की जाती थी। मैं सा लिए प्राय कहीं बाहर चला जाता था, और कभी कभी सबके सो पर सोता था। फर्श पर या किसीके बिछौने पर एक तरफ मुझे सोनेक स्थान दिया जाता था। हाथ पैर धोनेके लिए शायद ही किसी झोप कोई प्रबन्ध रहता हो, पर झोपडीके बाहर आँगनम अवश्य ही वे कु कुछ प्रबन्ध कर देते थे।

सूअरका मास और बाजरेकी रोटी, यही सबका मामूली खाना

वहाँकी देहातमें घूमते हुए मुझे कई बार ऐसे मौके मिले हैं जब मैंने बाजरेकी रोटी, खाली पानीमें उबाले हुए मटरके साथ खाई है। वहाँके लोग तो सिवा मास और रोटीके कुछ खाना जानते ही न थे। वे मास और बाजरेका आटा गाँवकी बडी दूकानसे लाते थे। तरकारी लगानेका विचार भी उनके मनमें कभी न आया। जहाँ देखिए, कपासकी खेती हो रही है, यहाँतक कि कहीं कहीं झोपडियोंके दरवाजों तक कपासके पौधे लगे हुए नजर आते थे।

इन झोपडियोंमें मैंने अकसर सीनेकी कल, घडियाँ, या हारमोनियम बाजे देखे हैं। सात सात डालर कीमत देकर कोई सीनेकी कल और बारह चौदह डालर खर्च कर कोई घडी खरीद लेना या किस्तबन्दी पर ले लेना इन लोगोंके लिए एक मामूली बात थी। एक बार मैं एक आदमीके यहाँ भोजन करने गया। घरके चार आदमी और मैं, पाँच आदमी भोजनके लिए मेजके पास बैठे। पर खानेको सबके लिए एक ही काँटा था! इस लिए मुझे बहुत देरतक चुपचाप बैठ रहना पडा। इसी घरमें सामनेके एक कोनेमें हारमोनियमकी एक पेटी रक्खी हुई थी। उसके बारेमें घरके लोगोंने कहा कि इसकी कीमत ६० डालर है और हम लोग किस्त बाँधकर इसका मूल्य दे रहे हैं। एक काँटा और ६० डालरका बाजा! बहुतेरी जगहोंमें सीनेकी कलसे कोई काम भी नहीं लिया जाता था, और घडियाँ इतनी रद्दी होती थीं कि ठीक समय भी न देती थीं। यदि कुछ घडियाँ अच्छी भी हुईं तो क्या?—उन्हें देखकर समय जाननेवाला ही कौन था? १० में ९ आदमी भी घडी देखकर यह न बतला सकते थे कि कितने बजे हैं। बाजेका भी यही हाल था—धूल खाता हुआ पटा रहता था।

जहाँ मैं भोजन करने गया था वहाँ, मेज वगैरहका प्रबन्ध खास मेरी खातिरके लिए किया गया था। प्राय सभी घरोंमें भोजनकी यह कैफि-

यत थी कि सवेरे सोकर उठनेके बाद गृहिणी तवे पर एकाध मासक टुकडा, और एक बरतनमें सना हुआ आटा रख देती थी। ये दोनों चीजें जरा आग पर रख देनेसे ही सवेरेका भोजन तैयार हो जाता था। घरक मालिक हाथमें मास और रोटी लिए खाता चबाता हुआ अपने खेत प जाता, फिर गृहिणी एक कोनेमें बैठ कर खा पी लेती, और बाल ब खेलते कूदते हुए अपनी रोटी और मास खा लिया करते। बस, यही इन लोगोंकी खाने पीनेकी व्यवस्था थी।

सवेरेका नाश्ता कर चुकने पर घरके सब लोग घरके प्रबन्धकी का चिन्ता न करके कपासके खेत पर चले जाते थे। छोटे छोटे बच्चोंक भी खेतोंपर जुत जाना पडता था, और नन्हें बालक कपासकी किसी कतारके एक तरफ पडे रहते थे। जब उस कतारकी चुनाई हो चुकती तब उनकी मातायें उन्हे दूध पिलाती थी। सवेरेकी तरह ही दो-पह और शामका भी भोजन होता था।

शनिवार और रविवारको छोडकर प्राय सर्वदा ही इनका एक ही कार्य क्रम रहता था। शनिवारको सब लोग आधा दिन या सारा दिन शहरमें बिताते थे। बहुत करके वे बाजार करने या आवश्यक वस्तुयें खरीदने की गरजसे शहर जाते थे। यद्यपि परिवारमें जितनी चीजें आवश्यक होती थीं वे सब १०।१५ मिनिटमें ही कोई एक आदमी खरीद ला सकता था, पर परिवारके सभी लोग सौदा खरीदनेके लिए बाहर निकलते औ शहरकी सडकों पर इधर उधर घूमनेमें सारा दिन बिताते थे, श स्त्रियाँ भी कहीं तमाखू पीती या सुँघनी सूँघती हुई बैठ रहती थीं रविवारके दिन सभामें आना होता था। इन लोगोंमे ऐसे तो इने गिने ह लोग थे जिनके खेत रहन न रक्खे गये हों अथवा जो किसीके कर्जदार न हों—नहीं तो, प्राय सभी काले किसान ऋणसे दबे रहते थे। प्रादेशिक सरकार प्रत्येक गाँवमें पाठशालाभवन नहीं बना सकती थी, इसलिए

बहुतेरी पाठशालायें गिरजाघरोंमें या लकडीकी झोपटियोंमें होती थीं। मुझे अपनी यात्रामें अकसर यह देखनेका अवसर मिला है कि जाडेके दिनोंमें पाठशालाका मकान गरम रखनेका कोई उपाय नहीं किया गया है, और इसलिए आँगनमें आग सुलगाकर शिक्षक और छात्र बाहर आकर ताप रहे है। देहातकी पाठशालाओंके शिक्षक पढानेके काममें निरे मूर्ख थे, उनका आचरण भी शुद्ध न होता था। तीन, चार या पॉच महीने पाठशाला जारी रहती थी। पाठशालामें सिवाय एक मोटे खुरदरे तखतेके और कोई सामान नहीं रहता था। मुझे एक बारकी याद आती है कि मैं एक पुरानी काठकी झोपडीकी पाठशालामें गया था। वहाँ मैंने देखा कि पॉच विद्यार्थी एक ही पुस्तकसे पाठ ले रहे है। पुस्तक बेंच पर बैठे हुए पहले दो विद्यार्थियोंके बीचमें थी, इनके पीछे दो विद्यार्थी खडे खडे इनके कन्धोंपरसे झुककर पुस्तक देख रहे थे, और इन चारोंके कन्धोंपरसे झुककर देखनेवाला एक छोटा विद्यार्थी और खडा था।

जो हाल इन पाठशालाओं और शिक्षकोंका था, वही हाल गिरजाघरों और उनके पादरियोंका या उपदेशकोंका भी समझिए।

मेरी यात्रामें मुझे कई अजीब लोगोंके दर्शन हुए। गँवारोंके सोचने विचारनेका ढंग कैसा होता है यह जाननेके लिए मैं यहाँ एक उदाहरण दिये देता हूँ। एक साठ वर्षके काले नीग्रोसे मैंने कहा कि "मुझे अपना इतिहास सुना जाओ।" उसने कहा—"मैं वर्जीनियामें पैदा हुआ, और १८४५ के सालमें अलबामामें मैं बिका।" मैंने उससे पूछा,—"तुम्हारे साथ और कितने लोग बिके?" इसपर उसने यह उत्तर दिया कि, "हम लोग पॉच जनें थे—मैं, मेरा भाई और तीन खच्चर।"

टस्केजीके आसपासके गॉवोंमें यात्रा करते समय मैंने जो कुछ देखा था ऊपर उसीका वर्णन किया है। पर इसके साथ ही मैं यह भी सूचित कर देता हूँ कि उस समय मैंने ऐसे लोग और ऐसी संस्थायें भी देखीं

थीं जिनके विषयमें ऊपरका वर्णन कदापि नहीं घट सकता। टस्कजी और अन्यान्य संस्थाओंके कार्योंसे जो सुधार हमारे समाजमें हुए हैं उनकी ओर, ध्यान दिलानेके लिए–यह जाननेका सुभीता कर देनेके लिए कि पहले क्या हाल था और अब इन संस्थाओंके प्रयत्नसे क्या हो गया है–मैने अपनी यात्रामें जो कुछ देखा उसे यहाँ स्पष्ट बतला दिया है।

आठवाँ परिच्छेद ।

अस्तबल और मुर्गीखानेमें पाठशाला ।

अलबामा प्रदेशके देहातोंमें घूम कर मैंने जो कुछ देखा उससे मेरी आँखें खुल गईं और मैंने जाना कि मुझ पर इस वक्त कितनी बड़ी जिम्मेदारी है । काम करनेवाला मैं अकेला था, और इन लोगोंको अज्ञानसे उठाना कोई साधारण काम नहीं था । मेरे मनकी बड़ी विचित्र अवस्था हुई । मुझे यह विश्वास न होता था कि मैं इस कार्यको कर सकूँगा । मेरा मन यहाँतक चलविचल हुआ कि इस काममें हाथ डालना उचित है या नहीं, इसका भी मुझे सन्देह होने लगा । अस्तु ।

नीग्रो लोगोंके गाँवोंमें एक मास बिताकर मैंने इन लोगोंकी असली हालत देखी और देखकर इतना तो खूब समझ लिया कि उस वक्त अमेरिकामें जो शिक्षाप्रणाली प्रचलित थी उससे यहाँ काम न चलेगा—कुछ और भी करना होगा । हैम्पटन-विद्यालयकी शिक्षाप्रणालीका ठीक ठीक महत्त्व इसी समय मेरी समझमें आया । अलबामाके नीग्रो लोगोंके लड़कोंको एकट्ठा करके उन्हें पुस्तकसम्बन्धी शिक्षा या किताबी तालीम देना तो मेरे खयालमें, उनके समयको वृथा नष्ट करना ही था । इस समय मेरे सामने नीग्रो जातिके समग्र जीवनकी तैयारीका प्रश्न हल करनेके लिए आ पड़ा ।

टस्केजीके रईसोंकी सलाहसे १८८१ की ४ थी जुलाईको गिरजाघरमें और उसके पासके एक बेमरम्मत मकानमें मैंने स्कूल खोलना निश्चय किया । काले और गोरे दोनों ही बड़े उत्साहसे स्कूल खुलनेकी बाट जोह रहे थे । इसमें सन्देह नहीं कि टस्केजीके आसपास ऐसे भी

बहुतसे लोग थे जो स्कूल खोलनेके विरोधी थे। उन्हें यह सन्देह था कि स्कूलसे काले लोगोंको कोई लाभ न होगा। बहुतेरोंका तो यह कह था कि इससे आपसमें झगडा-फसाद पैदा हो जायगा। कुछ लोगों बुद्धिमें यह आया कि नीग्रो लोग जितना ही लिख पढ लेंगे उतनी ह उनकी आर्थिक दुर्गति होगी, क्योंकि शिक्षित होने पर नीग्रो लोग खे बारीका काम छोड देंगे, और घरू काम करनेके लिए हमें मजदूर भी न मिलेंगे।

इस नये स्कूलसे गोरोंको यह डर था कि नीग्रो लोग लिख पढ कर सिर पर ऊँची टोपी दिया करेंगे, नकली सोनेके चश्में लगायेंगे, हाथमें बढिया छडी लिया करेंगे, हाथोंमें चमडेके हाथमोजे पहनेंगे, तरह तरहके भडकदार बूट पहनेंगे, मतलब यह कि सभी काम अपनी बुद्धिसे कि करेंगे। वे लोग शिक्षाका मतलब ही यही समझते थे और इस लि यदि उन्होंने नीग्रो लोगोंकी शिक्षामें इन्हीं बातोंको देख पाया तो कोई आश्चर्य नहीं।

स्कूल खोलनेमें जो जो विघ्नबाधायें उपस्थित हुई उनको हटानेमें टस्क जीके कई सज्जन मेरी बराबर सहायता करते रहे और आगे भी उन मुझे बराबर सहायता मिलती रही। दो सज्जनोंसे तो मैं सदा ही सला लिया करता था और उन्हींकी देखरेखमें सब काम किया करता था। यह तो कभी हुआ ही नहीं कि मैं उनसे कोई बात पूछने गया औ उन्होंने ‘नाहीं’ कर दी। मुझे जो कुछ कामयाबी इस काममें हुई उ मैं इन्हीं दो महाशयोंकी बदौलत समझता हूँ। ये दो पुरुष वहाँके आद र्शस्वरूप थे। इनमेंसे एक तो गोरे साहब हैं, जो पहले गुलामोंका व्य साय किया करते थे। इनका नाम है मि० जार्ज डब्ल्यू कैम्बे। दू सज्जन काले हैं। ये पहले गुलाम थे। इनका नाम मि० लेविस एडम्स है। इन्हीं दो सज्जनोंने जनरल आर्मस्ट्रांगको शिक्षक भेजनेके लिए लि खी थी।

मि० कैम्बेल एक व्यापारी और कोठीवाल है। शिक्षाके बारेमें उन्हें बहुत थोडा अनुभव है। मि०एडम्स शिल्पी (कारीगर) हे। इन्होंने गुलामीके दिनोंमे जूता सीना, जीन वगैरह बनाना, और टिनकी जोडाई करना आदि काम सीख लिये थे। स्कूलमें इन्होंने एक दिन भी पैर नहीं रक्खा, फिर भी इतना इन्होंने कर लिया हे कि कुछ लिख-पढ लेते हे। मैने टस्केजीमे आकर स्कूलका जो ढॉचा डाला था—जो योजना की थी, उसे इन्होंने शुरूसे देखा। इन्हें वह पसन्द भी हुई और इस लिए हर काममें इन्होंने मुझे साथ दिया। जब जब स्कूलके लिए धनकी जरूरत हुई है और हम लोग मि० कैंबेलके पास गये है तब तब उन्होने हमारी खुले दिलसे सहायता की है। स्कूलके प्रबन्ध और सुधारके कामोंमे सिवा इन दो सज्जनोके, और किसीसे सलाह लेनेकी जरूरत मैने न समझी।

मि० एडम्समें बडा मानसिक बल था। मे समझता हूँ कि गुलामीके दिनोंमें इन्हे जो ऊपर बतलाये हुए तीन कामों पर हाथ जमानेकी शिक्षा मिली थी उसीका यह फल है। आज भी, अगर दक्षिण प्रान्तमें जाकर किसी शहरमें मुख्य और विश्वासपात्र नीग्रो लोगोंका अनुसन्धान किया जाय तो फी दस आदमियोंमें पॉच मनुष्य अवश्य ऐसे मिलेंगे जिन्होंने गुलामीके दिनोंमे कोई न कोई हुनर–शिल्प अच्छी तरह सीखा होगा। अर्थात् अच्छी तरह हुनर या कारीगरी आदि परिश्रमके काम सीखे हुए लोग ही प्राय: मानसिकबलशाली और विश्वासपात्र होते है।

जिस दिन स्कूल खुला उसी दिन सबेरे तीस छात्र भरती किये गये। उस वक्त पढानेवाला मे अकेला ही था। इन तीस छात्रोंमें १५ स्त्रियॉ थी। प्राय: सभी छात्र मेकन प्रदेशसे आये हुए थे। टस्केजी इसी प्रदेशका मुख्य स्थान था। उक्त ३० छात्रोंके अतिरिक्त और भी बहुतसे छात्र भरती होना चाहते थे, पर यह निश्चय हो चुका था कि

केवल ऐसे छात्र भरती किये जायँगे जिनकी उम्र १५ वर्षसे अधिक हो और जो कुछ शिक्षा भी पहलेसे पा चुके हों। इन तीस छात्रोंमें बहुतो ऐसे थे जिन्होंने इससे पहले पब्लिक-स्कूलोंमे मुदरिसी या अध्यापकी भी की थी। चालीस चालीस साल उम्रके भी कुछ विद्यार्थी थे। अध्यापकोंके साथ उनके कई एक शिष्य भी आ गये थे। और यह तमाशा देखनेमें आया कि प्रवेशपरीक्षामें शिष्य ही शिक्षकोंसे बढकर निकले, इसलिए वे शिक्षकोंसे ऊपरके दर्जेमे भरती किये गये। इन शिष्य शिक्षकोंको विद्यालभके उद्देश्य और उपायके बारेमें बहुत कम ज्ञान था। बडी बडी पुस्तकें पढने और बडे बडे शब्दोंको काममें लानेका भी इन्हें बडा शौक था। इनमेंसे बहुतेरे इस बातका भी अभिमान रखते थे कि हमने अमुक अमुक ग्रन्थाका अध्ययन किया है और अमुक विषयोंमें पारदर्शिता प्राप्त की है। आपसमें जब इस तरहकी बात ये लोग करते तो सुनकर मुझे हँसी आती थी। कुछ छात्रोंने लेटिन भाषाका अभ्यास किया था। दो एक छात्र ग्रीकभाषा भी जानते थे, इसलिए वे अपनेको औरोंसे बहुत श्रेष्ठ समझते थे।

सचमुच ही मैने अपनी एक महीनेकी यात्रामें एक बडी ही खराब बात देखी, वह यह कि हाई-स्कूलमें पढा हुआ एक विद्यार्थी अपनी झोपडीमे बैठा हुआ था। उसके कपडों पर तेलके धब्बे लगे हुए थे, आस पास इतनी गन्दगी थी कि जी मचला जाय, आँगनमें और बागमें बेहिसाब घास बढी जा रही थी, और आप फ्रेंच भाषाका व्याकरण पढनेमें मगन हो रहे थे।

शुरू शुरूमें जो विद्यार्थी आये उन्हें व्याकरण आर गणितकी लंबी लंबी और कठिन परिभाषायें कठ करनेका बडा शौक था, पर कठ किये हुए इन नियमोंको काममे लानेकी बात कभी उनके ध्यानमें भी न आई। उन्होने सूद, मितीकाटा, स्टाक आदिके नियम तोतेकी तरह रट डाले थे,

पर यह नहीं जानते थे कि बैंकसे क्या काम लिया जाता है । विद्यार्थियोंके नाम रजिस्टरमें लिख लेते समय मैंने यह देखा कि हरेकके नामके साथ एक या दो अक्षर भी हुआ करते हैं, जैसे जान जे जेम्स । अगर यह पूछा जाता कि इस 'जे'का क्या मतलब है तो यहीं जवाब मिलता कि यह भी उपनामका (अल्लका) एक हिस्सा है । बहुतेरे शिक्षार्थी इसलिए पढना चाहते थे कि आगे चलकर वे शिक्षक हो जायँगे तो बहुतसा धन कमा लेंगे ।

पर इन बातोंसे यह न समझिए कि स्कूलके छात्र बिलकुल निकम्मे थे। इन विद्यार्थी और विद्यार्थिनियोंमें पढनेकी ओर जैसी प्रवृत्ति और जैसा उत्साह था वैसा तो मैंने कहीं देखा ही नहीं । कोई बात जब उन्हें समझाई जाती थी तो वे उसे पूरा ध्यान दे कर समझते थे । मैंने निश्चय किया कि उन्हें जो कुछ पुस्तकसबन्धी विद्या सिखलाई जाय उसकी जड उनमें पहले पक्की जमा दी जाय तब आगे पढाया जाय और जो कुछ सिखलाया जाय वह अधूरा ही न छोडा जाय । जिन विषयोंके ज्ञानकी डींग वे लोग हाँका करते थे, मैंने देखा कि उन विषयोंका उन्हें बहुत ही थोडा परिचय है । हमारी नई विद्यार्थिनियाँ नकशे पर सहाराकी मरुभूमि दिखला सकती थीं, चीनकी राजधानी भी ढूँढ निकाल सकती थीं, पर भोजनकी मेज पर काँटा और चम्मच कहाँ रक्खा जाता है, या रोटी और मास कहाँ परोसना चाहिए, इतना भी न जानती थी !

एक विद्यार्थी घनमूल और सूद मितीकाटेके हिसाब लगानेमें बडी माथापच्ची किया करता था । आखिर मुझे उससे कहना ही पडा कि पहले तुम पहाडा अच्छी तरहसे याद कर लो तब आगे बढो !

विद्यार्थियोंकी सख्या दिनोदिन बढती जाती थी, यहाँ तक कि पहले ही मासके अन्तमें ५० विद्यार्थी हो गये । कई विद्यार्थियोंका यह कहना था कि " हम लोगोंको यहाँ बहुत थोडे दिन रहना है, इस

लिए हमें ऊपरके दर्जेमें भरती कर लीजिए और सम्भव हो तो पहले ही सालमें डिप्लोमा दिला दीजिए !”

कोई डेढ महीने बाद स्कूलको एक उत्तम व्यक्तिके अध्यापनक सौभाग्य प्राप्त हुआ। इनका नाम मिस आलिविया ए डेविड्सन था आगे चलकर ये ही आलिविया मेरी सहधर्मिणी हुईं। मिस डेविड्सनने आविओ रियासतमें जन्म पाया था, और उसी रियासतके पब्लि स्कूलमें उन्होंने आरम्भिक शिक्षा भी पाई थी। जब वे कुछ सया हुईं तब उन्होंने सुना कि दक्षिण प्रान्तमें शिक्षकोंकी बडी आवश्यकता है तभीसे वे बाहर जानेकी चिन्ता करने लगीं। निदान एक अच्छा योग प करके वे मिसिसिपी रियासतमें आकर अध्यापनका कार्य करने लगीं। इसके बाद मेंफिस रियासतमें पढाती रहीं। मिसिसिपीमें जब वे पढाती थीं तब उनके एक विद्यार्थीको माता निकल आई थी। उस वक्त लो इतने घबरा गये कि उस बेचारे लडकेकी सेवाटहल करनेके लिए भी कोई न रहा। मिस डेविड्सनने अपना स्कूल बन्द कर दिया, और जब तक वह लडका बिलकुल चंगा न हो गया तब तक वे रात दिन उसीकी सेवाशुश्रूषा करने लगीं। छुट्टियोंमें वे अपने घर आ गईं और ऐसे वक्त मेंफिसमें ‘यलो फिवर’ नामक संक्रामक ज्वर फैलने लगा। जब मि॰ डेविड्सनको इसकी खबर मिली तो वे संक्रामक रोगके रोगियोंकी शुश्रूषा करनेको तैयार हो गईं और यद्यपि उन्होंने कभी इस रोगके रोगियोंकी परिचर्या नहीं की थी–इस रोगका नाम भी न सुना था तो भी मेंफिसके शेरीफको तार दे दिया कि “मैं दाईका काम करनेके लिए तैयार हूँ।”

दक्षिण प्रान्तमें मिस डेविड्सनको जो कुछ अनुभव प्राप्त हुआ उससे उनकी भी यह धारणा हो गई थी कि केवल पुस्तकी-विद्याके अतिरिक्त कुछ और भी, लोगोंके लिए आवश्यक है। हैम्पटनकी शिक्षापद्धतिके

विषयमें उन्होंने सुना था और उन्होंने यह विचार भी कर रक्खा था कि दक्षिण प्रान्तमें मैं तभी कुछ कार्य कर सकूँगी जब हैम्पटन-विद्यालयमें जाकर पूरा अभ्यास करूँ। संयोगवश बोस्टनकी मिसेस मेरी हेमेनवे नामकी एक कुलीन महिलाने इनकी असाधारण बुद्धिमत्ता देख उदारतापूर्वक इनकी सहायता की जिससे ये हैम्पटन-विद्यालयकी पढ़ाई पूरी कर सकीं। इसी प्रकार फ्रामिंगहमके 'मेसेच्युसेट्स नार्मल स्कूल'में पढ़ने और वहाँकी दो सालकी पढ़ाई समाप्त करनेका भी इन्हें मौका मिला।

मिस डेविड्सनका रंग गोरा है, पर गोरे रंगमें उन्होंने मौका मिलने पर भी कभी अपना नीग्रोपन छिपाना नहीं चाहा। जिस वक्त ये फ्रामिंगहम जा रहीं थीं, इनके एक परिचित व्यक्तिने इन्हें सलाह दी कि "अगर मेसेच्युसेट्स स्कूलमें आप अपनी जाति छुपा दें तो आपका बड़ा काम होगा। यह आप आसानीसे कर भी सकती है, क्योंकि आपका रंग खासा गोरा है और कोई आपको देखकर नीग्रो नहीं कह सकता।" इस पर इन्होंने फौरन जवाब दिया—"किसी कामके लिए अथवा कैसी ही मुसीबत आने पर भी मैं कभी अपनी जातिके विषयमें किसीको धोखा न दूँगी।"

फ्रामिंगहमकी पढ़ाई समाप्त करके मिस डेविड्सन टस्केजीमें आईं। वे अपने साथ उत्तम शिक्षापद्धति, असाधारण नीतिमत्ता, और असीम स्वार्थत्याग भी लेती आईं। टस्केजीके विद्यालयने जो कामयाबी पाई है उसकी नींव देनेमें जितनी सहायता मिस आलिविया ए डेविड्सनने की है उतनी और किसीने भी नहीं की।

मैं और मिस डेविड्सन दोनों शुरूसे ही स्कूलके भविष्यका विचार करने लगे। विद्यार्थी पुस्तकी विद्या चटपट ग्रहण कर अपने मनका विकाश करने लगे, परन्तु उनका जीवन सुदृढ़ नींव पर संगठित करनेके लिए यह आवश्यक था कि पुस्तकी विद्याके अतिरिक्त भी कुछ किया

जाय । छात्रोंमें ऐसे विद्यार्थी बहुत थे जिन्हें घरपर अपने गरीबी ल और उन्नतिके विषयमें कुछ भी सिखलाया नहीं गया था । टस्केजी छात्रावास छात्रोंके निजी घरोंसे अच्छी हालतमें न थे । उन्हें मुँह ह धोना, नहाना, कपडे साफ रखना इत्यादि बातें भी सिखलानी आव श्यक जान पड़ीं । क्या खाना चाहिए, किस तरह खाना चाहिए, औ कमरोंको कैसे साफ रखना चाहिए, यह भी सिखलानेकी आवश्यक थी । इन सब बातोंको छोड उन्हें किसी व्यवसायकी अमली तालीम साथ साथ उद्यम, मितव्यय और किफायतशारीकी ऐसी आदतें द देनी थीं जिनसे उन्हें आगे चलकर जीविकाके लिए कभी किसीके साम हाथ न पसारना पडे । केवल पुस्तकी विद्या देनेके बदले हम उ सब बातोंका यथार्थ ज्ञान देना चाहते थे ।

हमारे विद्यालयमें आनेवाले छात्र प्रायः ऐसी जगहोंसे (देहातोंसे आते थे जहाँ जीविकाका एक मात्र साधन खेती ही था । गल्फ स्टे फी सैकडा ८४ लोग खेती पर बसर करते थे। इस लिए हम लोगोंको शि देनेमें इस बातपर ध्यान देना पडता था कि हमारी शिक्षासे ऐसा न हो हमारे छात्र खेतीसे भाग कर शहरमें रहनेकी लालचमें आजायँ। हम ल चाहते थे कि हमारे छात्र इस योग्य हो जायँ कि वे शिक्षक बन क अपने गाँवोंमें वापिस जा खेतीकी उन्नति करें और अपने भाइयों बौद्धिक, नैतिक तथा धार्मिक बातोंमें–विचारोंमें नवीन जीवन नया जोश डालने लगें ।

परन्तु यह सब कैसे हो ? हमारे पास तो काफी जगह भी न थी वही पुराना मकान और गिरिजाघर, नीग्रो लोगोंकी कृपासे मिल ग था । पर उससे क्या होता ? विद्यार्थियोंकी संख्या दिनोदिन ब जाती थी । जैसे जैसे नये नये विद्यार्थी आते थे और हम लोग भी गाँ देहातोंमें घूम कर लोगोंकी हालत देखते थे, हमको यह पता लगता

कि जिन लोगोंके उद्धारके लिए हम इन छात्रोंको शिक्षित करानेकी ेष्टा कर रहे हैं, उनकी जरूरतें बहुत है और हम लोग उनमेंसे एकाध ी रफा कर सके है ।

गाँवोंसे आये हुए विद्यार्थियासे बातचीत कर हम लोगाने यह मालूम किया कि उनमेंसे बहुतेरे इस लिए शिक्षार्थी हुए थे कि हाथसे काम न करना पडे, मेहनत करनेको वे नीच काम समझते थे ।

धीरे धीरे इसी टूटे-फूटे मकानमें तीन महीने बीत गये । इसके ाद पता लगा कि टस्केजीसे अनुमान डेढ मील फासले पर एक जमीन िकाऊ है । गुलामीके दिनोंमें यहाँ गुलामाबाद था । वह मकान जिसमें ुलामोंका मालिक रहता था, जल-बलकर खाक हो चुका था । खैर, म लोग वह जमीन देखने गये, देखकर यह विश्वास हो गया के स्कूलके लिए इससे अच्छी जगह जल्द न मिलेगी ।

पर यह जगह हम लोग ले तो कैसे लें? इसका दाम तो बहुत ोडा अर्थात् सिर्फ पाँच सौ डालर था । पर हमारे लिए एक डालर भी हुत था । अगर यह कहिए कि किसीसे कर्ज लेते तो हमारे जैसे अजनीको दे कौन? जगहके मालिकने यहाँ तक मजूर कर लिया था कि ाधी रकम नक्द दीजिए, और आधी एक सालके अन्दर देनेसे भी ाम चल जायगा । जमीनके मुकाबलेमें ५०० डालर कीमत बहुत ोडी थी, पर जिसके पास कुछ है ही नही उसके लिए तो ज्यादा ही हनी चाहिए ।

आखिर बहुत सोच समझकर मैने हैम्पटन-विद्यालयके खजाञ्ची नरल जे एफ बी मार्शल साहबको एक पत्र लिखा । उसम मेने सब ल लिख दिया और खास अपनी जिम्मेदारी पर ढाई सौ डालर उधार नेकी प्रार्थना की । कुछ ही दिनोंमे उनका जवाब आया । उसमे रवा था—" हैम्पटन-विद्यालयका धन किसीको कर्ज या उधार

देनेका मुझे अधिकार नही, पर मै अपनी बचतमेसे बडी खुशीके साथ आपको यह रकम दूँगा।”

इस प्रकार एकाएक इस धनके मिल जानेसे मुझे बडा आश्चर्य हुआ, और आनन्द भी हुआ। अबतक एक साथ सौ डालर कभी मेरे हाथ नहीं आये थे, इसलिए यह जनरल मार्शलसे उधार मॉगी हुई रकम मुझे बहुत बडी जान पटी। रकम अदा करनेकी जिम्मेदारी भी मुझ ही पर होनेसे मेरा चित्त अस्थिरसा हो उठा।

स्कूलको नये स्थान पर ले जानेमे मैने बडी फुरती की। जिस वक्त यह जगह खरीदी गई उस वक्त वहॉ चार कोठरियॉ थीं—एक भोजनघर, एक पुराना रसोईघर, एक अस्तबल और एक पुराना मुर्गीखाना। इन कोठरियोंको काममें लाने लायक बनानेके लिए एक दो सप्ताहसे अधिक समय नहीं लगा। अस्तबल साफ सुथरा कर वहाँ सबक सुननेका कमरा बना, ओर फिर मुर्गीखाना भी इसी तरह काममें लाया गया।

एक दिनकी याद आती है कि सबेरे मैने अपने पासके एक नीग्रो मददगारसे कहा कि, “अब हमारा स्कूल इस कदर बढ चला है कि मुर्गीखाना भी काममें लाना पडेगा, उसकी सफाई करनेमें तुम्हारी मदद होनी चाहिए।” इसपर उसे बडा ताज्जुब हुआ और उसने पूछा, “आप कहते क्या हें? क्या आप दिन दहाडे सबके सामने मुर्गीखाना साफ करेंगे?” नीग्रो समाजमें लोकनिन्दाका इतना भय था!

यह नई जगह स्कूलके काम लायक बनानेमें हम लोगोंने ही शुरूसे अखीर तक सब काम किये–कुलियोंकी जरूरत न हुई। दोपहरको स्कूलसे छुट्टी होने पर विद्यार्थियोंने स्वय यह काम किया। कमरे तैयार हो चुकने पर, मेरा यह विचार था कि कुछ जमीन साफ करके रख देनी चाहिए ताकि उसमें कुछ बोया जा सके। यह तो मैने तय

लिया कि मेरा यह विचार हमारे युवा विद्यार्थियोंको पसन्द न हुआ । जमीन साफ करना और शिक्षा इन दोनोंके बीचका सम्बन्ध समझना उनका काम न था । इन विद्यार्थियोंमें बहुतेरे शिक्षक भी थे । उन्होंने यह सोचा कि अगर हम लोगोंने झाडू देकर जमीन ही साफ की तो हमारी इज्जत ही क्या रह गई ? इसका जवाब देना फिजूल था इस लिए मै खुद रोज स्कूल बन्द होने पर कुदारी लेकर मैदानमें जाने लगा । जब उन्होंने मुझे मिट्टी खोदते हुए देखा तो उन्हें आश्चर्य हुआ । उन्होने जान लिया कि मैं काम करनेमें न किसीसे डरता हूँ और न किसीसे लजाता हूँ । यह देखकर वे लोग भी बड़े उत्साहसे मेरी मदद करने लगे । रोज दोपहरके वक्त काम करके हम लोगोंने २० एकड जमीन साफ करके—कमा करके रख दी और उसमें बीज बो दिया ।

इधर मिस डेविड्सन जमीनका कर्ज अदा करनेके लिए रुपया इकट्ठा करनेकी फिक्रमें थी । पहली कोशिश उनकी यह थी कि उन्होंने एक मेला खडा कर दिया और फिर घर घर जा कर इस मेलेमें बिकने लायक केक, मुर्गी, रोटी, पक्वान्न आदि चीजोंको, सहायताके रूपमें देनेके लिए लोगोंसे प्रार्थना की और लोगोने भी हरतरहसे सहायता करनेका वादा किया । काले नीग्रो लोग तो अपनी शक्तिभर सब कुछ देते ही थे, पर मुझे यहाँ यह बतलाना है कि कभी ऐसा भी मौका नहीं आया कि मिस डेविड्सनने किसी गोरेसे मददकी प्रार्थना की हो और उस गोरेने उनकी मदद न की हो । इस प्रकार गोरे परिवारोंने भी नाना प्रकारसे स्कूलके साथ अपनी सहानुभूति प्रकट की ।

कई बार ऐसे मेले किये गये, और उनसे कुछ रकम भी जमा हुई । दोनों जातिके लोगोंसे नकद रुपये वसूल करनेकी कोशिश भी की गई, और जिन जिन सज्जनोंसे प्रार्थना की गई उन सब ही लोगोंने

नवाँ परिच्छेद ।

घोर चिन्ताके दिन ।

अलबामा रियासतमें आकर रहने पर बडे दिनोंमें मुझे वहाँके लोगोंकी रहन सहनका वास्तविक परिचय पानेके लिए और भी अधिक अच्छा अवसर मिला। बडे दिनोंका जलसा आरंभ होनेसे क रोज पहले ही शहरके बालक दल बाँधकर, घरघर घूमकर, बडे दिनोंका उपहार माँगते फिरते थे। उस दिन दो बजे रातसे शामके पाँच बजेतकके बीचमें कमसे कम पचास टोलियाँ हमारे यहाँ उपहार माँगने आई होंगी। दक्षिण प्रान्तके इस भागमें अब भी यह रिवाज चला जाता है।

गुलामीके दिनोंमें, प्राय सभी दाक्षिणी रियासतोंमें बडे दिनोंके अवसर पर काले लोगोंको पूरे एक सप्ताहकी छुट्टी मिला करती थी। इस छुट्टीभर सभी स्त्रीपुरुष शराबके नशेमें चूर रहते थे। बडे दिनका त्योहार आरंभ होनेसे एक रोज पहले ही इन लोगों पर दिवालीका रंग चढ जाता था और उसी दिनसे ये लोग सब काम धन्धा छोडकर मारे खुशीके मतवाले हो जाते थे, यहाँ तक कि बडे दिनोंमें एक भी काला आदमी किसी तरहका काम करनेके लिए राजी न होता था। जो लोग वर्ष भरमें कभी शराबको छूते तक न थे वे भी इन दिनों बोतल पर बोतल बेखटके चढा जाते थे। लोग मस्त हो कर आनन्द करते थे और खूब शिकार खेलते थे। इस तरह बडे दिनोंकी पवित्रताको लोग एकदम भूलसे गये थे।

पहले वर्षके बडे दिनोंमें मैं टस्केजीके बाहर एक बडा गाँव देखने गया।

अनाथ और अभागे लोग मदद पाकर सन्तुष्ट होते हैं। एक बार हमारे विद्यार्थियोंने अपनी यह छुट्टी एक पचहत्तर वर्षकी बुढ़ियाके लिए एक झोपड़ी बनानेमें खर्च कर दी। एक दूसरे अवसर पर मैंने गिरजेमें कहा था कि एक अनाथ विद्यार्थी कोट न होनेके कारण जाड़ेसे बहुत कष्ट पा रहा है। दूसरे ही दिन मेरे पास उस विद्यार्थीके लिए दो कोट आ गये।

मैं कह ही चुका हूँ कि टस्केजी और आसपासके गोरे लोग इस स्कूलकी मदद किया चाहते थे। मैं भी सदा इस बातकी चेष्टा किया करता था कि यह विद्यालय सर्वप्रिय हो—कोई भी इसे पराये लोगोंकी संस्था न समझे। मैंने विद्यालय-भवनके लिए काले-गोरोंसे सबसे चन्देकी प्रार्थना की थी। इस प्रार्थनासे ही उनमें विद्यालयके सबधमें एक प्रकारका आत्मीय भाव प्रत्यक्ष हो गया था—वे इस बातको समझने लगे थे कि विद्यालयसे हमारा भी कुछ नेह और नाता है। सर्वसाधारणको यह समझानेकी चेष्टा की गई कि यह विद्यालय आपका है। आप सब लोग इसकी सहायता कीजिए। इसके साथ ही विद्यालयसे होनेवाले लाभ उन्हें बतलाये गये। तब सभी लोग विद्यालयके पक्षमें हो गए।

यहाँ मैं यह भी कहना चाहता हूँ—इसका सुबूत भी आगे चलकर दूँगा—कि इस समय टस्केजी-विद्यालयकी मदद करनेवालोंमें टस्केजी, अलबामा और समस्त दक्षिणके गोरे अधिवासियोंके बराबर मदद करनेवाला कोई नहीं है। शुरूसे ही मैं अपने भाइयोंको यह नसीहत देता आया हूँ कि काले गोरेका ख्याल न कर अपने पड़ोसियोंको, किसी प्रकारकी गाँठ न रखकर शुद्ध हृदयसे, अपने मित्र बना लो। मैंने उन्हें यह भी बतलाया है कि किसी प्रश्नके बारेमें या निर्वाचनके सबधर्म सम्मति देते हुए स्थानीय हिताहितका विचार करके—न कि

ऐसे पवित्र और आनन्द देनेवाले त्योहारमें इन कगाल चार हजार भाइयोंको मौजके सामान जुटाते हुए देखकर मुझे दया आता था। एक झोपटीमें जाकर देखा कि पॉच लडके थोडेसे पटाके आपसमें बज रहे थे। एक दूसरी झोपडीमें ६–७ आदमी थे जिनके पास पॉच पान मूल्यकी अदरककी चपातियॉ थीं। एक परिवारमे थोडेसे गन्ने ही थे। एक स्थान पर एक पादरी महाशय अपनी स्त्रीके साथ बैठे शराब चख रहे थे। एक जगह नोटिसके रंगीन कार्डोंको ही लोग बडे कुतूहलसे देख रहे थे। एक जगह एक नया तमचा खरीदा गया था। उत्सवकी और कोई खास बात नहीं दिखाई दी, इसके सिवाय कि सब लोग काम धंधा छोडकर अपनी अपनी झोपडीमें स्वर्ग देखा करते या इधर उधर व्यर्थ घूमा करते थे। रातके वक्त वे एक तरहका जगली नाच नाचते थे और शराब पीकर पिस्तौल और दूसरे हथियार लेकर दगा-फसाद किया करते थे।

इसी समय मुझे एक बूढा नीग्रो उपदेशक मिला। उसने बाबा आदमका किस्सा कह कर मुझे यह समझाना चाहा कि परमेश्वर उद्योगसे अप्रसन्न होता है और इस लिए उद्योग करना बडा भारी पाप है। इसी लिए यह बूढा जहॉ तक होता, कामसे भागता था। बडे दिनोंमें कामके पापसे बचे रहनेके कारण यह बहुत ही प्रसन्न मालूम होता था।

हम लोगोंने अपने स्कूलके लडकोंको बडे दिनोंका महत्त्व और उन्हें मनानेकी रीति समझानेका बहुत प्रयत्न किया। इसका परिणाम भी विद्यार्थियों पर अच्छा हुआ और मै यह भी कह सकता हूँ कि जहॉ जहॉ हमारे ग्रेज्युएट विद्यार्थी है वहॉ वहॉ उन्होंने इस बडे दिनोंके त्योहार पर एक नई रोशनी डाल दी है।

अब बडे दिनोंमें हमारे विद्यार्थी वह आनन्द मनाते है जिनमें

अनाथ और अभागे लोग मदद पाकर सन्तुष्ट होते है । एक बार हमारे विद्यार्थियोंने अपनी यह छुट्टी एक पचहत्तर वर्षकी बुढियाके लिए एक झोपडी बनादेनेमें खर्च कर दी ! एक दूसरे अवसर पर मेने गिरजेमें कहा था कि एक अनाथ विद्यार्थी कोट न होनेके कारण जाडेसे बहुत कष्ट पा रहा है । दूसरे ही दिन मेरे पास उस विद्यार्थीके लिए दो कोट आ गये !

मैं कह ही चुका हूँ कि टस्केजी और आसपासके गोरे लोग इस स्कूलकी मदद किया चाहते थे । मै भी सदा इस बातकी चेष्टा किया करता था कि यह विद्यालय सर्वप्रिय हो—कोई भी इसे पराये लोगोंकी सस्था न समझे । मैंने विद्यालय-भवनके लिए काले-गोरोंसे सबसे चन्देकी प्रार्थना की थी । इस प्रार्थनासे ही उनमें विद्यालयके सबधमे एक प्रकारका आत्मीय भाव प्रत्यक्ष हो गया था—वे इस बातको समझने लगे थे कि विद्यालयसे हमारा भी कुछ नेह और नाता है ।

सर्वसाधारणको यह समझानेकी चेष्टा की गई कि यह विद्यालय आपका है । आप सब लोग इसकी सहायता कीजिए । इसके साथ ही विद्यालयसे होनेवाले लाभ उन्हे बतलाये गये । तब सभी लोग विद्यालयके पक्षमें हो गए ।

यहाँ मैं यह भी कहना चाहता हूँ—इसका सुबूत भी आगे चलकर दूँगा—कि इस समय टस्केजी-विद्यालयकी मदद करनेवालोंमें टस्केजी, अलबामा और समस्त दक्षिणके गोरे अधिवासियोके बराबर मदद करनेवाला कोई नहीं है । शुरूसे ही मे अपने भाइयोंको यह नसीहत देता आया हूँ कि काले गोरेका ख्याल न कर अपने पडोसियोंको, किसी प्रकारकी गाँठ न रखकर शुद्ध हृदयसे, अपने मित्र बना लो । मैने उन्हे यह भी बतलाया है कि किसी प्रश्नके बारेमें या निर्वाचनके सबधमें सम्मति देते हुए स्थानीय हिताहितका विचार —

किसी जातिका विरोध करनेके लिए—अपने मित्रोंको वोट देनेकी सलाह देनी चाहिए ।

स्कूलके लिए खरीदी हुई भूमिका ऋण चुकानेके हेतु लगातार कई महीने तक उद्योग होता रहा । तीन महीनोंमें जनरल मार्शलका ऋण चुकाने योग्य धन इक्हा हो गया और फिर और दो महीने परिश्रम क नेसे पूरे पाँच सौ डालर जमा हो गये। इससे हमारे नाम सौ एकड ऋ नका कागज हो गया । अब हम लोगोंको बडा सन्तोष हुआ । सतोष केवल इसी बातका न था कि स्कूलकी एक निजी जगह हो ग किन्तु सबसे अधिक सन्तोषका विषय यह था कि इस धनका अधिक अश टस्केजीके ही गोरे और काले लोगोसे सग्रह किया गया था । प्राय मेलो, जलसों, बैठकों और छोटे छोटे फुटकर दानोंसे यह सग्रह हुआ था ।

धन एकत्र कर चुकने पर हम लोगोने खेती बारीके काममें हाथ लगाया । इससे दो लाभ होनेवाले थे । एक तो स्कूलके लिए कुछ बँधी आमदनी हो जाती और दूसरे छात्रोंको भी कृषिकर्म्मकी शिक्षा मिल जाती । टस्केजी स्कूलके सभी काम धन्धे लोगाकी असली आवश्यकत ओंकी पूर्त्ति करनेके लिए ही, समय और साधनके अनुसार आरभ किये गये हे । प्रारभ खेतीसे ही किया गया, क्योंकि सबसे पहले पेटकी चिन्ता दूर करनेका प्रयत्न होना चाहिए ।

बहुतसे विद्यार्थी स्कूलमें भरती होकर अधिक दिन ठहर नहीं सकते थे, क्योंकि भोजन-खर्चके लिए उनके पास पैसा नहीं रहता था । ऐसे विद्यार्थियोंको सालमें नौ महीने विद्यालयमें रह सकने योग्य बनानेके लिए ही औद्योगिक शिक्षाकी तजवीज करनेकी अवश्यकता हुई ।

टस्केजी-विद्यालयको सबसे पहले जो पशु मिला वह एक गा आदमीका दिया हुआ एक अन्धा और बूढा घोडा था । पर आद

वहाँ दो सौसे अधिक घोडे, टट्टू, खच्चर, गायें, बैल, बछडे, और अनुमान सातसौ सूअर और बहुतसी भेड-बकरियाँ है ।

जब भूमिका ऋण चुका दिया गया, खेती आरभ हो गई और पुराने कमरोंकी मरम्मत हो चुकी तब हम लोगोंने विद्यालयके लिए एक नया भवन बनवाना आवश्यक समझा, क्योंकि विद्यार्थियोंकी सख्या प्रतिदिन बढती ही जा रही थी । हम लोगोंने बहुत सोच समझ कर भावी भवनका नकशा तैयार किया और हिसाब लगा कर देखा कि इसमें छ' हजार डालर लगेंगे । इतनी बडी रकम कहाँसे मिले ? पर हम यह जानते थे कि दोमेंसे एक बात अवश्य होगी—या तो स्कूल उन्नति करके आगे बढेगा या पीछे हट जायगा । यदि आगे बढना है तो विद्यार्थियोंके लिए स्थानका प्रबन्ध करना ही पडेगा, क्योंकि यदि हम लोग विद्यार्थियोंकी रहन सहन पर पूरी निगरानी न रख सके तो हम लोगोंके सारे परिश्रमों पर पानी फिर जायगा और यह निगरानी स्थानका यथेष्ट प्रबन्ध हुए बिना हो नहीं सकती ।

इसी समय एक ऐसी घटना हुई जिससे मुझे बडा सन्तोष और साथ साथ आश्चर्य भी हुआ । जब नगरनिवासियोंको यह बात मालूम हुई कि हम लोग एक नया भवन बनवानेकी फिक्रमें है तब एक लकडीके कारखानेका गोरा मालिक मेरे पास आया और कहने लगा—" भवनके लिए लकडीका जितना समान लगेगा वह सब मै यहाँ लाकर खडा किये देता हूँ । उसका मूल्य मै अभी नहीं चाहता । जिस समय आपके हाथ रुपया आजाय उस समय दे दीजिएगा । इसके सिवाय मै आपकी कोई ग्यारटी या स्वीकारता नही चाहता कि रुपया आने पर मुझे दे दिया जायगा । " मैंने साफ साफ कह दिया कि मेरे पास इस वक्त एक पैसा भी नहीं है । इस पर भी वह यही कहता रहा कि

"लकडी लाकर मैं यहाँ रखवा देता हूँ।" पर मैंने उसे ऐसा करनेसे रोका और जब मेरे हाथ कुछ रुपया आ गया तब लकडी लाने दी।

अब फिर मिस टेविड्सनने काले–गोरे दोनोंसे चन्दा लेना आरम्भ किया। इस नये भवनके समाचारसे नीग्रो लोगोंको जो आनन्द हुआ मैंने नहीं देखा कि दूसरे लोगोंको कभी किसी बातसे वैसा आनन्द हुआ हो। एक रोज इमारतके लिए धन किस तरह सग्रह किया जाय इस विषयमें विचार करनेको एक सभा हो रही थी। उसमें बारह मील चल कर एक बूढा नीग्रो आया जो अपने साथ बैलगाडी पर एक बडा सूअर लाया था। भरी सभामें खडे होकर उसने कहा, "मैं निर्धन हूँ, इस लिए धन नहीं दे सकता। पर भवनके व्ययके चन्देमें मैं यह सूअर देता हूँ। मुझे आशा है कि जिन लोगोंको अपनी बिरादरीसे प्रेम है और जिनमें कुछ भी स्वाभिमान है, वे अबकी सभामें एक एक सूअर अवश्य दान करेंगे।" इस सभामें और कितने ही लोगोंने प्रतिज्ञा की कि इमारतफंडके लिए हम अपनी कमाईके कुछ दिन अर्पण कर देंगे।

जब, टस्केजीसे पूरा चन्दा उतर चुका तब, मिस डेविड्सनने विशेष धन सग्रह करनेके लिए उत्तरकी ओर जाना निश्चय किया। कुछ सप्ताहों तक वे लोगोंसे मिलती जुलती रहीं और पाठशालाओं, गिर्जों तथा अन्य सभा समितियोंमें वक्तृता देती रहीं। चन्दा करनेमें उन्हें बडी कठिनाई झेलनी पडी, क्योंकि स्कूलकी विशेष प्रसिद्धि उस ओर नहीं हुई थी। तथापि मिस डेविड्सनको वहाँके बडे बडे लोगोंका चित्त अपनी सस्थाकी ओर आकर्षित करनेमें बहुत बिलम्ब नहीं लगा। मिस डेविड्सन जिस नाव (अगन-बोट) पर सवार होकर उत्तर प्रान्तकी भूमि पर उतरी उसी नाव पर, न्यू यार्ककी एक महिलासे उनका परिचय हो गया। उत्तर प्रान्तके चन्दा देनेवालोंकी नामावलीमें इन्हींका पहला नाम है। नाव पर दोनोंमें परिचय हुआ, बातचीत शुरू हुई

और टस्केजी-विद्यालयकी बात चली । टस्केजी-विद्यालयके प्रयत्नसे ये इतनी प्रसन्न हुईं कि चलते वक्त मिस डेविट्सनको पचास डालरका एक चेक देती गईं । विवाहसे पहले और इसके उपरान्त भी मिस डेविड्सनने पत्र व्यवहार करके और लोगोंसे स्वय मिल करके भी उत्तर दक्षिणमें धन सग्रह करनेका काम बराबर जारी रक्खा। इसके साथ ही वे टस्केजी विद्यालयकी देखरेख और अध्यापनका कार्य भी करती थीं । इसके अतिरिक्त वे टस्केजीके और आसपासके बूढे लोगोंमे काम करती और टस्केजीमें एक रविवार—पाठशाला भी चलाती थीं । उनमें शारीरिक बल अधिक नहीं था, पर विद्यालयके लिए दिन रात परिश्रम करते रहनेम ही उन्हें आनन्द मिलता था । धन-सग्रह करनेके लिए घर घर घूमकर वे इतनी थक जाती थी कि रातको अपने कपडे उतारना भी उनकी सामर्थ्यके बाहरका काम हो जाता था । बोस्टनमें एक महिलासे ये मिली थीं । उस महिलाने मुझसे कहा—“ जब मिस डेविडसन मुझसे मिलने आईं तब मै किसी काममे फँसी थी, इस लिए मैंने उनसे कुछ समय तक ठहरनेके लिए कहा । थोडी देर बाद जब मैं बाहरके कमरेम आई तो देखा कि उन्हें थकावटसे नींद आ गई है ।”

सबसे पहले, मिस्टर ए एच पोर्टर नामक एक सज्जनके नाम पर —जिन्होंने एक बहुत बडी रकम दी थी—‘ पोर्टर-हाल ’ नामका भवन बनाया गया । जिन दिनों इस भवनका काम चल रहा था उस समय रुपयेकी बडी तंगी मालूम हुई । एक साहूकारसे मैंने वादा किया था कि अमुक दिन चार सौ डालर आपको दूँगा, पर उस दिन सवेरे मेरे पास एक पैसा भी न था ! जब दस बजे डाक आई तब उसमें मिस डेविट्सनका भेजा हुआ पूरे चार सौ डालरका एक चेक मेरे हाथ आया ! ऐसी घटनायें मेरे जीवनमें प्राय हुई है । अस्तु । ये जो चार सौ डालर मिस डेविड्सनने भेजे थे सो बोस्टनकी दो महिलाओंने

दिये थे। दो वर्ष बाद, जब कि टस्केजी-विद्यालयका काम बहुत बढ़ गया था और हमलोग धनके अभावसे भविष्यके विषयमें उदास और हताश हो रहे थे, इन्हीं दो महिलाओंने छ हजार डालर भेजकर हमारी मदद की थी। इस मददसे हम लोगोको जो आश्चर्य हुआ और जो उत्तेजन मिला उसका वर्णन करनेकी लेखनीमें सामर्थ्य नहीं। इसके उपरान्त ये ही दो स्त्रियाँ चौदह वर्षो तक बराबर छ सौ डालर अर्थात् अठारह हजार रुपया वार्षिक भेजकर विद्यालयकी सहायता करती रहीं।

पहला भवन बन चुकने पर अब दूसरा उठानेकी बारी आई। विद्यार्थी पढाई हो चुकनेके बाद प्रतिदिन नियमपूर्वक उसकी नीव खोदने लगे। अभी उन लोगोंका यह सस्कार मिटा नहीं था कि हाथसे काम करना अपना मान घटाना है। एक विद्यार्थीने एक दिन कह भी डाला था कि "हम लोग यहाँ पढने आते है, मजदूरी करने नहीं।" पर हा, धीरे धीरे यह कुसस्कार मिटता जाता था। कुछ दिनोंके परिश्रमसे नीव तैयार हो गई और नीवका पत्थर देनेके लिए दिन निश्चित हो गया।

दक्षिणका यह भाग गुलामगीरीका केन्द्रस्थान था। कृष्णकटिबन्धके इस स्थानमे इमारतकी नीव रख दी गई। गुलामगीरीको बन्द हुए अभी केवल १६ वर्ष हुए थे। सोलह वर्ष पहले कोई नीग्रो यदि लोगोंको पुस्तका द्वारा शिक्षा देनेका साहस करता तो समाज और राज्य दोनों ही उस पर टूट पढते, परन्तु उस दिन उसी दासत्वके केन्द्रस्थल पर अज्ञान नाशिनी भगवती सरस्वतीके सुरम्य निकेतनकी नीव-शिला बिठाई गई। सचमुच ही वह समारम्भ और वसन्तका वह प्राकृतिक सौन्दर्य अपूर्व था। ससारके शायद ही किसी स्थानको ऐसा मनोहर दृश्य देखनेका अवसर मिला हो।

इस अवसर पर उस प्रदेशके शिक्षाविभागके सुपरिंटेंडट आनरेबल वाही थामसनकी मुख्य वक्तृता हुई। कोणशिलाके इर्दगिर्द शिक्षक, विद्यार्थी,

उनके मातापिता या मित्रमंडली, उस प्रदेशके गोरे अधिकारी, आस-पासके मुख्य मुख्य गोरे रईस और अनेक नीग्रो स्त्रियाँ तथा पुरुष, जिन्हें कुछ वर्ष पहले ये ही गोरे अपने गुलाम समझते थे, एकत्रित हुए थे। दोनों ही जातियोंके लोग कोणाशिलाके पास अपना कुछ न कुछ स्मारक या चिह्न रखनेके लिए बहुत ही उत्सुक दिखाई देते थे।

भवन बन चुकनेके पहले हम लोगोंको कई बड़ी बड़ी कठिनाइयोंसे सामना करना पड़ा। बिलपर बिल आ धमकते थे और उनका रुपया चुका न सकनेके कारण हम लोग बहुत ही दुखी होते थे। जिसे इस तरहके मौके बारबार नहीं आये हैं कि स्कूलके लिए इमारत तो बनवाना है पर यह मालूम नहीं है कि धन कहाँसे आयगा, वह हम लोगोंकी दुरवस्थाकी और अड़चनोंकी पूरी पूरी कल्पना कदापि नहीं कर सकेगा। मुझे टस्केजीके वे दिन याद आते हैं जब मैंने इस फिक्रमें कि धन कहाँसे लाया जाय, बिस्तरे पर करवटें बदलते हुए सारीकी सारी रातें बिता दी हैं। मैं जानता था कि यह समय मेरी जातिकी परीक्षाका है—समय इस बातको बतलावेगा कि हम नीग्रो लोगोंमें कोई स्वतन्त्र विद्यापीठ चलानेकी सामर्थ्य है या नहीं। मुझे मालूम था कि यदि इस कार्यमें मैं हारा, तो सारी जातिको इसका कुफल चखना पड़ेगा। मुझे यह भी विदित था कि नीग्रो जाति बदनाम है और इसलिए हमारे प्रयत्न भी 'बालू पर भीत' समझे जा रहे हैं। मैं जान चुका था कि यदि ऐसा ही कोई दुस्साध्य कार्य गोरे लोग उठा लेते तो लोगोंको उनके कामयाब होनेमें जरा भी सन्देह न रहता और इसके विपरीत यदि हम लोग कामयाब हुए तो लोग आश्चर्य करेंगे। इन बातोंके बोझेने हम लोगोंको बुरी तरह दबा रक्खा था।

इस दुरवस्थामें भी मैं टस्केजी नगरके जिस किसी गोरे या नीग्रो मनुष्यके पास गया उसने कुछ न कुछ अवश्य सहायता की। ऐसा एक भी मौका नहीं आया जब किसीने इन्कार कर दिया हो। कई बार ऐसा

हुआ कि सैकडों रुपयोंके बिल आये और उनका रुपया चुकानेके लि मुझे गाँवके दस पाँच सज्जनोंसे छोटी छोटी रकमें उधार लेनी पडीं। पर एक बातका मैं सदा ध्यान रखता था कि स्कूलकी साख बना रहे, और इस प्रयत्नमें मुझे बराबर सफलता प्राप्त हुई।

मि० कैम्बल जिन्होंने जनरल आर्मस्ट्रांगको लिखकर मुझे टस्के स्कूलके लिए बुलाया था, बडे ही योग्य पुरुष थे। उनका एक उपदे में कभी न भूलूँगा। टस्केजीका काम शुरू होने पर एक दिन उन्होंने पितृतुल्य स्नेहसे कहा था—“ वाशिंगटन, यह सदा स्मरण रखना कि साख ही पूँजी है। ”

एक बार धनाभावके मारे जब हमलोग बहुत ही तंग हुए तब मैंने जनरल आर्मस्ट्रांगको अपनी सारी दशा लिख भेजी। उन्होंने तत्काल ही अपनी सारी बचतका चेक मेरे पास भेज दिया। इस प्रकारसे जनरल आर्मस्ट्रांगने टस्केजी-विद्यालयकी कई बार मदद की है। यह बात शायद मैंने इससे पहले सर्वसाधारणपर जाहिर नहीं की थी।

स्कूलका प्रथम वर्ष समाप्त होने पर, १८८२ के ग्रीष्म ऋतुमें माल्डनकी मिस फैनी ए स्मिथके साथ मेरा विवाह हुआ। शरदृतुमें हम दोनों टस्केजीमें मकान लेकर एक साथ रहने लगे। स्कूलमें इस समय चार शिक्षक थे, उन्हें भी इसी मकानमें रहनेको जगह दी गई। मेरी सहधर्मिणी हैम्पटन-विद्यालयकी ग्रेज्युएट थी। स्कूलके लिए इन्होंने भी जीतोड परिश्रम किया था। इनके कारण मेरा घर सदा हँसतासा देख पडता था। पर दुर्भाग्यवश १८८४ के मई मासमें, पोर्शिया एम वाशिंगटन नामकी एक कन्याको छोडकर, ये सुरलोकको सिधार गईं।

आरम्भसे ही मेरी सहधर्मिणी तन, मन और धनसे विद्यालयकी सहायता करती थी। उनके विचार और अभिलाषायें सर्वथा मेरी ही जैसी थीं, पर विद्यालयकी कली खिलनेसे पहले ही उन्होंने इह लोकसे प्रस्थान कर दिया।

दसवाँ परिच्छेद।

टेढ़ी खीर।

टस्केजी-विद्यालयका आरंभ करनेसे पहले ही मैंने यह विचार कर रक्खा था कि इस विद्यालयके द्वारा विद्यार्थियोंको खेती बारी और गृहस्थीके कामोंके अतिरिक्त, मकान बनानेका काम भी सिखलाया जायगा। ऐसा करनेमें मेरा यह अभिप्राय था कि इन कामोंको सिखलाते हुए विद्यार्थियोंको काम करनेकी नई पद्धतियाँ भी बतलाई जायँ जिससे उनके परिश्रमोंसे स्कूलका भी लाभ हो और उन्हें भी परिश्रमके महत्त्व, उसके उपयोग और उससे होनेवाले आनन्दका अनुभव हो। इसके सिवाय उनकी मानसिक उन्नति यहाँतक हो जाय कि वे किसी परिश्रमको आपत्ति या कष्ट न समझ कर परिश्रमके लिए ही परिश्रम करना सीखें। हवा, जल, भाफ, बिजली और अश्वबल आदि निसर्गशक्तियोंको किसतरह उपयोगमें लाना चाहिए, इसकी शिक्षा भी मैं उन्हें देना चाहता था।

शुरू शुरूमें बहुतसे लोगोंने मुझे विद्यार्थियों द्वारा भवन बनवानेकी चेष्टासे रोक देना चाहा। पर मैं अपने विचारोंको बदलनेवाला न था। जिन लोगोंने मुझे रोका उनसे मैंने कहा—"मैं जानता हूँ कि बाहरके अनुभवी कारीगर जैसा भवन बना देंगे वैसा हमारे विद्यार्थी नहीं बना सकेंगे, पर विद्यार्थियोंके हाथों भवन बनवानेसे जो लाभ होंगे उनके सामने यह कमी किसी गिनतीमें न रह जायगी। उन्हें जो शिक्षा प्राप्त होगी, अपने बल पर खड़े होनेकी जो आदत पड़ेगी और जो आत्मविश्वास उत्पन्न होगा उसका मूल्य भवनके डौलढाँचेसे बहुत अधिक है।"

जिन लोगोंको मेरे इन विचारोंमें विश्वास न होता था उनसे

यह भी कहा कि " हमारे विद्यार्थी निर्धन है, कपास, चावल और रु वेचनेवालोंकी झोपडियोंम पले हुए है। इसलिए यह मै जानता हूँ कि कारीगरोंकी बनाई हुई सुन्दर हवेलीमें स्थान मिलनेसे उन्हें वर्तमा सुखी होगी, पर मेरा यह विश्वास है कि अपने मकान आप ही बना लेना यदि उन्ह सिखलाया जायगा तो उनके मनोविकासका मार्ग बहुत ही सुगम हो जायगा। भूल होना स्वाभाविक है, पर इन्ही भलोंसे वे भा लिए बहुमूल्य शिक्षा भी प्राप्त करेंगे।"

टस्केजी-विद्यालयको स्थापित हुए बीस वर्ष हो गये। इस बीच इमारते बनवानेका काम विद्यार्थियों द्वारा ही हुआ है और लगभ चालीस भवन बन चुके है। इनमेंसे चारको छोडकर बाकी सब विद्या र्थियोंके परिश्रमके ही फल है। दक्षिण प्रान्तमें इस समय ऐसे सैकड़ आदमी फैले हुए है जो पहले इसी विद्यालयके विद्यार्थी थे और जिन्हें कारीगरीकी शिक्षा यहीं पर भवन बनानेके कारण मिली थी।

पुराने विद्यार्थी शिक्षा समाप्त कर चले जाते है। उनके स्थानमें नये विद्यार्थी आकर उनकी परम्परा सुरक्षित रखते है। इस प्रकार ज्ञान और कौशल्य सिलसिला बराबर जारी रहता है और आज यहाँ तक उन्नति हुई है कि भवन बनानेमें हमारे विद्यालयको किसी बाहरी कारीगर या मजदूरकी आवश्यकता नहीं पडती, सब काम अर्थात् इमारतोंके नक्शे खींचनेसे लेकर इमारतें तैयार होने पर उनमे बिजलीकी रोशनी लगा देने तक सब तैयारियाँ हमारे विद्यालयके शिक्षक और विद्यार्थी वहींके वहीं अपने हाथों कर लेते है।

ऐसा होनेसे विद्यालयके भवनतकसे विद्यार्थियोंका स्नेह हो जाता है। किसी इमारतकी दीवार पर यदि कोई नया विद्यार्थी चाकू या पेन्सिलसे निशान करता हुआ दिखाई देता है तो पुराना विद्यार्थी उससे तत्काल ही कहता है-" खबरदार! ऐसा काम मत करना। यह हमारी इमार

है । इसके बनानेमें मैने सहायता की है । ” इस प्रकारके शब्द मैने स्वय कई बार सुने हैं ।

विद्यालयके शुरू दिनोंमें हम लोगोंको ईंटें बनानेके काममें बडी कठिनाई झेलनी पडी । जब खेती बारीका काम चल निकला तब हम लोगोंने ईंटें बनानेका विचार किया । अपनी इमारतोंके लिए तो जरूरत थी ही, इसके अतिरिक्त और भी एक कारण था । टस्केजीमें ईंटें बनानेका कारखाना एक भी न था और इससे वहाँ भी ईंटोंकी बडी माँग थी । हमारे पास न तो धन था और न इस कामका अनुभव ही था । तो भी हमने यह कठिन कार्य हाथमें ले लिया ।

ईंटें बनानेका काम गन्दा और कठिन है, इस कारण इसमें विद्याथियोंसे सहायता लेना जरा टेढी खीर थी । जब वे ईंटें बनानेके काममें लगाये गये तब बहुत घबराये और शारीरिक परिश्रमसे उनका जी हटने लगा । घुटने घुटने भर मिट्टी और कीचडमें खडे होकर घटों काम करना किसीको भी पसन्द न आया । बहुतसे विद्यार्थी तो कामसे घबराकर विद्यालय छोड गये ।

कई जगहें देखभाल कर अन्तम एक स्थान पर मिट्टीके लिए गढहा खोदा गया । अबतक मेरी यह धारणा थी कि ईंटें बनानेका काम सुगम है, पर जब काम पडा तब मालूम हुआ कि इस काममें भी विशेषकर ईंटें पकानेमें, बुद्धि और कौशलकी आवश्यकता है । बडे परिश्रमसे हम लोगोंने पचीस हजार ईंटें तैयार करके पजावेमें पकानेके लिए रक्खीं । पजावा दुरुस्त न होनेसे हो, या काफी आग न होनेसे हो, हमारी पहली कोशिश तो बिल्कुल ही व्यर्थ गई । इसके बाद हमने दूसरा पजावा तैयार किया । यह प्रयत्न भी खाली गया । इससे विद्यार्थी भी पीछे हटे । तीसरी बार इस विषयकी शिक्षा पाये हुए अनेक अध्यापकोंने बडे परिश्रम और उद्योगसे फिर पजावा लगाया । ईंटें पकनेके लिए एक सप्ताह लगता था ।

पाँच दिन बीत गये और हम लोगोंको यह आशा हुई कि अ शीघ्र ही बहुतसी ईंटें तैयार मिल जायँगी, पर एक दिन आधी रातके समय अकस्मात् पजावा खिसल पडा और हमारे सारे परिश्रमों प पानी फिर गया।

अब चौथी बार पजावा लगानेके लिए मेरे पास एक डालर मा बचा। मेरे साथी शिक्षकोंने ईंटें बनानेका विचार छोड देनेके लि मुझसे अनुरोध भी किया। इसी बीच मुझे अपनी एक पुरानी घड स्मरण हुआ। मै समीपके माटगोमरी नगरमें गया और व इसे रेहन रखकर फिर पजावा लगानेके लिए पन्द्रह रुपये ले आया इन पन्द्रह रुपयोंके बल पर मैने अपने निराश साथियोंमें फिर उत्साह उत्प किया और चौथा पजावा फिर लगा दिया। मुझे यह बतलाते हु आनन्द होता है कि इस बार मेरी ईंटें भलीभाँति पक गईं। इसके बा जब तक मेरे पास धन आया तब तक उस घडीके रेहनकी मियाद गुजर गई और मै घडी छुडा न सका, पर मुझे इसके लिए कु दुःख न हुआ।

अब हमारे यहाँ ईंटोंका कारखाना भी शिल्पविभागका एक वि अंश हो गया है। इसमें विद्यार्थियों द्वारा जो ईंटें तैयार होता हैं चाहे जैसे बाजारमें कट सकती हैं। इसके अतिरिक्त, हाथसे य यन्त्रोंकी सहायतासे ईंटें तैयार करनेके काममें कितने ही युवक अच्छ जानकारी रखते हैं और उन्होंने दक्षिणके कई हिस्सोंमें यह व्यव जारी कर दिया है।

ईंटोंके कामसे मैने गोरों और कालोंके संबंधके विषयमें एक नई ब सीखी। हमारे विद्यालयकी बनी हुई ईंटें बहुत बढ़िया होती थीं, इस लि विद्यालयसे कोई सरोकार न रखनेवाले गोरे भी उन्हें खरीदने लगे। उनके दिलमें यह बात भी बैठ गई कि विद्यालयकी बदौलत समाजके एक ब

भारी अभावकी पूर्ति हो रही है। वे यह भी समझने लगे कि नीग्रो शिक्षा पाकर निकम्मे नहीं हो जाते, बल्कि उनसे समाजके सुख और वैभवकी वृद्धि होती है। आसपासके लोग ईंटें खरीदनेके लिए आने लगे, इससे उनसे हमारी जान पहचान बढ़ी और आपसमें लेन देन भी शुरू हो गया। दक्षिण प्रान्तके इस हिस्सेमें हम लोगोंमें जो कुछ अच्छापन दिखाई देता है उसकी जड़ जमानेमें ईंटोंकी शिक्षाने बड़ी भारी मदद की है।

दक्षिणमें जहाँ जहाँ हमारे ईंट बनानेवाले विद्यार्थी गये हैं वहाँ वहाँ उन्होंने समाजका कुछ न कुछ उपकार करके उसे अपना कृतज्ञ बनाया है। इस प्रकारसे दोनों जातियोंमें परस्पर अच्छा सम्बन्ध स्थापित हुआ है।

मनुष्यकी प्रकृतिमें कोई ऐसी बात अवश्य है जिससे वह गुणोंको—फिर वे गुण किसी वर्णके मनुष्यमें क्यों न हों—परख कर उनकी कदर करता है। मैंने यह भी अनुभव किया है कि बकबकसे कोई काम नहीं होता, जो कुछ होता है, प्रत्यक्ष कार्यसे होता है। नीग्रो लोगोंके विषयमें ही लीजिए। उदाहरणार्थ, किसी नीग्रोकी बनाई हुई एक बहुत अच्छी इमारत है। ऐसी इमारत नीग्रो आदमी बना सकता है या नहीं, बनावे तो कैसे बना सकता है, इत्यादि बातों पर एक ग्रन्थ लिख डालनेसे भी जो काम न होगा, वह उस इमारतके देखनेसे हो जायगा।

टस्केजी-विद्यालयमें कई प्रकारकी गाड़ियाँ भी बनती हैं। खेतीके कामोंके लिए और खास विद्यालयके लिए हम इन गाड़ियोंसे काम लेते हैं। ये सब गाड़ियाँ स्वयं विद्यार्थियोंके हाथोंकी बनाई हुई हैं। हमारे यहाँ जो गाड़ियाँ तैयार होती हैं वे बिकनेके लिए भी भेजी जाती हैं। इन गाड़ियोंने भी ईंटोंकी तरह सर्व साधारणको मोह लिया है और

गाडीका काम सीखे हुए विद्यार्थी जहॉं कहीं गये है वहॉं वे दोनों जातियोंक सम्मानभाजन हुए हैं। जिस समाजसे हमारे विद्यार्थीका संबंध हो जात है वह समाज फिर उसे अपने गलेका हार बना लेता है।

जो मनुष्य दूसरोंकी आवश्यकतायें पूरी कर सकता है, वह, चह किसी जातिका हो, उपराचढीमें बाजी मार ही ले जायगा। किस भाषा-विशेषमें पारगत होकर यदि कोई मनुष्य किसी समाजमें प्रव करे तो वहॉं उसकी क्या कदर होगी? हॉं, ईंटे, घर और गाडियोंक काम जाननेवालेकी कदर जरूर होगी। बात यह है कि जिस मनुष्यकी सहायतासे समाजका कोई अभाव पूरा होता है, समाज उसीका आद करता है।

ईंटे पकानेमें जब हम लोगोंको पहली बार कामयाबी हुई, तब हम लोगोंने यह काम विद्यार्थियोंको सिखलानेके लिए और भी अधिक जा दिया। इस वक्त तक आसपासके गॉंवोंम और नगरोंमें यह बात प्रसिद्ध हो चुकी थी कि टस्केजी-विद्यालयमें प्रत्येक विद्यार्थीको कोई न कार्य शिल्पव्यवसाय या धन्धा सिखलाया जाता है, चाहे वह विद्यार्थी अमा हो या गरीब। इस पर कई विद्यार्थियोंके मातापिताओंने चिट्ठियॉं भेजक बडा विरोध किया और कुछ तो विरोध करनेके लिए स्वय ही च्चे आये। नये भरती होनेवाले विद्यार्थियोंके मातापिताओंने भी किसी न किसी रूपमें यह प्रार्थना की कि हमारे लडकोंको सिवाय पुस्तकें पढानेके और कुछ भी न सिखलाया जाय। पढाईमें बडी बडी पुस्तकोंके ढेर और उनके बडे बडे नाम देखकर ही विद्यार्थी और उनके मात पिता प्रसन्न होते थे।

मैंने इस विरोध पर कुछ भी ध्यान न दिया। पर हॉं, जब कभ समय मिल जाता था, प्रदेशके भिन्न भिन्न स्थानोंमें जाकर विद्यार्थियोंक अभिभावकोंको शिल्पशिक्षाका महत्त्व और उससे होनेवाले लाभोंक

परिचय करा देनेमें चूकता नहीं था। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियोंको भी समय समय पर इसकी महत्ता बतला दिया करता था। शुरू शुरूमें शिल्पशिक्षासे लोगोंके हृदयमें एक प्रकारका तिरस्कार था, तो भी विद्यार्थियोंकी सख्या बढती ही जाती थी, यहाँ तक कि दूसरे वर्ष छ महीनोंके भीतर ही अलबामाके भिन्न भिन्न भागों और दूसरे राज्योंसे आये हुए विद्यार्थियोंकी सख्या डेढ सौ पर पहुँच गई थी।

सन् १८८२ के ग्रीष्मकालमें मै अपने साथ मिस डेविड्सनको लेकर नये भवनके लिए धनसग्रह करनेके अभिप्रायसे उत्तरकी ओर गया। रास्तेमें मै न्यूयार्क नगरमे अपने एक पुराने मुलाकाती पादरीसे एक सिफारिशी चिट्ठी लेनेके लिए ठहरा। परन्तु इस भले आदमीने चिट्ठी देना तो दूर रहा, उलटा मुझे यह समझा देना चाहा कि मै अपने घरका रास्ता लूँ-धनसग्रह करनेके बखेडेमें न पडूँ। क्योंकि ऐसा करनेसे लेनेके देने पडेंगे-राहखर्च भी न मिलेगा। इस उपदेशके लिए मैने उसे धन्यवाद दिया और अपना रास्ता लिया।

पहला मुकाम नार्थम्पटनमें हुआ। होटलवाले तो मुझे ठहरने न देंगे इस आशकासे मैंने आधा दिन किसी ऐसे नीग्रो कुटुबीको ढूँढनेमे बिताया जिसके यहाँ ठहरनेका और भोजनका सुभीता हो जाय। पीछे मुझे मालूम हुआ कि यदि मै एक होटलमें चाहता तो ठहर सकता था। इससे मुझे बडा आश्चर्य हुआ।

धन तो यथेष्ट मिला, और इसी लिए भवन पूरा तैयार न होने पर भी इस वर्षके ‘ धन्यवाद पर्व ’ पर हम लोगोंने पोर्टर–हालके ही भजनमन्दिरमें पहली ईशस्तुति और प्रार्थना की। इस अवसर पर ‘ धन्यवाद-मत्र ’ पढनेके लिए भी एक अत्युत्तम व्यक्ति जिनका नाम पादरी राबर्ट सी बेटफोर्ड है, मिल गये। ये विसकानासिनके रहनेवाले एक गोरे आदमी है और उस वक्त माटगोमरी राज्यके काले गिरजेमें धर्मोपदेशक थे।

इससे पहले मैंने कभी इनका नाम भी न सुना था और मिस्ट बेडफोर्ड भी मुझसे इतने ही अपरिचित थे। इन्होने टस्केजीमें आ और 'धन्यवादपर्व' पर उपदेश देना बड़े आनन्दसे स्वीकार किया। अभीष्ट सिद्धि होनेपर इस प्रकार ईश्वरको धन्यवाद देनेकी प्रथा गोरोंमें तो प्रचलित थी, परन्तु नीग्रो लोगोंके लिए यह एक बिलकुल न बात थी। इस अवसर पर उपस्थित लोगोंमें अपूर्व उत्साह देख पड़ता था। नये भवनका वह दृश्य, वह उपासनाकार्य और वह दि लोगोंको भूलनेवाला नहीं।

मिस्टर बेडफोर्डने विद्यालयका ट्रस्टी होना भी स्वीकार कर लिया। अब तक उसी नातेसे और अन्य प्रकारसे भी वे विद्यालयकी बराबर सहायता कर रहे है। विद्यालयकी उन्नतिका उन्हें सदा ही ध्यान रहता है। वे विद्यालयके लिए, कैसा ही मामूली काम क्यों न हो, करके बड़े प्रसन्न होते है। वे हर बातमें निजको एकदम भूल जाते है, और जिस कामसे लोग किनारा कसते है उसे आगे बढकर कर डालते है। इसमें सन्देह नहीं कि वे सत्य मार्ग पर चलनेवाले एक अलौकिक महात्मा हैं।

कुछ दिनोंके उपरान्त हमारे विद्यालयमें एक नवीन व्यक्तिने प्रवे किया। ये हैम्पटन-विद्यालयसे हाल ही उत्तीर्ण होकर निकले थे। इनके कारण टस्केजी-विद्यालयने बड़ी उन्नति की है। इनका न मिस्टर लोगन है। ये सत्रह वर्षसे विद्यालयके कोषाध्यक्ष है और मे अनुपस्थितिमें प्रिन्सिपलका कार्य भी करते है। ये इतने स्वार्थत्यागी है, कामधन्धेमें इतने चतुर है, और इनकी बुद्धि भी इतनी तीव्र है कि इनके कारण मुझे और कामोंसे बाहर जानेके लिए बहुत अवका मिलता है—मेरी अनुपस्थितिमें कोई काम न कभी रुका है और न कभी बिगड़ा ही है। अनेक अवसरों पर धनाभावके कारण विद्यालयको

अनेक कठिनाइयाँ झेलनी पडी है पर मि० लोगनने कभी हिम्मत नही हारी ।

पहला भवन बनकर तैयार हुआ ही चाहता था कि हम लोगोंने, दूसरे वर्षके मध्यमे, विद्यार्थियोंके लिए एक भोजनगृह खोल दिया । दूर दूरसे अनेक विद्यार्थी आते थे, इसलिए उनके भोजन निवास आदिका प्रबन्ध करना आवश्यक था । विद्यार्थियोंकी संख्या इतनी बढने लगी कि उनकी भीतरी स्थितियोंकी तथा रहन-सहनकी पूरी पूरी देखभाल रखना कठिन हो गया और यह देखकर हम लोग बहुत दुखी हुए ।

भोजनगृह खोलनेके लिए हमारे पास विद्यार्थी और उनकी क्षुधाके अतिरिक्त और कोई साधन न था । नये भवनमें रसोई और भोजन आदिके लिए कोई स्थान न बना था । इस लिए भवनके नीचेकी भूमि खोद कर इस कामके लिए स्थान निकालनेका विचार किया गया । विद्यार्थियोंने भूमि खोदनेमें बहुत सहायता दी, जिससे शीघ्र ही रसोई और भोजन आदिके लिए स्थानका किसी कदर प्रबन्ध हो गया । पर अब इसी स्थानका इतना परिवर्तन हो गया है कि देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि कभी यह रसोईघर था ।

अब और एक पेचीदा मामला आ पडा । भोजनका सामान खरीदनेके लिए धन बिलकुल न था । इस पर गाँवके कुछ व्यापारी हम लोगोंको खाद्य पदार्थ उधार देनेके लिए तैयार हुए । मुझे खुद अपने ऊपर जितना विश्वास नहीं उतना लोग मुझ पर रखते थे । इससे कभी कभी मैं बहुत ही चकराता था । (यह बात बिना अनुभवके समझमें नहीं आ सकती ।) हमारे पास रसोई बनानेके लिए स्टोव या मिट्टीके तेलवाले चूल्हे नही थे और न खानेके लिए थालियाँ ही थीं । इस लिए शुरू शुरूमें पुराने ढगके ही चूल्होंसे काम लेना पडा । कुछ बचे—जो इमारत

बनते समय काम आई थीं–वहां पडी हुई थीं, उन्हींसे मेजोंका
लिया गया । थालियाँ भी कुछ मिलीं पर वे नहींके बराबर थीं ।

आरम्भमें रसोईघरका प्रबन्ध बडा गडबड रहता था । नि
समय पर भोजन करना तो वहाँ कोई जानता ही न था । भो
पदार्थ भी ठीक नहीं बनते थे । एक दिन प्रातःकालकी घ
कि मै भोजनगृहके दरवाजे पर खडा था । भीतर विद्यार्थी भो
अप्रबन्धकी शिकायत कर रहे थे । कितनोंको उस दिन जल
मिला था । इसी समय एक लडकी, जिसे कुछ भी खानेको न मिल
बाहर आई और ‘ खाना न सही, पानी तो कमसे कम पी लूँ
विचारसे वह कुएँ पर गई । पर वहाँ रस्सी भी टूटी हुई थी ।
लौटकर उसने, मुझे न देख पानेसे, बहुत ही निराश होकर व
“ इस विद्यालयमें पीनेको जल भी नहीं मिलता । ” यह सुनक
हृदयमें गहरी चोट लगी । इसके समान नाउम्मेद करनेवाली बात
और कोई नहीं सुनी ।

एक बार विद्यालयके ट्रस्टी मि० बेडफर्ड विद्यालय देखनेके
आये । उन्हें भोजनगृहके ऊपर सोनेके लिए स्थान दिया गया । एक
तडके दो विद्यार्थियोंसे झगडा हो पडनेके कारण उनकी नींद खुल
झगडा इस बातका था कि उस दिन कहवेका प्याला दोनोंमेंसे
ले । एक विद्यार्थीने अन्तमें यह सिद्ध कर दिया कि उसे तीन
हुए, प्याला नहीं मिला और तब उसने वह प्याला ले लिया ।

परन्तु धीरे धीरे उद्योगमें लगे रहकर हम लोगोंने सारी कठिना
और अभावोंको दूर कर दिया । कोई काम हो, यदि चतुराईसे,
हृदयसे और अध्यवसायके साथ किया जाय तो अवश्य ही सिद्ध होता

इस समय जब मुझे उन पुरानी कठिनाइयों और अभावोंका ध्य
है तो मै बहुत ही प्रसन्न होता हूँ, क्योंकि यदि आरंभहीमें सु

और चैनके सामान प्रस्तुत हो जाते तो शायद हम लोगोंके दिमाग ठिकाने न रहते और हम लोगों द्वारा कोई काम भी न बनता। मेरा तो यह सिद्धान्त है कि कोई काम हो उसे अपने ही बल पर शुरू करना चाहिए।

अब पुराने विद्यार्थी टस्केजीमें आकर बहुत ही आनन्दित होते हैं, क्योंकि उन्होंने जिस स्वाभाविक क्रमसे उन्नति आरंभ की थी उसी क्रमसे वह आगे बराबर होती हुई चली जा रही है। अब वह अव्यवस्था और अभाव नहीं रहा। इस समय भोजनगृहके कमरे बड़े बड़े हैं और सुन्दर तथा हवादार हैं। उनमें जो जो वस्तुयें आवश्यक होती हैं, वे सब इस समय प्रस्तुत हैं। सब काम बेशिकायत और नियमसे होते हैं। विद्यार्थियों द्वारा तैयार हुए पक्वान्न, मेज, उनपरके कपड़े (मेज-पोश), फूलोंके गुच्छे और काँचके बरतन आदि सामान करीनेसे रक्खे हुए पाकर और भोजनके समय परोसनेमें कोई शिकायतकी बात न देखकर पुराने विद्यार्थियोंको बड़ा हर्ष होता है और अवसर मिलने पर वे अपना हर्ष मुझ पर भी प्रकट करते हैं। उन्हें विशेषकर इसी बातका हर्ष है कि टस्केजीके विद्यालय और विद्यार्थियोंने अपनी उन्नति अपने बल पर खड़े होकर स्वाभाविक क्रमसे की है।

बनते समय काम आई थीं–वहाँ पडी हुई थीं, उन्हींसे मेजोंका काम लिया गया। थालियाँ भी कुछ मिलीं पर वे नहींके बराबर थीं।

आरम्भमें रसोईघरका प्रबन्ध बडा गडबड रहता था। नियमित समय पर भोजन करना तो वहाँ कोई जानता ही न था। भोजनके पदार्थ भी ठीक नहीं बनते थे। एक दिन प्रात कालकी घटना है कि मै भोजनगृहके दरवाजे पर खडा था। भीतर विद्यार्थी भोजनके अप्रबन्धकी शिकायत कर रहे थे। कितनोंको उस दिन जल भी न मिला था। इसी समय एक लडकी, जिसे कुछ भी खानेको न मिला था, बाहर आई और 'खाना न सही, पानी तो कमसे कम पी लूँ' इस विचारसे वह कुएँ पर गई। पर वहाँ रस्सी भी टूटी हुई थी। वहाँसे लौटकर उसने, मुझे न देख पानेसे, बहुत ही निराश होकर कहा– "इस विद्यालयमें पीनेको जल भी नही मिलता।" यह सुनकर मेरे हृदयमें गहरी चोट लगी। इसके समान नाउम्मेद करनेवाली बात मैंने और कोई नहीं सुनी।

एक बार विद्यालयके ट्रस्टी मि० बेडफर्ड विद्यालय देखनेके लिए आये। उन्हें भोजनगृहके ऊपर सोनेके लिए स्थान दिया गया। एक दिन तडके दो विद्यार्थियोंसे झगडा हो पडनेके कारण उनकी नींद खुल गई। झगडा इस बातका था कि उस दिन कहवेका प्याला दोनामसे कौन ले। एक विद्यार्थीने अन्तमें यह सिद्ध कर दिया कि उसे तीन दिन हुए, प्याला नही मिला और तब उसने वह प्याला ले लिया।

परन्तु धीरे धीरे उद्योगमें लगे रहकर हम लोगोंने सारी कठिनाइयों और अभावोंको दूर कर दिया। कोई काम हो, यदि चतुराईसे, सच्चे हृदयसे और अध्यवसायके साथ किया जाय तो अवश्य ही सिद्ध होता है।

इस समय जब मुझे उन पुरानी कठिनाइयों और अभावोंका ध्यान आता है तो मैं बहुत ही प्रसन्न होता हूँ, क्योंकि यदि आरम्भहीमें सुख

और चैनके सामान प्रस्तुत हो जाते तो शायद हम लोगोंके दिमाग ठिकाने न रहते और हम लोगो द्वारा कोई काम भी न बनता। मेरा तो यह सिद्धान्त है कि कोई काम हो उसे अपने ही बल पर शुरू करना चाहिए।

अब पुराने विद्यार्थी टस्केजीमें आकर बहुत ही आनन्दित होते हैं, क्योंकि उन्हाने जिस स्वाभाविक क्रमसे उन्नति आरभ की थी उसी क्रमसे वह आगे बराबर होती हुई चली जा रही है। अब वह अव्यवस्था और अभाव नहीं रहा। इस समय भोजनगृहके कमरे बडे बडे है और सुन्दर तथा हवादार है। उनमे जो जो वस्तुयें आवश्यक होती ह, वे सब इस समय प्रस्तुत है। सब काम बेशिकायत और नियमसे होते हैं। विद्यार्थियों द्वारा तैयार हुए पक्वान्न, मेजें, उनपरके कपडे (मेज-पोश), फूलोंके गुच्छे और कॉचके बरतन आदि सामान करीनेसे रक्खे हुए पाकर और भोजनके समय परोसनेमें कोई शिकायतकी बात न देखकर पुराने विद्यार्थियोंको बडा हर्ष होता है और अवसर मिलने पर वे अपना हर्ष मुझ पर भी प्रकट करते है। उन्हें विशेषकर इसी बातका हर्ष है कि टस्केजीके विद्यालय और विद्यार्थियोंने अपनी उन्नति अपने बल पर खडे होकर स्वाभाविक क्रमसे की है।

ग्यारहवॉ परिच्छेद ।

सोनेके पहले बिछौनेकी तैयारी ।

कुछ दिनोंके उपरान्त हैम्पटन-विद्यालयके कोषाध्यक्ष जनरल जे एफ बी मार्शल विद्यालयमें आये । इनका आना एक ब महत्त्वकी घटना थी । इन्हीं मार्शल साहबने हम लोगों पर विश्वास रख कर टस्केजी-विद्यालयकी भूमिके लिए आरभमें ढाई सौ डालर उधा दिये थे । उन्होने विद्यालयमें एक सप्ताह तक रहकर सब कार्योंका भल भाँति निरीक्षण किया । विद्यालयके प्रबन्ध और कार्यक्रम आदिसे व बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होंने अपनी रिपोर्टमें विद्यालयकी प्रशस लिखकर वह रिपोर्ट हैम्पटन-विद्यालयमें भेज दी । इसके कुछ दिन उपरान्त वहॉकी सुप्रसिद्ध अध्यापिका मिस मेरी एफ मैकी—जिन्होंने हैम्पटन-विद्यालयमें भरती करनेसे पहले मुझसे झाड़ दिल्वाकर मेरी परीक्षा ली थी—आ गई और कुछ दिनोंमें स्वय जनरल आर्मस्ट्राग भी आ पधारे ।

इस समय टस्केजी-विद्यालयमें अध्यापकोंकी सख्या बहुत बढ गई थी । उनमेंसे अधिकाश हैम्पटनहीके ग्रेज्युएट थे । हम लोगोंने इन हितचिन्तकोंका विशेषत जनरल आर्मस्ट्रागका सच्चे हृदयसे स्वागत किया । अभ्यागत भी विद्यालयकी इस थोडेसे अरसेमे इतनी अधिक उन्नति देख कर बहुत ही प्रसन्न हुए । आसपासके नीग्रो लोग जनरल आर्मस्ट्रागकी प्रशसा सुन चुके थे और इसलिए जब उन्हें मालूम हुआ कि जनरल आर्मस्ट्राग टस्केजी-विद्यालयमें आये है तो वे दूर दूरसे उन्हें देखनेके लिए आये । गोरोंने भी उनका अच्छा स्वागत किया ।

जनरल आर्मस्ट्रागके इस समागमसे मुझे उनका स्वभाव भली भाँति परखनेका बहुत ही अच्छा अवसर मिला। सिविल वारमें जनरल आर्मस्ट्राग दक्षिणी गोरोंके विरुद्ध लडे थे, इसलिये मै यह समझता था कि वे उनसे चिढते होंगे और दक्षिणके सिर्फ काले लोगोंकी ही मदद करना उन्हें अभीष्ट होगा, परन्तु उनके टस्केजीमें आने पर मेरा यह भ्रम दूर हो गया और मैने जाना कि जनरल आर्मस्ट्राग बडे ही उच्च विचार और उदार प्रकृतिके महात्मा है। जिस ढगसे वे दाक्षिणी गोरोंसे मिलते और बातचीत करते थे उससे स्पष्ट मालूम होता था कि वे दोनो जातियोंकी सुखसमृद्धि देखनेके लिए उत्सुक थे। कभी किसी अवसर पर उन्होने दक्षिणी गोरोंके विषयमें कोई अनुचित बात नहीं कही। जनरल आर्मस्ट्रागके समागमसे मैने यह जाना कि महात्मा लोग सबसे स्नेह रखते है। द्वेष रखना नीच जनोंका काम है। निर्बलकी सहायता करनेसे सहायक ही अधिक बलवान् होता है और अभागोंको कष्ट देनेवाला स्वय बलहीन हो जाता है, यह तत्त्व भी मैने उन्हींसे सीखा। तभीसे मैने निश्चय कर लिया कि अब मै कभी किसी जातिके मनुष्यके साथ घृणा करके अपने आपको नीच न बनाऊँगा। मेरा विश्वास है कि अब मेरे मनमें दक्षिणी गोरोंके प्रति कोई बैरभाव नही है। अपने जाति-भाइयोंकी सेवा करनेमें मुझे जो आनन्द होता है वही आनन्द दाक्षिणी गोरोंकी सेवा करके भी प्राप्त होता है। किसीके मनमें यदि जातिद्वेषकी जड जमी हुई देखता हूँ तो मुझे उस पर बहुत दया आती है।

विचार करके मैने यह मालूम किया है कि दक्षिण अमेरिकाके जो गोरे इस बातके उद्योगमें लगे रहते है कि राजनीतिक विषयोंमें नीग्रो लोगोंकी सम्मतिका कोई उपयोग न हो, वे केवल नीग्रो लोगोंकी ही हानि नहीं करते, बल्कि अपनी भी हानि करते है। नीग्रो लोगोंकी हानि तो अस्थायी होती है, पर गोरोकी नीतिमत्ता ही सदाके लिए बिगड जाती है। मैने अनुभव करके यह बात जानी है कि जो गोरा

नीग्रो लोगोंका मत निर्बल करनेके लिए झूठी सौगंद खानेको तैयार होता है वह अपने जीवनमें अपने भाइयोंसे भी अनुचित व्यवहार करना सीख लेता है । नीग्रोको ठगनेवाला गोरा अपने गोरे भाइयोंको भी ठगनेमें संकोच नहीं करता । कानूनको ताखमें रख करके नीग्रोको दंड देनेवाला गोरा आदमी आगे मौका आने पर अपने गोरे भाईसे भी वैसा ही व्यवहार करता है । इन सब बातोंसे यह स्पष्ट सिद्ध है कि अमेरिकाका यह अज्ञानान्धकार दूर करनेके लिए समूचे राष्ट्रकी सहायता बहुत आवश्यक है ।

जनरल आर्मस्ट्रांगके शिक्षासंबंधी विचारोंका गोरे काले दोनोंमें दिन पर दिन अधिक प्रचार होता जाता है । आजकल प्राय सभी दक्षिणी राज्योंमें बालकों और बालिकाओंको शिल्पकलाकी शिक्षा देनेका प्रयत्न किया जाता है और इन सारे प्रयत्नोंके मूल जनरल आर्मस्ट्रांग हैं ।

विद्यालयके साथ भोजनगृहका पूरा प्रबन्ध हो चुकने पर विद्यार्थियोंकी संख्या बेहिसाब बढने लगी । हम लोगोंके पास धन नहीं था, तो भी हमें कई सप्ताहों तक विद्यार्थियोंके भोजनके अतिरिक्त उनके बिस्तर आदिका भी प्रबन्ध करना पडा । स्थान न होनेके कारण विद्यालयके पास कुछ कोठरियां किराये पर लेनी पडी । ये कोठरियाँ बहुत बुरी दशामें थी जिसके कारण जाडेमें विद्यार्थियोंको बहुत कष्ट हुआ । भोजन-खर्चके लिए प्रत्येक विद्यार्थीसे मासिक आठ डालर लिये जाते थे । इतना भी विद्यार्थियोंसे मिलना कठिन होता था । भोजन खर्चहीमें कोठरीका किराया और कपडोंकी धुलाई भी आ जाती थी । इसके अतिरिक्त विद्यार्थी विद्यालयका जो कार्य करते थे उसका पुरस्कार इन आठ डालरोंमेंसे काट दिया जाता था । पढाईकी फीस वार्षिक पचास डालर होती थी और आजकलके समान उस समय भी जो विद्यार्थी देने लायक थे उनसे यह फीस वसूल कर ली जाती थी ।

इन छोटी छोटी रकमोंसे भोजननिवासगृह शुरू करनेके योग्य जीका प्रबन्ध नही हो सका। दूसरे सालके जाडेमें बडी ठड पडी र विद्यार्थियोको पूरे ओढने बिछौने भी न मिल सके। कुछ मयतक थोडेसे विद्यार्थियोंके लिए केवल चारपाई और चटाई- ा ही प्रबन्ध हो सका और शेषके लिए वह भी न हुआ। जिस दिन धिक जाडा पडता था उस दिन विद्यार्थियोकी चिन्ताके कारण मुझे भी तको नीद न आती थी। प्राय मै आधी रातके समय विद्यार्थियोकी ूटी फूटी झोपडियोंमे जाकर उन्हे धीरज दिलाता था। वहॉ े उन विद्यार्थियोंको एक ही कबल ओढकर आगके चारों ओर बैठे हुए पाता था। कुछ विद्यार्थी तो रात रात भर बैठे रहते थे। एक रात बहुत ही अधिक ठट पडी। दूसरे दिन जब सब विद्यार्थी प्रार्थनामन्दिरमें इकट्ठे हुए तब मैने कहा—“जिन लोगोंको कल जाडेसे बहुत अधिक कष्ट हुआ हो, वे हाथ ऊपर उठावे।” सुनते ही एक साथ सब विद्यार्थियोने हाथ उठा दिया। हम लोगोंको इस प्रकारसे उनके कष्टोका अनुभव हुआ, पर वे स्वय कभी शिकायत न करते थे। वे जानते थे कि हम लोग अपनी शक्तिभर उनके दुःख दूर करनेका यत्न कर रहे है। इसी लिए वे सदा सब कार्योंमें शिक्षकोंकी सहायता करनेके लिए तैयार रहते थे।

मैने उत्तर और दक्षिण अमेरिकामें अनेक बार यह शिकायत सुनी है कि यदि किसी नीग्रोको कोई उच्च पद या अधिकार मिल जाता है तो उसके मातहत लोग न तो उसका कहना मानते है और न परस्पर मेलसे रहते है। पर मै अपने अनुभवकी बात कहता हूँ कि इन उन्नीस वर्षोंमे किसी विद्यार्थीने अथवा विद्यालयके किसी नोकरने अपनी जबानसे या कामसे मेरा कभी निरादर नही किया। उलटे उन्होंने अनेक बार मुझ पर एहसान चढाकर मुझे ही अपना कृतज्ञ बनाया है। जब कभी मै कोई पुस्तक या और कोई चीज हाथमे लेकर कही जाता हूँ,

तो मेरे विद्यार्थी उसी समय वह चीज मेरे हाथसे लेकर निर्दिष्ट स्थानतक पहुँचा देते हैं । पानी बरसनेके समय अगर मैं दफ्तरसे बाहर निकलता हूँ तो कोई न कोई विद्यार्थी मेरे हाथसे छाता अवश्य ले लेता है।

इसके साथ ही मुझे यह कहते हुए भी आनन्द होता है कि दाक्षिणके गोराके साथ मेरा जो सहवास रहा है उसमें अब तक कभी किसी गोरेने मेरा निरादर नहीं किया । टस्केजी और आसपासके गोरे लोग मेरा हर प्रकारसे सम्मान करनेहीमें अपना गौरव समझते हैं ।

जब कभी मैं किसी स्थानके लिए प्रस्थान करता हूँ तो लोगोंको न जाने कहाँसे मेरी यात्राका समाचार मिल जाता है और प्रायः सभी स्टेशनों पर अनेक गोरे और विशेषतः गाँवोंके गोरे कर्म्मचारी मुझसे आकर मिलते हैं और दक्षिणमें मैंने जो कार्य आरम्भ किया गया है उसके लिए धन्यवाद देते हुए मेरा अभिनन्दन करते हैं । डालास-हाउस्टनकी यात्रामें मुझे यही अनुभव प्राप्त हुआ है ।

एक बार एटलांटा जाते समय मैं रेलगाड़ीमें सफर कर रहा था । बहुत अधिक थक जानेके कारण बीचमें मैं एक ऐसे डब्बेके पास गया जिसमें यात्रियोंके सोनेका भी प्रबन्ध रहता है । वहाँ बोस्टनकी दो महिलायें बैठी थी । मैंने उन्हें देखते ही पहचान लिया । उनसे मेरी अच्छी जान पहचान थी । उन्होंने भी मुझे देखते ही अन्दर आ बैठनेके लिए आग्रह किया । शायद उन देवियोंको दाक्षिणका रिवाज मालूम न था । खैर, उनके बहुत आग्रह करनेपर मैं उनके पास बैठ गया । थोड़ी ही देर बाद मेरे बिना जाने उन्होंने नौकरको तीन आदमियोंका भोजन परोसनेकी आज्ञा दी । इससे मैं और भी चकराया—कारण उस डब्बेमें दक्षिणी गोरे भरे हुए थे और उनमेंसे बहुतेरे हमीं लोगोंकी ओर देख रहे थे । जब भोजन परोस कर मेरे सामने रक्खा गया तब कोई न कोई बहाना निकालकर मैंने इस बलासे बचनेकी बहुत चेष्टा की । पर उन महिलाओंने बहुत जोर देकर मुझे

अपने साथ भोजन करनेके लिए विवश कर दिया। मैंने मन-ही-मन कहा—“ अब तो बेतरह फँसा ! ”

अब और एक बला खडी हुई। मेज पर भोजन परोसा जा चुकने पर उन महिलाओंमेंसे एकको अपनी थैलीमें रक्खी हुई उमदा चायकी याद आई और उसने चाहा कि वह तैयार करके अभी भोजनके वक्त सबको दी जाय। नौकर अच्छी तरह तैयार न कर सकेगा इस विचारसे उसने उसे स्वय तैयार किया। आखिर किसी तरह भोजन हो गया। मनकी अवस्था चलविचल होनेसे मुझे ऐसा हो गया था कि कब इस भोजनसे मेरा छुटकारा होता है। उतना समय तो मुझे एक युगसा मालूम हुआ ! भोजनोपरान्त इस विपदसे रक्षा पानेके निमित्त मैं धूम्रपान करनेके कमरेमें चला गया। उस समय कितने ही यात्री प्रकृति देवीका सौन्दर्य्य देखनेके लिए इस डब्बेमें आ गये थे। जितने लोग वहाँ थे उन्हें न जाने कहाँसे यह मालूम हो गया कि मैं कौन हूँ। मैं जब उस डब्बेमें गया तो मुझे मेरे जीवनका एक अत्यन्त आश्चर्यकारक दृश्य दिखाई दिया। उन यात्रियोंमेंसे प्रत्येक आदमी—प्राय सभी जार्जियाके रहनेवाले थे—मुझसे आकर मिला और प्रत्येकने बडे प्रेमसे बातें की। उन लोगोंने दक्षिणके लिए मैंने जो जो कुछ प्रयत्न किया था उसके लिए मुझे शुद्ध अन्त करणसे धन्यवाद दिये। यह खुशामद या ठकुरसुहाती न थी, क्योंकि यह तो सबको मालूम था कि मेरी प्रशसा करनेसे किसीको कुछ मिलनेवाला नहीं।

प्रारभसे ही मैंने सदा इस बातका उद्योग किया है कि विद्यार्थी लोग टस्केजी-विद्यालयको मेरी अथवा दूसरे अधिकारियोंकी सम्पत्ति न समझ कर स्वय अपनी समझें और सदा ट्रस्टियों और शिक्षकोंकी भाँति उसकी उन्नतिकी चिन्तामें लगे रहें। मैंने उन्हें यह भी बतलानेकी चेष्टा की है कि मैं विद्यालयका कोई अधिकारी या स्वामी नहीं, केवल उसका मित्र और

परामर्शदाता हूँ । विद्यालयके प्रबन्ध आदिके विषयमें यदि कुछ कहना हो तो मेरी यही इच्छा रहती है कि विद्यार्थी स्वयं आकर साफ साफ कह दें । मैं वर्षमें दो तीन बार विद्यार्थियोंसे, पत्र भेजकर विद्यालयके कार्योंकी आलोचना करनेके लिए कहता हूँ । यदि विद्यार्थियोंके पत्र नहीं आते हैं तो मैं स्वयं ही उन्हें गिरजेमें एकट्ठा करके इस विषयकी चर्चा करता हूँ । इस प्रकारकी विद्यार्थियोंकी सभायें करना मुझे बहुत ही पसन्द है और विद्यालयके भावी कार्यक्रमको निश्चित करनेमें मुझे इनसे बडी मदद मिलती है । सब बातोंका रत्ती रत्ती पता लगानेमें इन सभाओंसे बडा काम निकलता है । किसी कामकी जिम्मेदारी दूसरे पर रख कर उसे यह जतला देना कि हम तुम्हारा विश्वास करते हैं, बडा ही लाभदायक होता है । जब मैं मालिक और मजदूरोंके बीच होनेवाले झगडोंका हाल पढता हूँ तो यह विचार मेरे मनमें आता है कि अगर मालिकने मजदूरोंको अपनाकर उनसे हर काममें सलाह ली होती और यह मालूम करा दिया होता कि मालिक–मजदूर दोनोंका स्वार्थ एक ही है तो हडताल आदिकी कठिनाइयाँ सहजहीमें दूर हो जातीं । यह तो एक सामान्य नियम है कि जिस मनुष्य पर हम विश्वास करेंगे वह भी हमारे ऊपर विश्वास करेगा । नीग्रो लोगोंके लिए भी यही नियम है । उन्हें आप यदि इतना ही विश्वास दिलानेमें समर्थ हो जायँ कि आप निःस्वार्थ भावसे उनकी शुभकामना करते हैं तो फिर वे आपके चरणोंके दास बन जायँगे ।

टस्केजीमें विद्यार्थियोंसे भवन बनवानेके अतिरिक्त शुरूसे मेरा यह विचार था कि मेज, कुरसी तथा दूसरे सामान भी बनवाये जायँ । चारपाइयाँ या चटाइयाँ तैयार होनेतक विद्यार्थी बडी सहनशीलताके साथ खाली जमीन पर ही सोते रहे ।

शुरू शुरूमें बढईका काम जाननेवाले बहुत ही थोडे विद्यार्थी थे, और उनकी बनाई हुई चारपाइयाँ बहुत ही लचर–पचर और भद्दी

होती थी। जब कभी मैं विद्यार्थियोंके कमरेमें जाता था तो एक दो चारपाइयाँ अवश्य टूटी हुई पाता था। सब विद्यार्थियोंको एक एक चटाई देनेकी बडी ही कठिन समस्या हम लोगोंके सामने थी। बहुत सोच विचारके बाद हम लोगोंने एक तदबीर ढूंढ निकाली। एक तरहका सस्ता कपडा खरीदकर उससे कई बडे बडे थैले तैयार किये गये, और पासहीके जगलसे देवदार वृक्षकी पतली कोमल छाल (पयाल जैसी) इक्ठा करके उनमें भर दी गई। इस तरहसे एक प्रकारके गद्दे बन गये और तब चटाइयोंके बदले इन्हीका व्यवहार होने लगा। फिर धीरे धीरे चटाइयाँ भी बनने लगीं और अब तो हमारे यहाँ उसका एक कारखाना ही खुल गया है। इस कारखानेमें बालिकाओंको एक खास ढगके साथ शिक्षा भी दी जाती है, और टस्केजीके कारखानेमें तैयार होनेवाली चटाई बाजारकी किसी चटाईसे घटिया नहीं होती।

पहले पहल छात्रावासमें कुरसियोंका कोई प्रबन्ध न था। कुरसियोंके बदले लकडीकी तीन पटियोंमें कीलें जड कर एक तरहके स्टूलसे बनाकर उनसे काम लेते थे। उन दिनो विद्यार्थियोंको केवल एक बिस्तर, विद्यार्थियो द्वारा बने हुए कुछ स्टूल और कभी कभी एकाध भद्दी मेज मिलती थी। अब भी ये सब चीजे विद्यार्थी ही बनाते हैं, परन्तु अब साजसरजाम बहुत बढ गया है, और बढईगरीमें भी अब इतनी तरक्की हो गई है कि विद्यार्थियों द्वारा बनी हुई चीजोंमें कोई जल्दी नुक्स नही निकाल सकता। मैंने शुरूसे ही इस बात पर ध्यान रक्खा है कि टस्केजीकी हरेक बातमें और हरेक स्थानमें स्वच्छता होनी चाहिए। हम लोग अगर गरीब हैं तो हमारे पास सुखसुभीतेके सामान न होना कोई अपराध नही, परन्तु इसके साथ ही यदि स्वच्छता भी न हो तो, लोग हमें, कभी क्षमा न करेंगे—हमसे घृणा करने लगेंगे। यह बात मैंने अपने विद्यार्थियोंको बार बार बतलाई है और अब भी बतलाता हूँ।

ब्रशसे दाँत साफ करने पर भी हमारे यहाँ बहुत जोर दिया जाता है । जनरल आर्मस्ट्राग इस दाँतोंकी सफाईके उपदेशको The Gospel of the tooth brush अर्थात् ' दाँतोंको ब्रशसे साफ करनेका धर्मोपदेश ' कहा करते थे । टस्केजी–विद्यापीठका यह एक विशिष्ट सस्कार रहा है । ब्रश पास रहते हुए जो विद्यार्थी उससे दाँत साफ नहीं करता उसे हम लोग अपने विद्यालयमें भरती नहीं करते । पुराने विद्यार्थियोंसे ब्रशकी कडाईका हाल सुनकर जो नये विद्यार्थी भरती होनेके लिए आते है वे अपने साथ कमसे कम टूथ-ब्रश अवश्य लाते हे–और कोई चीज चाहे न ले आवें । एक दिन सवेरे मै लेडी-प्रिन्सिपलके साथ विद्यार्थिनियोंकी कोठरियाँ देखने गया । एक कमरेमें तीन नई बालिकायें थीं । मैने उनसे पूछा,–" तुम लोगोंके पास टूथ-ब्रश है ? " फौरन उनमेंसे एक लडकीने ब्रश सामने लाकर कहा,–" यह है । कल ही हम तीनों जनी मिलकर इसे खरीद लाई हैं । " उन्हें उस वक्त तक यह ज्ञान न था कि सबका एक एक अलग ब्रश होना चाहिए !

टूथब्रशके उपयोगसे विद्यार्थियोंको बडा लाभ हुआ है । यहाँतक मैने अनुभव किया है कि यदि किसी विद्यार्थीका टूथब्रश खो गया और वह चट बिना कहे दूसरा ले आया तो आगे चलकर ऐसे विद्यार्थीने बडी कीर्ति सपादन की है ! दाँतोंकी सफाईके अतिरिक्त शरीरके शेष अवयवोंकी स्वच्छता पर भी बहुत ध्यान दिया जाता है । भोजनकी तरह स्नान भी नित्य नियमित समय पर करनेकी शिक्षा दी जाती है । स्नानागार तैयार होनेके पहलेसे ही हम लोगोंने यह शिक्षा आरभ कर दी थी । बहुतसे विद्यार्थी देहातोंसे आये हुए थे और इसलिए उन्हें सोना, बिस्तर बिछाना आदि बातें भी सिखलानी पडती थीं । रातको कुरता पहननेका महत्त्व भी उन्हें बतलाया गया ।

यहाँ कोई विद्यार्थी फटे, मैले, बिना बटनोंके, तेलहे कपडे नहीं पहनने

पाता। शुरू शुरूमें इसकी शिक्षा देनेमें बडी कठिनाई पडती थी। पर अब मुझे यह कहते आनन्द होता है कि स्वच्छताकी शिक्षासे हमारे विद्यार्थियोंने इतना बडा लाभ उठाया है और पुराने विद्यार्थियोंसे नये विद्यार्थियोंने यह गुण इतना ले लिया है कि नित्य सध्यासमय जब सब विद्यार्थी गिरजेसे बाहर आते हैं और जब उनके कपडोंकी परीक्षा की जाती है तो एक भी विद्यार्थी ऐसा नहीं निकलता कि जिसके कपडे मैले हों या कोटमें एक बटनका भी स्थान खाली हो।

बारहवाँ परिच्छेद।

धन-संग्रह।

टस्केजी-विद्यालयमें जब विद्यार्थियोंके निवास आदिका प्रबन्ध हो गया तब पहले भवन अर्थात् पोर्टर-हालके ऊपरके खण्डकी कुछ कोठरियोंमें बालिकाओंके रहनेका प्रबन्ध किया गया। परन्तु छात्रोंकी संख्या दिनादिन बढ़ने लगी। विद्यार्थियोंको तो भवनके बाहर भी स्थान दिला दिया जासकता था, परन्तु बालिकाओंको वहाँ रखना ठीक न मालूम हुआ। इसलिए एक विशाल छात्रावास शीघ्र ही बनवानेकी आवश्यकता हुई, क्योंकि बालिकाओंके रहने और सब छात्राके भोजनादिके लिए पर्याप्त स्थान चाहिए था।

इस नये भवनका नक्शा बनने पर मालूम हुआ कि उसके बननेमें दस हजार डालर लगेंगे। कार्य आरंभ करनेके लिए हम लोगोंके पास धन बिलकुल न था, पर तो भी इस नये भवनका नामकरण हम लोगोंने कर दिया। हम लोग जिस राज्यमें कार्य कर रहे थे उस राज्यका आदर करनेके निमित्त इस भवनका नाम 'अलबामा-हाल' रखनेका निश्चय किया गया। अब फिर मिस डेविडसन आसपासके गोरों और नीग्रो लोगोंसे चन्दा उगानेका उद्योग करने लगी और प्रायः सबोंने अपनी अपनी शक्तिके अनुसार सहायता दी। विद्यार्थियोंने भी पहलेकी भाँति जमीन खोदकर नींवकी तैयारी आरम्भ कर दी।

नये भवनके लिए हमें रुपयोंकी बहुत ही जरूरत थी। जब सब उपाय हम लोग कर चुके तब एक ऐसी घटना हुई जिससे जनरल आर्मस्ट्रांगके मनकी असाधारण उदारताका पूरा परिचय मिला। हम लो-

को धनकी बड़ी चिन्ता हो रही थी कि इसी बीच जनरल आर्मस्ट्रांगका एक र आया जिसमें उन्होंने मुझसे पूछा था,—"क्या आप एक मास तक त्तर प्रान्तमें मेरे साथ प्रवास कर सकते हैं? यदि कर सकते हो ा शीघ्र ही हैम्पटन चले आवें।" मैं तार पाते ही हैम्पटनके लिए वाना हो गया। वहाँ पहुँचने पर मुझे मालूम हुआ कि जनरलने चार वैयोंको साथ लेकर उत्तर प्रान्तके भिन्न भिन्न स्थानोंमें भ्रमण करना निश्चय किया है। उनका यह भी विचार है कि प्रत्येक स्थानपर सभायें की जायँ और वहाँ मैं और जनरल साहब व्याख्यान दें। तब मुझे यह मालूम हुआ कि वे सभायें हैम्पटन-विद्यालयके लिए नहीं बल्कि टस्केजी-विद्यालयके लिए होंगी और उनके सब खर्चे [illegible] हैम्पटन-विद्यालय देगा। तब मुझे जो आनन्द हुआ उसका अनुमान पाठक ही कर लें।

भाषणके प्रत्येक शब्दके साथ श्रोताओंको एक एक नई बात–नई कल्पना बतलाओ, अर्थात् ऐसा प्रयत्न करो जिससे तुम्हारे प्रत्येक शब्दसे उनके हृदयमें एक नया विचार उत्पन्न हो । ” मैं समझता हूँ कि यह उपदेश प्रत्येक वक्ताको ध्यानमें रखना चाहिए । मै सदा ही इस उपदेश-पर अमल करनेका यत्न करता आ रहा हूँ ।

न्यूयार्क, ब्रुकलिन, बोस्टन, फिलाडेल्फिया और अन्यान्य नगरोंमें हम लोगोंने सभायें की, और जनरल आर्मस्ट्रागने मेरे साथ, हैम्पटन विद्यालयके लिए नहीं बल्कि टस्केजी-विद्यालयके लिए सहायता माँगी । इन सभाओंमें ‘अलबामा-हाल’ बनवानेके हेतु धन सग्रह करने और टस्केजी-विद्यालयको सर्व प्रसिद्ध करनेका हम लोगोंने प्रयत्न किया, और हमारे इन दोनो कामोंमें हमें बहुत कुछ सफलता प्राप्त हुई ।

इस प्रकार उत्तर प्रान्तमें मेरी मेल–मुलाकात बढने पर मै फड जमा करनेके लिए अकेला ही जाने लगा । विगत पद्रह सोलह वर्षोंमें विद्यालयकी नई नई आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेके निमित्त धनसग्रहके लिए मुझे विद्यालय छोड बहुत दूर दूरकी यात्रा करनी पडी है और मेरा बहुतसा समय भी इस काममें व्यतीत हुआ है । धन सग्रह करते हुए मुझे जो अनुभव प्राप्त हुए है उनके वर्णनसे पाठकोंका अवश्य ही मनोरञ्जन होगा । परोपकारी सस्थाओंने–उनके सचालकोंने मुझसे अनेक बार पूछा है कि मै (अच्छे कामोंमें धन खर्च कर सकनेवाले) अमीर लोगोंसे सहानुभूति और सहायता किस प्रकार प्राप्त करता हूँ। इसके उत्तरमें ‘मै भिक्षा देहि के शास्त्रके दो ही नियम बतला सकता हूँ–

(१) साधारण लोगों और सस्थाओंको अपने कार्यका पूरा परिचय देनेमें कोई बात उठा न रखना ।

(२) परिणामके लिए अधीर न होना ।

दूसरे नियमके अवलम्बनमें मुझे बडी कठिनाई पडी है । अब मै सम

झने लगा हूँ कि परिणामके लिए अधीर होनेसे व्यर्थ ही शारीरिक और मानसिक शक्ति चिन्ताकी चिता पर भस्म हो जाती है । इसी शक्तिका उपयोग और अच्छे कामोंमें किया जा सकता है। पर तो भी इसमे सन्देह नहीं कि ऐसी दशामें जब कि अपने पास धन बिलकुल न हो और महाजनोंके बिल पर बिल आते हों, निश्चिन्त बैठ रहना अथवा धैर्य रखना बड़ा ही कठिन होता है। अनेक अमीर और नामवर लोगोंसे मिलकर मैने यह अनुभव प्राप्त किया है कि जो लोग अपने शरीर और मनको वशमे रखते है, जो कभी अधीर नही होते, जिनका आत्मसयमन कभी नष्ट नहीं होता और जो सदा शान्त, स्वस्थ, सहनशील और नम्र बने रहते है, वे ही बड़े भारी कर्मवीर और कीर्त्तिके भागी होते है। इस प्रकारके पुरुषोंमें मैने प्रेसिडेंट ‘ विलियम मेकिनले ’को आदर्श-स्वरूप पाया है।

मेरी सम्मतिमें किसी प्रयत्नकी सफलता प्राप्त करनेका मूलमन्त्र उस कार्यको करते हुए अपने आपको भूल जाना–उस कार्यमें ही सब तरहसे तन्मय हो जाना है। जिस कार्यमे हम जितने ही मगन हो जाते है उतना ही वह कार्य हमें सुख देता है।

कुछ लोग धनवानोंको केवल इसी लिए दोष देते है कि वे धनवान् है और उपकारी कार्योंमें अधिक धन नही देते हे। जब मे ऐसी बातें सुनता हूँ तो टस्केजी–विद्यालयके लिए धनसग्रह करनेमें मुझे जो अनुभव हुआ है वह मुझे चुप नहीं बैठने देता । पहले तो, जो लोग इस प्रकार धनवानोंको दोष देते है वे यह नहीं जानते कि यदि धनवान् लोग अपनी मिलकियतका बड़ा भारी हिस्सा दानधर्म्ममें ही खर्च कर डालें तो उनका व्यवसाय गिर जाय, हजारो लोग भूखो मरें, और बहुत बड़ा अनर्थ हो जाय। दूसरे, धनवानोंके पास सहायता माँगनेके लिए कितने लोग आते है इसका अन्दाज भी बहुत थोड़े लोग कर

सक्ते है। मै ऐसे धनवानोंको जानता हूँ जिनके पास रोज कमसे कम बीस आदमी सहायता मॉगने आते है। मैने धनवानोकी कोठियोंमें जाकर देखा हे कि वहॉं चार छह आदमी एक ही कामसे अर्थात् धनके लिए बैठे हुए है। यह तो लोगोंके खुद आकर मिलनेकी बात हुई, इसके अलावे डाकसे कितनी प्रार्थनायें आती होंगीं सो ईश्वर जाने! अनेक ऐसे भी दाता होते है जो अपना नाम भी प्रक्ट नहीं होने देते। ऐसे लोगोंके दानका अन्दाज कौन कर सकता है? इस प्रकार गुप्तरूपसे हरसाल हजारों रुपयोंका दान करनेवाले कई लोगोंको मै जानता हूँ। परन्तु मैने कई बार सुना है कि लोग उन पर कुछ भी दान न करनेका-कजूसीका दोष लगाते है! उदाहरणार्थ, न्यूयार्कमें दो महिलायें हे। इनके नाम समाचारपत्रोंमें बहुत ही कम प्रकाशित होते है। परन्तु इन्ही दो महिलाओंने गत आठ वर्षोंमे हम लोगोको तीन बडी भारी इमारतें बनवाने लायक गुप्तदान दिया है। इसके अतिरिक्त और भी कई बार अलग दान दिये है जिनकी कुल रकम बहुत बडी होगी। इन उदार स्त्रियोंने केवल टस्केजी-विद्यालयकी ही मदद नही की हे बल्कि अन्यान्य कार्योंमें भी इसी प्रकार बहुत सहायता दी है।

यद्यपि टस्केजीके लिए मेरे हाथों लाखों रुपये सग्रह किये गये हं, तथापि जिसे ‘ भिक्षा ’ कहते हैं उससे मै बचा हुआ हूँ। धनके लिए मैने भीख नही मॉगी, और लोगोंसे भी मैने कई बार कहा हे कि में भिक्षुक नहीं हूँ। मेरा यह दृढ विश्वास है कि धनके लिए किसी धनवानका गला दबानेसे धन नही मिलता। जो लोग धन कमाना जानते हे वे उसका व्यय करना भी जानते है—यह मै जानता हूँ और इस लिए धनसग्रहकी यात्रामें मै केवल लोगोके सामने हाथ पसारनेके बदले टस्केजी—विद्यालय और उससे निकले हुए ग्रेज्युएटोके कार्योंका परिचय देता रहा हूँ, और इसी उपायसे मुझे धन भी अधिक मिला है।

मैं समझता हूँ कि धनवान् लोग हमसे सब बातों और कार्योंका गुरुता और योग्यतापूर्वक वर्णन ही सुनना चाहते हैं ।

घर घर माँगने जानेमें शरीरको बहुत कष्ट होते हैं इसमें सन्देह नहीं, परन्तु इन कष्टोंका प्रतिफल भी मिलता है । इसके सिवाय मनुष्य-स्वभावकी जाँच-पड़ताल करनेका भी सुअवसर हाथ लगता है और उत्तम पुरुषोंसे—सर्वोत्तम पुरुषोंसे कहना अधिक अच्छा होगा—मिलनेका सौभाग्य प्राप्त होता है । किसी देशका स्थूल रूपमें निरीक्षण करनेमें यह मालूम हो जाता है कि प्रत्येक देशमें सबसे अधिक परोपकारी और प्रभावशाली पुरुष वे ही होते हैं जो सार्वजनिक कार्योंसे—सबके लाभके लिए स्थापित हुई संस्थाओंसे—सहानुभूति रखते हैं ।

एक बार मैं बोस्टन नगरमें एक धनाढ्य महिलासे मिलने गया । मैंने अपने नामका कार्ड अन्दर भेजा और उत्तरकी बाट जोहता हुआ खड़ा रहा । इतनेमें उस महिलाके पतिने बाहर आकर मुझसे पूछा—‘ तुम्हें क्या चाहिए ? ” मैंने अपना उद्देश्य समझाना चाहा, पर वह भला आदमी इतना तेज और रूखा हो गया कि बिना उस महिलासे मिले ही मुझे वहाँसे लौट आना पड़ा । इसके अनन्तर मैं वहाँसे थोड़ी ही दूर पर रहनेवाले एक सज्जनके घर गया । उसने शुद्ध अन्तःकरणसे मेरा यथोचित स्वागत किया और एक बड़ी रकमका चेक मेरे नाम लिख दिया । इसके लिए मैं उसे धन्यवाद भी न देने पाया कि उसने कहा,—“ मिस्टर वाशिंगटन, आपने मुझे ऐसे अच्छे काममें हाथ बटानेका अवसर दिया इसलिए मैं आपका बहुत ही कृतज्ञ हूँ । ऐसे सत्कार्यमें योग देना भी एक बड़े गौरवकी बात है । आपके आगमनसे बोस्टनवासियोंको यह गौरव प्राप्त हुआ इसलिए हम लोग आपके बहुत अनुगृहीत हैं । ” धनसंग्रहके कार्यसे मुझे यह अनुभव हो गया है कि पहले प्रकारके—रुखाईका व्यवहार करनेवाले लोग दिनों दि-

घट रहे हैं और दूसरे प्रकारके लोगोंकी—सुजनताका व्यवहार करनेवालोंकी संख्या बराबर बढती जा रही है। इसी बातको इस प्रकारसे भी कह सकते हैं कि अब धनवान् लोग, अच्छे कार्योंके लिए मदद माँगनेवाले स्त्री-पुरुषोंको, भिक्षुक न समझ कर अपने ही कार्य करनेवाले लोकप्रतिनिधि मानने लगे हैं।

बोस्टन शहरमें मैंने यह देखा है कि दाता धन देकर मुझे धन्यवाद देनेका अवसर न देकर उलटे मुझहीको धन्यवाद देते हैं। वे लोग यह समझते हैं कि ऐसे कामोंमें दान देना अपना ही गौरव बढाना है। अन्य स्थानोंमें भी मुझे अच्छे अच्छे लोगोंसे मिलनेका अवसर प्राप्त हुआ है, पर जैसी उदार और दयालु प्रकृतिके लोग मैंने बोस्टनमें देखे वैसे अन्यत्र कहीं देखनेमें न आये। मैं समझता हूँ कि लोगोंमें दिनोंदिन दानशीलता बढ रही है। धनसंग्रह करते हुए मेरे सामने यही एक बात रही और अब भी है कि धनवान् लोगोंको सत्कार्योंमें दान देनेका मौका दिलानेमें कोई बात उठा न रखनी चाहिए।

टस्केजी-विद्यालयके प्रारंभके दिनोंमें कुछ समयतक उत्तर प्रान्तके शहरों और देहातोंमें भटकते रहने पर भी कहींसे एक पैसा भी मुझे न मिला था। कई बार ऐसा हुआ है कि जिन लोगोंसे बहुत कुछ सहायता मिलनेकी आशा थी उनसे तो कुछ भी न मिलता और उदासीसे मेरा उत्साह भंग हो जाता, पर जिन लोगोंसे कभी कुछ भी मिलनेकी आशा न होती थी, ऐसे लोगोंसे कभी कभी बडी सहायता मिल जाती थी।

कनेक्टिकट राज्यके स्टैफर्ड गाँवसे दो मीलके फासले पर रहनेवाले एक सज्जनके विषयमें मुझसे यह कहा गया था कि अगर उन्हें टस्केजी-विद्यालयका सब हाल बतलाया जायगा तो वे अवश्य सहायता करेंगे। [illegible] मैं एक दिन उनसे मिलने गया। उस रोज बडी ही ठंड थी

और पाला पड रहा था । पर इसकी मैने कोई परवा नही की और उनके मकान तक जाकर मैने उनसे भेंट की । उन्होंने मेरी बाते सब सुन ली, पर दिया कुछ भी नही । इससे मुझे खेद अवश्य हुआ क्योकि मेरे तीन घटे व्यर्थ ही खर्च हुए, परन्तु सन्तोष इस बातका था कि मैने अपना कर्तव्य किया । यदि मै उनसे न मिलता तो मुझे अपना कर्तव्य पालन न करनेके कारण बहुत अधिक बेचेनी होती ।

इस घटनाके दो वर्ष बाद इन्हीं सज्जनने मेरे पास एक पत्र भेजा जिसमें लिखा था,—“ आपके विद्यालयके लिए इस पत्रके साथ मै दस हजार डालरकी एक हुडी भेजता हू । मैने यह रकम अपने मृत्युपत्रमे (वसीहतनामेमें) आपके विद्यालयके नाम लिख दी थी, पर अब इसे मै जीते जी ही दे डालना उचित समझता हूँ ।दो वर्ष पूर्व मेने आपके दर्शन किये थे, उसका स्मरण होनेसे मुझे बडा आनन्द होता है । ”

इस हुडीसे मुझे जैसा आनन्द हुआ वैसा और किसी बातसे न हुआ होगा । विद्यालयको अबतक जितने दान मिले थे उनमें सबसे बडी रकम यही थी। यह दान भी ऐसे अवसर पर मिला जब कि बहुत दिनोंसे विद्यालयको कहीसे कुछ भी न मिला था । धनाभावके कारण उस समय हम लोग बडी चिन्तामें थे । एक बडे विद्यापीठके सचालनका भार सिर पर था, अभी कितने ही बिलोंको चुकाना था, इसके सिवाय हर महीने बिल पर बिल आते ही जाते थे और हम लोग यह नहीं जानते थे कि इनको चुकानेके लिए धन कहाँसे आवेगा ! मै नहीं जानता कि इससे भी अधिक चिन्ताग्रस्त करनेवाली और कोई दुरवस्था हो सकती है ।

यदि मेरे विषयमें पूछिए तो मुझ पर दूनी जिम्मेदारी थी और इसलिए मेरी चिन्ता भी उसी हिसाबसे बढी हुई थी । यही विद्यापीठ यादि गोरोंकी किसी मडलीकी देखरेखमें होता और उसमें नाकामयाबी होती तो केवळ नीग्रो लोगोंकी शिक्षाका एक प्रबन्ध टूट जाता, परन्तु

यह नीग्रो द्वारा ही चलाई जानेवाली एक सस्था यदि मिट जाती तो एक विद्यालयकी ही हानि न होती, बल्कि सारी जाति पर कलकका टीका लग जाता । ऐसी विकट अवस्थामें इन दस हजार डालरोंने बडा भारी काम किया ।

मैने अपना यह सिद्धान्त बना लिया है और मै मौका पाकर विद्यालयके अध्यापकोंको बार बार यही बतलाया करता हूँ कि विद्यालयकी आन्तरिक अवस्था जितनी ही निर्मल, पवित्र और उपयोगी रक्खी जायगी उतनी ही उसे बाहरसे सहायता मिलेगी ।

मै पहली बार जब सुप्रसिद्ध रेल-महाजन मिस्टर कालीस पी हटिंगटनसे मिला तो उन्होंने हमारे विद्यालयके लिए सिर्फ दो ही डालर दिये थे । उन्हीं हटिंगटन साहबने, उनकी मृत्युसे कुछ महीने पहले जब मै उनसे मिला तो, पचास हजार डालर दे दिये ! इन दो दानोंके मध्यसमयमे मिस्टर और मिसेस हटिंगटनसे हमे और भी कई बडी बडी रकमें मिली है ।

कुछ लोग शायद यह कहेंगे कि यह टस्केजी–विद्यालयका बडा भाग्य था जो उसे पचास हजार डालर मिल गये । पर मै इसे भाग्य या तक्दीर नहीं कहता । यह अविराम परिश्रम और अध्यवसायका ही फल था । दीर्घोद्योगके बिना किसीको कुछ नहीं मिलता । मिस्टर हटिंगटनने मुझे जिस वक्त दो ही डालर दिये उस वक्त मैने अधिक दान न देने पर उन्हें दोष नहीं लगाया । तबसे मै बराबर उन्हें यह दिखलानेका उद्योग करता रहा कि हम लोग अधिक दानके पात्र है । मै लगातार बारह वर्षतक यह उद्योग करता रहा । ज्यों ज्यों वे विद्यालयकी उन्नतिके आगे बढते हुए कदम देखते चले त्यों त्यो अधिक सहायता भी करते गये । मिस्टर हटिंगटनसे अधिक सहानुभूति और विद्यालयके कार्यमें उदारता रखनेवाला कोई भी धनिक पुरुष मैने नहीं देखा ।

उन्होंने हम लोगोंको भरपूर धन दिया, यही नहीं, बल्कि उन्होंने मुझे संस्थासंचालनके विषयमें अनेकबार पितृवत् स्नेहसे उपदेश दिया है और इस कार्यमें अपना अमूल्य समय खर्च किया है।

उत्तर प्रान्तमें धन संग्रहका कार्य करते हुए मुझे बडी बडी कठिनाइयोंसे सामना करना पडा है। लोग शायद विश्वास न करेंगे, इस लिए मैंने अबतक एक घटनाका हाल किसीको भी नहीं बतलाया है, पर आज बतला देता हूँ। मै अपने कामसे रोड द्वीपके प्राविडेन्स नामक स्थानमे आया हुआ था। सवेरेका वक्त था, मेरी जेबमें भोजनके लिए एक पैसा भी न था, एक महिलासे कुछ मिलनेकी आशा थी। उससे मिलनेके लिए सडकके उस पार जाते समय गाडीकी राह पर मुझे पचीस सेंटका (साडे बारह आनेका) एक सिक्का हाथ लग गया! भोजनके लिए ये पचीस सेंट तो मिल ही गये, और थोडी ही देर बाद उस महिलाके यहाँसे आशानुसार दान भी मिल गया!

एक बार उपाधिदानके अवसर पर मैने ट्रिनिटी चर्चके रेक्टर बोस्टनके पादरी मिस्टर विंचेस्टर डोनाल्डको विद्यालयमें मुख्य भाषण करनेके लिए निमन्त्रित किया। व्याख्यान सुननेके लिए आनेवाले लोगोंको बैठनेकी जगह बहुत ही कम थी। इस लिए हम लोगोंने पेडकी डालियाँ छाकर और लकडीकी बडी बडी बल्लियाँ खडी करके एक मामूली मंडप तैयार कर दिया था। ज्यों ही डाक्टर डोनाल्ड वक्तृता देने खडे हुए त्यों ही मूसलधार वृष्टि होने लगी। इसलिए उन्हें अपनी वक्तृता बन्द करनी पडी और उन पर छाता लगाना पडा!

ट्रिनिटी चर्चके रेक्टर उस बडे भारी जनसमुदायके सामने एक पुराने छातेके नीचे खडे हैं और इस बातकी राह देख रहे हैं कि वर्षा समाप्त होकर कब मेरा भाषण आरम्भ होता है! इस दृश्यको जब मैने देखा तब मुझे अपने कियेकी सुध हुई!—मालूम हुआ कि मैने कितने बडे साहसका काम कर डाला है।

शीघ्र ही पानी रुका और डाक्टर टोनाल्डने अपनी वक्तृता चटपट दे डाली । हवा प्रतिकूल थी तो भी आपकी वक्तृताका रंग जम गया । कुछ देर बाद, भींगे कपडे सूखने पर, डाक्टर साहबने यों ही मामूली बातचीतमें कहा कि "यहाँ एक बडा गिरजाघर बन जाय तो अच्छा हो।" दूसरे ही दिन इटालीमें प्रवास करती हुई दो स्त्रियोंका एक पत्र मेरे पास आया । उसमें लिखा था कि "टस्केजीमें जिस बडे गिरजाघरकी जरूरत है हमने उसे बनवानेका सारा खर्च देना निश्चय किया है !"

इसके कुछ ही दिन बाद (अमेरिकाके सुप्रसिद्ध दानी) मिस्टर एड्रू कार्नेजीने टस्केजी-विद्यालयके नवीन पुस्तकालयके लिए बीस हजार डालर भेज दिये ! हमारा पुराना पुस्तकालय एक छोटीसी झोपडीमें था । मिस्टर कार्नेजीकी सहानुभूति और सहायता प्राप्त करनेमें मुझे दस वर्ष उद्योग करना पडा । दस वर्ष पहले पहली मुलाकातमें उन्होंने हमारे विद्यालयकी ओर विशेष ध्यान न दिया था । परन्तु मैंने उन्हें यह दिखला देनेका निश्चय किया था कि हम लोग आपके दानपात्र हैं । दस वर्ष अविराम परिश्रम करनेके पश्चात् मैंने उन्हें निम्नलिखित पत्र लिखा—

१५ दिसंबर १९००

मिस्टर एड्रू कार्नेजी,
५ डब्ल्यू ५१ स्ट्रीट, न्यूयार्क—की सेवामें ।

प्रिय महाशय, कुछ समय पूर्वकी भेंटमें सूचित किये अनुसार टस्केजी-विद्यालयके पुस्तकालय-भवनके लिए आपकी सेवामें यह प्रार्थनापत्र भेजता हूँ।

इस समय हमारे विद्यालयमें ११०० विद्यार्थी, ८६ कर्मचारी और अध्यापक (सपरिवार) हैं । विद्यालयके आसपास लगभग २०० नीग्रो रहते हैं । ये सब लोग इस पुस्तकालयसे बहुत लाभ उठा सकेंगे ।

हमारे पास १२०० पुस्तकें, सामयिक पत्र और मित्रोंके दिये हुए उपहार आदि हैं । इनके लायक हमारे पास स्थान नहीं और न कोई वाचनालय ही है जहाँ लोग आकर पुस्तक या पत्र पढ सकें ।

हमारे विद्यालयके ग्रेज्युएट दक्षिणके हर हिस्सेमें काम करने जाते हैं । इस लिए इसमें सन्देह नहीं कि वाचनालयसे उन्हें जो ज्ञान प्राप्त होगा वह समस्त नीग्रो जातिकी उन्नतिमें सहायक होगा ।

हमारी आवश्यकतानुसार भवन बीस हजार डालरमें बन जायगा । इस भवनके लिए ईंटें बनानेका तथा बढ़ई, लुहार आदिका सारा काम विद्यार्थी खुद कर लेंगे । आपके धनसे केवल भवन ही नहीं बनेगा, बल्कि भवनके बनानेमें बहुतसे विद्यार्थियोंको इमारतके कामकी शिक्षा मिलेगी और उनके कार्य्यके पुरस्कारस्वरूप उन्हें जो धन मिलेगा उसकी सहायतासे वे विद्यालयमें रहकर शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे । मैं नहीं जानता कि इतने धनसे दूसरी किसी जातिकी इतनी उन्नति हो सकती है । यदि आप कुछ और अधिक विवरण जानना चाहें तो मैं प्रसन्नतापूर्वक बतला सकता हूँ ।

विनीत—
बुकर टी वाशिंगटन,
प्रिन्सिपल ।

इस उत्तरमें मिस्टर कार्नेजीने लिखा कि——

“ पुस्तकालयके भवनके लिए मैं बड़ी प्रसन्नतासे बीस हजार डालर तक देनेके लिए तैयार हूँ । आपके इस उदार कार्य्यसे मुझे बहुत प्रसन्नता प्राप्त हुई है । ”

मैं अपने अनुभवसे यह बात कहता हूँ कि व्यवहार यदि साफ और सुन्दर रक्खा जाय तो धनवान् लोग सहानुभूतिके साथ अवश्य सहायता करते हैं । टस्केजी विद्यालयका हिसाब और अन्य व्यवहार मैंने इतना साफ रखनेकी चेष्टा की है कि न्यूयार्ककी बड़ीसे बड़ी कोठी भी उसे देखकर प्रसन्न होगी ।

विद्यालयको मिले हुए बड़े बड़े दानोंका हाल मैं ऊपर कह चुका । पर, हमारे विद्यालयको उन्नत दशामें लानेके लिए जो धन खर्च हुआ

है उसका बडा भारी अश छोटी छोटी रकमोंसे ही इकट्ठा हुआ है । जितने परोपकारी कार्य होते हे वे साधारणत सच्ची सहानुभूति रखनेवाले साधारण लोगोंकी छोटी मोटी रकमों पर ही चला करते है । धनसग्रह करते समय मैंने अनेक धर्मोपदेशकोंकी हालत देखी है । इनके पीछे सहायता मॉगनेवालोंकी इतनी भीड रहती है कि साधारण मनुष्य देखकर ही घबरा जाय । पर इनकी सहानुभूति और सहिष्णुता देखकर मै चकित हो जाता हूँ । ईसाके समान उदार और परोपकारी जीवनका महत्त्व मैने इन्ही धर्मोपदेशकोंके जीवनसे समझा है । आज पेतीस वर्षोसे काले लोगोंकी उन्नतिके लिए अमेरिकाका सार्वजनिक (सब सप्रदायोंका) क्रिश्चियन चर्च जो काम कर रहा है वह बडा ही प्रभाव उत्पन्न करनेवाला है । रविवारकी पाठशालाओं, क्रिश्चियन एनडेवर सोसायटियों, मिशनरी सस्थाओ और सार्वजनिक चर्चोंसे मिलनेवाले धनसे ही नीग्रो लोगोंका काया पलट हो रहा है ।

इन छोटी रकमोंका जिक्र करते हुए मुझे यह भी कहना चाहिए कि टस्केजीके ग्रेज्युएट भी अपना वार्षिक चन्दा समय भर भेज देते है । अपवादरूप बहुत ही थोडे है । यह चन्दा पचीस सेंटसे दस डालर तक है ।

तीसरे वर्षका कार्य आरभ होनेके समयसे हमें अन्य तीन स्थानोंसे अकस्मात् सहायता मिलने लगी, और अबतक बराबर मिलती है । (१) अलबामा-सरकारने अपनी सहायता दो हजार डालरसे बढाकर तीन हजार प्रतिवर्ष कर दी और आगे चलकर यह सहायता साढे चार हजार डालर तक पहुँच गई । इस सहायतावृद्धिमे वहॉकी व्यवस्थापक सभाके सदस्य माननीय मिस्टर एम् एफ फास्टरने बहुत उद्योग किया है । (२) जान एफ स्लेटर-फडसे हमें प्रति वर्ष ग्यारह हजार डालर मिलते है । (३) पीबाडी फडसे भी सहायता मिलने लगी । पहले पॉच ही सौ डालर मिले, पर बढते बढते अब यह रकम पद्रह सौ डालर तक पहुँच गई है ।

स्लेटर और पीबाडी इन दो फंडोंसे सहायता पानेका उद्योग करनेमें दो अच्छे सज्जनोंसे मेरी जान पहचान हुई। इन दोनोंने नीग्रो लोगोंकी शिक्षाको एक अच्छे मार्ग पर ला दिया है। इनमसे एक तो वाशिंगटनके मिस्टर जे एल एम करी और दूसरे न्यूयार्कके मिस्टर मारिस के जेसप है। डाक्टर करी दाक्षिण प्रान्तके रहनेवाले हैं। वे पहले सयुक्त-सेनामें एक सैनिक थे। उनके समान नीग्रो जातिकी अभिवृद्धि चाहनेवाले अथवा वर्णविद्वेषको पास भी न फटक्ने देनेवाले सज्जन इस देशमें वहुत कम होंगे। उनमें विशेषता यह है कि काले गोरे दोनों ही उन पर विश्वास रखते है। उनसे मेरी जो पहली भेंट हुई उसे मै कभी न भूलूँगा। मै उनसे मिलनेके लिए रिचमंट शहरमें उनके मकान पर गया था। इससे पहले उनकी सुजनताके विषयमे मै बहुत कुछ सुन चुका था। तथापि मेरी उम्र अल्प होने और अनुभव भी कुछ न होनेके कारण उनके सामने जाते मुझे डर लगा और शरीर काँपने लगा। उन्होंने बडे प्रेमसे मेरा हाथ पकडा और मुझसे इतनी मधुर और उत्साह देनेवाली वाणीसे बातचीत की, तथा मेरे कर्त्तव्यके विषयमे मुझे ऐसी अच्छी शिक्षा दी कि मुझे इस बातका पूरा विश्वास हो गया कि मानव जातिके कल्याणके लिए सदा निष्काम भावसे प्रयत्न करनेवालोंमेंसे ही वे एक महात्मा हैं। और सचमुच ही, अनुभवसे मेरा यह विश्वास दृढसे दृढतर होता गया है।

मिस्टर मारिस के जेसप, स्लेटर-फडके कोषाध्यक्ष है। नीग्रो लोगोंकी उन्नतिके लिए अपना समय और सम्पत्ति खर्च करनेवाला इनके समान धनवान और उद्योगी पुरुष मैने दूसरा नही देखा। इधर कुछ वर्षोंमे टस्केजी-विद्यालयकी औद्योगिक शिक्षाको जो महत्त्व प्राप्त हुआ है और उसकी जैसी मजबूत नीव दी गई हे उसके लिए विद्यालय इनका सदा कृतज्ञ रहेगा, क्योंकि इन्हींके प्रयत्न और प्रभावसे यह सब हो सका है।

तेरहवाँ परिच्छेद ।

पाँच मिनिटकी वक्तृताके लिए दो हजार मीलकी यात्रा ।

जब विद्यालयके साथ छात्रावासका प्रबन्ध हो गया तब बहुतसे ऐसे विद्यार्थियोंने भी विद्यालयमें भरती होनेके लिए प्रार्थना की जो योग्य और सत्पात्र थे, पर किसी प्रकारकी फीस न दे सकते थे। इन प्रार्थियोंको निराश करना हम लोगोंसे न बन पडा और इनके लिए, सन् १८८४ में, एक नाइट-स्कूल (रात्रिकी पाठशाला) खोला गया ।

हेम्पटनके नाइट-स्कूलके समान इसका भी प्रबन्ध किया गया । ऐसे ही विद्यार्थी इसमें भरती किये गये जो अपने भोजनका कुछ भी प्रबन्ध न कर सकते थे और इस कारण दिनकी पाठशालामें न पढ सकते थे। उन्हें दिनमें दस घंटे काम करना पडता था और रातको दो घंटे पढना पडता था। परन्तु यह नियम पहले एक दो वर्षके लिए ही था। उन्हें भोजन-खर्चसे कुछ अधिक मिल जाता था और उनकी यह बचत विद्यालयके कोशमें जमा की जाती थी। आगे जब ये विद्यार्थी दिनकी पाठशालामें पढना शुरू करते थे तब उनकी इस बचतसे उनका भोजन-खर्च चलाया जाता था । इस समय इस नाइट-स्कूलमें साढे चार सौ विद्यार्थी पढते है ।

इस नाइट-स्कूलसे बढकर विद्यार्थियोंकी योग्यता परखनेवाली और कौनसी कठिन कसौटी हो सकती है? इसमें विद्यार्थियोंकी दृढताका अच्छा परिचय मिल जाता है, इसी लिए मै इसको बहुत महत्त्वकी संस्था समझता हूँ। रातकी दो घंटेकी पढाईके लिए जो विद्यार्थी दिनमें दस घंटे धोबीखाने या ईंटोंके कारखानेमें काम कर सकता है उसमें

शिक्षा सम्पादनकी पूरी सामर्थ्य होती है यह बात आप ही साबित हो जाती है।

रातकी पढाई समाप्त होने पर विद्यार्थी दिनकी पाठशालामें भरती होता है। वहाँ उसे सप्ताहमें चार दिन शिक्षा दी जाती है और बाकी दो दिन वह अपने काममें खर्च करता है। इसके अतिरिक्त गरमीके तीन महीने भी वह अपने कामहीमें बिताता है। रातकी पाठशालासे जो विद्यार्थी निकल आता है उसे साधारणत शिल्पसबधी और मानसिक शिक्षा पूर्ण करनेका मार्ग मिल जाता है। विद्यार्थी कितना ही धनवान् क्यों न हो उसे इस विद्यालयमें हाथसे काम करना ही पडता है। अब अन्य विषयोंके समान शिल्पशिक्षा भी सर्वप्रिय हो चुकी है। टस्केजी-विद्यालयसे ग्रेज्युएट होकर ससारमें यश और नाम प्राप्त करके सुखी बने हुए कितने ही स्त्रीपुरुषोंने इसी नाइट-स्कूलसे पढना आरम्भ किया था।

टस्केजीमें शिल्पशिक्षा पर जोर दिये जानेका यह अर्थ नही है कि यहाँ धार्मिक अथवा आध्यात्मिक शिक्षामे कुछ ढिलाई की जाती है। यह विद्यालय किसी सम्प्रदाय विशेषका नहीं, तथापि पूर्ण धार्म्मिक है। हमारी उपासनायें, प्रार्थनासभाये, रविवारकी पाठशालायें, क्रिश्चियन एनटेवर सोसाइटियाँ, वाइ एम सी ए और अन्यान्य मिशनरी सस्थाये हमारे उक्त कथनको प्रमाणित करती है।

सन् १८८५ में मिस आलिविया डेविड्सनसे मेरा विवाह हुआ। विवाहके पश्चात् भी वे अपनी शक्ति और समय, घरके कामकाजके आतिरिक्त, विद्यालयके लिए खर्च करती रही। विद्यालयमें पढाने और निगरानी करनेके अतिरिक्त पहलेकी भाँति बीच बीचमें धनसग्रह करनेके लिए उत्तर प्रान्तमें भ्रमण करनेका क्रम भी उन्होंने जारी रक्खा। चार वर्ष ससारसुख अनुभव कर और आठ वर्ष विद्यालयके लिए प्रसन्नतापूर्वक उद्योग करके १८८९ में वे इहलोकसे सिधार गईं!

अपने प्रिय कार्यके लिए उन्होंने अपना शरीर दे डाला था! हम दोनोंके ससारसुखके चिह्नस्वरूप हमारे दो सुन्दर और बुद्धिवान् पुत्र हुए। उनके नाम बेकर टैलिफेरो और अर्नेस्ट डेविड्सन हैं। इनमेंसे वडे, वेकरने टस्केजीमें ईटें तैयार करनेके काममे अच्छी जानकारी प्राप्त कर ली है।

लोगोंने मुझसे कई बार पूछा है कि मैने सर्व साधारणमे वक्तृता देनेका आरम्भ किस प्रकार किया। इसके उत्तरमें मुझे यह कहना है कि सार्वजनिक भाषणोंमें मैने अपने जीवनका बहुत ही थोडा अश लगाया है। *बात यह है कि मै कोरी बातें करनेकी अपेक्षा वास्तविक कार्य्य करना* अधिक पसन्द करता हूँ। मै जब जनरल आर्मस्ट्रागके साथ उत्तर प्रान्तमें भ्रमण करने गया था और बडे बडे नगरोंमें सभायें करके मैने व्याख्यान दिये थे तब मालूम होता है कि एक व्याख्यानके समय वहाँकी जातीय शिक्षासमितिके सभापति माननीय मिस्टर थामस डब्ल्यू बिकनेल उपस्थित थे। कुछ दिनोंके उपरान्त उन्होंने मुझे समितिके एक अधिवेशनमें व्याख्यान देनेके लिए निमत्रित किया। यह अधिवेशन माडीसन नामक नगरमे होनेवाला था। यहींसे मानों मेरे व्याख्यान-जीवनका आरभ हुआ।

समितिमे मेरे व्याख्यानके समय लगभग चार हजार आदमी उपस्थित थे। पीछेसे मुझे यह भी मालूम हुआ कि इस व्याख्यानको सुननेके लिए अलबामा रियासत और खास टस्केजीके भी कुछ गोरे लोग चले आये थे। कुछ समय बाद इनमेंसे कुछ लोगोंने मुझसे कहा कि “ हम आपके व्याख्यानम दक्षिणी गोरोंकी मट्टी पलीद होनेका ही अनुमान करते थे और इसी लिए हम लोग आपका व्याख्यान सुननेके लिए इतनी दूर गये, पर आपके मुँहसे एक भी खराब शब्द न सुनकर हम लोगोंको बडा ही आश्चर्य हुआ। यही नहीं वल्कि टस्केजी-विद्या-

टय स्थापित करनेमें गोरे लोगोंने जो सहायता दी थी उसके लिए आपने उनका आभार तक माना।"

टस्केजीमें जिस समय मैं पहले पहल आया उसी समय मैंने यह निश्चय कर लिया था कि यहाँ मैं अपना घर बनाऊँगा। टस्केजीसे मेरा प्रेम हो गया था। वहाँके गोरे अधिवासियोंमें टस्केजीके लिए जो प्रीति थी उससे कम प्रीति मुझमें नहीं थी और मुझे वहाँके अच्छे कार्यों पर उतना ही अभिमान था और बुरे कामोंके लिए उतनी ही घृणा थी जितनी कि गोरोंको थी। दक्षिण प्रान्तमें मैं जिन बातोंको छिपाये रहता था अथवा जिन्हें कहना नहीं चाहता था उन बातोंको उत्तर प्रान्तमें जाकर कहना मैंने कभी उचित नहीं समझा। किसी व्यक्तिको गालियाँ देकर सन्मार्गमें प्रवृत्त करनेकी आशा करना दुराशा मात्र है। हाँ, यदि उसके दोष दूर करने हैं तो सबसे अच्छा उपाय यही है कि उसके दोषोंकी ओर अधिक ध्यान न देकर उसके अच्छे कामोंकी प्रशंसा करता रहे। इस तत्त्व पर अमल करते हुए मैंने उचित अवसर पर दक्षिणके लोगोंके अन्यायका समुचित रीतिसे, विरोध करनेमें भी भूल नहीं की है और उचित आलोचना करने पर मैंने देखा है कि उससे दक्षिणवाले नाराज भी नहीं होते। आलोचनाके विषयमें मेरा यह सिद्धान्त रहा है कि जहाँके लोगोंकी आलोचना करनी हो वहीं जाकर उसे करना चाहिए। इस लिए यदि कभी दक्षिणवालोंकी आलोचना करनी होती है तो मैं दक्षिणके ही किसी नगरमें उसे करता हूँ—बोस्टन या और किसी शहरमें जाकर नहीं।

माडीसनवाली वक्तृतामें मैंने यह बतलाया था कि सीधे और सच्चे व्यवहारसे ही काले-गोरोंमें मेल बढ सकता है और दोनों जातियोंको इस बातका यत्न करना चाहिए कि परस्पर द्वेषभाव रहनेके बदले मित्रभाव स्थापित हो। मैंने वहाँ यह भी बतलाया था कि हम लोग जिस स्थान

और समाजमें रहते है उसी स्थान और समाजका जिस बातमें हित हो उसी बात पर ध्यान देकर निर्वाचनके समय सम्मति देनी चाहिए। हजारों मील दूर रहनेवाले किसी मनुष्यको प्रसन्न करनेके लिए अपने हिताहितका विचार छोड सम्मति देना अपनी हानि करना है।

इस व्यारयानमें मैने नीग्रो जातिका ध्यान इस बातकी ओर दिलाया था कि यदि उसे अपना भविष्य उज्ज्वल करना हो तो और सब बातोंको छोड उसे अपने कला-कौशल बुद्धिमत्ता, और शुद्ध आचरणसे समाजको अपनी ओर खीच लेना चाहिए। यदि उससे यह न बन पडेगा तो समाजको उसकी आवश्यकता ही न रहेगी। जिस किसी मनुष्यने कोई कला हस्तगत कर ली है—फिर उसका रग चाहे गोरा हो या काला—वह अपनी कलाके बलसे अवश्य बाजी मार लेगा, और जो नीग्रो औरोंकी आवश्यकताओंके अनुसार उन्हें पूर्ण करनेमें जितना ही समर्थ होगा उसकी इज्जत और प्रतिष्ठा भी उसी हिसाबसे बढती जायगी।

उक्त कथनकी सत्यता प्रमाणित करनेके लिए मैने एक दृष्टान्त भी दिया था। पहले एक एकट जमीनमे ४९ मन शकरकन्द पैदा होते थे, परन्तु हमारे विद्यालयके एक ग्रेज्युएटने एक ही एकटसे २५० मन शकरकन्द पैदा करके दिखला दिये। खेतीकी अर्वाचीन पद्धति और रसायनशास्त्रके ज्ञानसे ही वह ऐसा कर सका। इससे आसपासके गोरे किसानोंने उसका बडा सम्मान किया और बहुतेरे उसके पास शकरकन्दकी खेतीके विषयमें पूछताँछ करनेके लिए आने लगे। उसके आदरसत्कारका मुख्य कारण यही था कि उसने अपने ज्ञान और परिश्रमसे समाजके सुख और वैभवको बढाया था। मैंने इसके साथ ही यह भी जतला दिया था कि हम लोग अच्छे शकरकन्द पैदा करना अथवा सदा खेतों पर काम करते रहना ही नीग्रो लोगोंके लिए काफी नहीं समझते। मैने यह समझानेकी चेष्टा

की थी कि इसी प्रकारके किसी भी काममें—किसी भी उद्योग धन्धेमें यदि कोई अच्छा जानकार हो जाय तो आगे चलकर उसके लडके और नाती उससे भी अधिक कुशल और अभिज्ञ होंगे।

इस प्रकार मैंने अपने पहले व्याख्यानमें दोनों जातियोंके विषयमें थोडीसी बातें कहीं थीं। तबसे अबतक मेरे उन विचारोंमें कुछ भी परिवर्तन नहीं हुआ है।

पहले जब मै किसी मनुष्यको नीग्रो लोगोंके विषयमें अपशब्द प्रयोग करते हुए देखता था अथवा उनकी सर्वांगीन उन्नतिको रोक देनेका प्रयत्न करते हुए पाता था तो मन-ही-मन बहुत अप्रसन्न होता था, पर अब अगर मैं किसीको किसी गैरकी उन्नतिमें बाधा डालते हुए देखता हूँ तो मुझे उस मनुष्य पर दया आती है। मै जानता हूँ कि स्वय किसी प्रकारकी उन्नति न कर सकनेके कारण ही वह इस बुरे मार्ग पर चलता है। ऐसे मनुष्य पर मुझे इस लिए दया आती है कि वह जिस ससारकी उन्नतिमें बाधा डालनेकी चेष्टा करता है उस ससारकी उन्नति किसीके रोके नहीं रुक सकती और इस लिए वह सकीर्ण-हृदयवाला मनुष्य आगे चलकर स्वय अपने किये पर लज्जित होगा। परस्पर सहानुभूति और बन्धु-प्रेम, आदि बातोंमें मानव जातिकी बराबर प्रगति होती जा रही है और इस प्रगतिको रोकनेकी चेष्टा करना और चलती हुई रेलगाडीको रोकनेके लिए उसके आगे लेट जाना एक ही बात है।

माडीसनमें शिक्षासमितिके सामने मैंने जो व्याख्यान दिया उससे उत्तर अमेरिकामें मेरा नाम चारों ओर फैल गया और तबसे व्याख्यान देनेके लिए मुझे वहाँके निमत्रण पर निमत्रण आने लगे।

इस समय मै दक्षिणके गोरों पर भी अपने विचार प्रकट करनेके लिए उत्सुक हो रहा था। सयोगवश १८९३ में मुझे इसके लिए भी अच्छा मौका मिल गया। इस वर्ष एटलांटामें सब राष्ट्रोंके पादरियोंकी एक महा-

सभा हुई थी। जिस समय मुझे इस महासभामें व्याख्यान देनेका निमन्त्रण-पत्र मिला उस समय मैं बोस्टनमें एक काम कर रहा था। पहले तो मुझे एटलाटामें जाकर व्याख्यान देना असभव ही मालूम हुआ। तथापि मैंने अपने कार्यक्रमको देखकर यह मालूम किया कि म बोस्टनसे चलकर एटलाटामें व्याख्यानसे आध घटे पहले पहुँच सकता हूँ और बोस्टन लौटनेसे पहले वहाँ एक घटे ठहर सकता हूँ। आमन्त्रण-पत्रमें मेरे व्याख्यानके लिए पाँच मिनिटका समय लिखा था। अब मेरे सामने केवल यही प्रश्न रहा कि इतनी लम्बी मजिल मार कर वहाँ पाँच मिनिटके समयमें मैं कुछ कह भी सकूँगा या नहीं।

मैंने यह सोचा कि इस अवसर पर वहाँ बडे बडे गोरे अधिकारी और महाजन एकत्रित होंगे। उन लोगोंको टस्केजी विद्यालयके कार्योंका परिचय देनेके लिए ऐसा अच्छा अवसर शीघ्र न मिलेगा। इस लिए मैंने यह यात्रा करना स्वीकार कर लिया। वहाँ जाकर मैंने दो हजार दक्षिणी और उत्तरी गोरोंके सामने केवल पाँच मिनिट व्याख्यान दिया। मेरा व्याख्यान सुनकर वे लोग आनन्दसे गद्गद हो गये। दूसरे दिन एटलाटाके समाचारपत्रोंने मेरे व्याख्यान पर अपने अनुकूल अभिप्राय प्रकट किये, और चारों ओर उसकी चर्चा होने लगी। दक्षिणके बडे बडे लोगोंको मेरा व्याख्यान सुननेका मौका मिला और मैंने समझा कि मेरा उद्देश्य सफल हुआ।

अब लोगोंमें मेरा व्याख्यान सुननेकी चाह दिन पर दिन बढने लगी और गोरे तथा नीग्रो दोनों ही उसके लिए समानरूपसे उत्सुक होने लगे। टस्केजीके कार्यसे मैं जितना समय बचा सकता था उतना समय म इन व्याख्यानोंमें खर्च करने लगा। टस्केजी-विद्यालयके फडके लिए ही मैंने उत्तर प्रान्तमें अनेक व्याख्यान दिये। नीग्रो लोगोंके सामने मेरे जो व्याख्यान होते थे उनका उद्देश्य यही होता था कि लोग धार्मिक और मानसिक तथा शिल्प-सबधी और औद्योगिक शिक्षाका महत्त्व जान जायँ

अब मै अपने जीवनकी एक महत्त्वपूर्ण घटना आपको बतलाता हूँ। १८ सितंबर सन् १८९५ के दिन एटलाटाकी सर्वजातीय प्रदर्शनीमें मेरा जो व्याख्यान हुआ उससे लोगोंमें बड़ा आन्दोलन मचा और ओरसे छोरतक सारे देशमे मेरी कीर्ति फैल गई।

इस घटना पर इतना आन्दोलन हुआ है और मेरे भाषणके संबंधमें मुझ पर प्रश्नोंकी इतनी भरमार हुई है कि यदि मैं यहाँ इस घटनाका विस्तारपूर्वक विवरण दे दूँ तो कुछ अनुचित न होगा। बोस्टनसे आकर एटलाटामें मैने जो पाँच मिनिटकी वक्तृता दी, वही शायद मेरे इस दूसरे व्याख्यानका मूल है। एटलाटाकी प्रदर्शनीको सरकारकी सहायता चाहिए थी और इसलिए वाशिंगटन नगरमें कांग्रेस-कमेटीसे मिलनेके हेतु एटलाटाके पचोंके साथ जानेके लिए वहाँके अग्रगण्य लोगोंने एक तार द्वारा मुझसे प्रार्थना की। इन पचोंमें जार्जियाके पचीस मुखिया और प्रतिष्ठित पुरुष थे। बिशप ग्राट, बिशप गेनिस और मै, इन तीन आदमियोंको छोड़कर बाकी सब गोरे थे। शहरके मेयर (शेरीफ) और शहरके अन्य अधिकारियोंने कमेटीके सामने भाषण किये। इनके बाद दोनों काले प्रतिनिधियोंके भाषण हुए। वक्ताओंकी नामावलीमें मेरा नाम सबके बाद लिखा गया था। मै कभी ऐसी कमेटीके सामने उपस्थित न हुआ था और राजधानीमें मैंने कभी बोलनेका साहस भी न किया था। क्या कहूँ और क्या न कहूँ, कुछ देरतक तो मै यही सोचता रहा। अन्तमें मेरी बारी आई और उस समय मेरे हृदयमें जो विचार उठे मैने प्रकट कर दिये। इस समय मुझे अपना सम्पूर्ण व्याख्यान स्मरण नहीं, पर मेरे कहनेका तात्पर्य यह था कि यदि कांग्रेस वास्तवमें दक्षिणसे जातिभेद दूर कर दोनों जातियोंमे परस्पर मेल बढाना चाहती है तो उसे उचित है कि वह दोनों जातियोंकी साम्पत्तिक और मानसिक उन्नतिमें हर प्रकारसे सहायता करे। मैने यह

भी बतलाया कि दासत्वकी बेडी टूटने पर दोनों जातियोंने अपनी कितनी उन्नति की है यह दिखलानेका सुयोग और उससे भविष्यत्के कार्यके लिए भरपूर उत्साह इस प्रदर्शनीसे मिलेगा। इसके बाद मैंने कहा कि यद्यपि केवल राजनीतिक अधिकारोंसे ही नीग्रो लोगोंको स्वर्ग नहीं मिल जायगा, तथापि उनके निर्वाचन-सबंधी अधिकारोंको छल कपटसे छीन लेनेका प्रयत्न भी न होना चाहिए, बल्कि इसके साथ ही उनमें उद्यम, कौशल, मितव्यय, बुद्धिमत्ता और सदाचारके प्रचारका भी प्रयत्न किया जाना चाहिए। अन्तमें मेरे कहनेका यह भाव था कि सिविल-वारके बाद लोगोंको इस प्रकारका यह पहला ही सुअवसर प्राप्त हुआ है, और यदि काग्रेस इस अवसर पर चाही हुई रकम देगी तो इससे दोनों जातियोंका वास्तविक और स्थायी कल्याण होगा।

मैंने यह व्याख्यान केवल पद्रह-बीस मिनिट तक दिया था तो भी जार्जियाके पत्रों और काग्रेसके सदस्योंने मेरा हार्दिक अभिनन्दन किया, जिससे मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ। कमेटीने एक दिलसे हम लोगोंके अनुकूल रिपोर्ट लिख भेजी और थोडे ही दिनोंमें उसकी सूचना काग्रेसने मान भी ली। इससे एटलाटा-प्रदर्शनीकी सफलताके विषयमें कोई सन्देह न रहा।

इस यात्रासे लौटकर प्रदर्शनीके सचालकोंने यह निश्चय किया कि प्रदर्शनीमें एक ऐसा बडा भवन बनवाया जाय जिसमें यह दिखलाया जाय कि दासत्वसे मुक्त होकर नीग्रो लोगोंने अबतक क्या उन्नति की है। यह भी निश्चय हुआ कि भवनका नकशा नीग्रो ही खींचें और भवन भी वे ही बनावें। इस निश्चय पर शीघ्र ही अमल भी किया गया। नीग्रो लोगोंने जो भवन तैयार किया वह किसी बातमें प्रदर्शनीके अन्य भवनोंसे कम न था।

अब यह विचार हुआ कि नीग्रो लोगोंका पदार्थसग्रह भी अलग

रक्खा जाय और उस पर मै निगरानी करूँ। पर टस्केजीमें इस वक्त कामाकी बहुत अधिकता थी और इस लिए मैने यह बात स्वीकार न की। तब शायद मेरी ही सूचनासे लिचबर्गके मिस्टर आई० गारलैंड पेन इस काम पर नियुक्त किये गये। मैने अपनी शक्ति भर उनकी सहायता करनेमें कोई बात उठा न रक्खी। पदार्थसग्रह बडा और देखने योग्य था। हैम्पटन और टस्केजी-विद्यालयसे आई हुई वस्तुओं-पर तो लोग टूटे पडते थे। नीग्रो वस्तुसग्रह देसकर दक्षिणी गोरोको बहुत ही आश्चर्य और आनन्द हुआ।

प्रदर्शनी खुलनेका दिन समीप आया और कार्यक्रम बनने लगा। कुछ लोगोंका यह प्रस्ताव था कि प्रदर्शनी खुलने पर पहले दिन किसी नीग्रोकी भी वक्तृता होनी चाहिए, क्योंकि प्रदर्शनीमें उन लोगोंने मुख्य-तया योग दिया है, और इसके सिवाय उनमेंसे किसीका व्याख्यान पहले रोज होनेसे दोनों जातियोंमें परस्पर सद्भाव भी बढेगा। कुछ लोगोंने इस प्रस्तावका विरोध किया, परन्तु डायरेक्टर लोग सुयोग्य थे इस लिए उन्होंने आरभिक वक्तृताके लिए किसी नीग्रोको निमन्त्रित करनेका निश्चय कर दिया। अब दूसरा प्रश्न यह उठा कि इस कार्य्यके लिए किसको बुलाया जाय। कई दिन वादविवाद होता रहा और अन्तमें यह निश्चय हुआ कि मै ही पहले दिन वक्तृता दूँ। शीघ्र ही मेरे पास निमन्त्रण-पत्र भी आ गया।

इस निमन्त्रणसे मुझ पर कितनी बडी जिम्मेदारी आ पडी, सो वही अनुमान कर सकता है जो स्वय कभी ऐसी स्थितिमे पडा हो। निमन्त्रण-पत्र पाते ही मेरे मनमें तरह तरहके विचार उठने लगे। मुझे स्मरण हुआ कि मै गुलाम था, मेरा बचपन दुःख दरिद्रता और अज्ञानमें बीता है, इतनी बडी जिम्मेदारीके कार्यके लिए आपको तैयार करनेके मुझे बहुत ही कम मौके मिले है, कुछ ही वर्ष पहले मेरी अवस्था इतनी गिरी हुई

थी कि श्रोताओंमसे कोई आदमी उठकर मुझे अपना 'गुलाम' बतलाकर गिरफ्तार कर सकता था, और इस समय भी बहुत सभव है कि मेरे पुराने मालिकोंमेंसे कुछ लोग मेरा भाषण सुननेके लिए एटलाटाकी प्रदर्शनीमें आवें।

एक नीग्रोके लिए ऐसे महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय अवसर पर दाक्षिणी गोरे पुरुषों और स्त्रियोंके साथ एक ही व्यासपीठ (प्लेटफार्म) पर खडे होकर वक्तृता देनेका यह पहला ही अवसर था। मै जानता था कि मेरे पुराने मालिकोंके प्रतिनिधि (वशज) रूप दक्षिणके बडे बडे विद्वान् और धनवान् इस व्याख्यानको सुननेके लिए आवेगे। इसके साथ ही मुझे यह भी मालूम था कि उत्तर प्रान्तके भी बहुतसे गोरे और मेरी जातिके लोग उपस्थित होंगे।

मैने पहले ही यह निश्चय कर लिया था कि मै कोई ऐसी बात न कहूँगा जिसे मै सत्य और समुचित नहीं समझता। मुझे इस बातकी कोई सूचना नहीं मिली थी कि मै कौनसी बात कहूँ और कौनसी छोड दूँ। मेरे लिए यह गौरवकी ही बात थी। प्रदर्शनीके सचालकोंको यह भली भाँति मालूम था कि अगर मै चाहूँ तो एक ही बातसे प्रदर्शनीकी मर्यादा भग कर दे सकता हूँ। परन्तु मुझे अपने भाषणमे सचाईके साथ अपनी जातिका पक्ष सुरक्षित रखना था और इस लिए मै इस बातसे डरता था कि मेरा भाषण यदि अप्रासगिक हुआ तो भविष्यमें कई बरसों तक कोई नीग्रो ऐसे अवसरों पर वक्तृता देनेके योग्य न समझा जायगा। उत्तर प्रान्तवासियोंके सबधमें और साथ ही दक्षिणके अच्छे अच्छे सज्जनोंके विषयमें सच बातें बतलानेका ही मैने निश्चय किया।

उत्तर और दक्षिणके समाचारपत्रोंमें मेरे भावी भाषणके सबधमें खूब टीका–टिप्पणियाँ होने लगीं और उनसे प्रदर्शनी खुलनेके पूर्व चारों ओर मेरी चर्चा फैल गई। दक्षिणके कई समाचारपत्र मेरे व्याख्यान

देनेके विरोधी थे । मेरे कई जाति भाइयोंने मेरे व्याख्यानके लिए कितनी ही बातें सुझाई थीं । उस समय विद्यालयका वर्षारम्भ होनेके कारण मुझे अवकाश बहुत कम था, तो भी समय निकालकर मैंने अपना भाषण पूरा ध्यान देकर तैयार किया । सितंबरकी अठारहवीं तारीख जैसे जैसे पास आने लगी वैसे वैसे मुझे न जाने क्यों, अपने प्रयत्न पर पानी फिरनेकी आशंका होने लगी और मेरा उत्साह भी घटने लगा । मैंने अपना भाषण अपनी स्त्रीको पढ़ सुनाया, उन्होंने उसे बहुत सराहा । एटलांटाके लिए प्रस्थान करनेसे एक दिन पहले १६ सितंबरको टस्केजी-विद्यालयके अध्यापकोंके बहुत आग्रह करने पर मैंने उन्हें भी अपना भाषण पढ़ सुनाया । उन्होंने उस पर जो आलोचना की उससे भी मेरे मनकी धुकधुकी कुछ कम हो गई ।

१७ सितंबरको प्रातःकाल मैं अपनी स्त्री मिसेस वाशिंगटन और तीनों सन्तानोंके साथ एटलांटाके लिए रवाना हुआ । फाँसी पर लटकाये जानेके लिए जानेवाले किसी अपराधीके समान इस समय मेरी दशा हो रही थी ! टस्केजीसे जाते समय मुझे पासहीके एक गाँवमें रहनेवाला एक गोरा किसान मिला । उसने मेरी तरफ देखकर कहा– “ वाशिंगटन, तुमने उत्तरके गोरोंके सामने और गाँव देहातोंमें रहनेवाले मेरे जैसे दक्षिणी गोरोंके सामने लेक्चरबाजी की है, पर, कल एटलांटामें उत्तरके गोरे लोग, और दक्षिणके गोरे तथा नीग्रो लोग तुम्हारा लेक्चर सुननेके लिए इकट्ठे होंगे । मालूम होता है कि तुम इसी सोचमें पड़े हुए हो । ” इस गोरे किसानने मेरे मनका हाल तो खूब जान लिया, पर उसकी स्पष्टोक्तिसे—साफ साफ कह देनेसे मेरे मनको धैर्य न मिला ।

मार्गमें अनेक गोरे और नीग्रो मेरी ओर इशारा करके प्रदर्शनीके विषयमें जोर जोरसे बातें करते हुए दिखाई देते थे । एटलांटामें एक कमेटीने हम लोगोंका स्वागत किया । गाड़ीसे उतरते ही सबसे

पहले, एक नीग्रोके मुँहसे निकले हुए ये शब्द सुन पड़े–" कल प्रदर्शनीमें हमारी जातिके इसी आदमीका व्याख्यान होनेवाला है, मैं इसका व्याख्यान सुननेके लिए अवश्य जाऊँगा । "

उस समय सारा नगर सब प्रदेशोंके डेलिगेटों, विदेशी राज्योंके प्रतिनिधियों और बड़ी बड़ी नागरिक और सामरिक संस्थाओंसे ठसाठस भरा हुआ था। समाचारपत्रोंने बड़े बड़े शीर्षक देकर दूसरे रोजके कार्यक्रमके विषयमें लेख प्रकाशित किये थे । इन सब बातोंसे मेरी छाती और भी धड़कने लगी । रातको मुझे पूरी नींद भी न आई । दूसरे दिन प्रातःकाल मैंने अपनी व्याख्यानको एक बार फिर पढ़ा और इस उद्योगमें सफलता प्राप्त करनेके लिए ईश्वरसे प्रार्थना की। यहाँ मैं यह बतला देना आवश्यक समझता हूँ कि परमेश्वरसे अपने भाषण पर अनुग्रह करनेकी प्रार्थना किये बिना, मैं कभी श्रोताओंके सामने न आता था।

मेरा यह नियम है कि वक्तृता देनेसे पहले मैं उसकी तैयारी कर लेता हूँ । मैं श्रोताओंके सामने उसी भावसे खड़ा होकर भाषण करता हूँ कि जिस भावसे कोई मनुष्य अपने मित्रसे एकान्तमें बातें करता है। प्रत्येक श्रोताके हृदयसे भिड़ जाना ही मेरी व्याख्यानकलाका लक्ष्य होता है । किसी सभामें भाषण करते हुए मैं यह नहीं सोचा करता कि मेरा भाषण समाचारपत्रोंमें शोभा पायगा या नहीं, अथवा इस भाषणको और लोग पसन्द करेंगे या नहीं। उस समय तो सम्मुख उपस्थित लोगोंमें ही मेरी सारी सहानुभूति, सारे विचार और सारी शक्ति तन्मय हो जाती है ।

प्रातःकाल ही बहुतसे लोग जुलूस निकालकर मुझे प्रदर्शनी तक लिवा ले जानेके लिए मेरे स्थान पर आये । इस जलूसमें बहुतेरे नीग्रो सज्जन गाड़ियों पर सवार होकर सम्मिलित हुए थे । मैंने इस बातको गौर करके देखा कि प्रदर्शनीके अधिकारी नीग्रो लोगोंकी खातिर करनेमें विशेष

सावधानीसे काम ले रहे थे । प्रदर्शनीतक पहुँचनेमें जुलूसको तीन घंटे लगे । रास्ते पर बड़ी कड़ी धूपसे सामना करना पड़ा । प्रदर्शनीके स्थानपर पहुँचकर गरमी और मानसिक कष्टोंके कारण मेरा शरीर शिथिल हो गया । सभास्थान मनुष्योंसे ठसाठस भरा हुआ था और स्थानाभावके कारण सहस्रों श्रोता बाहर खड़े थे ।

प्लेटफार्म खूब लम्बा चौड़ा था, स्थान, व्याख्यानके लिए सर्वथा योग्य था । प्लेटफार्म पर पैर रखते ही नीग्रो लोगोंने एक साथ तालियाँ बजाई और कुछ गोरोंने भी उनका अनुकरण किया । मुझे एक रोज पहले ही यह बतलाया गया था कि बहुतसे गोरे तमाशेके तौर पर मेरा भाषण सुननेके लिए आनेवाले हैं, बहुतोंकी मेरे साथ सहानुभूति है इस लिए उपस्थित होंगे, परन्तु अधिकांश लोग ऐसे ही होंगे जो मेरी 'मूर्खताकी प्रदर्शनी' देखकर प्रदर्शनीके सञ्चालकोंसे ताना मारते हुए यह कहेंगे कि कहिए, हमारा ही भविष्यत्कथन ठीक निकला न ?

टस्केजी-विद्यालयके एक ट्रस्टी और मेरे मित्र, दक्षिणरेलवेके मैनेजर, मिस्टर विलियम एच बाल्डविन एटलांटामें रहते हुए भी प्रारम्भिक कार्यक्रम समाप्त होने तक अन्दर नहीं आये, क्योंकि उन्हें इस बातका बड़ा भय और सन्देह था कि न तो मेरा (बुकर टी वाशिंगटनका) यहाँ कुछ सम्मान होगा और न मैं अपना काम ही सफलताके साथ कर सकूँगा ।

चौदहवाँ परिच्छेद ।

एटलांटा–प्रदर्शनीमें व्याख्यान ।

आरभमें गवर्नर बुलकने एक छोटीसी वक्तृता देकर प्रदर्शनी खोली । इसके उपरान्त जार्जियाके बिशप नेल्सनकी प्रार्थना, अलबर्ट हावेलका स्तुतिपाठ, प्रदर्शनीके सभापति, तथा स्त्रीमडलकी सभापत्नी मिसेस जोसेफ आदिके भाषण हुए । अन्तमें गवर्नर बुलकने मेरा परिचय करा दिया और कहा–“ नीग्रो जातिकी उन्नति, सस्कृति और साहसप्रीतिके प्रतिनिधि आज हम लोगोंके सम्मुख उपस्थित हैं । वे अब अपना व्याख्यान देंगे । ”

व्याख्यान देनेके लिए जब मे खडा हुआ तब श्रोताओंने, विशेषत नीग्रो भाइयोंने खूब करतल ध्वनि की । मुझे इस समय स्मरण है कि मे जो कुछ बतलानेके लिए खडा हुआ था उसका भाव यही था कि दोनों जातियोंमें परस्पर मेल रहे और परस्परकी सहायतासे दोनों उन्नत हों । उस वक्त हजारो मनुष्योंकी दृष्टि केवल मेरे ऊपर गडी हुई थी । मैंने अपना व्याख्यान इस तरह प्रारभ किया —

“ मान्यवर सभापति महाशय, सचालक सभाके सदस्य, और नगरवासियो, दक्षिणकी जनसख्यामे एक तृतीयाश नीग्रो लोग है । इस लिए जब तक इन लोगोंका ध्यान न रक्खा जायगा तब तक दक्षिणवासियोंकी नैतिक, सामाजिक अथवा साम्पत्तिक, किसी प्रकारकी उन्नति कदापि नहीं हो सकेगी । मेरी जातिके लोग खूब समझते हे कि इस विशाल प्रदर्शनीके सचालकोंने नीग्रो जातिके पराक्रम और महत्त्वका जैसा कुछ आदर किया है वैसा और किसीने कभी नहीं किया, और इसलिए सभापति महाशय और सचालक महाशयो, मै

उन सबकी ओरसे इस बातको आप लोगोंके सम्मुख प्रकट करता हूँ। मैं समझता हूँ कि हम लोगोंके दासत्वविमोचनके उपरान्त आजतक जितने कार्य हुए हैं उन सबकी अपेक्षा नीग्रो जातिके इस गौरवसे दोनों जातियोंकी मित्रता विशेष दृढ हुई है।

“आज हम लोगोंको जो अवसर प्राप्त हुआ है उससे हम लोगोंमें औद्योगिक उन्नतिका एक नया युग आरम्भ होगा। स्वाधीनता पा लेनेपर हम लोगोंने अज्ञानवश मूलकी ओर ध्यान न देकर शिखरसे ही अपना जीवन आरम्भ किया था। कहनेका तात्पर्य यह है कि हम लोगोंने धन और कलाकौशल्यके साधनोंको छोडकर कांग्रेस या राजसभामें स्थान पानेकी चेष्टा आरम्भ की थी! दही दूधका कारखाना जारी करने या फलोंका बाग लगानेके बदले हमारा हौसला राजसभा या अन्य स्थानोंमें व्याख्यान देनेकी तरफ बढ गया था।

“एक बार समुद्रमें बहुत दिनोंसे भूले भटके एक जहाजने एक दूसरे जहाजको देखा। पहले जहाजके यात्री गरमी और प्यासके मारे छटपटा रहे थे। इस लिए उन्होंने उसके मस्तूल पर इसी मतलबका एक निशान लगा रक्खा था। उसका मतलब समझकर दूसरे जहाजने उत्तरमें कहा,—‘जिस स्थान पर तुम हो, वहीं पर बाल्टी लटकाओ।’ उस जहाजने फिर इशारेसे पानी माँगा और उसे फिर वही उत्तर मिला। तीसरी चौथी बार फिर पानी माँगा गया और वही उत्तर बार बार दिया गया। तब पहले जहाजके कप्तानने बाल्टी लटकाकर पानी खींचा और देखा तो उसे अमेजन नदीके मुहानेका साफ, मीठा और ताजा पानी मिल गया! हमारे जो जातिभाई अपने साथी दाक्षिणी गोरोंसे मित्रता रखनेमें विशेष लाभ नहीं समझते और विदेशमें जाकर अपनी उन्नति करना चाहते हैं उनसे मैं भी यही कहूँगा कि ‘जिस स्थानपर तुम हो वहीं बाल्टी लटकाओ। जिस समाजमें रहते हो उसी समाजके सब लोगोंके साथ जी खोलकर मित्रता करो।’

“ खेती, शिल्प, व्यापार, घरू काम और अन्यान्य उद्यमोंमें अपनी बाल्टी लटकाओ। दक्षिणवाले और बातोंके लिए चाहे भले ही दोषी हों पर व्यापारमें नीग्रो लोगोंको आगे बढ़नेका अवसर दक्षिणमें ही मिला करता है और यही बात आजकी प्रदर्शनीसे भलीभाँति स्पष्ट हो जाती है। मुझे यह एक बड़ा भय है कि दासत्वके अंधकारसे निकलकर एकाएक स्वतन्त्रताके प्रकाशमें आजानेके कारण शायद हम लोग इस बातकी ओर आनाकानी करें कि हम लोगोंमेंसे बहुतेरोंको परिश्रम करके ही अपना गुजारा करना है, अथवा इन बातोंको भूल जायें कि हम लोग नित्य परिश्रम करनेकी उपयोगिता और महत्ता जितनी ही बढ़ावेंगे, सामान्य व्यवसायोंमें दिमाग भिड़ाकर जितना ही अधिक कौशल लाभ करेंगे, चमकदमक और दिखौआपनको त्याग कर सचाई और पुरुषार्थमें जितनी ही अधिक उन्नति करेंगे, उतना ही हमारा सिर ऊँचा होगा। जबतक कोई जाति सुन्दर काव्यकी रचना करने और खेत पर हल चलानेमें समान प्रतिष्ठा नहीं समझती तब तक वह जाति सम्पन्न हो नहीं सकती। हम लोगोंका कार्य शिखरसे नहीं, बल्कि मूलसे आरंभ होना चाहिए। हमें अपने दुःखों और क्लेशोंके कारण तथा अपनी शिकायतोंके कारण मिले हुए सुअवसरको अपने हाथसे न खो देना चाहिए।

“ जो गोरे दक्षिणको सम्पन्न करनेके लिए विदेशियोंको ले आना चाहते हैं उनसे भी (यदि वे ध्यान देकर सुनें तो) मैं यही कहूँगा कि जहाँ तुम हो वहीं बाल्टी लटकाओ। उन्हीं अस्सी लाख नीग्रो भाइयोंमें अपनी बाल्टी लटकाओ कि जिनके स्वभावसे तुम परिचित हो और जिनकी सचाई और स्वामिभक्तिकी परीक्षा तुम ऐसे अवसर पर कर चुके हो जब वे अपने कपट–व्यवहारसे, यदि चाहते तो तुम्हारा सर्वस्व नष्ट कर डालते। उन्हीं लोगोंमें अपनी बाल्टी लटकाओ

जिन्होंने हड़ताल या और किसी तरहके उपद्रव किये बिना तुम्हारे खेत जोते है, तुम्हारे जगलोंको काटकर साफ किया है, तुम्हारी रेलकी सड़कें और शहर बनाये हैं और इस प्रकार दक्षिणकी सम्पन्न अवस्था दिखलानेवाली इस प्रदर्शनीको खड़ी करनेमें जिन्होंने मदद की है। अगर तुम इसी प्रकारसे उनकी सहायता कर उन्हें उत्साहित करते रहोगे और कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय और अन्त करणकी शिक्षा दिलानेमें उनकी मदद करोगे तो तुम्हारी परती पड़ी हुई जमीन वे खरीद लेंगे, उसे उपजाऊ बनावेंगे और तुम्हारे कारखाने चला देंगे। इसके साथ ही ये नीग्रो लोग जो, संसारमें सबसे अधिक सहनशील, शान्त, विश्वासपात्र और कानूनके पाबन्द हैं पहलेकी भाँति तुम्हारी और तुम्हारे परिवारकी सेवामें तत्पर रहेंगे। तुम्हारे बाल-बच्चोंका लालन करनेमें, तुम्हारे रुग्ण मातापिताओंकी रात रात भर जागकर सेवा-टहल करनेमें, उनके देहान्त पर शोकाकुल हो उनके पीछे पीछे स्मशानतक आँसू बहाते हुए जानेमें और ऐसी ही अन्य अनेक बातोंमें हम लोगोंने तुम्हें अपनी सच्चाई और स्वामिभक्तिका यथेष्ट प्रमाण दे दिया है। अब इसके बाद भी हम लोग विदेशियोंसे कहीं अधिक कृतज्ञता और नम्रताके साथ तुम्हारा साथ देंगे और आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राण भी तुम लोगों पर न्योछावर कर देंगे! हम अपने धार्मिक, औद्योगिक और व्यावहारिक जीवनको तुम्हारे जीवनमें मिला देंगे। केवल सामाजिक बातोंमें, उँगलियोंके समान हम तुमसे भिन्न रहेंगे परन्तु पारस्परिक उन्नतिके कामोंमें हम लोग हाथकी भाँति एक हो जायँगे।

"जबतक हम सबोंकी उन्नति और अभिवृद्धि न होगी तबतक दोनोंमेंसे कोई भी निर्भय या सुरक्षित नहीं हो सकता। नीग्रोलोगोंकी उन्नति रोकनेका यदि कहीं उद्योग होता हो तो उसे बदल कर उत्तम नागरिक बनानेका उद्योग कीजिए। इस प्रकारके उद्योगसे हजार गुना अधिक लाभ होगा। दोनों जातियोंका मंगल इसीमें है!

“ मानवी अथवा दैवी नियमोंमें जो बातें अवश्यभावी हैं–अपरिहार्य हैं–उनसे कभी छुटकारा नहीं हो सकता ।

“ सृष्टिके कभी न बदलनेवाले नियमोंसे अन्याय करनेवाले और उसे सहनेवाले दोनों एक साथ बंधे हुए हैं और जिस प्रकार पाप और दुःख साथ साथ रहते हैं उसी प्रकार हम दोनों भी (अन्यायी और अन्यायपीड़ित) एक साथ ही नियति ‘ या ’ मृत्युकी ओर कंधोंसे कंधे मिलाकर जा रहे हैं ।

“ एक करोड साठ लाख हाथ या तो भार उठानेमें तुम्हारी सहायता करेंगे या तुम्हारी इच्छाके विरुद्ध तुम्हारा बोझ नीचे खींचकर तुम्हें मुँहके बल गिरा देंगे । दक्षिणकी जनसंख्याका तीसरा हिस्सा या तो अज्ञान और पापकी कीचड़में डूब जायगा या उन्नत और बुद्धिमान् ही बन जायगा । या तो हम लोग आपके व्यापार और वैभवकी वृद्धिमें सहायता करेंगे या समूचे समाजकी उन्नतिके बाधक बनकर उसके उत्साहको भंग करनेवाले एक गतिरहित–निर्जीव, मुर्दे ही बन जावेंगे ।

“सज्जनो, इस प्रदर्शनीमें हम लोगोंने अपनी उन्नति दिखलानेका नम्रतापूर्वक प्रयत्न किया है । आप लोग इससे अधिककी आशा न करें । तीस वर्ष पूर्व हमारी दशा शोचनीय थी–हम लोगोंके पास कुछ भी न था । तबसे अबतक खेतीके औजार, बग्गियाँ, भाफके इंजिन, समाचारपत्र, पुस्तकें, मूर्तियाँ, नक्काशी और चित्र आदि बनानेमें और उनमें नवीन नवीन आविष्कार तक करनेमें हम लोगोंको थोडी कठिनाइयाँ नहीं उठानी पडी हैं–इस उन्नतिके मार्गको हमने सहज ही तै नहीं कर लिया है । यद्यपि हम लोगोंको इस बातका बडा अभिमान है कि प्रदर्शनीमें रक्खी हुई चीजें खुद हम लोगोंने तैयार की है, तथापि हम लोग यह भी कदापि नहीं भूल सकते कि यदि दक्षिणके राज्य और उत्तरके दानशूर,

सज्जन हम लोगोंकी धनद्वारा सहायता न करते तो इस प्रदर्शनीमें हम लोगोंके करतबका रग फीका पड जाता ।

“हमारी जातिमें जो विशेष बुद्धिमान् लोग है वे सामाजिक समताके लिए आन्दोलन करनेको बडी भारी मूर्खता समझते है और कृत्रिम उपायोंसे अधिकारयुक्त होनेकी अपेक्षा स्वाभाविक उपायोंसे अर्थात् दृढ प्रयत्न करके उन अधिकारोंका प्राप्त करना अधिक अच्छा समझते है । ससारके बाजारमें अपना माल तैयार करके भेजनेवाली कोई भी जाति बहुत दिनों तक अवहेलाकी दृष्टिसे नहीं देखी जा सकती और न वह उन्नतिमें किसीसे पीछे ही रह सकती है । यह बात बहुत ठीक है कि कानूनसे हम लोगोंके जो अधिकार है वे हमें मिलने चाहिए, पर इससे भी अधिक महत्त्वकी बात यह है कि हम पहले उन अधिकारोंका उचित उपयोग करनेकी योग्यता प्राप्त करनी चाहिए । किसी नाटकघरमें जाकर एक डालर खर्च करनेकी अपेक्षा किसी कारखानेमे काम करके एक डालर कमाना बहुत अच्छा है ।

“अन्तमें, मै आप लोगोंसे यही विनय करूँगा कि इस प्रदर्शनीने हम लोगोंको जितनी अधिक आशा और उत्साह दिलाया है, और गोरोंसे हमारा जितना अधिक सबध बढाया है, उतना और किसी अवसर या कार्यसे नहीं बढा । तीस वर्ष पूर्व दोनों जातियोंने खाली हाथ प्रयत्न आरम किया था । इन तीस वर्षोंमें दोनों जातियोंने जो उन्नति की है उसका फल इस वेदीके सामने आप लोग देख सकते है । इस पवित्र वेदीके सामने नम्रतापूर्वक झुककर मै यह कहना चाहता हूँ कि परमात्माने दक्षिणके लोगोंके सामने जो बडा और गूढ प्रश्न रक्खा है उसकी मीमासामें आप लोगोंको मेरी जातिसे सदा सहायता और सहानुभूति मिलती रहेगी । पर आप लोग इस बातको सदा ध्यानमें रक्खें कि इस प्रदर्शनीमें जो खेत, जगल, खान, कारखाने, साहित्य, कला आदिसे सम्बन्ध रखनेवाली वस्तुयें रक्खी है उनसे आपको लाभ तो

अवश्य होगा, पर नियमानुसार सबके साथ उचित न्याय करनेके उद्देश्यसे परस्परका जातिद्वेष और भेदभाव नष्ट करनेका जो फल या लाभ होगा वह इन भौतिक लाभोंसे कहीं अधिक कल्याणकारी होगा। जातिद्वेषको नष्ट करके भौतिक सम्पन्नता प्राप्त करनेसे हमारा प्रिय दक्षिण प्रान्त निस्सन्देह दूसरा नन्दनवन बन जायगा।"

मेरा व्याख्यान समाप्त होते ही गवर्नर बुलक तथा अन्य कई लोगोंने प्लेटफार्म पर आकर मेरे हाथमें हाथ मिलाया। लोग मुझे इतनी अधिक हार्दिक बधाइयाँ देने लगे कि मेरा वहाँसे निकलना कठिन हो गया। दूसरे दिन जब मैं बाजार गया तब मुझे बहुतसे लोगोंने चारों ओरसे घेर लिया और मुझसे हाथ मिलाना चाहा। मैं जिस किसी गली कूचेमें जाता था वहीं लोग मुझसे मिलते और मुझे बधाई देते थे। मैं इससे इतना घबरा गया कि मुझे अपने डेरे पर लौट आना पड़ा। दूसरे दिन सबेरे मैं टस्केजीके लिए रवाना हो गया। एटलाटा स्टेशन पर और फिर जहाँ जहाँ गाड़ी ठहरती थी वहाँ वहाँ बहुतसे लोग मुझसे हाथ मिलानेके लिए आये हुए देख पड़ते थे।

अमेरिकाके प्रायः सभी समाचारपत्रोंमें मेरा वह व्याख्यान छप गया और महीनों तक उस पर अनुकूल सम्पादकीय लेख निकलते रहे। 'एटलाटा कन्स्टिटयूशन' पत्रके सम्पादक मिस्टर क्लार्क हावेल्ने न्यूयार्कके एक पत्रसम्पादकके पास तार द्वारा संवाद भेजा कि "दक्षिणमें आज तक जितने व्याख्यान हुए हैं, उन सबमें प्रोफेसर बुकर टी वाशिंगटनका कल जो व्याख्यान हुआ वह परम उत्कृष्ट और रमणीय हुआ है। उनका स्वागत भी वैसा ही अपूर्व हुआ। इसमें मैंने कोई अत्युक्ति नहीं की है। उनके व्याख्यानसे वास्तवमें हम लोगोंको बहुतसी नई बातें मालूम हुईं। उन्होंने अपने व्याख्यानमें काले और गोरे, दोनोंकी समुचित आलोचना की।"

‘बोस्टन ट्रन्सक्रिप्ट’ नामक समाचारपत्रमें यहाँ तक लिखा गया था कि “एटलांटा-प्रदर्शनीमें बुकर टी वाशिंगटनके व्याख्यानके सामने वहाँका सारा कार्यक्रम, और तो क्या स्वयं प्रदर्शनी भी, फीकी पड़ गई थी । इस व्याख्यानने समाचारपत्रोंमें जैसा आन्दोलन उपस्थित कर दिया है वैसा कभी किसी व्याख्यानसे नहीं हुआ था ।”

शीघ्र ही चारों ओरसे व्याख्यान करानेवाले और पत्रसम्पादक गण मुझसे व्याख्यान देने और लेख लिखनेके लिए आग्रह करने लगे । व्याख्यान करानेवाली एक संस्था तो मुझे एक साथ पचास हजार डालर अथवा प्रतिव्याख्यानके लिए दो सौ डालर देनेके लिए तैयार हो गई ! पर उन सबोंको मैंने यही उत्तर दे दिया कि “मैंने अपने जीवन भर टस्केजी-विद्यालयकी सेवा करनेका संकल्प कर लिया है, मैं उक्त विद्यालयकी और अपनी जातिकी सेवाके लिए ही व्याख्यान दिया करता हूँ । मेरा यह कोई पेशा नहीं, जो धनलाभकी दृष्टिसे ही मैं इस कामको करूँ ।”

मैंने अपने व्याख्यानकी एक नकल संयुक्त राज्यके प्रेसिडेंट आनरेबल ग्रोवर क्लीवलैंडके पास भेजी । इसके उत्तरमें उन्होंने अपने हस्ताक्षरके साथ नीचे दिया हुआ पत्र मेरे पास भेजा —

“ग्रे गेबल्स, बजार्ड्स बे, मसेच्युसेट्स,
६ अक्टूबर, १८९५

श्रीमान् बुकर टी वाशिंगटनकी सेवामें—

प्रिय महाशय, एटलांटा प्रदर्शनीमें दिये हुए व्याख्यानकी एक नकल मेरे पास भेज कर आपने मुझे बहुत ही अनुगृहीत किया है ।

आपके इस उत्तम व्याख्यान पर मैं आपको हार्दिक उत्साहसे बधाई देता हूँ । मैंने आपका व्याख्यान बहुत ध्यानपूर्वक पढ़ा है और यदि आपके इस व्याख्यानके अतिरिक्त प्रदर्शनीमें और कोई बात न होती तो भी कोई हानि न होती । आपकी जातिका कल्याण चाहनेवाले सब

लोगोंको आपके व्याख्यानसे आनन्द और उत्साह प्राप्त होगा, इसमें सन्देह नहीं। यदि आपके व्याख्यानसे हमारे नीग्रो देशबन्धु अपने नागरिकत्वके अधिकारसे यथासभव लाभ उठानेका निश्चय और नवीन आशा न करें तो सचमुच ही आश्चर्यकी बात होगी।

आपका सच्चा हितैषी
ग्रोवर क्लीवलेड।”

कुछ काल पश्चात् जब मिस्टर क्लीवलैड प्रेसिडेंटकी हैसियतसे एटलाटा-प्रदर्शनी देखने आये तब उनसे मेरी भेंट भी हुई। मेरे और अन्य लोगोंके प्रार्थना करने पर उन्होंने नीग्रो-भवनमें चलकर वहाँ रक्खे हुए नीग्रो-कारीगरीके नमूने देखने और उपस्थित नीग्रो लोगोंको हाथ मिलानेका अवसर देनेके लिए एक घटेका समय देना स्वीकार किया। मिस्टर क्लीवलैडसे पहली बार मिलते ही उनकी रहन-सहनकी सादगी, मनकी उदारता और हृदयकी सचाईका मुझ पर बडा प्रभाव पडा। इसके बाद भी कई बार उनसे मिलनेका मुझे अवसर मिला है। जितना ही अधिक मैं उनसे मिलता हूँ उतना ही अधिक मेरा उनसे स्नेह होता जाता है। एटलाटा-प्रदर्शनीके नीग्रो-भवनमें जाकर उन्होंने खुले दिलसे सबसे हाथ मिलाया। एक फटे-पुराने कपडे पहनी हुई नीग्रो बुढियासे हाथ मिलाते हुए वे इतने गद्गद और प्रसन्न मालूम होते थे मानो किसी करोडपतिका ही स्वागत कर रहे है! बहुतसे लोगोंने इस अवसरसे लाभ उठा कर उनसे उनकी डायरीमें अपने नाम लिखवाये और उन्होंने भी यह काम इतनी सावधानी और धैर्यके साथ किया, मानों राज्यसबधी किसी महत्त्वपूर्ण पत्र पर हस्ताक्षर ही कर रहे हों!

मिस्टर क्लीवलैडने मेरे साथ अपना मित्रभाव कई प्रकारसे प्रकट किया है। इतना ही नहीं, बल्कि, टस्केजी-विद्यालयके लिए मैंने उनसे जो जो प्रार्थनायें की है उन सबको उन्होंने स्वीकार किया है। उन्होंने विद्यालयको

स्वय आर्थिक सहायता दी है और अपने मित्रोंसे भी दिलाई है। मेरे साथ उन्होंने जैसा मित्रभाव रक्खा है उससे मै नहीं समझता कि वे वर्णद्वेष भी रखते होंगे। वे इतने उच्चविचारके उदार पुरुष है कि उनमे वर्णद्वेष जैसे सकुचित भाव कभी समा ही नहीं सकते। ऐसे ही ऐसे महानुभावोंसे मिलकर मैने यह मालूम किया है कि केवल क्षुद्र और छोटे मनुष्य ही अपने लिए जीते है अर्थात् स्वार्थी होते है। वे कभी अच्छे ग्रन्थोंको नहीं पढते, देशाटन नहीं करते, दूसरी आत्माओंसे—ससारके बडे बडे पुरुषोंसे परिचय नहीं करते। वर्णद्वेषसे जिनकी दृष्टि छोटी हो जाती है उन्हें ससारकी सुन्दर और मनोहर वस्तुओंका दर्शन नहीं हो सकता। देश देश घूमकर नाना प्रकारके लोगोंसे मिलकर मैने यह जाना है कि परहितके लिए प्रयत्न करनेवाले लोग सबसे अधिक सुखी होते है, और जो सदा अपने ही स्वार्थमें लगे रहते है वे सबसे अधिक दुखी होते है। जातिद्वेषके समान मनुष्यको अन्धा और तुच्छ बनानेवाली दूसरी वस्तु नहीं। प्रत्येक रविवारकी सध्याको मेरा उपदेश हुआ करता है। उस समय मै अपने विद्यार्थियोंसे अकसर कहा करता हूँ कि मै ज्यों ज्यों बडा और बूढा होता जाता हूँ और ज्यों ज्यो मेरा सासारिक अनुभव बढता जाता है त्यों त्यों मेरा यह विश्वास दृढसे दृढतर होना जाता है कि ‘दूसरोंको अधिक उपयोगी और सुखी बनानेका मौका मिलना’ बस, यही एक ऐसी बात है कि जिसके लिए हमें जीते रहनेकी और समय पडने पर अपने प्राण भी न्योछावर कर देनेकी आवश्यकता है। गरज यह कि मनुष्यका जीवन परोपकारके * लिए है और आवश्यकता पटने पर उसके लिए प्राणतक न्योछावर कर देना हमारा धर्म है।

---

* श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि यदुक्त ग्रन्थकोटिभि ।
परोपकार पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

मेरे व्याख्यानसे और उसकी जो प्रशसा हुई उससे नीग्रो लोग वहुत ही प्रसन्न हुए--उनके समाचारपत्रोंने भी खूब प्रसन्नता प्रकट की, परन्तु यह प्रसन्नता वहुत दिनों तक न रहने पाई। थोडे ही दिनोंमें जब उत्साह मन्द पड गया तब मेरे उस ठंडे व्याख्यानको पढकर मेरे वहुतसे जातिभाइयोंको ऐसा भासने लगा कि हम उस समय भूल गये--वास्तवमें वह व्याख्यान इतना प्रशसाके योग्य न था। उनका कहना यह था कि मैंने दक्षिणी गोरोंके विषयमें तो वहुत अधिक उदारता दिखलाई, पर अपनी जातिके अधिकारोंका वैसा अच्छा प्रतिपादन नहीं किया। इस तरह कुछ दिनों तक मेरे विषयमें नीग्रो लोग ऐसी ही शिकायत करते रहे, पर पीछेसे वे सव मेरे अनुकूल हो गये।

यहाँ मुझे एक वात और याद आती है जिसे वतला देना जरूरी है। टस्केजी-विद्यालयके ग्यारहवें वर्षमें मुझे एक ऐसा अनुभव प्राप्त हुआ जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता। प्लाइमाउथ चर्चके पादरी और 'आउट लुक' पत्रके सम्पादक डाक्टर लीमन एवटने अपने पत्रमें प्रकाशित करनेके लिए नीग्रो धर्मोपदेशकोंके सवधमें मेरी सम्मति माँगी थी, तदनुसार मैंने अपनी यथार्थ सम्मति लिख भेजी। एक तो धर्मोपदेशकोंकी दशाका मैंने जो चित्र खींचा वह काला ही था--जब मैं ही काला हूँ, तब वह चित्र कहाँसे गोरा हो?--और दूसरे अभी दासत्वसे मुक्त हुए हम लोगोंको अच्छे उपदेशक निर्म्माण करनेका अवसर ही न मिला था।

मैं समझता हूँ कि देशके प्रत्येक नीग्रो धर्मोपदेशकने मेरी उस सम्मतिको पढा होगा, क्योंकि मेरे पास इस विषयमें ऐसे सैकडों ही पत्र आये जिनमें मेरी सम्मतिको दूषित और असन्तोषजनक वतलाया था। इस घटनासे एक वर्ष वादतक कोई भी ऐसी सभा न हुई जिसमें मुझे उलटी सीधी न सुनाई गई हो। अथवा मुझे अपनी सम्मति लौटा लेने या उसमें उचित परिवर्तन करनेके लिए कहनेका प्रस्ताव पास न किया

गया हो । कई सस्थाओंने तो यहाँ तक कहना प्रारभ किया था कि ए अपने बालकाको टस्केजी-विद्यालयम पढनेके लिए न भेजें । इसी का लिए एक सस्थाकी ओरसे एक उपदेशक भी नियुक्त हुआ था । इसने स्थ स्थान पर जाकर यह उपदेश देना आरभ किया कि काई अपने बा कोंको टस्केजीके विद्यालयसे पढनेके लिए न भेजे । पर मजेकी बात थी कि इसी भले आदमीने अपने पुत्रको, जो हमारे विद्यालयमें पढ था, विद्यालयसे नहीं हटाया ! कितने ही समाचारपत्रोंने तो मेरी क आलोचना करने अथवा मुझे अपनी सम्मति लौटा लेनेकी सूच करनेका मानों काम ही उठा लिया था ।

इतना सब होते हुए भी मैने इसके उत्तरम न तो कुछ कहा आर अपनी सम्मति ही लोटा ली । मै जानता था कि मेरी सम्मति यथ है और समय पाकर तथा शान्तिपूर्वक विचार करके लोग उसी स तिका समर्थन करने लोंगे । कुछ दिनोंके बाद जब बडे बडे धर्माधि रियाने धर्मोपदेशकोंकी दशाका अनुसन्धान आरम्भ किया तब उ मेरे कथनकी सत्यता प्रतीत हो गई । मेथाडिस्ट चर्चके एक वृद्ध अ प्रभावशाली धर्माधिकारीने तो यहाँ तक कह दिया कि मैंने धर्मोपदेशको दशाका चित्र खींचनेमें बडी मुलामियतसे काम लिया है । थोडेही दिन लोकमत भी बदलने लगा और और लोग भी धर्मोपदेशकोंकी दशा सुधार होना आवश्यक बतलाने लगे । यद्यपि इस समय भी धर्मोपदे कोंकी जैसी चाहिए वैसी अच्छी दशा नही है, तथापि मेरे शब्दोंने— बडे धर्मोपदेशकोंका भी यही कथन है—लोगोंके हृदयम यह अच्छी त ठूँसा दिया कि धर्मोपदेशका कार्य करनेवाले लोग उच्चश्रेणीके शि और सदाचारी होने चाहिए । जिन लोगाने आरम्भमे मेरे लेखसे असन होकर मेरी निन्दा की थी पीछे उन्हींने मेरी स्पष्ट सम्मतिके विप मेरा हार्दिक अभिनन्दन किया और इससे मुझे बहुत सन्तोष हुआ ।

इस समय धर्मोपदेशकोंमें मेरे जैसे हार्दिक मित्र है वैसे और किसी विभागमे नही है। नीग्रो–धर्मोपदेशकोंका चरित्र अब बहुत सुधरा हुआ है और यह जातिकी उन्नतिका एक सन्तोषप्रद लक्षण है। धर्मोपदेशकोंके सबधमें और अपने जीवनकी अन्य घटनाओंके विषयमें मुझे जो अनुभव मिला है उससे मेरा यह विश्वास हो गया हे कि जब अपने किसी उचित कार्यके या कथनके विरुद्ध चारों ओरसे आन्दोलन होता हो तब हमें मौन धारण करके रह जाना चाहिए–उस समय सबसे अच्छा उपाय चुप हो रहना ही है। यदि हमारा कथन या कार्य सत्य है तो समय पाकर वह अवश्य ही सिद्ध होगा।

जिस समय मेरे एटलाटा-प्रदर्शनीवाले व्याख्यानकी चर्चा चारों ओर फैल रही थी उस समय जान्स हापकिन्स यूनिवर्सिटीके अध्यक्ष डाक्टर गिलमनका एक पत्र मेरे पास आया। वह पत्र नीचे दिया जाता है। डाक्टर गिलमन प्रदर्शनीकी पुरस्कार–समितिके प्रधान नियुक्त हुए थे।

“ जान्स हापकिन्स यूनिवर्सिटी, वाल्टीमोर,
अध्यक्ष–कार्यालय, ३० सितबर १८९५

प्रिय वाशिंगटन महाशय,

क्या आप एटलाटा-प्रदर्शनीके शिक्षाविभागकी पुरस्कार–कमेटीके पच होना पसन्द करेंगे? यदि पसन्द करें तो मैं आपका नाम कमेटीके पचोंकी नामावलीमें लिख लूँ। कृपया तार द्वारा उत्तर दीजिए।

आपका सच्चा हितैषी,
डी सी गिलमन।”

एटलाटा-प्रदर्शनीकी आरभिक वक्तृताके निमत्रणकी अपेक्षा इस नि-

मत्रणसे मुझे बहुत ही अधिक आश्चर्य हुआ । अब मेरा यह कर्त्तव्य हुआ कि पचकी हैसियतसे केवल नीग्रो ही नहीं बल्कि गोरोंके विद्यालयोंकी भी वस्तुओं पर मै अपनी सम्मति दूँ । उत्तरमें मैने पच होना स्वीकार कर लिया और अपना काम ठीक तरहसे करनेके लिए मै एटलाटामें एक मास तक रहा । पचोंकी कमेटीमें साठ पच थे । इनमें आधे तो प्राय दक्षिणके गोरे थे और आधे उत्तरके । कमेटीमें कालेजोंके प्रेसिडेंट, मुख्य मुख्य शास्त्रज्ञ, बडे बडे विद्वान् और भिन्न भिन्न विषयोंके अनुभवी जानकार थे । मिस्टर पेज नामक एक पचकी सूचनासे मे ही शिक्षाविभागका मत्री बनाया गया । गोरोंके विद्यालयोंकी प्रदर्शित वस्तुओंका निरीक्षण करते समय मैने उपस्थित गोरोंको बहुत विनयशील पाया । यह काम समाप्त होने पर जब मे अपने साथी पचोंसे विदा होकर घर जाने लगा तब मुझे मोहवश बहुत दु ख हुआ ।

मे अपनी जातिकी राजनीतिक अवस्था और उसके भविष्यके विषयमे अपनी स्पष्ट सम्मति प्रकट करूँ, इसके लिए मुझसे अनेक बार कहा गया है । मेरी यह सम्मति है कि—अब तक मैने इसे किसी पर प्रकट नहीं किया था—दक्षिणी नीग्रो लोगोंको, उनकी योग्यता, उनके चरित्रबल और उनकी सम्पत्तिके अनुसार, सब प्रकारके राजकीय अधिकार शीघ्र ही मिलनेवाले है । ये राजकीय अधिकार अस्वाभाविक उपायोंसे अथवा किसी गैरके करतबसे न मिलेंगे, बल्कि स्वय दक्षिणी गोरे ही ऐसा सुअवसर ले आवेंगे और उनके अधिकारोकी रक्षा भी करेंगे । दक्षिणी गोरोंकी यह पुरानी धारणा है कि बाहरी लोगाके दबावसे उन्हें अपनी इच्छाके विरुद्ध कार्य करने पडते है । ज्यों ज्यों यह धारणा मिटती जायगी त्यों त्यों नीग्रो जातिको अधिकार मिलने लगेंगे और यह कार्य अब किसी अशमें आरभ भी हो गया है ।

मै इस बातको और भी स्पष्ट करके बतलाता हूँ । यह सोचिए कि

यादि प्रदर्शनी खुलनेसे कुछ महीने पहले दक्षिणके समाचारपत्रों और सभाओंमें इस बातका आन्दोलन किया जाता कि प्रारंभिक कार्यक्रमम एक नीग्रोको स्थान दिया जाना चाहिए तथा पुरस्कार देनेवाले पचोंमें एक नीग्रो भी होना चाहिए, तो क्या इससे हमारी जातिका कुछ भी गौरव हो सकता ? मै नहीं समझता कि इससे हम लोग कोई लाभ उठाते । हाँ, प्रदर्शनीके अधिकारियोंने नीग्रो लोगोंकी योग्यता देखकर गुणोंका योग्य गौरव करनेके लिहाजसे स्वय ही उनका यथेष्ट आदर किया —उन्हें स्वय ही यह अच्छा मालूम हुआ । मनुष्यके स्वभावकी बनावट ही ऐसी है कि वह अन्तमें जातिद्वेषको भूल कर काले-गोरोंमें कोई अन्तर नही देखता और दोनोकी योग्यता समझ कर उनका यथेष्ट आदर करता ही है ।

मेरी तो यह राय है कि नीग्रो लोग राजकीय अधिकार माँगनेमें अधिक विनयशील रहें तो बहुत अच्छा हो । यह बडे ही सतोषकी बात है कि बहुतसे नीग्रो लोगोंका आचरण ऐसा ही देखनेमें आता है । धन-सम्पत्ति, बुद्धिमता और उत्तम चरित्रबल होने पर ही राजकीय अधिकार सुख देते हैं। उन अधिकारोंसे सुख प्राप्त करनेकी योग्यता पहले होनी चाहिए। यह योग्यता धीरे धीरे अवश्य प्राप्त होगी । यह कोई बाजीगरका खेल नही जो ‘ आओ ’ कहते ही आ जाय ! मेरे कहनेका तात्पर्य यह नहीं है कि नीग्रो लोग सम्मति (वोट) ही न दिया करें । मै तो यह कहता हूँ कि बिना पानीमें उतरे जैसे कोई बालक तैरना नहीं सीख सकता वैसे ही, वोट दिये बिना स्थानीय स्वराज्यसे भी कोई लाभ नहीं उठा सकता । परन्तु इसके साथ मेरी यह भी सलाह है कि वोट देनेके समय नीग्रो लोग अपने गोरे पडोसियोंसे भी सलाह लिया करें जो उनसे अधिक बुद्धिवान् और चरित्रवान् है ।

मै ऐसे नीग्रो सज्जनोंको जानता हूँ जिन्होंने दक्षिणी गोरोंके उत्साह

दिलानेसे और उन्हींकी सलाह और मददसे हजारों डालरकी मिलकियत प्राप्त कर ली है, परन्तु जब वोट देनेका मौका आता है तब ये ही नीग्रो लोग उनके पास सलाह लेने तकको नहीं जाते। यह बहुत ही अनुचित बात है और इस लिए मैं चाहता हूँ कि इस विषयमें लोग बहुत जल्द सावधान हो जायँ। मैं यह नहीं चाहता कि नीग्रो लोग हाँमें हाँ मिलाया करें अथवा बातको खूब सोचे समझे बिना दूसरोंके कहनेसे ही अपनी सम्मति दे दिया करें। कभी नहीं। यदि वे ऐसा करने लगेंगे तो उनके विषयमें दक्षिणी गोरोंका विश्वास और आदर नष्ट हो जायगा।

कोई राज्य ऐसा नियम नहीं बना सकता जिससे अशिक्षित और दरिद्र गोरा तो वोट दे सके पर उसी हैसियतका नीग्रो न दे सके। यह नियम अन्यायपूर्ण है और इससे बहुत बड़ी हानि होगी। इसका परिणाम यह होगा कि नीग्रो तो शिक्षित और सम्पन्न बननेका प्रयत्न करेंगे और गोरोंको दरिद्र और मूर्ख बने रहनेमें उत्तेजना मिलेगी। इस समय वोट इकट्ठा करनेमें बड़े बड़े कपटनाटक होते हैं, पर मैं समझता हूँ कि शिक्षा और दोनों जातियोंके परस्पर मित्रभावसे यह बात बहुत दिन न रहने पावेगी। जो गोरा नीग्रोको धोखा देकर उसका वोट छीन लेता है वह आगे चलकर अपने गोरे भाईसे भी ऐसा ही व्यवहार करने लगता है और अन्तमें इसका परिणाम किसी बड़े भारी अपराधमें होता है। मुझे आशा है कि वह समय शीघ्र ही आवेगा जब दक्षिणमें सब लोग समानरूपसे वोट देनेके लिए उत्साहित होंगे। दक्षिणके अधिकारी अब इस बातको जल्द ही जान लेंगे कि स्थानीय स्वराज्यमें सबको समान अधिकार न मिलनेसे अथवा उसमें कुछ लोगोंका कुछ भी स्वार्थ न होनेसे जो त्रिशंकुकी अवस्था उत्पन्न होती है उसकी अपेक्षा यही सब प्रकारसे अच्छा है कि सबको समान अधिकार दिये जायँ और राजकीय व्यवस्थामें जीवन उत्पन्न किया जाय।

मेरी सम्मतिमें, साधारणतः सबको सम्मति देनेका समान अधिकार

होना चाहिए। परन्तु दाक्षिणके कुछ राज्योंकी अवस्था इस समय इतनी बिगडी हुई है कि वहाँ कुछ काल तक वोट देनेके लिए विद्या और सम्पत्ति दोनो बातें आवश्यक रक्खी जानी चाहिए। अर्थात् शिक्षाकी या सम्पत्तिकी अथवा दोनोंकी यथेष्ट योग्यता बिना वोट देनेका अधिकार किसीको न दिया जाय। इस विषयमें नियम कैसे ही बनें, यह जरूरी है कि उनका उपयोग दोनों जातियोंके लिए समान रूपसे और समान न्यायसे हो।

पंद्रहवाँ परिच्छेद ।

व्याख्यानकी सफलताका रहस्य ।

एटलांटा-प्रदर्शनीमें मेरा व्याख्यान लोगोंको किस कदर पसद हुआ यह मै स्वय न बतलाकर सुप्रसिद्ध सामरिक सवाददाता मिस्टर क्रीटमेनके शब्दोंमें बतलाता हूँ । मि क्रीलमेन मेरे व्याख्यानके समय मौजूद थे । उन्होंने नीचे लिखा हुआ तार न्यूयार्कके ‘ वर्ल्ड ’ के पास भेजा था —

“ एटलांटा, १८ सितबर, १८९५

प्रदर्शनी खुलनेके अवसर पर गोरे श्रोताओंके सामने एक नीग्रो मूसाने बडे मार्केकी वक्तृता दी । दक्षिणके इतिहासमे इस तरहकी यह पहली घटना है । और एक महत्त्वकी बात यह हुई कि जाजिया और लूसियानाके नागरिकोंके साथ नीग्रो लोगोंका एक जुलूस निकला था । इस समय सर्वत्र इन्हीं बातोंकी चर्चा हो रही है । न्यूयार्ककी न्यू इग्लेंड सोसायटीके सामने हेनरी ग्रेडीके स्मरणीय भाषणके उपरान्त दक्षिणमें इस प्रदर्शनके समान उत्साहदर्शक और महत्त्वपूर्ण बात और कोई नहीं हुई ।

“जिस समय टस्केजी-विद्यालयके प्रिन्सिपल प्रोफेसर बुकर टी वाशिंगटन व्याख्यान देनेके लिए प्लेटफार्म पर खडे हुए उस समय सध्या समयके स्वच्छ सूर्यके सुकोमल किरण उस विशाल भवनकी खिडकियोंसे अन्दर प्रवेश कर श्रोताओंके सिरपरसे उनके मुखकमल पर चमकने लगे और इससे उनके चेहरे पर एक प्रकारका दिव्य तेज झलकने लगा । उस समय हेनरी ग्रेडीके उत्तराधिकारी क्लार्क हावेलने मुझसे कहा,— *‘इस मनुष्यकी वक्तृता अमेरिकामें नैतिक क्रान्ति उत्पन्न करनेवाली है ।’*

"ऐसे महत्त्वपूर्ण अवसर पर गोरे पुरुषों और स्त्रियोंके सामने अब तक किसी नीग्रोका भाषण नहीं हुआ था । इस भाषणको सुनकर लोग चकित हो गये और उन्होंने बडा हर्ष प्रकट किया !

"मिसेस टामसनकी वक्तृता समाप्त होते ही सब लोग प्लेटफार्म पर पहली पंक्तिमें बैठे हुए एक ऊँचे पूरे, कपिल वर्णके नीग्रोकी ओर टकटकी लगाकर देखने लगे । ये टस्केजी-विद्यालयके सर्वस्व बुकर टी वाशिंगटन थे । अबसे अमेरिकाकी नीग्रो जातिमें इन्हींका पद सबसे ऊँचा समझना चाहिए। इस समय बेंड पर राष्ट्रीय गीतोंका मधुर गान हो रहा था जिससे सब लोग शान्त हो रहे थे-किसी तरहका शोर-गुल न था ।

"हजारों लोगोंकी दृष्टि उस नीग्रो वक्ता पर गडी हुई थी । बात भी ऐसी ही थी । सब लोग जानते थे कि आज एक काला मनुष्य हम लोगोंके हितार्थ निर्भय होकर भाषण करनेवाला है । ये प्रोफेसर वाशिंगटन ही थे । प्रोफेसर साहब जब अपने स्थानसे व्याख्यानस्थान पर आये तब अस्ताचल पर आरूढ हुए सूर्यदेवके आरक्त किरण भवनकी खिडकियोंमेंसे आकर उनके चेहरे पर चमकने लगे, और लोगोंने प्रचंड करतलध्वनिसे उनका स्वागत किया । सूर्यकिरणोंके तापसे अपने नेत्रोंको बचानेके लिए उन्होंने अपना मुँह एक ओर जरा फेर लिया और प्लेटफार्म पर इधर उधर टहलना शुरू कर दिया । इसके बाद अस्ताचल पर विराजमान हुए सूर्यकी ओर ही अपनी दृष्टि स्थिर कर उन्होंने अपनी वक्तृता आरंभ कर दी ।

"उनके देहकी गठन बडी ही सुन्दर थी । शरीर भरपूर ऊँचा और कसा हुआ था, छाती चौडी और उभरी हुई थी, ललाट विशाल, नाक सीधी, चेहरा चौडा और दृढताका सूचक, दाँत बिलकुल साफ और नेत्र तेजोमय थे । चेहरे पर एक प्रकारका दिव्य तेज था । उनकी कत्थई रंगकी गर्दन पर उठी हुई नसें दिखाई देती थीं । मुट्ठीमें मजबूतीसे पेन्सिल

पकडकर उन्होंने अपना मोहडेदार हाथ ऊपर कर रक्खा था। अपने मजबूत पैरों पर एडीसे एडीसे मिलाकर, पर पजे अलग रखकर, वे गडेसे खडे हुए थे। उनकी आवाज साफ और जोरदार थी। वे एक बातको श्रोताओंके दिलों पर अच्छी तरह जमा कर फिर दूसरी बात उठाते थे। उनकी वक्तृता सुनकर दश मिनिटके भीतर ही सब लोग जोशमें भर गये और रूमाल, बेत और टोपियॉ हिला हिलाकर अपना आनन्द प्रकट करने लगे। जाजियाकी सुन्दर स्त्रियॉ खडी होकर प्रसन्नतासे तालियॉ बजाने लगीं। ऐसा मालूम होता था कि मानों वक्ताने सब पर जादू कर दिया हो! जब वक्ताने हाथकी उँगलियोंको फैलाकर अपना कालामा हाथ सिर पर उठा रक्खा और अपनी जातिकी ओरसे दाक्षिणी गोरोंको सम्बोधनकर कहा, 'केवल सामाजिक कार्योंमें हाथकी उँगलियोंकी भाँति हम अलग अलग रहें, पर पारस्परिक उन्नतिके सब कामोंमें हम लोगोंको हाथकी भाँति एक होना चाहिए,' और जब उनकी इस आवाजकी लहर चारों दीवारोंसे टकराई तब सबके सब लोग उठ खडे हुए और मारे आनन्दके बहुत देर तक तालियाँ बजाते रहे।

“मैने अनेक देशोंके वक्ताओंकी वक्तृतायें सुनी हे पर इस नीग्रो वक्ताने सूर्यके आरक्त किरणोंमें खडे होकर उन लोगोंके सामने–कि जिन्होंने नीग्रो जातिको गुलामीमें ही सडानेके लिए युद्ध किया था–अपनी जातिके पक्षका बडी खूबीके साथ जैसा अच्छा समर्थन किया वैसा स्वय ग्लैटस्टनसे भी न बन पडता! लोग मारे आनन्दके तालियॉ बजाते जाते थे, परन्तु वक्ता पर उनका कुछ भी प्रभाव न पडता था–उनके उत्सुक चेहरेकी छटा जरा भी नही बदलती थी।

“सभामडपमें ही एक ओर एक हट्टा कट्टा दरिद्र नीग्रो बैठा हुआ था। वह वक्ताके चेहरेकी ओर एकटक निहार रहा था। अन्तमें वक्ताके भाषणके प्रभावसे उसकी आँखोंसे आँसू टपकने लगे। इस समय प्राय. सभी नीग्रो लोगोंकी यही दशा हुई।

“वक्तृता समाप्त होते ही गवर्नर बुलक वक्ताके पास लपक कर आये और उन्होंने ज्यों ही उनसे हाथ मिलाया त्यों ही फिर तालियाँ बजीं। कुछ देरतक ये दोनों महाशय हाथमें हाथ दिये आमने सामने खडे हुए देख पडे।”

इस व्याख्यानके बाद टस्केजी–विद्यालयके आवश्यक कार्योंसे फुरसत पाने पर मैं कभी कभी व्याख्यानोंके निमन्त्रण स्वीकार कर लेता था, परन्तु जहाँतक मुझसे बनता मैं ऐसे ही स्थानोंमें व्याख्यान देना स्वीकार करता था जहाँसे टस्केजी–विद्यालयको सहायता मिलनेकी आशा होती थी। व्याख्यान देना स्वीकार करनेसे पहले ही मैं यह निश्चय करा लेता था कि मुझे अपने जीवनके मुख्य कार्य और अपनी जातिकी आवश्यकताओंके विषयमें कहनेका पूरा अवसर मिलेगा। मैं यह बात भी पहले ही जतला देता था कि पेशेके खयालसे या केवल स्वार्थके लिए मैं कोई व्याख्यान न दूँगा।

मैं स्वयं अभीतक इस बातको नहीं समझ सका हूँ कि लोग मेरा व्याख्यान सुननेके लिए इतने उत्सुक क्यों रहते हैं। सभामण्डपके बाहर खडे होकर यदि मैं लोगोंको उत्साहपूर्वक मेरा व्याख्यान सुननेके लिए आते हुए देखता हूँ तो मैं इस बातसे बहुत ही लज्जित होता हूँ कि मेरे कारण इन लोगोंका अमूल्य समय नष्ट हो रहा है। कुछ वर्ष पूर्व माडीसनकी एक साहित्यसभाके सामने मेरा व्याख्यान होनेवाला था। निश्चित समयसे एक घंटा पहले बडे जोरोंसे बर्फ गिरने लगी और कई घंटे गिरती रही। मैंने समझा कि आज न लोग आवेंगे और न मुझे कुछ कहना पडेगा। तो भी कर्त्तव्य जानकर मैं वहाँ गया। देखा तो, श्रोताओंसे सब हाल भर गया है! उस विराट् जनसमुदायको देखकर मेरी विचित्र दशा हुई जिससे मैं दिनभर बेचैन रहा!

लोग मुझसे प्रायः पूछा करते हैं कि क्या मैं भी व्याख्यान देनेसे

पहले घबरा जाता हूँ ? और साथ साथ यह भी कहते हैं कि आदत पड जानेसे अब कोई घबराहट न होती होगी। इसके जवाबमें मै यह कहता हूँ कि व्याख्यान देनेसे पूर्व मे बहुत ही घबरा जाता हूँ। अनेक अवसरों पर व्याख्यान होनेके पहले मेरी घबराहट इतनी बढ गई है कि मैने कई बार फिर कभी व्याख्यान न देनेका सङ्कल्प भी कर डाला है। व्याख्यान न देनेसे पहले मे घबराता हूँ, इतना ही नहीं, बल्कि, बाद भी इस सन्देहसे कि मै कोई बात कहनेके लिए भूला तो नहीं, बहुत व्याकुल होता हूँ।

परन्तु व्याख्यानके पूर्वकी घबराहटका बदला मुझे अच्छा मिल जाता है। दस मिनिटके कथनसे मुझे यह बोध होने लगता है कि अब श्रोताओंके दिल मेरे काबूमें आरहे है और उनसे मेरी पूरी एकता हो चली है। वास्तवमें वक्ताको जब यह मालूम हो जाता है कि श्रोताओंके दिल मेरे दिलसे मिल रहे है तब उससे उसे जैसी कुछ प्रसन्नता होती है वैसी और किसी बातसे न होती होगी। पूर्ण सहानुभूति और एकताका धागा वक्ता और श्रोताओंको मिला देता है और यह धागा किसी दृश्य या मूर्त्त वस्तुके समान बहुत मजबूत होता है। यदि हजारो श्रोताओंमेंसे एक भी ऐसा हो जिसे मेरे विचारोंके साथ सहानुभूति न हो अथवा जो उत्साहशून्य, साशक और दोषदर्शी हो, तो मै उसे तत्काल पहचान लेता हूँ और उसकी ओर मुडकर कोई ऐसा चुटकिला छोडता हूँ कि वह उसी समय ठीक हो जाता है—यह चुटकिला या मनोरजक कथा उस पर रामबाणका काम करती है और उस समय उसके मनकी गति देखते ही बनती है। परन्तु चुटकिला मैं इसलिए कभी नही छोडता कि केवल सुननेवालोंका दिल बहला करे। ऐसे मन बहलावके ढगको मे बिलकुल पसन्द नही करता हूँ।

जो वक्ता इस विचारसे ही भाषण करता है कि अपने गौरवके लिए मुझे भी कुछ कहना चाहिए, वह अपना और श्रोताओंका अपराध करता है । मेरा तो यह सिद्धान्त है कि जबतक कोई विशेष बात लोगोंको न बतलानी हो, तबतक कभी भाषण न करना चाहिए । जिसे इस बातका पूरा विश्वास हो कि मेरे शब्दोंसे किसी व्यक्ति या कार्यकी कुछ सहायता हो जायगी, उसे ही भाषण करना चाहिए और इस प्रकारके भाषण करनेमें वक्तृत्वके कृत्रिम नियमोंसे मुझे कोई लाभ नहीं दिखाई देता । इसमें सन्देह नहीं कि विराम, श्वासोच्छ्वास, स्वरका उतार-चढाव आदि बाते जानने और अमल करने योग्य है, परन्तु व्याख्यानमें इनसे ज्ञान नही आ जाती । जब मुझे कोई व्याख्यान देना होता है तब मै अँगरेजी भाषाके नियम, अलकारशास्त्रके नियम आदि सब कुछ भूल जाता हूँ, और अपने श्रोताओंको भी ये बातें भुला देना चाहता हूँ ।

मेरे व्याख्यानके समय यदि कोई श्रोता बीचहीमें उठकर चला जाता है तो मेरा चित्त ठिकाने नहीं रहता । इसलिए जहाँ तक बनता है मै अपने व्याख्यानको इतना रोचक और चित्ताकर्षक बनानेका प्रयत्न करता हूँ कि जिससे किसीकी वहाँसे उठनेकी इच्छा ही न हो । प्राय श्रोता लोग साधारण उपदेशोंकी अपेक्षा तत्त्वकी बातें सुनना अधिक पसन्द करते है । यदि उन्हें रोचक पद्धतिसे—कथा कहानियों या चुटकिलोंके साथ तत्त्वकी बातें सुनाई जावें तो वे शीघ्र ही उनका ठीक परिणाम भी निकाल लेते है ।

शिकागो, बोस्टन, न्यूयार्क, और बुफालो आदि शहरोंके व्यापारी लोग विशेष चतुर, दृढ और व्यवहारदक्ष है और मै ऐसे ही लोगोंमें व्याख्यान देना सबसे अधिक पसन्द करता हूँ । ये लोग बडे उत्साह और ध्यानसे व्याख्यान सुनते है और व्याख्यानगत प्रश्नोंका तत्काल ही उत्तर

भी देते हैं। मुझे ऐसे लोगोंके सामने व्याख्यान देनेका कई बार अवसर मिला है। ऐसे व्यवहारदक्ष व्यापारियोंकी संस्थाओंको हस्तगत करनेके लिए–उन्हें अपने विचारोंसे भर देनेके लिए–किसी दावतके उपरान्त बडा ही अच्छा अवसर मिलता है, परन्तु कठिनाई यह आ पडती है कि भोजनमें ही बहुतसा समय नष्ट हो जाता है और तब तक अपने कार्यकी सफलताके विषयमें तरह तरहकी आशंकायें करते हुए बैठे रहना पडता है।

मैं ऐसी दावतोंमें बहुत कम शरीक होता हूँ। कारण, जब कभी ऐसा मौका आता है तो मुझे बचपनमें अपने मालिकके यहाँसे सप्ताहमें एक बार मिलनेवाली लपसीकी याद आ जाती है। उन दिनों बाजरेकी रोटी और सूअरका मांस ही हमारा भोजन होता था, पर रविवारके दिन हम तीन लडकोंके लिए मालिकके बडे मकानसे थोडीसी लपसी मिला करती थी जिसे पाकर हम लोग बहुत खुश होते थे और यह चाहते थे कि रोज रोज ही रविवार हुआ करे। मैं अपनी टीनकी थाली लपसीके लिए ऊपर उठाये और आँख बन्द किये बैठा रहता था। अनन्तर आँखें खोलने पर थालीमें बहुत सी लपसी परोसी हुई देखकर मन-ही-मन बडा खुश होता था! थालीको इधरसे उधर हिलाकर लपसीको थालीभरमें फैला लेता और मन-ही-मन कहता था कि यह बहुत बढ गई है–अब इसे बहुत देर तक खाता रहूँगा! मैं यह नहीं समझ सकता था कि थालीके एक कोनेमें जो लपसी थी वही फैलकर थालीभरमें फैल गई है और इससे वह एक कोनेकी लपसीसे अधिक नहीं है! मेरे हिस्सेकी यह लपसी दो बडे चमचे भरसे अधिक नहीं होती थी, पर उसके खानेमें मुझे जो आनन्द मिलता था वह इन पचासों पक्वान्नोंकी दावतोंमें भी नहीं मिलता!

श्रोताओंमें पहला नंबर तो उक्त शहरोंके व्यवहारदक्ष व्यापारियों-

का है । इसके बाद मै दक्षिणकी दोनों जातियोंके सामने एक साथ या अलग अलग व्याख्यान देना पसन्द करता हूँ । उनके उत्साह और प्रत्युत्तरसे मुझे बडा आनन्द होता है । काले लोगोंके ‘ तथास्तु ’ और ‘ साधु, साधु ’ कहनेसे, कोई भी वक्ता हो, अवश्य उत्साहित होगा । इनके बाद कालेजके तरुण विद्यार्थियोंका नबर है । हारवर्ड, येल, विलियम्स, अमहर्स्ट, पेन्सिलवानिया, मिशिगन आदि विश्वविद्यालयोंमें तथा नार्थ कैरोलिनाके ट्रिनिटी कालेजमे और ऐसे ही अन्य अनेक स्थानोंमें मेरे अनेक व्याख्यान हुए है ।

मेरे व्याख्यानके बाद बहुतसे लोग मेरे पास आकर मुझसे हाथ मिलाते है और कहते है,–“ किसी नीग्रोको ‘ मिस्टर’ कहनेका यह पहला ही अवसर है ! ” यह सब देख-सुनकर मुझे बडा कुतूहल होता है ।

टस्केजी–विद्यालयके लाभके लिए जब व्याख्यान देने होते है तब मे खास खास स्थानो पर सभायें करनेका प्रबन्ध करता हूँ । ऐसे अवसरो पर मुझे देवालयों, रविवारकी पाठशालाओं, क्रिश्चियन एन्टेवर सोसायटियों और स्त्रीपुरुषोंके भिन्न भिन्न क्लबोंम जाना पडता है और कभी कभी तो एक एक दिनमें चार चार व्याख्यान देने पडते है ।

तीन वर्ष पूर्व, मिस्टर मारिस के जेसप और डाक्टर करीके अनुरोधसे स्लेटर–फंडके पचोंने नीग्रो लोगोंकी पुरानी बसतियोंमें घूम घूम कर सभायें करनेके लिए मुझे और मेरी स्त्रीको कुछ धन देना निश्चय किया । गत तीन वर्षोंम मने प्रत्येक वर्षके कई सप्ताह इस काममें खर्च किये है । कार्यक्रम इस प्रकारका रहा कि सबेरे धर्मोपदेशकों, अध्यापकों तथा पेशेवालोंके सामने मे व्याख्यान देता, दो पहरको स्त्रियोंम मिसेस वाशिंगटन वक्तृता देतीं, और सन्ध्या समय सर्व साधारणके सामने फिर मेरा व्याख्यान होता । इन सभाओंमे नीग्रो लोगोके अति-

रिक्त गोरे भी आया करते थे। उदाहरणार्थ, चट्टनुगाकी सभामें तीन हजार श्रोता थे जिनमें आठ सो गोरे थे। इन सभाओंका कार्य मुझे बहुत पसन्द आया और इनसे लाभ भी बहुत हुआ।

इन सभाओंके कारण हम लोगोंको हर तरहके लोगोंसे मिलकर उनकी असली हालत जाननेका बहुत ही अच्छा अवसर मिला। इसके अतिरिक्त दोनों जातियोंके पारस्परिक व्यवहार भी हम लोग भली भाँति देख सके। ऐसी सभाओंमें काम करनेके बाद नीग्रो जातिकी उन्नतिके विषयमें मेरा उत्साह बहुत बढ जाता है। मै यह जानता हूँ कि ऐसे अवसरों पर लोग प्राय दिखाऊ उत्साह प्रकट किया करते है, पर बारह घाटका पानी पीकर अब मुझे इतना अनुभव हो गया है कि इससे मै धोखा नहीं खा सकता। इसके सिवाय म हर बातकी तह तक पहुँचकर उसका ठीक ठीक पता लगानेका पूरा पूरा उद्योग किया करता हूँ।

समझबूझकर बात करनेका अभिमान रखनेवाले एक मनुष्यके मुँहसे मैने सुना कि, "नीग्रो जातिमें सैकडा नब्बे स्त्रियाँ दुराचारिणी होती है।" एक सम्पूर्ण जातिके विषयमें इससे बढकर निराधार और मिथ्या विधान और क्या हो सकता है?

बीस वर्षतक दक्षिणमें रहकर और वहाँके निवासियोंकी वास्तविक दशाका पता लगाकर मुझे यह विश्वास हो गया है कि मेरी जाति सदाचार, सम्पत्ति, शिक्षा आदि सभी बातोंमें दिनोंदिन बराबर तरक्की करती जा रही है। किसी खास स्थानके निम्न श्रेणीके लोगोंकी रहन-सहनको प्रमाणस्वरूप लेकर सारी जाति पर कलक लगाना बुद्धिमानीका काम नहीं है।

सन् १८९७ के आरभमें बोस्टन निवासियाने मुझे राबर्ट गोल्ड शाका स्मारक खोलनेके अवसर पर निमन्त्रित किया। यह समारभ बोस्टनके म्यूजिक हालमें बडी धूमधामसे हुआ। बडे बडे विद्वान् और प्रतिष्ठित

लोग उपस्थित हुए थे। गुलामीके कई पुराने विरोधी भी आये हुए थे। सभापतिका आसन मैसेच्युसेट्स राज्यके गवर्नर आनरेबल रोजर वुलकाट महाशयने मडित किया था और उनके साथ प्लेटफार्म पर अनेक गण्यमान्य लोग बैठे हुए ये। इस सभाके विषयमें 'ट्रन्स क्रिप्ट' नामक पत्रके निम्न-लिखित लेखसे बहुत अच्छा प्रकाश पडेगा।

"कल म्यूजिक हालमें विश्ववन्धुत्वके सन्मानार्थ जो सभा हुई थी उसमें टस्केजी-विद्यालयके प्रिन्सिपलका व्याख्यान बहुत ही अच्छा हुआ। गवर्नर वुलकाटने उनका इस प्रकार परिचय दिया कि—'गत जून मासमें हारवर्ड-यूनिवर्सिटीने आपको एम ए की पदवी प्रदान की है। इस देशके सबसे प्राचीन विश्वविद्यालयकी ओरसे यह आनरेरी डिग्री प्राप्त करनेवाले सबसे पहले नीग्रो आप ही हैं। आपको यह माननीय पदवी अपनी जातिके उदार नेतृत्वकी सूचनारूप मिली है।' जिस समय प्रोफेसर वाशिंगटन व्याख्यान देनेके लिए खडे हुए उस समय ऐसा जान पडा कि मानों मैसेच्युसेट्सके स्वातन्त्र्यकी साक्षात् प्रतिमा ही खडी हुई हो। उनके चेहरे पर मैसेच्युसेट्सकी परम्परागत और अचल श्रद्धा झलक रही थी। उनके शक्तिशाली विचारों और उज्ज्वल भाषणमें पूर्वकालीन घोर सग्रामका वेभव दिखाई देता था। वह सारा दृश्य ऐतिहासिक सौन्दर्यसे भरा हुआ और महत्त्वसे परिपूर्ण था। निरुत्साही बोस्टन अपने अन्तःकरणके सत्य और सद्भावके अग्नितेजसे दीप्तिमान हो रहा था। किसी सार्वजनिक अवसर पर न दिखाई देनेवाले लोगोंके झुडके झुड, और पर्वके दिन घर छोडकर बाहर जानेवाले सैकडों परिवार आज उस सभाभवनमें ठसाठस भरे हुए थे। नगरके नरनारियोंने उत्तम वस्त्र और आभूषण पहनकर कुछ ऐसी शोभा उपस्थित की थी, मानों यह नगर अपना ही जन्ममहोत्सव मना रहा हो।

"सामरिक गीतोंसे भवन गूँज रहा था। जब कर्नल शाके मित्र और

कर्मचारी, शिल्पी, सेंट गाडन्स, स्मारक कमेटीके सदस्य, गवर्नर, उनके मन्त्री और मैसेच्युसेट्सकी ५४ वीं पल्टनके नीग्रो सैनिक आदि लोग आये और प्लेटफार्म पर चढने लगे तब चारों ओरसे जयजयकी पुकार और तालियोंकी कडकडाहट आरभ हुई । कमेटीकी ओरसे गवर्नर एट्रूके एक पुराने मन्त्रीने भाषण किया । इसके बाद गवर्नर वुलकाटने एक छोटी पर बहुत ही सुन्दर वक्तृता दी । उन्होंने कहा, 'वागनरके दुर्गकी घटनासे इस जातिके इतिहासमें नवीन युग आरभ हुआ और अब इस जातिने शैशव काल पार कर यौवनकालमें पदार्पण किया है ।' उन्होंने बोस्टनके विजयस्तभका तथा कर्नल शा और उनकी काली पल्टनोंके कार्योंका बडी ही ओजस्विनी भाषामें वर्णन किया । तब–

"Mine eyes have seen the glory of
the coming of the Lord"

यह गीत हुआ और इस अच्छे मौके पर बुकर वाशिगटन व्याख्यान देनेके लिए उठ खडे हुए । उस समय श्रोताओंकी शान्ति भग हो गई और उनमें आवेश और उत्साह भर गया । सारा श्रोतृसमाज उनका जयजयकार करने और उन्हें धन्यवाद देनेके लिए कई बार उठा । जब इस काले वर्णके सुशिक्षित और बलवान् मनुष्यने गभीर ध्वनिसे अपना भाषण आरभ किया और स्टर्न्स तथा एड्रूका जिक्र छेडा तब लोग बडे ही उत्साह और एकाग्रतासे वक्ताकी ओर देखने लगे । सैनिकों और नागरिकोंकी आँखोंमें आसू भर आये । प्लेटफार्म पर बैठे हुए काली पल्टनके सिपाहियोंकी ओर, विशेषकर उन सिपाहियोंकी ओर जिन्होंने बहुत घायल हो जाने पर भी हाथसे अपना जातीय झडा गिरने न दिया था–मुडकर वाशिगटन महाशय कहने लगे,–"५४ वीं पल्टनके बचे हुए वीरो, और कटे हुए हाथ पैरोंसे आजके समारभकी शोभा बढानेवाले सैनिको, तुम्हारा सेनापति अब भी जीवित है । यदि बोस्टनवाले उसका

कोई स्मारक न बनाते और इतिहासमें उसका कोई उल्लेख न किया जाता, तो भी तुम लोगोंमें और उस नमकहलाल जातिमें जिसके कि तुम लोग प्रतिनिधि हो, राबर्ट गोल्ड शाका अक्षय्य स्मारक सदा बना रहता।' इन शब्दोंको सुनते ही श्रोताओंमे उत्साहसागर उमड आया। मैसेच्युसेट्सके गवर्नर, रोजर वुलकाटने उठकर बडे जोरसे कहा,–बुकर टी वाशिंगटनका त्रिवार जयजयकार हो।"

उस समय प्लेटफार्म पर फोर्ट वागनरके झण्डेदार, न्यू बेडफर्डके काले अफसर, सार्जेंट विलियम कारने भी उपस्थित थे। यद्यपि उनकी पल्टनके अधिकाश सिपाही मारे जा चुके थे और भाग गये थे तथापि वे अन्त समयतक अमेरिकाकी ध्वजा लिये खडे रहे थे। युद्ध समाप्त होने पर उन्होंने कहा था, 'अमेरिकाके पुराने झंडेने कभी जमीन नहीं देखी!' वही झडा इस समय भी उनके हाथमें था! मैने जब काली पल्टनके बचे हुए वीरोंको सम्बोधन करके भाषण किया और सार्जेंट कारनेका नाम लिया तो वे आप ही उठ खडे हुए और उन्होने अपना झडा ऊपर उठा दिया। मैने कई वार अपने भाषणसे लोगोंको उत्साहित या उत्तेजित हुए देखा है, पर इस मौके पर जैसा दृश्य दिखाई दिया वैसा पहले न कभी देखा था और न अनुभव ही किया था। कई मिनिटों तक मारे आनन्दके लोग आपेमे न रहे।

स्पेनके साथ अमेरिकाका युद्ध समाप्त हो चुकने पर, शान्तिके उपलक्ष्यमें अमेरिकाके सभी बडे बडे नगरोंमे उत्सव हुए। इसी प्रकारका एक उत्सव शिकागोमे भी हुआ। शिकागो–विश्वविद्यालयके प्रेसिडेंट विलियम हारपर स्वागतकारिणी सभाके सभापति थे। उन्होंने मुझे व्याख्यान देनेके लिए निमन्त्रित किया। मै वहाँ गया और मेरा पहला व्याख्यान १६ अक्टूबर, रविवारके दिन सन्ध्याके समय हुआ। उस

दिन श्रोताओंकी बडी भीड थी । ऐसी भीड मेरा व्याख्यान सुननेके लिए इससे पहले इस प्रदेशमें कभी न हुई थी । उसी दिन दो स्थानोंपर और भी मैंने व्याख्यान दिये ।

पहले व्याख्यानके लिए अनुमान सोलह हजार श्रोता उपस्थित थे और सभामन्दिरके बाहर अनुमान इतने ही लोग अन्दर आनेकी चेष्टा कर रहे थे । उस समय भीडकी यह कैफियत थी कि बिना पुलिसकी मददके कोई अन्दर नहीं जा सकता था । उपस्थित सज्जनोंमें प्रेसिडेंट विलियम मैकिनले, उनके मन्त्री, परराष्ट्रोंके प्रतिनिधि, इसी युद्धमें नाम पाये हुए जलस्थल-सेनाके अनेक अफसर और अन्य बडे लोग भी थे । मेरे अतिरिक्त रैबी एमिल जी हर्श, फादर टामस पी हाउनेट और डाक्टर जान एच बरोज आदि वक्ताओंके भी भाषण हुए । इस सभाका हाल लिखते हुए शिकागोके ‘टाइम्स हेरल्ड’ ने मेरे भाषणके विषयमें इस प्रकार लिखा था—

“उन्होंने (मैंने) कहा कि नीग्रो लोग नष्ट होनेकी अपेक्षा दासत्वको अधिक पसन्द करते हैं । उन्होंने यह स्मरण दिलाया कि काले अमेरिकन दास बने रहें और गोरे अमेरिकन स्वतन्त्र हों—इसीके लिए राज्यक्रान्तिके समय क्रिसपस अटक्सने अपने प्राण दिये थे । न्यू आरलीन्समें नीग्रो लोगोंने जैक्सनके साथ जैसा व्यवहार किया था, उसका भी उन्होंने उल्लेख किया । जिस समय दक्षिणी गोरे नीग्रो जातिके दासत्वके लिए लड रहे थे—उन्हें सदा गुलाम बनाये रखनेके लिए जी तोड प्रयत्न कर रहे थे उस समय नीग्रो लोगोंने जिस स्वामिभक्तिके साथ उनके परिवारकी रक्षा की थी, उसका भी उन्होंने बहुत ही हृदयद्रावक चित्र खींचा । पोर्ट हडसन, फोर्ट वागनर और फोर्ट पिलोम उन्होंने जिस शूरताका परिचय दिया था उसका भी उन्होंने वर्णन किया । क्यूबावासियोंको स्वातन्त्र्य दिलानेके लिए नीग्रो लोगोंने अपने ऊपर होनेवाले अन्यायोंको

भूलकर एलकाने और साशियागो पर जिस वीरताके साथ छापा मारा था उसकी भी उन्होंने खूब प्रशसा की।

“इन सब बातोंमे वक्ताने यही दिखलाया कि उनकी जातिके लोगोंका व्यवहार बहुत ही उचित और शुद्ध रहा है। इसके बाद उन्होंने अपने वक्तृत्वपूर्ण शब्दोंमें गोरोंसे प्रार्थना की,–‘जब आप लोग स्पेनिश-अमेरिक्न युद्धमें किये हुए नीग्रो लोगोंके सारे पराक्रम सुन लें, दक्षिणके और उत्तरके सैनिकोंसे आपको इसका पूरा वृत्तान्त मालूम हो जाय, और दासत्वकी प्रथा उठा देनेवालोंसे तथा पहलेके मालिकोंसे उनके विषयमें आद्यन्त जान लें, तब अपने अन्तःकरणमें इस बातको सोचें कि जो जाति इस प्रकार देशके लिए मरनेको–अपने प्राण न्योछावर करनेको तैयार रहती है उसे जीवित रहनेका अवसर देना चाहिए या नहीं।”

स्पेनिश-अमेरिकन युद्धमें योग देनेका अवसर देकर प्रेसिडेंटने हम लोगोंका जो गौरव किया था उसके लिए मैंने अपने व्याख्यानमें उन्हे अनेक धन्यवाद दिये। व्याख्यान सुनकर लोग बहुत ही प्रसन्न हुए। स्टेजके दाहिनी ओर प्रेसिडेंटके बैठनेकी जगह खास तौर पर बनाई गई थी। वहाँ प्रेसिडेंट उपस्थित भी थे। जिस समय उनकी ओर मुडकर मैंने उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की उस समय सब लोग उठ खडे हुए और लगातार जयघोष करते हुए रूमाल, टोपियाँ और बेत हिलाने लग गये। स्वय प्रेसिडेंटने भी खडे होकर सिर झुकाया। तब तो श्रोताओंके उत्साहका पारावार ही न रहा। उस समय जिस प्रकारसे उन्होंने इस उत्साहको प्रकट किया उसका वर्णन करना असभव है।

शिकागोके इस व्याख्यानका एक अश दक्षिणी गोरोंकी समझमें भली भाँति नहीं आया और इसलिए वहाँके समाचारपत्र मुझ पर तरह

तरहके आक्षेप करने लगे, यहाँ तक कि, ‘ एज–हेरल्ड ’ के सम्पादकने मुझसे उसका खुलासा भी लिख भेजनेकी प्रार्थना की । मैने उत्तरमें लिख भेजा कि “ उत्तरी श्रोताओंके सामने मे उन बातोंको कभी नहीं कहता, जिन बातोको मै दक्षिणी श्रोताओंके सामने कहना अनुचित समझता हूँ । इससे अधिक खुलासेकी मे कोई आवश्यकता नहीं समझता । यदि मेरी सत्रह वर्षकी सेवाओसे दक्षिणके निवासी मेरा ठीक ठीक अभिप्राय नहीं समझ सके तो अब मेरे शब्दोंसे क्या खाक समझेंगे ? व्यावहारिक और नागरिक वर्णद्वेष नष्ट करनेके सबधमें एटलाटामें मैने जो कुछ कहा था उसीकी पुनरावृत्ति मैने यहाँ शिकागोमे की थी । अपनी जातिकी सामाजिक अवस्थाके सम्बन्धमे मै कभी चर्चा नहीं करता । ” इसके साथ ही मैने एटलाटावाले अपने व्याख्यानसे कुछ अश उद्धृत भी कर दिये । इस उत्तरसे सम्पादक महाशयकी दिलजमई हो गई और दूसरे समाचारपत्र भी चुप हो रहे ।

सार्वजनिक समेलनोंमें तरह तरहके लोग मिलते है । साधारणत: लम्बी डाढी, बिखरे हुए बाल, लबा और छोटासा चेहरा, काला कोट और कोट तथा फतूही पर तेलकी चिकनाहट–इतने लक्षणोसे युक्त मनुष्यको देखते ही मे समझ जाता हूँ कि यह कोई विक्षिप्त है । ऐसे लोगोंसे मुझे भय मालूम होता है । शिकागोमें व्याख्यानके बाद एक ऐसाही मनुष्य मुझे मिला । उसकी एक एक बात नौ नौ हाथकी थी । वह कहता था कि मै एक ऐसी तरकीब जानता हूँ जिससे मकई तीन चार साल तक बिना बिगडे रक्खी रह सकती है और इस तरकीबको दक्षिणी लोग अमलमें ले आवें तो जात-पाँतका प्रश्न बातकी बातमें हल हो जाय । मैने उसे यह समझानेका प्रयत्न किया कि इस समय हमारे सामने केवल यही प्रश्न है कि एक वर्षका काम चल जाने लायक धान पैदा कर लेना कैसे सिखलाया जावे, पर उसे सन्तोष न हुआ । एक और

महात्मा ऐसे भी मिले जो इस उद्योगमें लगे थे कि सब महाजनी कोठियाँ और बङ्क बन्द हो जायँ। वह मुझे भी इस उद्योगमें मिलाना चाहता था और कहता था कि जब ऐसा हो जायगा तब ही नीग्रो लोग अपने बल पर खडे हो सकेंगे।

किसी किसी मनुष्यकी यह आदत हुआ करती है कि वह दूसराका समय ही नष्ट किया करता है। एक दिन बोस्टनके एक होटलमें मुझे खबर मिली कि कोई आदमी मुझसे मिलने आया है। मै जल्दी जल्दी अपने कपडे पहनकर नीचे उतरा तो देखा कि एक निकम्मा आदमी खडा है। उसने बडे शान्त भावसे कहा, "कल मैने आपका व्याख्यान सुना और बडी प्रसन्नता लाभ की। आज फिर इसी लिए आया हूँ कि और भी कुछ सुनकर कृतार्थ होऊं।"

लोग मुझसे प्राय पूछते हैं कि आप टस्केजीसे इतनी दूर रहकर भी विद्यालयका प्रबन्ध कैसे करते है। बात यह है कि मैं 'जो काम तुम स्वय कर सकते हो उसे दूसरोंसे मत कराओ' इस सिद्धान्तको नहीं मानता। मेरा तो यह सिद्धान्त रहता है कि 'जो काम दूसरे लोग भली भाति कर सकते हों उसे तुम स्वय मत करो।'

टस्केजी-विद्यालयमें एक बडा सुभीता यह है कि कोई काम किसी मनुष्यके उपस्थित न रहनेसे रुक नहीं जाता। उसकी व्यवस्था ही ऐसी अच्छी और परिपूर्ण है। इस समय वहाँ सब मिलाकर ८६ कार्यकर्ता लोग हैं। इन सबके कामोंका ऐसा हिसाब लगा रक्खा है कि हरेक काम समय पर और भली भाँति होता रहता है। कई शिक्षक बहुत पुराने है और विद्यालय पर वैसा ही प्रेम करते हैं जैसा कि मै करता हूँ। मै जब विद्यालयमें नहीं रहता तब सत्रह वर्षोंसे कोषाध्यक्षका काम करनेवाले मि० वारन लोगन मेरा काम देख लेते हैं। इस काममें मिसेस वाशि-

गटन और मेरे प्राइवेट सेक्रेटरी मि० स्काट उनकी यथेष्ट सहायता करते हैं। मि० स्काट मेरी चिट्ठियोंको देख लेते हैं और विद्यालय तथा दक्षिणी नीग्रोभाइयोंके विषयमें आवश्यक बातोंकी सूचना मुझे दे दिया करते हैं। उनके उद्यम, उनका चातुर्य और उनकी काम करनेकी खूबीके लिए मैं उनका बहुत कृतज्ञ हूँ। विद्यालयका प्रबन्ध करनेके लिए एक कार्यकारिणी सभा भी है, जिसका अधिवेशन सप्ताहमें दो बार होता है। इस सभामें विद्यालयके नौ विभागोंके नौ प्रधान रहते हैं। इसके सिवाय एक और सभा है, जो प्रति सप्ताह आय-व्ययके विषयमें विचार करती है। इसमें छ सदस्य हैं। महीनेमें एक बार, अथवा आवश्यकता पड़ने पर अनेक बार शिक्षकोंकी एक साधारण सभा हुआ करती है। इन सबके अतिरिक्त धार्मिक और कृषिविभागके शिक्षकोंकी भी कई छोटी मोटी सभायें होती रहती हैं।

मैने अपने जानने समझनेके लिए ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा है कि मै कहीं भी रहूँ, मेरे पास विद्यालयके कार्योंकी डेली रिपोर्ट आया करे। इससे मुझे विद्यालयके सम्बन्धमें सब विवरण हरवक्त मालूम रहता है, यहाँतक कि किन किन विद्यार्थियोंने छुट्टी ली है और किस कारणसे ली है, इसका भी मुझे पता रहता है। विद्यालयकी दैनिक आय, गोशालासे आये हुए दूध और मक्खन, विद्यार्थियों और शिक्षकोंको मिलनेवाला भोजन, बाजारसे अथवा अपने खेतोंसे लाई हुई तरकारियाँ, आदिका पूरा पूरा ब्योरा इन रिपोर्टोंमें होता है। इस तरहका प्रबन्ध होनेसे सब काम विद्यालयके उद्देश्यके अनुकूल बराबर होते रहते हैं।

इन सब कामोंको करते हुए भी मुझे विश्राम और विहारके लिए समय मिल जाता है। लोग मुझसे पूछते हैं कि तुम यह सब कैसे कर लेते हो। इसका उत्तर देना कठिन है। मेरी यह धारणा हो गई है कि दृढ़ताके साथ प्रयत्न करनेके लिए और निराश कर देनेवाली महान्-

से महान् कठिनाइयोंका सामना करनेके लिए जैसे बलयुक्त शरीरकी और सुदृढ मज्जातन्तुओंकी आवश्यकता होती है उनकी प्राप्ति अपने ऊपर और अपने कार्यके ही ऊपर अवलम्बित है । मैंने अपना जीवन ऐसा नियमित कर लिया है कि मुझे सब काम और यथेष्ट विश्राम करनेका पूरा अवकाश मिल जाता है । मै अपने प्रत्येक दिनका कार्यक्रम बना रखता हूँ । जहाँतक शीघ्र हो सकता है, अपने नित्यके कामसे निपटकर मै कोई नया काम ढूँढता हूँ और दूसरे दिन उसमें हाथ लगा देता हूँ । कामके अधीन रहकर उसके गुलाम बननेकी अपेक्षा मै कामको अपने अधीन रखकर उसे ही गुलाम बनाये रहता हूँ । कामको पूर्णतया अपने अधीन रखनेसे शरीर नीरोग रहता, मन प्रफुल्लित होता, हृदयमें बल आता और आत्माको शान्ति मिलती है । मै यह अपने अनुभवकी बात कहता हूँ । अपना काम प्यारा हो जानेसे एक प्रकारकी अपूर्व शक्ति प्राप्त होती है ।

तडके अपने काममें लग जानेसे मै समझ लेता हूँ कि आजका दिन अच्छा बीतेगा और खूब काम होगा, पर इसके साथ ही, न जानी हुई विपत्तियोंके लिए भी मै तैयार रहता हूँ । मैं यह सुननेके लिए तैयार रहता हूँ कि विद्यालयका कोई भवन गिर पडा, या जल गया, या और कोई वारदात हो गई, अथवा किसी समाचारपत्र या सार्वजनिक सभामें मेरे कामोंकी कडी आलोचना हुई, इत्यादि ।

गत उन्नीस वर्षोंके लगातार काममें मैने केवल एक बार छुट्टी ली है। इसका कारण यह हुआ कि दो वर्ष पूर्व मेरे कुछ मित्रोंने मुझे धन देकर सपत्नीक यूरोप जाकर वहाँ तीन महीने विश्राम करनेके लिए विवश किया था । मेरी रायमें प्रत्येक मनुष्यको अपना शरीर सुदृढ रखना चाहिए । मेरी तबियत जरा भी खराब हो जाती है तो मै शीघ्र ही उसका इलाज करता हूँ । मुझे यदि कभी मीठी नींद न आई तो मैं समझता हूँ

कि कुछ गडबड है । यदि शरीरके किसी अगमें कुछ शिथिलता मालूम होती है तो मै किसी अच्छे डाक्टरके पास जाकर उसकी चिकित्सा कराता हूँ । मै यह समझता हूँ कि हर समय और हर स्थान पर नींद ले सकनेकी शक्तिसे बहुत लाभ होते है । मुझे इतना अभ्यास हो गया है कि जब मै चाहता हूँ, पद्रह बीस मिनिट झपकी लेकर शरीरकी सब थकावट दूर कर देता हूँ ।

मै ऊपर कह चुका हूँ कि दिन खतम होनेसे पहले ही मैं अपने कामोंसे निपट लेता हूँ, परन्तु यदि कभी कोई ऐसा विकट प्रश्न आ पडता है कि उसका एकाएक निर्णय करना मै उचित नहीं समझता, तो उसे दूसरे दिनके लिए छोड देता हूँ, अथवा, अपनी स्त्री और अपने मित्रोंसे उसके विषयमें परामर्श करता हूँ ।

मुझे अच्छे अच्छे ग्रन्थ पढनेके लिए रेलकी सफरमें मौका मिलता है । समाचारपत्र पढनेका मुझे बडा शौक है, पर शोक इस बातका है कि मे बहुतसे समाचारपत्र पढ डालता हूँ। उपन्यासोंमें मुझे कुछ लज्जत नहीं आती । जिस उपन्यासकी बडी तारीफ सुननेमें आती है–जिसके बॉचनेके लिए बीसों मित्र सिफारिश करते है उसे भी मैं बडी कठिनाईसे पढता हूँ । जीवनचरितोंसे मेरा बडा प्रेम है, पर कोई जीवनचरित हाथमें लेनेसे पहले म यह अच्छी तरह देख लेता हूँ कि वह चरित किसी सत्पुरुष या सद्वस्तुका है या नहीं । यदि नही, तो म उसे नहीं पढता । अब्राहम लिंकनके विषयमे जितनी पुस्तकें छपी है अथवा मासिकोंमें जो जो लेख निकले है उन सबको मैने पढ डाला है । साहित्यमें लिंकन ही मेरे प्रधान गुरु ह ।

सालमें छ: महीने मुझे टस्केजीसे बाहर रहना पडता है । विद्यालयसे दूर रहनेमें हानि तो है ही, पर इसके बदलेमें कुछ लाभ भी अवश्य होजाता है । कार्यमें परिवर्त्तन होनेसे एक प्रकारका विश्राम मिलता है ।

रेलगाडीमें बैठकर बहुत दूरकी यात्रा करनेसे मेरी तबियत हरी हो जाती है और आराम भी मिलता है । हाँ, कभी कभी वहाँ भी लोग मिलनेके लिए आ जाते है और उसी सदाकी रीतिसे कहा करते है– “क्या आप ही बुकर टी वाशिंगटन है ? मै आपसे मिलना चाहता था ।” विद्यालयसे दूर रहने पर मुझे छोटी मोटी बातें भूल जाती है और मुख्य मुख्य बातों पर विचार करनेका अवसर मिलता है । यह विद्यालयमें रहते हुए हो नहीं सकता । इसके सिवाय मुझे अन्य स्थानोंके शिक्षाप्रबन्ध देखने और अच्छे अच्छे अध्यापकोंसे मिलनेका भी अवसर मिलता है ।

सबसे आनन्ददायक विश्राम मुझे उस समय मिलता है, जब टस्केजीमें रातके भोजनके उपरान्त मै अपनी स्त्री और बच्चोंके साथ बैठकर कहानियाँ कहता और सुनता हूँ । इसी प्रकार रविवारके दिन उनके साथ जगलोंमें सैर करनेके लिए निकल जाना मुझे बहुत ही प्रिय है । वहाँ प्रकृतिकी शोभा देखनेमें हम लोग मगन हो जाते है। वहाँ किसी प्रकारका कष्ट नहीं । स्वच्छ वायु, सुन्दर वृक्ष, घनी झाडियाँ नाना प्रकारके फूल, और पुष्पवृक्षोंसे सर्वत्र फैलनेवाली सुगन्धि इन सबसे मोहित होकर हम लोग झिल्लियोंकी तानारीरी और पक्षियोंका मधुर गान सुनकर अपूर्व आनन्द प्राप्त करते है । वास्तवमे, यही तो विश्राम है !

मुझे अपने बागमें भी बडा आनन्द मिलता है । कृत्रिम वस्तुओंकी अपेक्षा साक्षात् निसर्गसे ही सलग्न होनेमें मुझे प्रसन्नता होती है । दफ्तरके कामसे निपटकर मै घटे आध घटेके लिए जमीन खोदने, बीज बोने और पौधे रोपनेमें लग जाता हूँ । यह काम करते हुए मेरे अन्तःकरणमें यह भाव उठता है कि प्रकृतिके महाप्राणमें मेरा प्राण मिल रहा है और इससे मुझमें दृश्य ससारके सकटोंसे सामना करनेकी शक्ति आ रही है । मुझे ऐसे मनुष्य पर दया आती है जिसने स्वय प्रकृतिसे ही आनन्द, बल और स्फूर्ति प्राप्त करनेकी विद्या नहीं सीखी ।

विद्यालयमें बहुतसे बत्तख और जानवर पाले जाते है, पर उनके सिवाय मै स्वय भी बढिया बढिया सूअर और बत्तख रखता हूँ । सूअर पालनेका मुझे बडा शौक है। खेल आदिकी मुझे अधिक परवा नहीं रहती। फुटबालका खेल तो मैंने कभी देखा ही नहीं। ताशके पत्ते भी मै नहीं पहचान सकता । हाँ अपने लडकोंके साथ कभी कभी गोटियोका खेल खेल लेता हूँ। बचपनमें यदि मुझे खेलनेके लिए अवकाश मिलता तो इस समय भी मुझे उससे आनन्द मिलता, पर यह असभव था !

सोलहवॉ परिच्छेद।

यूरोप।

सन् १८९३ में मिसिसिपी-निवासिनी और फिस्क-यूनिवर्सिटीकी ग्रेज्युएट मिस मारगरेट जेम्स मरेके साथ मेरा विवाह हुआ। ये कुछ वर्ष पूर्व यहाँ अध्यापिका होकर आई थीं और विवाहके समय विद्यालयकी 'लेडी प्रिन्सिपल' थीं। विद्यालयके कामोंमें मुझे इनसे बडी मदद मिलती है। इन्होंने एक मातृसभा स्थापित की है। इसके अतिरिक्त ये टस्केजीसे आठ मील दूरकी एक बडी बसतीके बालकों, स्त्रियों और पुरुषोंको वहाँ जाकर खेतीके विषयमें शिक्षा देती है।

इन दो कामोंके अतिरिक्त हमारे विद्यालयमें स्त्रियोंका एक क्लब है। उसकी देखरेख भी मिसेस वाशिंगटन पर ही है। इस क्लबमें विद्यालय तथा आसपासकी स्त्रियाँ महीनेमें दो बार एकत्रित होकर कुछ महत्त्वके विषयों पर विचार करती है। इन सबके अतिरिक्त, मिसेस वाशिंगटन दक्षिणकी नीग्रो-स्त्रियोंके क्लबकी तथा उनके राष्ट्रीय क्लबके कार्यकारी मडलकी चेयरमेन है।

मेरी सबसे बडी लडकी पोशियाने कपडे सीनेका काम भली भाँति सीख लिया है। बाजा बजानेमें तो वह बहुत ही प्रवीण है। वह टस्केजी–विद्यालयमें पढती है और अपना कुछ समय पढानेके काममें भी खर्च करती है।

मेरे मझले लडके बेकर टेलिफेरोने बाल्यावस्थासे ही ईंटें बनानेका काम सीखा है और अब वह उस काममें बहुत निपुण हो गया है। इस कामसे उसे बहुत ही प्रेम है। वह कहा करता है कि मैं इष्टिकाकार

(कुंभार) वनूँगा ! गत वर्षकी गरमीमें उसने मुझे एक पत्र लिखा था जिसको पढकर मुझे वहुत सन्तोष हुआ । घरसे विदा होते समय मैं उससे कह आया था कि प्रतिदिन तुम अपना आधा समय अपने काममें लगाया करो और आधा जिस तरह चाहो, विताओ । दो सप्ताह उपरान्त मुझे उसका वह पत्र मिला जिसकी नकल नीचे देता हूँ —

“ टस्केजी, अलवामा ।

प्रिय पिताजी,

आपने यहाँसे चलते समय कहा था कि तुम प्रतिदिन अपना आधा समय अपने काममें लगाया करो, पर मुझे अपना काम इतना पसन्द है कि मैं अपना सारा समय उसीमें लगाना चाहता हूँ। इसके अतिरिक्त मैं धन एकत्र करनेका भी उद्योग कर रहा हूँ, क्योंकि आगे चल कर जव मैं दूसरे विद्यालयमें पढने जाऊँगा तव वहाँ मुझे अपना खर्च चलानेके लिए धनकी आवश्यकता होगी ।

आपका पुत्र —

वेकर । ”

मेरा सवसे छोटा लडका अर्नेस्ट डेविड्सन वाशिंगटन वैद्य वननेकी इच्छा प्रगट करता है । विद्यालयमें पढने और काम करनेके अतिरिक्त वह वहाँके वैद्यक-कार्यालयका भी कुछ कुछ काम कर लेता है ।

मुझे अपना घर वडा प्यारा है । पर मेरा अधिकाश समय सार्वजनिक कामोंमें उसके वाहर ही खर्च हो जाता है । इससे मुझे बहुत बुरा मालूम होता है । ससारके अच्छेसे अच्छे स्थानकी अपेक्षा मुझे अपने कुटुम्बमें रहना बहुत पसन्द है । जिन लोगोंको नित्य अपने घर आकर विश्राम करनेका अवसर मिलता है उनसे मैं हसद करता हूँ । परन्तु कभी कभी मुझे यह भी खयाल होता है कि ऐसे लोग शायद

इस सुखको कोई बुरा नहीं समझते। लोगोंकी भीडभाड, उनसे हाथ मिलाना, सफर करना आदि बातोंसे, थोडे ही समयके लिए क्यों न हो, फुरसत मिलने पर मुझे घर आनेमें बडा ही आनन्द प्राप्त होता है! मै समझता हूँ कि थकावट दूर करनेके लिए सबसे अच्छी ओषधि यही है।

मेरी प्रसन्नताका दूसरा स्थान प्रार्थनामन्दिर है, जहाँ नित्य रातको साढे आठ बजे सब विद्यार्थी और अध्यापक सपरिवार एकत्र होते है। इन ग्यारह बारह सौ स्त्रियों और पुरुषोंको अपने सामने परमेश्वरकी प्रार्थना करते हुए देखनेसे मनमें बडे ही उच्च भाव उठते है। उस समय पर यह विचार उठता है कि इन सब स्त्री-पुरुषोंके जीवनको अधिक श्रेष्ठ और उपयोगी बनानेमें हमारे हाथसे कुछ सहायता हो रही है। क्या इससे भी बढकर अभिमानका और गौरवका और कोई काम हो सकता है?

१८९९ के वसन्त ऋतुमें एक बडी ही आश्चर्यजनक घटना हुई। बोस्टन नगरकी कुछ भद्र महिलाओंने टस्केजी-विद्यालयकी सहायताके लिए एक सभा की जिसमें दोनों जातियोंके मुख्य मुख्य लोग सम्मिलित हुए थे। बिशप लारेन्स सभापति थे। मेरा भी व्याख्यान हुआ। इसके अतिरिक्त मि० डबारने कुछ कवितायें और मि० डुबाइसने कुछ वर्णनात्मक लेख पढ सुनाये। सभामें आये हुए कुछ लोगोंको मालूम हुआ कि मेरा शरीर बहुत शिथिल होता जाता है। इससे सभा विसर्जित होने पर एक महिलाने मुझसे पूछा कि आप कभी यूरोप गये हैं? मैने कहा—नहीं। उसने पूछा क्या आप वहाँ जाना चाहते है? मैने कहा—नहीं, यह बात मेरी शक्तिसे बाहर है। इस संवादको मै थोडी देर बाद बिलकुल भूल गया। पीछे मुझे यह खबर मिली कि मि गारिसन आदि मेरे मित्रोंने मुझे और मेरी स्त्रीको तीन चार

मासके लिए यूरोप भेजनेके विचारसे कुछ धनसंग्रह किया है। उन्होंने बहुत जोर देकर मुझे वहाँ जानेके लिए आग्रह किया। एक वर्ष पूर्व ही मि० गारिसनने मुझसे गरमीके दिनोंमें यूरोप जानेका वचन लेना चाहा था। उस समय मुझे यह बात इतनी असंभव मालूम होती थी कि मैंने उसकी तरफ कोई ध्यान ही नहीं दिया था, पर अबकी बार मि० गारिसनने कुछ महिलाओंको इस 'साजिश' में शामिल करके मेरे जानेका पूरा प्रबन्ध कर रक्खा था, यहाँतक कि मेरे जानेका मार्ग और मै किस स्टीमरसे जाऊँगा यह भी निश्चित हो चुका था।

ये सब बातें ऐसी काररवाई, सफाई और फुर्तीसे हुई कि मै जानेके लिए विवश हो गया। मै अठारह वर्षसे लगातार टस्केजी–विद्यालयकी सेवामें लग रहा था। इसी सेवाकार्यमें मेरा जीवन समाप्त हो जाय, इसके अतिरिक्त मेरे मनमें और कोई विचार ही न आया था। दिनों-दिन विद्यालयके खर्चका बोझ मुझ ही पर बढता जाता था, इसलिए मैंने अपने बोस्टनके मित्रोंसे निवेदन किया कि–"आपकी उदारता और दूरदर्शिताके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ, पर मेरी अनुपस्थितिमें विद्यालयकी आर्थिक दशा बिगड जायगी, इसलिए मे यूरोप न जा सकूँगा।" इस पर उन्होंने लिख भेजा कि "मि० हिगिनसन तथा अन्य कई सज्जन, जो अपना नाम प्रकट करना नहीं चाहते, आपकी अनुपस्थितिमें विद्यालयकी यथेष्ट सहायता करनेके लिए बहुत बडी रकम एकत्र कर रहे है।" यह उत्तर पढकर मुझे चुप हो जाना पडा। अब मेरे बचनेकी और कोई सूरत न रही!

इतना सब कुछ होने पर भी यूरोपयात्राका विचार मुझे स्वप्नवत् ही मालूम होता था। मै जन्मसे ही घोर दासत्वमें पला था। बचपनमें मुझे सोनेकी जगह नहीं थी, खानेको पूरा भोजन नही मिलता था, वस्त्र वगैरहकी भी ऐसी ही दुर्दशा थी। भोजनके लिए मेज तो अब

मिलने लगी है। मैं समझता था कि संसारके सुख केवल गोरोंके लिए हैं—हम लोगोंके लिए नहीं! यूरोप, लंदन और पेरिसको मैं स्वर्ग ही समझता था। ऐसी अवस्थामें मुझे यूरोपकी यात्राके सौभाग्यको स्वप्न जैसा समझना स्वाभाविक ही था।

इसके अतिरिक्त और दो विचार मुझे विकल कर रहे थे। मैं समझता था कि लोग जब मेरी इस यात्राका समाचार सुनेंगे तब बिना कुछ जाने बूझे कहने लगेंगे कि वाशिंगटनको अब दिमाग हो गया है और अब वह बनने लगा है। बचपनमें मैं अपने जातिभाइयोंके विषयमें सुना करता था कि यदि उन्हें कुछ सफलता होगी तो वे अपनेको बहुत श्रेष्ठ समझने लगेंगे और धनाढ्योंका अनुकरण करनेसे उनका मस्तक फिर जायगा। अब मुझे उन बातोंका स्मरण हुआ। इसके अतिरिक्त मैं यह भी समझता था कि अपना काम छोड़कर मैं यूरोपमें सुखसे न रह सकूँगा। बहुत सा काम अभी करना था और, और और लोग उसमें लगे हुए थे। ऐसी अवस्थामें सिर्फ मैं ही काम छोड़कर चला जाऊँ यह मुझे अच्छा न मालूम होता था। बचपनसे मेरा सारा समय काम ही करते बीता था और इसलिए मैं यह नहीं समझ सकता था कि अब ये तीन चार महीने बिना कामके कैसे बिता सकूँगा।

यही कठिनाई मिसेस वाशिंगटनके सामने भी थी, परन्तु मुझे विश्रामकी बहुत जरूरत है, इस ख्यालसे उन्होंने यूरोप चलना स्वीकार कर लिया। उस वक्त नीग्रोजातिके जीवनसम्बन्धी कुछ प्रश्नों पर बड़ा आन्दोलन हो रहा था। उसे भी हम दोनोंने छोड़ दिया और बोस्टनमें अपने मित्रोंसे कहला भेजा कि हम लोग जानेके लिए तैयार हैं। उन्होंने भी शीघ्र ही प्रस्थान करनेके लिए आग्रह किया और तब यह तै हो गया कि १० मई के दिन हम दोनों यूरोपके लिए प्रस्थान करेंगे। मेरे परम मित्र मि० गारिसनने मेरी यात्राका बहुत ही अच्छा प्रबन्ध कर

दिया और उन्होंने तथा उनके मित्रोंने मुझे इंग्लैंड और फ्रान्सके अनेक सज्जनोंके नाम परिचय-पत्र भी दे दिये। टस्केजीमें सब लोगोंसे मिल कर ता० ९ को हम दोनों न्यूयार्क नगरमें आये। यहाँ मेरी कन्या पोर्शिया जो उस समय फ्रामिंगहममें विद्याभ्यास करती थी, हम दोनोंसे मिलने आई। मेरे सेक्रेटरी मि० स्काट और अन्य कई मित्र न्यूयार्क चले आये थे। जहाज पर सवार होनेसे कुछ ही पहले एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना हुई। दो महिलाओंका एक पत्र मिला जिसमें उन्होंने टस्केजीमें बालिकाओंकी शिल्पशालाके लिए भवन बनवानेके निमित्त यथेष्ट धन देना स्वीकार किया था।

रेड स्टार लाइन कंपनीके फ्रीसलैंड नामक जहाज पर हम लोग सवार हुए। यह जहाज बहुत ही सुन्दर और सुडौल था। मैंने अब तक महासागरमें चलनेवाला कोई भी जहाज न देखा था। जहाज पर सवार होते ही मेरे मनमें जो विचार उठे उनका वर्णन करना असम्भव है। मुझे उस समय बड़ी प्रसन्नता हुई और कुछ भय भी हुआ। जहाजके कप्तान और अन्य कर्मचारी हम दोनोंको केवल जानते ही न थे, बल्कि हमारी राह देख रहे थे। उन्होंने हम दोनोंका स्वागत किया। इससे हमें आश्चर्य हुआ। जहाज पर और भी कई जान पहचानके सज्जन बैठे हुए थे। मुझे यह सन्देह हो रहा था कि जहाजके कुछ यात्री हमारे साथ अच्छा व्यवहार न करेंगे। मैंने सुन रक्खा था कि अमेरिकन जहाजों पर हमारे जातिभाइयोंके साथ अनेक बार बड़े बुरे व्यवहार किये गये हैं; परन्तु हम दोनोंके साथ कप्तान और अदनेसे अदने नौकरने भी बड़ा ही अच्छा सुलूक किया। वहाँ कुछ दक्षिणी गोरे भी थे, वे भी बड़ी सुजनताके साथ हम दोनोंसे पेश आये।

जब जहाजका लंगर उठा तब, लगातार अठारह वर्षसे मेरे ऊपर जिस चिन्ता और जिम्मेदारीका बोझा था, वह हर मिनिट हलका होने-

लगा । अठारह वर्षोंके बाद यह पहला ही अवसर था जब मेरी चिन्ता किसी कदर घटी हुई मालूम हुई । मुझे इस समय जो प्रसन्नता हुई उसका मै वर्णन नहीं कर सकता। अब मेरा यूरोप देखनेका हौसला भी बढा, पर इस समय भी मुझे यह विश्वास न होता था कि मै यूरोपकी यात्रा करने जा रहा हूँ !

मिस्टर गारिसनने हम दोनोंके लिए जहाजमें एक बहुत ही अच्छे कमरेका प्रबन्ध कर दिया था । जब दो तीन दिन जहाज पर बीत गये तब मुझे नींद खूब आने लगी। यहॉ तक नींद बढी कि मै दिनरातके चौबीस घटोंमें पद्रह घटे सोने लगा ! उस वक्त मुझे विश्वास हुआ कि सचमुच काम करते करते मै बहुत थक गया था। यूरोप पहुँचनेके एक मास बाद तक मै इसी प्रकार प्रति दिन पद्रह घटे सोता रहा। अब प्रात काल उठकर मुझे इस बातकी कोई चिन्ता नहीं रहती थी कि आज किसीसे भेंट करनी है,या रेल पर जाना है अथवा कहीं कोई व्यारयान देना है । इससे मेरी तबियतको बडा आराम मिलता था । अमेरिकामें प्रवास करते समय मुझे कई बार एक ही रातमें तीन भिन्न भिन्न स्थानों पर सोना पडता था ! कहॉ वह दौडधूप, और कहॉ यह आराम !

रविवारके दिन कप्तानने मुझसे धर्मोपदेश करनेकी प्रार्थना की, परमै धर्मोपदेशक नहीं था, इस लिए उसकी यह प्रार्थना मैने स्वीकार नहीं की । तथापि कई यात्रियोंके आग्रह करने पर मैने एक दिन भोजनोत्तर एक व्यारयान दिया । दस दिनकी सुखयात्राके बाद हम लोग बेल्जियमके सुप्रसिद्ध एटवर्प नगरमें उतरे ।

जिस होटलमें हम दोनों ठहरे वह शहरके चौकके बिलकुल सामने था । दूसरे दिन इस नगरमें एक बडा उत्सव हुआ । इस अवसर पर नगरका दृश्य देखकर हमें बडी प्रसन्नता हुई । यहॉ कुछ दिन रहनेके पश्चात् मुझे कुछ सज्जनोंने हालेंडमें सैर करनेके लिए निमन्त्रित किया । इस सैरसे हम

दोनोंको वडी प्रसन्नता हुई । इस अवसर पर देहातमें रहनेवाले लोगोंकी वास्तविक दशा भी हम दोनोंने देखी । सैर करते करते हम दोनों राटरटमतक चले गये और फिर वहाँसे लौट कर हेगमें आये जहाँ उस समय शान्तिमहासभाका (Peace Conference) अधिवेशन हो रहा था। वहाँ उपस्थित अमेरिकन प्रतिनिधियोंने हम दोनोंका अच्छा स्वागत किया ।

हालैंडकी कृषिविषयक उन्नतिका और पशुओंकी उत्कृष्टताका मुझ पर बडा अच्छा सस्कार हुआ । जमीनके एक जरासे टुकडेसे कितना अनाज पैदा किया जा सकता है, इसका अन्दाज मुझे इसी देशमें आकर हुआ ! मैने यहाँ यह देखा कि लोग जमीनका एक तिनकेके बराबर हिस्सा भी बेकाम नहीं रहने देते । हरे भरे घासके मैदानोंमें एक साथ तीन तीन चार चार सौ गौओंको चरते हुए देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई ।

हालैंडसे हम दोनो बेलजियम गये । वहाँ ब्रुसेल्समें ठहरे और फिर वाटरलूका युद्धक्षेत्र देखकर बेलजियमसे सीधे पेरिसको गये । वहाँ मि० थिओडर स्टनटनने हमारे रहनेका प्रबन्ध कर दिया । शीघ्र ही यूनिवर्सिटी क्लबने हम दोनोंको भोजनके लिए निमन्त्रित किया । भोजमें भूतपूर्व प्रेसिडेंट बेंजामिन हैरिसन और आर्कबिशप आयर्लैंड भी सम्मिलित हुए थे । अमेरिकाके प्रतिनिधि जनरल होरेस पोर्टर उस अवसर पर अध्यक्ष थे। वहाँ मैने एक छोटीसी वक्तृता दी जिससे लोग बडे प्रसन्न हुए। जनरल साहबने टस्केजी-विद्यालयकी और मेरी बहुत प्रशसा की । भोज-वक्तृताके बाद मेरे पास व्याख्यान देनेके लिए कई निमन्त्रण आये, पर अपने शरीररक्षाके उद्देश्यमें बाधा पडनेकी सभावना जानकर मैने उन निमन्त्रणोंको अस्वीकार कर दिया। तो भी रविवारके दिन अमेरिकन गिरजेमें मैने व्याख्यान देना स्वीकार कर लिया । उस अवसर पर जनरल हैरिसन, जनरल पोर्टर तथा अन्य

लगा। अठारह वर्षोंके बाद यह प
किसी कदर घटी हुई मालूम हुई
का मैं वर्णन नहीं कर सकता। अ
पर इस समय भी मुझे यह विश्व
करने जा रहा हूँ!

मिस्टर गारिसनने हम दो
कमरेका प्रबन्ध कर दिया था
तब मुझे नींद खूब आने लगी।
घंटोंमें पन्द्रह घंटे सोने लगा।
काम करते करते मैं बहुत थ
तक मैं इसी प्रकार प्रति दिन प
इस बातकी कोई चिन्ता नहं
रेल पर जाना है अथवा व
यतको बड़ा आराम मिल
बार एक ही रातमें तीन
वह दौड़धूप, और कहाँ

रविवारके दिन कप्तान
धर्मोपदेशक नहीं था,
नहीं की। तथापि कई
भोजनोत्तर एक व्याख्यान
लोग बेल्जियमके सुप्रसिद्ध

जिस होटलमें हम दोनों ठहरे
दूसरे दिन इस में एक बड़ा उत्सव
देखकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। यहाँ कुछ
सज्जनोंने हालैंडमें सैर करनेके लिए निमन्त्रित

टेनरके विषयमें किसीने यह पूछताँछ नहीं कि यह मनुष्य जर्मन है या फ्रेंच है, या काला नीग्रो है। उनके विषयमें लोग इतना ही जानते थे कि वे एक कुशल चित्रकार है, किसीके मनमें उनके रूप-रंगका प्रश्न ही नहीं उठता था। बात यह है कि संसार अच्छी वस्तुओंको देखता है, उन वस्तुओंके बनानेवालोंकी जाति, रंग या इतिहास नहीं पूछता।

मैं समझता हूँ कि मेरी जातिका भविष्य केवल इसी प्रश्न पर निर्भर है कि वह अपने स्थानके तथा प्रान्तके समाजका सुख और वैभव बढ़ाती है या नहीं। जिस स्थान पर हम लोग निवास करते है, उस स्थानके लोगोंकी साम्पत्तिक, मानसिक और नैतिक उन्नतिमें यदि हम सहायता करते है तो उसका योग्य पुरस्कार हमें अवश्य मिलेगा। मानवी सृष्टिका यह अटल सिद्धान्त है।

फ्रेंच लोग कार्य करना और सुख लाभ करना बहुत पसन्द करते हैं। मेरे जातिभाई इस विषयमे अभी फ्रेंचोंसे पीछे है, परन्तु नीतिमत्तामें फ्रेंच मेरे जातिभाईयोंसे श्रेष्ठ नहीं। उन्होने तीव्र जीवनसंग्राम और स्पर्धाके कारण विशेष अध्यवसायके साथ काम करना और हिसाबसे रहना सीख लिया है। कुछ कालमे मेरी जाति भी इतना कर लेगी। सचाई और उदारता नीग्रो जातिसे फ्रेंच जातिमे अधिक नहीं दिखाई दी। गूंगे जानवरोंसे स्नेह और ममता करनेमें मेरी जाति उनसे बहुत आगे बढ़ी हुई है। फ्रान्सके प्रवाससे नीग्रो जातिके अच्छे भविष्यके विषयमे मेरा विश्वास और भी दृढ हो गया।

पेरिससे चलकर जुलाईके आरंभमें हम दोनों लन्दन पहुँचे। उस समय पार्लियामेंटके अधिवेशन हो रहे थे। वहाँ पहुँचते ही मेरे पास जगह जगहसे आमंत्रण आने लगे, पर मुझे विश्राम करना था, इस लिए मैंने बहुतोंको अस्वीकार कर दिया, किन्तु अपने दो एक मित्रोंके अनुरोध करने पर मैंने

कई बडे बडे लोग उपस्थित थे। इसके अनन्तर जनरल पोर्टरके यहाँ एक स्वागत-समारभमें भी मै सम्मिलित हुआ। यहाँ अमेरिकाके सुप्रीम कोर्टके दो जजोंसे मेरी भेंट हुई। पेरिसमें रहते समय अमेरिकन प्रतिनिधि, उनकी पत्नी और अन्य अमेरिकन सज्जनोंने हम दोनोंसे बडे स्नेहका व्यवहार रक्खा।

पेरिसमें ही मेरा सुप्रसिद्ध अमेरिकन नीग्रो-चित्रकार मि टेनरसे विशेष परिचय हुआ। अमेरिकामें इनसे भेंट हुई थी, पर इतना परिचय नहीं था। पेरिसमें इनके चित्रोंको लोग बडे आदर और उत्सुकतासे देखते है। इनका बनाया हुआ एक चित्र देखनेके लिए हम दोनों लक्ष्मवर्गके राजप्रासादमें गये। वहाँके अमेरिकनोको यह विश्वास न होता था कि किसी नीग्रोकी यहाँतक कदर हो सकती है। जब उन्होंने खुद जाकर उस चित्रको देखा तब उन्हें विश्वास हुआ। मै अब तक पुकार पुकार कर अपनी जातिको और अपने विद्यार्थियोंको जो तत्त्व बतला रहा था उस तत्त्वकी, मि टेनरके परिचयसे यथेष्ट पुष्टि हुई। वह तत्त्व यही था कि काम कोई हो–कितना ही मामूली क्यों न हो–उसमें जो मनुष्य कौशल लाभ करता है–औरोंसे अधिक अच्छा करके दिखाता है वह फिर किसी वर्णका ही क्यों न हो उसकी परख और कदर होती है। मेरी जातिके लोग एक मामूली कामको भी जितने ही अच्छे ढगसे करना सीख लेंगे उतनी ही उनकी कीर्ति होगी। मुझे जब हैम्पटनमें पहले पहल कमरा साफ करनेका काम दिया गया था तब मैने इसी तत्त्वसे प्रेरित होकर उसमें सफलता लाभ की थी। मैने किसी कदर यह भी समझ लिया था कि मेरा भावी जीवन इसी झाड़ू देने पर ही निर्भर है, और इस लिए मैने उस कामको इस खूबीके साथ करना निश्चय किया था कि उसम कोई दोष न रह जाय। अस्तु। राजप्रासादके चित्रकी ओर देखते हुए मि०

टैनरके विषयमें किसीने यह पूछताँछ नहीं कि यह मनुष्य जर्मन है या फ्रेंच है, या काला नीग्रो है ! उनके विषयमें लोग इतना ही जानते थे कि वे एक कुशल चित्रकार हे, किसीके मनमें उनके रूप-रंगका प्रश्न ही नहीं उठता था । बात यह है कि संसार अच्छी वस्तुओंको देखता है, उन वस्तुओंके बनानेवालोंकी जाति, रंग या इतिहास नहीं पूछता ।

मैं समझता हूँ कि मेरी जातिका भविष्य केवल इसी प्रश्न पर निर्भर है कि वह अपने स्थानके तथा प्रान्तके समाजका सुख और वैभव बढ़ाती है या नहीं । जिस स्थान पर हम लोग निवास करते हैं, उस स्थानके लोगोंकी साम्पत्तिक, मानसिक और नैतिक उन्नतिमें यदि हम सहायता करते हैं तो उसका योग्य पुरस्कार हमें अवश्य मिलेगा । मानवी सृष्टिका यह अटल सिद्धान्त है ।

फ्रेंच लोग कार्य करना और सुख लाभ करना बहुत पसन्द करते हैं । मेरे जातिभाई इस विषयमें अभी फ्रेंचोंसे पीछे हैं, परन्तु नीतिमत्तामें फ्रेंच मेरे जातिभाईयोंसे श्रेष्ठ नहीं । उन्होंने तीव्र जीवनसंग्राम और स्पर्धाके कारण विशेष अध्यवसायके साथ काम करना और हिसाबमें रहना सीख लिया है । कुछ कालमें मेरी जाति भी इतना कर लेगी । सचाई और उदारता नीग्रो जातिसे फ्रेंच जातिमें अधिक नहीं दिखाई दी । गूंगे जानवरोंसे स्नेह और ममता करनेमें मेरी जाति उनसे बहुत आगे बढ़ी हुई है । फ्रान्सके प्रवाससे नीग्रो जातिके अच्छे भविष्यके विषयमें मेरा विश्वास और भी दृढ़ हो गया ।

पेरिससे चलकर जुलाईके आरंभमें हम दोनों लन्दन पहुँचे । उस समय पार्लियामेंटके अधिवेशन हो रहे थे । वहाँ पहुँचते ही मेरे पास जगह जगहसे आमंत्रण आने लगे, पर मुझे विश्राम करना था, इस लिए मैंने बहुतोंको अस्वीकार कर दिया, किन्तु अपने दो एक मित्रोंके अनुरोध करने पर मैंने

ऐसेक्स हालमें एक दिन व्यारयान दिया । आनरेबल जोसेफ शोट सभापति थे । सभामें मि ब्राइस तथा पार्लियामेंटके अन्य कई सदस्य सम्मिलित हुए थे। यहाँ मैने जो व्यारयान दिया वह इग्लैंड तथा अमेरिकाके कई पत्रोंमें प्रकाशित हुआ । इस अवसरपर इग्लैंडके कई सुविरयात पुरुषोंसे मेरा परिचय हुआ । मार्क ट्वेनसे भी मेरी पहली भेंट यहीं हुई ।

रिचर्ड काबडेन नामक अँगरेज राजनीतिज्ञकी पुत्री मिसेस टी फिशर अनविनके यहाँ हम दोनों कई बार मेहमान रहे । मिस्टर और मिसेस अनविनने हमें सुखी करनेमें कोई बात उठा न रक्खी । इसके बाद एक सप्ताह तक जान ब्राइटकी पुत्री मिसेस क्लार्कने हमारा आतिथि-सत्कार किया । मिस्टर और मिसेस क्लार्कने एक वर्ष बाद हम लोगोंको टस्केजीमें आकर दर्शन दिये । बरमिंगहममें हम दोनो मि० जोसेफ स्टर्जके यहाँ ठहरे थे । इनके पिता गुलामीको मेटनेवालोंमें अगुए थे। और भी ऐसे कई सज्जनासे भेंट हुई जो गुलामीके शत्रु थे। इन लोगोंने जिस सहानुभूतिके साथ गुलामोंको स्वतन्त्रता दिलानेमें सहायता की थी, उसका अनुमान भी मै इग्लैंड आनेसे पहले न कर सका था।

ब्रिस्टल नगरके लिबरल क्लबमें हम दोनोंने व्यारयान दिये। अन्धोंके रायल कालेजमें उपाधि दानके अवसरपर मेरा मुरय व्यारव्यान हुआ । यह उत्सव क्रिस्टल पेलेसमें (शीश महलमें) हुआ था और वेस्टमिनिस्टरके स्वर्गीय ड्यूकने सभापतिका आसन ग्रहण किया था। इग्लेडमें ये सबसे धनी माने जाते थे । ड्यूक, उनकी पत्नी और कन्याको मेरा भाषण बहुत ही प्रिय हुआ और उन्होने मुझे हार्दिक धन्यवाद दिये । लेडी अबरडानकी कृपासे हम दोनोको और अनेक स्त्री-पुरुषोंके साथ महारानी विक्टोरियासे मिलनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ और इसके बाद हमें महारानीकी ओरसे चाय पीनेके लिए निमन्त्रण भी मिला। इस समय मिस सुसान बी एन्टनीसे भी भट्ट हुई ।

एक ही समयमें दो अद्वितीय स्त्रियोंसे भेंट करके मैंने अपना बडा सौभाग्य समझा।

हम दोनों पार्लियामेंटकी कामन्स सभामें कई बार गये। वहाँ सर हेनरी एम स्टानलेसे भेंट हुई और उनसे बहुत देरतक आफ्रिका और आफ्रिकाका अमेरिकन नीग्रो लोगोंसे क्या सम्बन्ध है, इस विषयमें बातचीत होती रही। इस बातचीतसे मेरा यह विश्वास हुआ कि यदि अमेरिकन नीग्रो आफ्रिकामें जाकर रहें तो वहाँ उनकी कोई उन्नति न होगी।

हम दोनों अनेक बार देहातोंमें जाकर अँगरेजोंके यहाँ मेहमान रहे हैं। अँगरेजोंकी रहनसहनका ठीक पता यहीं लगता है। मैंने यहाँ देखा कि कमसे कम एक बातमें अँगरेज लोग अमेरिकनोंसे बढ़े हुए हैं। अँगरेज लोग अपने जीवनको सुखी बनानेका ढंग बहुत अच्छी तरहसे जानते हैं। उनकी रहन-सहन और चालढालमें पूर्ण उन्नति हो चुकी है। उनका प्रत्येक कार्य ठीक समय पर होता है। नौकर चाकर अपने मालिक और मालकिनकी बड़ी इज्जत करते हैं। अँगरेज नौकर ही बना रहनेकी इच्छा करता है और इस लिए वह अपने काममें इतना पटु होता है कि कोई अमेरिकन नौकर उसकी बराबरी नहीं कर सकता, परन्तु अमेरिकामें नौकर खुद मालिक बननेकी इच्छा रखता है। इन दोनोंमें कौन अच्छा है सो कहनेका साहस मैं नहीं करना चाहता।

इग्लैंडमें एक और बात बहुत अच्छी देखी। वहाँ लोग कानूनके बड़े पाबन्द हैं। हर कामको कायदेके साथ और पूरी तौरसे करते हैं। अँगरेज लोग भोजनमें बहुत अधिक समय लगाते हैं। परन्तु दौड़धूप करनेवाले सुदृढ अमेरिकन जितना काम करते हैं उतना ये कर सकते हैं या नहीं, इस विषयमें मुझे सन्देह है।

इग्लैंडके अमीर उमरावोंके विषयमें मेरा खयाल पहलेकी अपेक्षा बहुत अच्छा हो गया। इससे पहले मैं यह नहीं जानता था कि सर्वसाधारण

उन्हें किस आदर और प्रेमकी दृष्टिसे देखते हैं और परोपकारके तथा दूसरे अच्छे कामोंमें वे अपना कितना समय और धन खर्च करते हे । पहले इस बातकी मुझे कल्पना भी नथी कि वे इन कामोंको बहुत हीजी लगाकर करते है । मै यह समझता था कि ये लोग मौज उडाते हैं और धन बरबाद करते है ।

अँगरेज श्रोताओंके सामने व्याख्यान देकर उन पर प्रभाव डालनेमें मुझे बडी कठिनाई हुई । साधारणत' अँगरेज लोग इतने गभीर और विचारशील होते है कि मेरे मुँहसे जिस बातको या चुटकिलेको सुनकर अमेरिकन लोग हँस पडते हैं उसको सुनकर अँगरेजोंके चेहरों पर मुस्कराहट भी नहीं आती ।

अँगरेज लोग जिनसे एक बार मित्रता कर लेते है उन्हे वे अपने हृदयसे दूर नहीं करते । ऐसे मित्र अन्यत्र कहीं न होंगे । लदनके स्टैफर्ड-हाउसमें सदरलैंडके ड्यूक और डचेसने हम दोनोंको एक स्वागत-समारम्भमें बुलाया था । सदरलेंडकी डचेस इग्लैंडकी स्त्रियोंमें सबसे सुन्दर हैं । इस समारभमें अनुमान तीन सौ लोग उपस्थित थे । सन्ध्याके समय इतने बडे समूहमें डचेसने हम दोनोंको दो बार ढूँढ निकाला, अच्छी तरह बातचीत की, और टस्केजी जाने पर वहाँका पूरा पूरा हाल लिख भेजनेके लिए कहा । मैने भी उनके कथनानुसार वहाँसे पूरा हाल लिख भेजा । बडे दिनों पर उन्होंने अपने हस्ताक्षरके साथ अपना एक फोटो भेज दिया । अब बराबर चिट्ठीपत्री हुआ करती है । मै डचेसको अपने सच्चे मित्रोंमसे ही एक समझता हूँ ।

तीन महीने यूरोपमें भ्रमणकर हम दोनों सेंट लुई नामक जहाज पर सवार होकर साउथम्पटनसे रवाना हुए । इस जहाज पर लुई नगरके अधिवासियोंका दिया हुआ एक सुन्दर पुस्तकालय था । इस पुस्तकालयमें मुझे फ्रेडरिक डगलसका जीवनचरित मिला । उसे मैने पढना

आरभ कर दिया। इस पुस्तकमें मि० डगलसने अपनी पहली और दूसरी इग्लैंड-यात्राके समय जहाज पर उनके साथ जैसा सुलूक हुआ था उसका वर्णन किया था। यह वर्णन मैने ध्यान देकर पढा। उन्होंने लिखा था कि जहाजके कमरेमें आनेकी मुझे मनाई की गई थी और इसलिए मुझे डेक पर ही रहना पडता था। जिस समय यह वर्णन मै पढ चुका उसी समय जहाजके कुछ यात्री (स्त्री-पुरुष दोनों) मेरे पास आये और सन्ध्यासमय होनेवाले उत्सव पर भाषण करनेके लिए कहने लगे ! यह दशा होते हुए भी कुछ लोग यह कहते ही जा रहे है कि अमेरिकामें वर्णद्वेषकी मात्रा घट नहीं रही है ! इस उत्सवमें न्यूयार्कके वर्त्तमान गवर्नर आनरेबल बेंजामिन बी ओडेल सभापति हुए थे। सब लोगोंने बडे ध्यानसे मेरा व्याख्यान सुना। कुछ यात्रियोंने टस्केजी–विद्यालयके विद्यार्थियोंको छात्रवृत्तियाँ दिलानेके लिए चन्दा भी इकट्ठा किया।

जब मै पेरिसमें था तब वेस्टवर्जीनियाके निवासियोंकी ओरसे तथा जिस नगरमें मेरा बचपन बीता है उस नगरके निवासियोंकी ओरसे निम्नलिखित आमत्रण पत्र पाकर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ —

“ चार्लेस्टन, १६ मई १८९९

प्रोफेसर बुकर टी वाशिगटन, पेरिस–फ्रान्स।

प्रिय महाशय !

पश्चिम वर्जीनियाके अनेक सुयोग्य निवासियोंने आपके कार्य और योग्यताकी बहुत प्रशसा की है, और उनकी यह इच्छा है कि यूरोपसे लौटने पर आप यहाँ पधारकर अपने वचनामृतसे उन्हें तृप्त करनेकी कृपा करें। हम लोग इस विचारसे पूर्ण सहमत हैं और चार्लेस्टन निवासियोंकी ओरसे आपको यहाँ आनेकी प्रार्थना करते है। आपने अपने कार्योंसे हम लोगोंका गौरव बढाया है और हमें

आशा है कि आप यहाँ पधारकर हम लोगोंको आपका सम्मान करनेका अवसर दे कृतार्थ करेंगे। भवदीय

डबल्यू हरमन स्मिथ।”

इस पत्रके साथ एक ओर भी आमन्त्रण पत्र था जिस पर चार्लस्टनके डेली गजट, टेली मेल ट्रिब्यून, जी डब्ल्यू एटकिनसन गवर्नर तथा कई बेंकोंके डायरेक्टरों तथा बडे बडे अधिकारियोंके हस्ताक्षर थे।

जिस शहरमें मेरा बचपन बीता और जिस शहरसे मे अज्ञान और अनाथ अवस्थामे विद्यार्जनके लिए बाहर निकला उस शहरकी सिटी-कोंसिल, सरकारी अधिकारियों और दोना जातियोंके अगुओंसे यह न्योता पाकर मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ और मेरी बुद्धि चकरा गई।

मेने दोनों आमन्त्रण स्वीकार कर लिये और निश्चित समय पर मैं चार्लस्टन जा पहुँचा। रेलवे स्टेशनपर भूतपूर्व गवर्नर मि० मेक कारकल तथा अन्य कई बडे बडे लोगोने मेरा स्वागत किया। सभा हुई और उसमें गवर्नर आनरेबल मि० एटकिनसनने सभापतिका आसन ग्रहण किया। स्वागतकी वक्तृता मि० मेक कारक्लने दी। नीग्रो लोग भी इस स्वागत-समारम्भमें सम्मिलित थे। सभास्थान दोनों जातियोंके लोगोंसे ठसाठस भर गया था। इस समय वे गोरे लोग भी उपस्थित थे जिनके यहाँ बचपनमे मे काम कर चुका था। दूसरे दिन गवर्नर और उनकी पत्नी मिसेस एटकिनसनने राजप्रासादमें मेरा स्वागत किया।

इसके कुछ दिन उपरान्त, जार्जिया-राज्यान्तर्गत एटलांटाके नीग्रो लोगोने मेरा स्वागत किया जिस समय उस राज्यके गवर्नर सभापति थे। न्यू आरलीन्समें भी मेरा स्वागत हुआ और उस अवसर पर वहाँके मेयर सभापति थे। और भी कितने ही स्थानोंसे मेरे पास निमन्त्रण आये, पर मै उन्हें स्वीकार न कर सका।

सत्रहवाँ परिच्छेद ।

अन्तिम शब्द ।

यूरोप जानेसे पहले मेरे जीवनमें कई आश्चर्यकारक घटनायें हुई। यदि सच पूछिए तो मेरा जीवन आश्चर्यपूर्ण घटनाओंका भण्डार है। मेरा विश्वास है कि जो मनुष्य अपने जीवनको शुद्ध, निःस्वार्थ और उपयोगी बनानेकी चेष्टामें लगा देगा उसका जीवन ऐसी ही अकल्पित और उत्साह बढानेवाली घटनाओंसे पूर्ण हो जायगा। दूसरे प्राणियोंको अधिक सुखी और अधिक उपयोगी बनानेका प्रयत्न करनेसे जो आनन्द प्राप्त होता है, उसका अनुभव जिस मनुष्यको नहीं उसकी दशा पर मुझे बडी दया आती है।

लकवेकी बीमारीसे एक वर्ष तक पीडित रहनेके बाद और अपनी मृत्युसे छ महीने पहले जनरल आर्मस्ट्रागने एक बार फिर टस्केजी-विद्यालय देखनेकी इच्छा प्रकट की। इस समय उनसे चला तक नहीं जाता था, पर उनकी इच्छा पूर्ण करनेके लिए वे टस्केजीमें लाये गये। वहाँकी रेलवेके गोरे मालिकोंने विना कुछ लिए ही, पाँच मीलकी दूरीसे एक स्पेशल पर उन्हें ले आनेका प्रबन्ध कर दिया था। रातके नौ बजे जनरल आर्मस्ट्राग विद्यालयमें आये। विद्यालयके फाटकसे उनके ठहरनेके स्थान तक एक हजार विद्यार्थी और शिक्षक हाथोंमें रोशनी लिये खडे थे। उस अपूर्व दृश्यको देखकर जनरल आर्मस्ट्राग बहुत ही प्रसन्न हुए। इसके बाद दो महीनेतक वे मेरे यहाँ मेहमानके तौर पर रहे। इस बीचमें वे बोलने चलने और उठने बैठनेमें असमर्थ होने पर भी सदा दाक्षिणके लोगोंकी चिन्ता किया करते थे। उन्होंने मुझसे यह भी कई बार कहा कि नीग्रो लोगोंके साथ साथ गरीब और निर्धन गोरे

भी उन्नतिका प्रयत्न करना देशका कर्तव्य है। इस पशु अवस्थामें भी जनरल आर्मस्ट्रागको देशकी चिन्ता और कार्य करते देखकर मुझ पर बडा गहरा प्रभाव पडा और मैंने यह निश्चय किया कि मैं उनके प्रिय कार्यमें जरूर हाथ बटाऊंगा।

कुछ ही सप्ताह पीछे जनरल आर्मस्ट्राग इह लोकसे कूच कर गये। तब मुझे एक और ऐसे ही महात्मा मिले। ये वे ही डाक्टर हालीस बी फ्रिसेल हैं जो जनरल आर्मस्ट्रागके स्थान पर हैम्पटन-विद्यालयके प्रिन्सिपल है। ये भी साधुता और परोपकारमें जनरल आर्मस्ट्रागके समान है। जनरल महाशयकी इच्छाके अनुसार इन्होंने विद्यालयको परमोन्नत बनानेमें कोई बात उठा नहीं रक्खी है। इतने पर भी ये अपनी प्रसिद्धि नहीं चाहते और विद्यालयकी उन्नतिका सारा यश जनरल आर्मस्ट्रागको ही देते है।

लोगोंने मुझसे कई बार पूछा है कि तुम्हारे जीवनमें सबसे अधिक आश्चर्यजनक घटना कौनसी हुई। इसका उत्तर देनेमें मुझे कोई संकोच नही। वह घटना यों है कि रविवारके दिन सबेरे मैं अपनी पत्नी और बालबच्चोंके साथ अपने मकान पर बैठा हुआ था कि इतनेमें मुझे निम्न-लिखित पत्र मिला —

“ हारवर्ड यूनिवार्सिटी केंब्रिज।
ता २८ मई, १८९६।

प्रोफेसर बुकर टी वाशिंगटनकी सेवामें-

प्रिय महाशय, आगामी उपाधिदानके अवसर पर हारवर्ड-विश्वविद्यालय आपके प्रति अपना आदरभाव प्रकट करनेके लिए आपको एक उच्च उपाधि देना चाहता है। पर हम लोगोंका यह नियम है कि उपस्थित महाशयोंको ही उपाधि दी जाती है। उपाधिदान-समारंभ २४

जूनके दिन होगा । उस दिन दो पहरके बारह बजेसे सध्याके पॉच बजेतक आप उपस्थित रहें । क्या आप २४ जूनको केंब्रिजमे आजानेकी कृपा करेंगे ?

आपका
चार्ल्स डब्ल्यू इलियट,
प्रेसिडेंट, हारवर्ड-यूनिवर्सिटी । ”

मैने कभी स्वप्नमे भी नही सोचा था कि मेरी यह प्रतिष्ठा होगी ! पत्र पढकर मेरे नेत्रोंमें जल भर आया । गुलामाबादमे गुलामोंके काम, कोयलेकी खानोंके काम, बिना अन्न वस्त्रके बिताये हुए दिन, सडककी पटरी पर बिताई हुई रात, शिक्षा प्राप्त करनेकी उत्सुकता, टस्केजीके शुरू शुरूके कठिनाईके दिन, विद्यालय चलानेके लिए स्थानकी चिन्तामे करवटें बदलते हुए काटी हुई रातें, नीग्रोजाति पर होनेवाले अत्याचार और कष्ट, इन सबके चित्र मेरी ऑखोंके आगे नृत्य करने लगे और दु:खसे मै विकल हो गया ।

मैंने न कभी नाम पानेकी इच्छा की और न उसका पीछा ही किया । नाम अथवा प्रतिष्ठाको मै लोककल्याणका एक साधन मात्र समझता हूँ । मित्रोंसे बातें करते हुए मैने कई बार कहा भी है कि यदि मै अपनी प्रतिष्ठासे दूसरोंका हित कर सकूँ तो मुझे उससे सन्तोष होगा । धनकी तरह प्रतिष्ठा भी यदि देशसेवाके काम आती हो तो मै उसे चाहता हूँ । बडे बडे योग्य धनवानोंसे मिलकर मैने यही जाना है कि वे धनको परोपकारका एक ईश्वरदत्त साधन समझते है । सुप्रसिद्ध धनी और दानवीर मि जान डी राकफेलरके दफ्तरमें जाते ही मेरा यह विश्वास और भी दृढ हो जाता है । वे अपना प्रत्येक डालर सत्कार्यमे लगाना चाहते है और इसलिए वे हरेक कार्यकी बडी बारीकीसे परीक्षा करते हे जैसे कोई व्यापारी पूँजी लगानेसे पहले लाभ

हानिका विचार कर लिया करता है। धनाढ्योंकी यह दशा देखकर चित्त बहुत प्रसन्न होता है।

२४ जूनको सबेरे नौ बजे मे प्रेसिडेंट इलियट, बोर्ड आफ ओवरसियर तथा अन्य निमन्त्रित सज्जनोंसे निश्चित स्थान पर जा मिला। उपाधिदानका समारभ सडर्स थिएटरमें होनेवाला था। जनरल नेल्सन, ए माइल्म, बेल–टेलीफोनके आविष्कारक डाक्टर बेल, बिशप विनसेंट और पादरी सैवेज भी उपाधिदानके लिए बुलाये गये थे। प्रेसिडट इलियटके स्थानसे थिएटरतक हम लोगोंका एक जुलूस निकला। इस जुलूसमें सबके आगे प्रेसिडेंट इलियट, मैसेच्युसेट्सके गवर्नर और बोर्ड आफ ओवरसियरके लोग थे और उनके पीछे हम लोग। हमारे पीछे चोगा पहने हुए विश्वविद्यालयके प्रोफेसरोंकी मडली थी। इस ठाठसे हम लोग सैडर्स थिएटरमें पहुँचे। आरभिक कार्यक्रम समाप्त होने पर उपाधिदानका समारभ आरभ हुआ। उपाधिपानेवालोंके नाम पहले गुप्त रक्खे जाते है और फिर जिन लोगोंको उपाधियाँ मिलती है उनके नाम पर विद्यार्थी और दूसरे लोग उनकी प्रतिष्ठाके अनुसार जयघोष करते है। उस समय लोगोंके उत्साह और आनन्दका पारावार नहीं रहता।

जब मेरा नाम लिया गया, तब मै उठकर प्रेसिडेंट इलियटके पास जा खडा हुआ। उन्होने अपने प्रासागिक और सुन्दर भाषणके साथ मुझे एम० ए०—मास्टर आफ आर्ट्स—की उपाधि दी। इसके उपरान्त और भी कई लोगोंको उपाधियाँ दी गई। उपाधिदानका समारम हो चुकने पर हम लोगोने प्रेसिडेंटके साथ जलपान किया और हम सब विश्वविद्यालयके चारों ओर घुमाये गये। स्थान स्थान पर लोग उपाधिपानेवालोंके नाम लेकर जयघोष करते थे। चारों ओर घूम फिर कर हम लोग मेमोरियल हालमें पहुँचे। यहाँ सब विद्यार्थियोंके भोजनका

प्रबन्ध किया गया था । उस अवसर पर राज्य, धर्म, व्यापार और शिक्षा प्रभृति सब विभागोंके कितने ही लोग अपने कालेजके अभिमान और प्रेमसे उत्साहित होकर उपस्थित हुए थे। ऐसा अभिमान, ऐसा प्रेम और ऐसा जनाकीर्ण सुन्दर दृश्य केवल एक हारवर्डके ही विश्वविद्यालयमें दिखाई देता है जिसे देखकर कोई जल्दी भूल नहीं सकता !

भोजनके उपरान्त प्रेसिडेंट इलियट, गवर्नर रोजर वुलकाट, जनरल माइल्स, डाक्टर सैवेज, आनरेबल हेनरी लाज आदि महाशयोंके व्याख्यान हुए और अन्तको मेरा भी व्याख्यान हुआ । मेरे व्याख्यानका मुख्य अंश नीचे लिखे अनुसार था —

“ आप लोगोंने आज मेरी जो प्रतिष्ठा की है, यदि मैं अपने आपको किसी अंशमें भी उसका पात्र समझूँ तो मेरे मनका बोझ बहुत कुछ हलका हो जायगा । आप लोगोंने इस अवसर पर दक्षिणके मेरे गरीब भाइयोंमेंसे मुझे उपाधि ग्रहण करनेके लिए क्यों बुलाया है, यह बतलानेकी मुझे कोई आवश्यकता नहीं, परन्तु तो भी मेरे लिए यह कहना अनुचित या अप्रासंगिक न होगा कि अमेरिकन लोगोंके सामने आज मुख्य प्रश्न यह है कि विद्वानों, धनवानों और शक्तिसम्पन्नोंको, तथा मूर्ख, निर्धन और शक्तिहीन लोगोंको एक स्थान पर कैसे एकत्र किया जाय और ये दोनों ही परस्पर व्यवहार बढाकर कैसे परस्परकी उन्नति करनेमें सहायक हों । बीकनस्ट्रीटकी बडी बडी हवेलियोंमें रहनेवाले धनवानोंको अलबामा और लुसियानाके खेतों पर काम करनेवाले तथा झोपडियोंमें रहनेवाले दरिद्रोंकी आवश्यकतायें कैसे मालूम हों ? यही एक बडा भारी प्रश्न है । हारवर्ड विश्वविद्यालय आज, अपने आपको नीचे गिराकर नहीं, बल्कि निम्नश्रेणीके लोगोंको ऊपर लाकर—उनको उन्नत करके—इस प्रश्नका निर्णय कर रहा है ।

“ यदि मैने अपने अतीत जीवनमें अपने जातिभाइयोंको उन्नत करने और अपनी और आपकी जातिका सबध दृढ करनेके लिए, आपके विचारमें, कोई उद्योग किया हो तो, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आजसे मै इस उद्योगको दूने परिश्रमके साथ करूँगा। ईश्वरके यहाँ प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक जातिकी सफलताका एक ही माप है। इस देशकी ऐसी स्थिति है कि यहाँ चाहे जो जाति हो उसे अपनी उन्नति अमेरिकिन मापसे—कसौटीसे मापना चाहिए। केवल इच्छा या उद्देश्यका कोई अच्छा परिणाम नहीं होता। इसलिए आगामी पचास वर्ष या इससे भी अधिक समयतक हमारी जाति भी इसी अमेरिकिन कसौटी पर कसी जायगी। यही हमारी सहनशीलता, अध्यवसाय, सयम, धैर्य और मितव्ययिताकी परीक्षा हो जायगी और यह भी मालूम हो जायगा कि हम लोग ऊपरी चमकदमकमें फँस जाते है या वास्तविक तत्त्वको स्वीकार करते है, विद्वान् होकर सादगी और विनयशीलतासे रहना सीखते है तथा प्रतिष्ठा पाकर देश और समाजकी सेवा स्वीकार करते है, या अपनी जातिको [illegible] करते है।”

यह बिलकुल [illegible] था [illegible] नीग्रोको ऐसी सम्मा-
नसूचक उपाधि मिली [illegible] विषयकी बड़ी
चर्चा की। न्यूयार्कके [illegible] कि,—

“ जिस समय [illegible]
जब वे इस [illegible]
[illegible]
के [illegible]
लिए [illegible] वर्जा,
का य [illegible]

इस जयध्वनिमें सम्मिलित थे और उन पर आश्चर्य तथा आनन्दकी आरक्त प्रभा प्रकट हो रही थी। इससे यह प्रमाणित होता है कि लोगोंने पहलेके गुलाम और अबके एक महान् कार्यकर्त्ताके कार्योंके लाभ और महत्त्वको भली भाँति समझ लिया है। ”

बोस्टनके एक समाचारपत्रमें निम्नलिखित सम्पादकीय लेख निकला था—

“ टस्केजी–विद्यालयके प्रिन्सिपलको ‘ मास्टर आफ आर्ट्स ’ की उपाधि देकर हारवर्ड–विश्वविद्यालयने उनकी और अपनी दोनोंकी प्रतिष्ठा बढाई है। प्रोफेसर बुकर टी वाशिगटनने दाक्षिणमें अपने जातिभाइयोंको शिक्षित, सुयोग्य और उत्तम नागरिक बनानेमें जो परिश्रम किया है उसके कारण उन्हें हमारे राष्ट्रके महान् कार्यकर्त्ताओंमें स्थान मिलना चाहिए। जिस विश्वविद्यालयके सुपुत्रोंमें ऐसे योग्य पुरुषका नाम हो, उसे सचमुच ही अपने गौरवका अभिमान होना चाहिए।

“ नीग्रो जातिमें पहले पहल मि० वाशिगटनने ही एक अमेरिकिन विश्वविद्यालयसे ऐसी सम्मानसूचक उपाधि पाई है। यह एक प्रतिष्ठाकी बात है। मि० वाशिगटनको नीग्रो होने अथवा गुलामीमें पैदा होनेके कारण यह उपाधि नहीं मिली है, बल्कि उन्होंने जिस महान् बुद्धिबल और दीनवत्सलतासे अपने जातिभाइयोंकी उन्नति की है उसके बदलेमें ही उनका यह सम्मान किया गया है। जिस किसीमें ये दो बातें होंगी—वह चाहे किसी वर्णका हो—अवश्य उन्नत होगा।”

बोस्टनके एक दूसरे पत्रने यों लिखा —

“ अमेरिकामें हारवर्ड–विश्वविद्यालयने ही सर्व प्रथम एक काले आदमीको उपाधि दी। जिस मनुष्यने टस्केजी–विद्यालयके कार्य और इतिहासको देखा है वह बुकर टी वाशिगटनके धैर्य, दृढ उद्योग और उत्तम व्यावहारिक ज्ञानकी प्रशसा किये बिना न रहेगा। हारवर्ड–

विश्वविद्यालयने एक ऐसे मनुष्यको—जो पहले गुलाम था—उपाधि दी, यह ठीक ही हुआ, परन्तु जातिसेवा और देशसेवाका पूरा महत्त्व तो भविष्यकाल ही बतलावेगा।”

‘न्यूयार्क-टाइम्स’ के सवाददाताने इस प्रकार लिखा —

“सभी भाषण अच्छे हुए, पर उस काले मनुष्यके भाषणका भी बडा आदर हुआ। उसका भाषण समाप्त होने पर लगातार बहुत देरतक जोर जोरसे तालियॉं बजती रहीं।”

टस्केजी-विद्यालय खोलते समय मैंने मन-ही-मन यह सकल्प किया था कि मै इसकी इतनी उन्नति करूँगा और इसे इतना उपयोगी बनाऊँगा कि किसी रोज सयुक्तराज्यके आधिपति (President) भी इसे देखने आवेंगे। यह मै स्वीकार करता हूँ कि यह बडे साहसका विचार था और इसमे अविचारकी मात्रा भी अधिक थी। इसी कारण मैने इस विचारको अपने हृदयमें छुपा रक्खा था, परन्तु सौभाग्यसे मेरा सकल्प व्यर्थ नहीं गया।

१८९७ के नवबर महीनेमें मैने इस विषयमें पहला प्रयत्न किया और प्रेसिडेंड मैक् किनलेके मन्त्रियोंमेसे कृषिविभागके मन्त्री आनरेबल जेम्स विलसनको मै विद्यालय दिखलानेके लिए ले आया। उस समय विद्यालयमे कृषि तथा ऐसे ही दूसरे विषयोंकी शिक्षा देनेके लिए ‘स्लेटर आर्मस्ट्राग’ नामक एक भवन बनवाया गया था और उसीके उद्घाटनके अवसर पर भाषण करनेके लिए विलसन महाशय निमन्त्रित किये गये थे।

स्पेनिश—अमेरिकन युद्धमें अमेरिकनोंकी विजय हुई और इस विजय-सन्धिके उपलक्ष्यमे सर्वत्र आनन्दोत्सव मनाये जाने लगे। इसी अवसर पर, मैने सुना कि प्रेसिडेंट मैक् किनले एटलाटाके उत्सवमें सम्मिलित होनेवाले है। गत अठारह वर्षोंसे मै अपने सहयोगी अध्या-

पकोंके साथ एक ऐसी संस्था चला रहा था जिससे राष्ट्रकी बडी सहायता होनेवाली थी । मैंने यह निश्चय कर लिया कि जिस प्रकार होगा, मैं प्रेसिडेंट और उनके मन्त्रि-मण्डलको अपना विद्यालय दिखलानेके लिए ले आऊँगा । इस लिए सबसे पहले मैं वाशिंगटन नगरमें गया और वहाँ प्रेसिडेंटसे मिलनेके लिए ‘ श्वेतभवन (White house) ’ पहुँचा । उस समय वहाँ बहुतसे मनुष्योंकी भीड लगी हुई थी और इसलिए मुझे भय हुआ कि कदाचित् आज प्रेसिडेंट महाशयसे भेंट न हो सकेगी । तो भी मैं किसी प्रकार उनके सेक्रेटरी मि० पोर्टरसे मिला और मैंने उन्हें अपना उद्देश्य बतलाया । मि० पोर्टरने कृपाकर तत्काल ही मेरे नामका कार्ड प्रेसिडेंटके पास भेज दिया और शीघ्र ही मुझे उनके पास जानेकी आज्ञा मिल गई ।

प्रेसिडेंट मक् किनलेके पास नित्य कितने ही लोग मिलने आते थे । इसके अतिरिक्त उन्हें सैकडों सरकारी काम करना पडते थे । इसलिए मेरी समझमें यह बात न आती थी कि इतने सारे काम करके भी प्रेसिडेंट मैक् किनले क्योंकर इतने शान्त, स्थिर और प्रसन्न रहते हैं ! मुझसे वे बडी प्रसन्नताके साथ मिले और सबसे पहले उन्होंने मेरे टस्केजीसंबंधी कार्य पर हर्ष प्रकट कर मुझे धन्यवाद दिया । इसके उपरान्त मैंने उन्हें अपने आनेका उद्देश्य बतलाया । मैंने उन्हें यह भली भाँति जना दिया कि आप राष्ट्रके सर्व प्रधान अधिकारी हैं और इस लिए आपके शुभागमनसे केवल हमारे विद्यार्थी ही उत्साहित न होंगे, बल्कि समस्त जातिकी बडी भारी सहायता होगी । यह बात उन्हें जँच तो गई, पर टस्केजी आनेका वादा उन्होंने न किया, क्यों कि उस समय एटलांटा जानेकी ही बात पक्की नहीं हुई थी और इसलिए उन्होंने मुझसे फिर किसी समय इस बातका स्मरण दिलानेके लिए कहा ।

दूसरे महीनेके तीसरे सप्ताहके आरंभमें उनका उत्सवमें सम्मिलित

होनेका विचार दृढ हो गया । मै फिर वाशिंगटनमें जाकर उनसे मिला। इस समय मेरे साथ टस्केजीके मि हेअर नामक प्रधान गोरे अधिवासी भी गोरोंकी तरफसे प्रेसिडेंट महाशयको निमन्त्रित करनेके लिए मेरे साथ हो लिये थे।

इससे कुछ ही पहले दक्षिणके भिन्न भिन्न स्थानोंमे कई भारी दंगे हो गये थे जिसके कारण देशमें बडी अशान्ति फैल गई थी और नीग्रो लोग बहुत दुखी हो रहे थे। प्रेसिडेंट महाशयसे मिलने पर मैने देखा कि वे इन झगडोंके कारण बहुत चिन्तित है। अन्य अनेक सज्जन उस समय उनसे मिलने आये थे, तो भी उन्होंने मुझे ठहरा लिया और मेरे साथ नीग्रो जातिके प्रश्नों पर बहुत देर तक बातें कीं। इस बीचमें उन्होंने कई बार यह भी कहा कि मै आपकी जातिके विषयमें केवल मौखिक बातोंसे ही सन्तुष्ट नहीं हूँ—वास्तवमें भी कुछ करना चाहता हूँ। मैने भी मौका पाकर उनसे कहा कि यदि इस समय आप अपने रास्तेसे १४० मील हटकर टस्केजीकी नीग्रो संस्थामें पदार्पण करें तो इसी एक बातसे जैसा उत्साह नीग्रो जातिमें फैल जायगा वैसा और किसी बातसे नहीं फैल सकता। मैने ताड लिया कि यह बात उनके मनमें बैठ गई।

इसी समय एटलटानिवासी एक सज्जन भी जो पहले गुलाम रक्खा करते थे—वहाँ पहुँच गये। टस्केजी जानेके विषयमें प्रेसिडेंट महाशयने उनसे भी राय ली। उन्होंने कहा, ‘ आप टस्केजी–विद्यालयमें अवश्य जायँ।’ नीग्रो जातिके परम हितैषी डाक्टर करीने भी इस बात पर बडा जोर दिया। बस, मेरा काम बन गया। प्रेसिडेंट महाशयने वादा किया कि ‘ मै १६ दिसम्बरके दिन आपका विद्यालय देखने आऊँगा।’

जब लोगोंको यह समाचार मिला तब विद्यालयके विद्यार्थी, अध्यापक और टस्केजीके समस्त अधिवासी बहुत ही प्रसन्न हुए। नगरके गोरे

निवासी नगरको सिगारनेमें लग गये और विद्यालयके कर्मचारियोंसे मिलकर प्रेसिडेंटका यथायोग्य स्वागत करनेके लिए समितियाँ भी बनाने लगे। इससे पहले मुझे यह न मालूम था कि हमारे विद्यालयके विषयमें टस्केजी तथा आसपासके गोरे निवासियोंकी क्या राय है। प्रेसिडेंटके स्वागतकी तैयारियाँ करते समय कितने ही गोरे लोग मुझसे मिलकर कहते थे कि 'यदि हम लोगोंसे भी कुछ काम लिया जा सकता हो तो हम करनेके लिए तैयार हैं।' उस समय उनके भावसे यह मालूम होता था कि कहने भरकी देरी है कि ये लोग चाहे जो काम करनेके लिए मुस्तैद हो जायँगे। प्रेसिडेंटके आगमनसे और अलबामाके गोरे काले समस्त लोगोंने हम लोगोंके कार्यके प्रति जो स्नेह व्यक्त किया उससे, मेरा अन्तःकरण द्रवित हो गया।

१६ दिसबरको सबेरे टस्केजीके छोटेसे गाँवमें इतनी भीड हुई जितनी पहले कभी न हुई थी। प्रेसिडेंटके साथ मि० मेक् किनले तथा प्रायः सभी मत्री आये थे, बहुतोंके साथ उनके परिवारके लोग और रिश्तेदार भी थे। स्पेनिश-अमेरिकन युद्धमें विजय पाकर आये हुए जनरल शेफ्टर और जनरल जोसेफ वीलर आदि मुख्य मुख्य सेनापतियोंने इस समारभमें योग दिया था। समाचारपत्रोंके सवाददाताओंकी भी कमी न थी। इन्हीं दिनों माटगोमरीमें अलबामा राज्यकी व्यवस्थापक सभाके अधिवेशन होनेवाले थे, पर इस अवसर पर टस्केजीमें उपस्थित रहनेके लिए कार्यकर्त्ताओंने उनका समय बदल दिया था और वहाँके गवर्नर तथा अन्य अधिकारी प्रेसिडेंटके आनेसे पहले ही टस्केजीमें उपस्थित हो गये थे।

टस्केजीके अधिवासियोंने रेलस्टेशनसे विद्यालय तक सब मार्ग सिंगार रक्खे थे। हम लोगोंने ऐसा प्रबन्ध कर रक्खा था कि थोडे ही समयमें विद्यालयके सब काम प्रसिडेंट महाशयको दिखला दिये जायँ।

प्रत्येक विद्यार्थीके हाथम एक एक ऊख दिया गया था जिसके सिरे पर कपासकी टाडियाँ लगा रक्खी थीं। विद्यार्थियोंके पीछे विद्यालयके भिन्न भिन्न भागोंके पुराने और नये काम घोडा, खच्चरों और बैलों पर लदे हुए थे। मक्खन निकालने, जमीन जोतने और रसोई बनानेके तथा ऐसे ही अन्य सब कामोंके नये पुराने दोनों ढग दिखलाये गये थे। इन सब कामोंको देखनेम प्रेसिडेंटको डेढ घटा खर्च करना पडा।

विद्यार्थियोंने हालहीमें एक नया प्रार्थनामन्दिर (गिरजा) बनाया था । उसीमें प्रेसिडेंट महाशयका व्याख्यान हुआ । उसका कुछ अश इस प्रकार है —

“ ऐसे आनन्ददायक अवसर पर आप सब लोगोंसे मिलने और आपके कार्योंको देखनेसे मुझे बडी ही प्रसन्नता हुई है । ‘ टस्केजी नार्मल और इंडस्ट्रियल इन्स्टिट्यूट ’ की स्थापना जिस उद्देश्यसे हुई है, वह अत्यन्त अनुकरणीय है । केवल इसी देशमें नहीं, विदेशोंमें *भी इस विद्यालयकी कीर्ति फैलती जाती है ।*

“ जिन्होंने इन विद्यार्थियोंकी शिक्षा देकर इन्हें प्रतिष्ठित और समाजके लिए उपकारी बनानेका भार अपने ऊपर उठाया है, जिन्होंने इस *विद्यालयको स्थापित कर अपनी जातिका कल्याण किया है,* और जिन्होंने इस पवित्र कार्यमें हाथ बँटाये हे उन सबको म हार्दिक बधाई देता हूँ ।

“ इस अनुपम शिक्षाकी प्रयोगशालाके लिए स्थान भी ऐसा अच्छा मिला है कि और कहीं शायद ही मिलता । इस विद्यालयने देशके ऐसे ऐसे दाताओंसे भी सहायता पाई है कि जो किसी नये काममें योग देना नहीं जानते ।

“ टस्केजी-विद्यालयकी चर्चा करते समय प्रो० बुकर टी वाशिंगटनकी

असाधारण बुद्धिमता और उद्योगप्रियता स्वयं ही नेत्रोंके सामने आ जाती है। इस महान् कार्यको इन्होंने ही प्रारंभ किया है। इसके लिए हम सब लोग इनके कृतज्ञताभाजन हैं। इन्हींके उत्साह और साहससे विद्यालयकी इतनी उन्नति हुई है और उसकी पात्रता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। ये अपनी जातिके एक नेता समझे जाते हैं। देश देशान्तरके लोग इन्हें एक उत्तम अध्यापक, वक्ता और महात्मा समझते हैं, और इनके इन्हीं गुणोंके कारण ही सब लोग इन्हें मानते हैं।"

इसके उपरान्त नौ-सेनाविभागके मंत्री आनरेबल जान डी लॉंगने भाषण किया। उसका कुछ अंश नीचे दिया जाता है —

" आज मुझसे व्याख्यान नहीं दिया जाता। अपनी दोनों जातियोंके देशभाइयोंके सम्भ्रम आशा, आदर और अभिमानसे मेरा अन्तःकरण भर गया है। आपके कार्य देखकर मुझे कृतज्ञताके साथ बड़ा ही आश्चर्य और आनन्द प्राप्त हो रहा है। मुझे विश्वास है कि दिनोंदिन आपकी उन्नति होती जायगी और इस समय आपके सम्मुख जो प्रश्न उपस्थित है उसे हल कर डालनेमें आप समर्थ होंगे।

" नहीं नहीं, उस प्रश्नको आप हल कर चुके हैं। आज हम लोगोंके सामने जो चित्र उपस्थित है, वह वाशिंगटन (जार्ज) और लिंकनके चित्रोंकी पंक्तिमें रखने योग्य है। इस चित्रसे भावी सन्ततिको बड़ी भारी शिक्षा मिलनेवाली है। यह चित्र समाचारपत्रों द्वारा सर्वत्र प्रसिद्ध हो जाना चाहिए। इस चित्रमें क्या क्या दिखलाया गया है?—संयुक्त राज्यके प्रेसिडेंट प्लेटफार्म पर खड़े हैं, उनके एक तरफ अलबामाके गवर्नर हैं और दूसरे तरफ कुछ ही समय पूर्व जो गुलामीके अन्धकारमें छिपी हुई थी उस नीग्रो-जातिके प्रतिनिधि और टस्केजी-विद्यालयके काले प्रेसिडेंट हैं। इस प्रकारसे यह त्रिमूर्ति—(ब्रह्मा विष्णु महेश)—का चित्र है।

" ईश्वर उस प्रेसिडेंटका कल्याण करे कि जिसकी छायामे अमेरिकनोंने इस दृश्यको देखा ! ईश्वर उस अलबामा राज्यका कल्याण करे जो यह बतला रहा है कि हम स्वय इस प्रश्नको हल कर लेंगे ! ईश्वर उस परोपकारी वक्ता बुकर टी वाशिंगटनका कल्याण करे जो परमात्माका प्यारा शिष्य है ! यदि जगदीश्वर स्वय इस ससारमें अवतीर्ण होता तो, आज वह भी यही कार्य करता ।"

अन्तमें पोस्टमास्टर-जनरल मि० स्मिथने अपना व्याख्यान समाप्त करते हुए कहा —

" इधर कुछ दिनोंमें हम लोगोंने कई दृश्य देखे । हमने दक्षिणके प्रधान नगरोंका सौन्दर्य और वैभव देखा, वीर सैनिकोंका जुलूस देखा, और फूलोंसे सजी हुई पल्टनोंकी कवायद भी देखी, परन्तु आज प्रात काल जो दृश्य यहाँ देखा है उससे अधिक प्रभावशाली, उत्साहवर्द्धक और भविष्यके सबधमे आशाजनक और कोई दृश्य हम लोगोंने नहीं देखा ! "

प्रेसिडेंट महाशयके वाशिंगटन चले जाने पर उनका निम्नलिखित पत्र मेरे पास आया—

"सरकारी कोठी, वाशिंगटन,
ता २३ दिसबर १८९९

प्रिय महाशय,

आजकी डाकसे उस स्मरणपत्रकी—जो मिलनसमयकी स्मृतिमें प्रेसिडेंटकी ओरसे विद्यालयको दिया गया था—मोटे अक्षरोंवाली कुछ प्रतियाँ आपकी सेवामें भेजी जाती है । इस पत्र पर प्रेसिडेंट महाशय और उन मन्त्रियोंके हस्ताक्षर है जो वहाँ उपस्थित थे । टस्केजीमें आपने हम लोगोंका जो आतिथ्य किया, और सारा कार्यक्रम जिस सुन्दरताके साथ सम्पादन किया, उसके लिए मै आपको दद-

यसे बधाई देता हूँ। कार्यक्रमका प्रत्येक अश भली भाँति सम्पादित हुआ और उससे प्रत्येक अतिथिने बडी प्रसन्नता लाभ की। भिन्न भिन्न कामों और धन्धोंमें लगे हुए विद्यार्थियोंकी आपने जो प्रदर्शनी दिखलाई वह अपूर्व थी और देखनेवालो पर उसका बडा असर पडता था। प्रेसिडेंट महाशय तथा मन्त्रिमण्डलने आपके कार्योंका जो आदर किया है वह बहुत ही उचित है और आपके विद्यालयकी भावी उन्नतिका सूचक है। अन्तमें मै यह कहे बिना नहीं रह सकता कि आपके शिष्टाचार और विनयसे सब लोग बहुत ही प्रसन्न हुए है। आपके उपयोगी और स्वदेशहितैषी विद्यालयकी दिनदूनी रातचौगुनी उन्नति होती रहे।

भवदीय,
जान एडिसन पोर्टर,
प्रेसिडेंट-सेक्रेटरी।"

उस जमानेको बीते आज बीस वर्ष हो गये जब पल्ले एक पैसा नहीं था और एक शिक्षक तथा तीस विद्यार्थियोंको लेकर एक पुरानी टूटी फूटी झोपडी और मुर्गीखानेमें पाठशाला आरभ की गई थी। अब उसी पाठशालाके अधिकारमें तेईस सौ एकड जमीन है जिसमेंसे सात सौ एकडमें विद्यार्थी खेती करते है। इस समय टस्केजी–विद्यालयके छोटे बडे सब मिलाकर चालीस भवन है जिनमेंसे चारको छोडकर बाकी सब विद्यार्थियोंके ही बनाये हुए है। इन विद्यार्थियोंको खेतों पर खेती और इमारतोंमें–उनके बननेके समय–इमारतें बनानेकी सर्वोत्तम प्रणालीकी शिक्षा दी जाती है।

इस समय विद्यार्थियोंको मानसिक और धार्मिक दोनों प्रकारकी शिक्षा दी जाती है। इसके अतिरिक्त शिल्प-शिक्षाके अट्ठाईस विभाग

है। इनमें विद्यार्थियोंको नाना प्रकारके हुनर सिखलाये जाते हैं। इन हुनरोंको सीखकर विद्यार्थी काम भी यहीं पा जाते हैं। दक्षिणकी दोनों जातियोंमें हमारे विद्यालयके ग्रेज्युएटोंकी इतनी अधिक मॉग है कि हम आधी भी पूरी नहीं कर सक्ते ह। विद्यालयमें भरती हानेके लिए भी इतने आवेदनपत्र आते है कि धन और स्थानके अभावसे हमें आधे आवेदनपत्रोंको अस्वीकृत कर देना पडता है।

शिल्पशिक्षाके सबधमें हम लोग तीन बातोंका ध्यान रखते हैं –(१) विद्यार्थियोंको ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए कि जिससे वे दक्षिणकी वर्तमान अवस्थामे उपयोगी हों, अर्थात् उन वस्तुओंको तैयार कर सकें जिनकी कि आजकल दक्षिणम मॉग है (२) हमारे विद्यार्थियोंमें इतना कौशल बुद्धिमत्ता और शुद्ध आचरण होना चाहिए कि वे अपना और दूसरोंका, पुरुषार्थके साथ, निर्वाह कर सकें। (३) प्रत्येक विद्यार्थीको यह जानना चाहिए कि परिश्रमसे भागनेके बदले परिश्रममें प्रेम करना ही मनुष्यत्व है, परिश्रम करनेमें कोई बुराई नहीं, सब तरहसे भलाई है। बालकोंको खेती और बालिकाओंको गृहस्थीके काम सिखलाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त प्रति वर्ष बहुतसी बालिकाओंको कृषिविद्या भी सिखलाई जाती है। बाग लगाना, फल उपजाना, दही मक्खन आदि तैयार करना, शहदकी मक्खियोंको पालना, बढ़िया बत्तख पैदा करना आदि काम बालिकाओंको सिखलाये जाते हैं।

हमारा विद्यालय किसी खास धर्म या सम्प्रदायका अनुयायी नहीं है, तो भी उसके साथ ‘ फेल्प्स हाल बाइबल ट्रेनिग स्कूल ’ नाम की एक शाखा खोली गई है। इसमें विद्यार्थियोंको धर्मोपदेशकके तथा गॉव-देहातोंमें जाकर करने योग्य अन्य धार्मिक काम सिखलाये जाते हैं। इन विद्यार्थियोंको भी नित्य आधे दिन किसी न किसी शिल्पशालामें अवश्य काम करना पडता है। जब ये विद्यार्थी विद्यालयसे

उत्तीर्ण होकर धर्मोपदेशके लिए बाहर निकलते हैं तब लोगोंको शिल्प-वाणिज्यका भी ढग सिखला देते है ।

विद्यालयमें इस समय तीन लाख डालरकी सम्पत्ति है । इसके अतिरिक्त स्थायी फडके हिसाबमें दो लाख पद्रह हजार डालरकी सम्पत्ति है। इस समय हमें और कई भवन बनवाने हैं और नित्यव्ययके लिए भी धनकी आवश्यकता है। पर स्थायी फडसे रुपया निकालना दूर रहा, हम उसे पाँच लाख डालर तक पहुँचानेकी चिन्तामें है। इस समय वार्षिक खर्च अस्सी हजार डालर है। इसका अधिकांश घर घर घूमकर सग्रह करता हूँ। विद्यालयकी सम्पत्ति रेहन-बै करनेका किसीको हक नहीं है। सब कागजपत्र पचोंके नाम हैं। इन पचोंमें कोई किसी धर्मविशेष या सप्रदायका अनुयायी नहीं। विद्यालय इन्हीं पचोंके अधीन है।

विद्यार्थियोंकी सख्या तीससे ग्यारहसौ तक पहुँच गई है । अमेरिकाके २७ राज्य, आफ्रिका, क्यूबा, पोर्टोरिको, जमैका और अन्य दूर दूर देशोंसे विद्यार्थी आते हैं। अध्यापकोंकी सख्या ८६ है, और यदि उनके परिवारोंकी भी गिनती की जाय तो, विद्यालयमें हर समय १४०० लोग उपस्थित रहते हैं।

कई लोगोंने मुझसे पूछा कि इतने आदमियोंके रहते हुए भी, तुम्हारी सस्थामें कभी कोई दगाफसाद नहीं होता इसका क्या कारण है। इसके उत्तरमें मुझे दो बातें कहनी है—(१) यहाँ विद्याप्राप्तिके लिए जो स्त्रियाँ या पुरुष आते हैं वे बडे श्रद्धालु होते है, और (२) वे सदा ही अपने अपने काममें लगे रहते है । नीचे दिये हुए कार्यक्रमसे यह बात स्पष्ट हो जायगी ।

कार्यक्रम ।

प्रात काल ५ बजे सोकर उठनेकी घटी । ५ बजकर ३० मिनिट पर जलपानकी तैयारी । ६ बजे जलपान । ६–२० पर जलपानसे निवृत्ति।

६-२० से ६-५० तक सब कमराको झाड़ू देकर साफ करना। ६-५० पर काम। ७-३० पर प्रातकालकी पढ़ाई। ८-२० पर स्कूलकी घंटी। ८-२५ पर सब विद्यार्थियोंका एक कतारमे खडे होना और उनके वस्त्रोंकी परीक्षा। ८-४० पर गिरजेमे प्रार्थना। ८-५५ पर पॉच मिनिटतक दैनिक पत्रोंका पढना। ९ बजे स्कूलकी पढाईका आरभ। १२ बजे पढाई बन्द। १२-१५ पर भोजन। दोपहर १ बजे कामकी घंटी। १-३० पर पढाई शुरू। ३-३० पर पढाई बन्द। ५-३० पर सब कामोंके समाप्त होनेकी घंटी। ६ बजे सध्याका भोजन। ७-१० पर सायकालकी प्रार्थना। ७-३० पर रातकी पढाई। ८-४५ पर पढाई बन्द। ९-२० पर विश्रामकी घंटी। ९-३० पर सोनेकी घंटी।

हम लोग सदा इस बातका ध्यान रखते है कि विद्यालयकी योग्यता उसके ग्रेज्युएटोसे जानी जाती है। इस समय टस्केजी-विद्यालयमे शिक्षा पाये हुए तीन हजार स्त्री-पुरुष दक्षिणके भिन्न भिन्न भागामे काम कर रहे है। ये लोग अपने जीवनसे लोगोंको सब प्रकारकी उन्नतिका मार्ग दिखला रहे है। इनके व्यावहारिक ज्ञान और आत्म सयमके प्रभावसे दोनों जातियोमे परस्पर मेलमिलाप बढ़ता जा रहा है और गोरोको यह विश्वास होने लगा है कि नीग्रो-जातिमे विद्याका प्रचार होनेसे अनेक लाभ होंगे।

जहॉ जहॉ हमारे ग्रेज्युएट पहुँचते है, वहॉ वहॉ जमीन खरीदने, इमारतें बनाने, हिसाबसे रहने, लिखने पढने और शुद्ध आचरण रखनेके सबधमे विलक्षण परिवर्तन हो जाते है। हमारे ग्रेज्युएटोंके कारण समाजका रूपरग बिल्कुल बदलता जा रहा है।

दस वर्ष पूर्व मैंने टस्केजीमे नीग्रो-महासभा स्थापित की थी। अब प्रत्येक वर्ष इसका विराट्‌ अधिवेशन होता है और आठ

नौ सौ नीग्रो प्रतिनिधि टस्केजीमें आकर नीग्रो-जातिके आर्थिक नैतिक और मानसिक प्रश्नोंका विचार करते और उन्नतिके उपाय सोचते हैं। टस्केजीकी इस महासभाकी अब कितनी ही शाखायें भिन्न भिन्न राज्योंमें हो गई हैं और उनका भी यही काम है। गतवर्षकी सभामें एक नीग्रो प्रतिनिधिने इन सभाओंका परिणाम बतलाते हुए कहा था कि दस परिवारोंने धन देकर नये मकान खरीदे। नीग्रो महासभाके दूसरे दिन 'कामकाजियोंकी सभा—Workers' Conference—' होती है। दक्षिणके बडे बडे राज्योंमें काम करनेवाले राजकर्मचारी और अध्यापक इस सभामें एकत्र होते हैं। नीग्रो महासभामें लोगोंकी वास्तविक दशा देखनेका इन्हें बहुत अच्छा अवसर मिलता है।

हर काममें मेरी मदद करनेवाले मि० टी टामस फारच्यून सरीखे कुछ नीग्रो सज्जनोंकी सहायतासे मैंने सन् १९०० के ग्रीष्ममें 'दि नेशनल नीग्रो बिजिनेस लीग' नामकी एक सभा स्थापित की है। इसका पहला अधिवेशन बोस्टनमें हुआ और उस अवसर पर संयुक्त राज्यके भिन्न भिन्न भागोंसे व्यापारी और कामकाजी लोग आये थे। कोई ३० राज्योंने अपने प्रतिनिधि भेजे थे। अब इस लीगकी अनेक स्थानोंमें शाखायें भी खुल गई हैं।

व्याख्यान देनेके लिए मेरे पास अनेक निमन्त्रण आते हैं और यदि विद्यालयकी देखरेख तथा धनसंग्रहके कार्यसे मुझे अवकाश मिलता है तो मैं व्याख्यान देने जाता भी हूँ। इन व्याख्यानोंमें मेरा कितना समय चला जाता है, यह आपको एक समाचारपत्रके निम्नलिखित अवतरणसे मालूम हो जायगा। न्यूयार्क बफालोके नेशनल एजुकेशनल एसोसिएशनके सामने मैंने जो व्याख्यान दिया उसके सम्बन्धमें यह लिखा गया था —

“ सुप्रसिद्ध नीग्रो अध्यापक बुकर टी वाशिंगटन कल सन्ध्याको पश्चिम ओरसे यहाँ आ पहुँचे । जबसे वे यहाँ आये है, तबसे बराबर काममें लगे हुए है । यात्राकी थकावट भी दूर न होने पाई थी कि उन्हें कल साय-भोजमें सम्मिलित होना पड़ा । इसके बाद इराक्सिके सभामंडपमें आठ बजे तक उन्होंने अपने मिलनेके लिए आये हुए लोगोंकी एक सभा की । उस समय संयुक्त राज्यके दो सौसे अधिक अध्यापकोंने उनका स्वागत किया । इसके बाद गाड़ी पर सवार कराके वे म्यूजिक हालमें लाये गये और वहाँ उन्होंने डेढ़ घंटेतक ‘ नीग्रो शिक्षा’पर पाँच हजार श्रोताओंके सामने दो व्याख्यान दिये । यहाँसे रेवरेंड मि० वाटकिन्स आदि लोगोंकी मंडली उन्हें स्वागतके लिए दूसरे स्थान पर लिवा ले गई ।”

इस व्याख्यान देनेके कामके अतिरिक्त एक और काम मुझे करना पड़ता है । दोनों जातियोंके स्वार्थसे संबंध रखनेवाली कुछ बातोंकी ओर दक्षिणके और साधारणतः सब देशके लोगोंका ध्यान दिलानेके लिए बिना समाचारपत्रोंमें लेख लिखे मुझसे नहीं रहा जाता । पत्र-संपादकोंने इस काममें सहानुभूतिके साथ मेरी सहायता भी की है ।

ऊपरी और आकस्मिक बातोंसे किसीकी कैसी ही राय हो, मैं अब अपनी जातिके विषयमें पहलेकी अपेक्षा अधिक आशावान् हूँ । गुणोंकी परीक्षा और प्रतिष्ठा करनेवाला मानवी सृष्टिका श्रेष्ठ नियम सार्वत्रिक और सनातन है । दक्षिणके गोरे और उनके पहलेके गुलाम दोनों ही अपने अन्तःकरणमें वर्णद्वेषसे मुक्त होनेके लिए जो यत्न कर रहे हैं उसे बाहरके लोग न तो जानते हैं और न जानकर उसका मर्म ही समझ सकते है । परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकारके प्रयत्न हो रहे है और इसीलिए मैं कहता हूँ कि सब लोग इनके साथ दया और सहानुभूतिका व्यवहार रखकर इनकी सहायता करें ।

इस समय जब कि इस आत्मचरितके ये अन्तिम शब्द लिखे जा रहे हैं मैं वर्जीनियाके रिचमड शहरमें उपस्थित हूँ। यहाँ कुछ वर्ष पूर्व राजधानी थी और पचीस वर्ष पहले दरिद्रताका मारा हुआ मै इसी शहरमें सडककी पटरीके एक चबूतरेके नीचे सोया था।

इस समय मै यहीं नीग्रो लोगोंका मेहमान हूँ और उनके अनुरोधसे 'एकेडेमी आफ म्यूजिक' नामक अत्यन्त विशाल और वैभवशाली भवनमें दोनों जातियोंके सामने व्याख्यान देने आया हूँ। इस भवनमें नीग्रो–लोग आज पहले ही पहल आ सके है। मेरे आनेसे एक दिन पहले सिटीकौन्सिलने यह प्रस्ताव पास किया है कि मेरा व्याख्यान सुननेके लिए सब लोग मिलकर एक साथ जायँ। व्यवस्थापक सभाने (हाउस आफ डेलिगेट्स और सिनेट्स भी इसी सभामे शामिल है) भी एक रायसे यह निश्चय किया है कि सब सदस्य व्याख्यानके समय उपस्थित होंगे! सैकडों नीग्रो, कितने ही नामी गोरे रईस, सिटीकौसिलके सदस्य, व्यवस्थापक सभाके सभासद और राज्यके सरकारी अधिकारी इस सभामें बडे उत्साहके साथ एकत्र हुए हे। इन सबोंको मैंने आशा और धैर्यसे भरा हुआ अपना सन्देश सुनाया, और जिस राज्यमें मेरा जन्म हुआ था वहीं मेरा इसप्रकार स्वागत हुआ इसलिए मैंने दोनों जातियोंको हार्दिक धन्यवाद दिया।

* * *

परिशिष्ट ।

जनरल आर्मस्ट्रागका मृत्युपत्र । *

अब समय अच्छा और अनुकूल है । परिवार और विद्यालयका सब ठीक ठीक प्रबन्ध हो चुका है । भयकी कोई बात नहीं रही है । यह ईश्वरको धन्यवाद देनेका समय है। मेरा अन्तकाल समीप है । कब मृत्यु होगी, इसका कोई ठिकाना नहीं।इस लिए भावीकी ओर ध्यान देकर मै जो कुछ उचित समझता हूँ, बतला देता हूँ ।

जब किसी विद्यार्थीकी मृत्यु होती है तब उसे जहाँ ले जाकर गाडते है, वहीं—विद्यालयके कब्रस्तानमें—मेरी भी लाश गाडी जाय । मेरी कब्र पर छतरी स्मारक अथवा और कोई आडम्बर न खडा किया जाय। केवल एक सादा पत्थर रहे । उस पर कोई अवतरण या विचार न खोदा जाय । केवल मेरा नाम और जन्ममृत्युकी तिथि लिखी रहे । मेरी उत्तरक्रियाके समय कोई उपदेश या वक्तृता न दे । युद्धमें मरनेवाले वीर सैनिकके समान मेरी उत्तरक्रिया हो ।

मुझे आशा है कि मेरे मित्र विद्यालयके प्रबन्धमें कोई त्रुटि न होने देंगे। कुछ लोग जबतक स्वार्थत्याग करनेके लिए तैयार न हो, तबतक विद्यालयका काम ठीक नही चल सकेगा ।

---

* यह पत्र आर्मस्ट्रागके अन्य कागजोंके साथ हैम्पटनमे उनकी मृत्युके पश्चात् मिला है । आर्मस्टांगके जिन जिन मित्रोंने इसे देखा वे इसे उनके भाव और अन्त स्वरूपका परिचायक समझते है । ऐसे अमूल्य पत्रको प्रकाशित करना बहुत उचित मालूम होता है ।

—एच बी फ्रिसेल,
प्रिन्सिपल हैम्पटन-विद्यालय ।

जिस कार्यमें स्वार्थत्यागकी आवश्यकता नहीं होती उस कार्यकी ईश्वरके यहाँ, कोई प्रतिष्ठा नहीं। परन्तु लोग जिसे स्वार्थत्याग कहते हैं वह, अपना और अपने साधनोंका उत्तम और शुभ उपयोग है—अपने समय, शक्ति और सामग्रीका सदुपयोग है।

जो मनुष्य इस प्रकारका स्वार्थत्याग नहीं करता, उसकी दशा बहुत ही शोचनीय है। वह अधर्मी या नास्तिक है। ईश्वरके विषयमें उसे कुछ भी ज्ञान नहीं।

विद्यालयके विषयमें इन बातोंको सदा ध्यानमें रखना चाहिए—कोई किसीसे न झगडे। सब लोग मिलकर काम करें। अधीर होकर अट्ट-सट्ट बातें या 'मनमाना घरजाना' कोई न करे। सब लोग बुद्धिमानी और उदारतासे सबका कल्याण करनेका यत्न करें। चतुर और विद्वान् होने पर भी, जो मनुष्य अपने दिमागको ठिकाने नहीं रख सकता और संयमी नहीं है, उसे विद्यालयसे निकाल देना चाहिए। दांभिक लोगोंकी अपेक्षा झगटालू लोग अधिक खराब होते हैं।

मेरा चरित कोई न लिखे। अच्छे मित्र मेरा सुन्दर चरित लिख डालेंगे, पर उसमें पूर्ण सत्य न रहेगा। जीवनका महत्त्व बहुत गहरे पानीमें रहता है। हम मनुष्योंको उसका बहुत ही कम ज्ञान होता है। केवल एक ईश्वर ही जानता है। ईश्वरकी दयालुता पर मुझे पूरा विश्वास है। जिसका धर्म या सम्प्रदाय जितना ही छोटा हो उतना ही अच्छा है। 'हे ईश्वर मैं अनन्य भक्तिसे तेरी शरण लेता हूँ।' बस, यह एक ही सिद्धान्त मेरे लिए बस है।

अपने मा-बाप, घरबार, युद्धका अनुभव, विलियम्स कालेजके दिन, और हैम्पटनका कार्य, इन सबके लिए मैं ईश्वरको धन्यवाद देता हूँ। हैम्पटनने मुझे अनेक प्रकारसे धन्य किया है। कारण, हैम्पटनके ही कार्यसे इस देशके सबसे अच्छे लोग मेरे मित्र और सहायक हुए हैं, और युद्धके कारण मुक्त हुए लोगोंका—नीग्रो लोगोंका—प्रत्यक्ष और जित लोगोंका—दक्षिणी गोरोंका—अप्रत्यक्ष कल्याण करनेका

अवसर मुझे मिला है । लाल इडियनोंकी सेवाका भी सुयोग मुझे मिला है । बहुत थोडे लोगोंको मेरा सा सुयोग प्राप्त होता होगा । सचमुच, मैने अपने जीवनमे कोई बात नहीं छोडी । प्रत्येक कार्यमें मुझे उचित परामर्श मिलता रहा ।

प्रार्थना—उपासना–भक्ति भी ससारमे एक अद्भुत वस्तु है । वह हमें ईश्वरके समीप ले जाती है । मेरी प्रार्थना बहुत ही निर्बल और चचल हुआ करती थी, पर मैने यदि कोई कार्य किया है तो, वह प्रार्थना ही की है । मै इसे सनातन तत्त्व समझता हूँ । सनातन और अनन्त तत्त्वके अतिरिक्त और किस बातसे आनन्द मिल सकता है ?

परलोक देखनेके लिए मै बहुत ही उत्सुक हुआ हूँ । परलोक कैसा होगा ? मेरे विचारसे, वह बहुत सुन्दर और स्वाभाविक होगा । मृत्युसे डरनेका कोई प्रयोजन नहीं, वह तो हमारा मित्र है !

मृत्युका विचार आने पर मुझे जो कुछ दुःख होता है, वह अपनी प्रिय पतिव्रता स्त्री और उसकी दीन सन्तानोंके लिए होता है ! पर उन्हे भी धैर्यसे यह वियोग सहकर दृढ होना चाहिए । उन सबोंने मुझे बडा सुख दिया है ।

हेम्पटन विद्यालयकी किसी प्रकार अवनति न हो ! इस देशके काले लाल बच्चोंके साथ सचाईका व्यवहार करनेवाले विद्यालयको नीचे न गिरने देना।

मेरे पुराने सिपाहियो और विद्यार्थियोंसे मुझे अकथनीय सुख मिला है।

अपनी अन्तःस्फूर्तिके अनुसार काम करने, निजको भूलकर देव और देशका विचार करने और देव और देशकी भक्ति करनेसे हमारा कल्याण होता है !

इसी समय अन्तकालकी घटी बजी !

हैम्पटन, वर्जीनिया }
ता० १ जनवरी १८९० ई० }
एस सी आर्मस्ट्राग।

हिन्दीग्रन्थरत्नाकर-सीरीज़।

हिन्दी साहित्यको उत्तमोत्तम ग्रन्थरत्नोंसे भूषित करनेके लिए इस ग्रन्थमालाके निकालनेका प्रारंभ किया गया है। हिन्दीके नामी नामी विद्वानोंकी सम्मतिसे इसके लिए ग्रन्थ तैयार कराये जाते हैं। प्रत्येक ग्रन्थकी छपाई, सफाई, कागज, जिल्द आदि सभी बातें लासानी होती हैं। स्थायी ग्राहकोंको सब ग्रन्थ पौनी कीमतमें दिये जाते हैं। जो स्थायी ग्राहक होना चाहें, उन्हें पहले आठ आना जमा कराकर नाम दर्ज करा लेना चाहिए। अब तक इसमें जितने ग्रन्थ निकले हैं, उन सबहीकी प्रायः सब ही पत्रोंने एक स्वरसे प्रशंसा की है। नीचे लिखे ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं —

१-२. स्वाधीनता।

यह हिन्दी साहित्यका अनमोल रत्न, राजनैतिक, सामाजिक और मानसिक स्वाधीनताका अचूक शिक्षक, उच्च स्वाधीन विचारोंका कोश, अकाट्य युक्तियोंका आकर और मनुष्यसमाजके ऐहिक सुखोंका पथप्रदर्शक ग्रन्थ है। इसे सरस्वतीके धुरन्धर सम्पादक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदीने अँगरेजीसे अनुवाद किया है। साथमें मूल लेखक जान स्टुअर्ट मिलका बड़ा ही शिक्षाप्रद जीवनचरित है। इसे जैनहितैषीके सम्पादक नाथूराम प्रेमीने लिखा है। मूल्य दो रु०।

३. प्रतिभा।

मानवचरितको उदार और उन्नत बनानेवाला, आदर्श धर्मवीर और कर्मवीर बनानेवाला हिन्दीमें अपने ढंगका यह पहला ही उपन्यास है। इसकी रचना बड़ी ही सुन्दर, प्राकृतिक और भावपूर्ण है। मूल्य १) रु०

४ आँखकी किरकिरी।

जिन्हें अभी हाल ही सवा लाख रुपयेका सबसे बड़ा पारितोषिक (नोबल प्राइज) मिला है, जो संसारके सबसे श्रेष्ठ महाकवि समझे गये हैं, उन बाबू रवीन्द्रनाथ ठाकुरके प्रसिद्ध बंगला उपन्यास 'चोखेरबाली'का यह हिन्दी अनुवाद है। इसमें मानसिक विचारोंके, उनके उत्थान, पतन और घात प्रतिघातोंके बड़े ही मनोहर चित्र खींचे गये हैं। भावसौन्दर्यमें इसकी जोड़का दूसरा कोई उपन्यास नहीं। इसकी कथा भी बहुत ही सरस और मनोहारिणी है। मूल्य १।।) रु०

५. फूलोंका गुच्छा।

इसमें ११ खण्ड उपन्यासों या गल्पोंका संग्रह है। इसके प्रत्येक पुष्पकी सुगन्धि, सौन्दर्य और माधुर्यसे आप मुग्ध हो जावेंगे। प्रत्येक कहानी जैसी सुन्दर और मनोरंजक है, वैसी ही शिक्षाप्रद भी है। मूल्य दश आने।

६. चौबेका चिट्ठा।

बंगभाषाके प्रसिद्ध लेखक बाबू बंकिमचन्द्र चटर्जीके लिखे हुए 'कमलाकान्तेर दफ्तर'का हिन्दी अनुवाद। हँसी दिलगी और मनोरंजनके साथ इसमें ऊँचेसे ऊँचे दर्जेकी शिक्षा दी गई है। देशकी सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक बातोंकी इसमें बड़ी ही मर्मभेदी आलोचना है। मूल्य ग्यारह आने।

७. मितव्ययिता।

यह यूरोपके प्रसिद्ध लेखक डा० सेमुएल स्माइल्स साहबकी अँगरेजी पुस्तक 'थिरिफ्ट' का हिन्दी अनुवाद है। इस फिजूल खर्ची और विलासिताके जमानेमें यह पुस्तक प्रत्येक भारतवासी बालक, युवा, वृद्ध और स्त्रीके नित्य स्वाध्याय करने योग्य है। इसके पढ़नेसे आप चाहे जितने अपव्ययी हों, मितव्ययी संयमी और धर्मात्मा बन जावेंगे। बड़ी ही पाण्डित्यपूर्ण युक्तियोंसे यह पुस्तक भरी है। इसमें सामाजिक, नैतिक, धार्मिक और राष्ट्रीय आदि सभी दृष्टियोंसे धन और उसके सदुपयोगोंका विचार किया गया है। स्कूलके विद्यार्थियोंको इनाममें देनेके लिए यह बहुत ही अच्छी है। मूल्य चौदह आने।

८ स्वदेश।

श्रीयुक्त डाक्टर रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी एक निबन्धमालाका अनुवाद है। सब मिलाकर आठ निबन्ध हैं। इन्हें पढ़कर आप भारतवर्षका और उसकी सभ्यता, समाजरचना और राजनीतिका असली स्वरूप देख सकेंगे। प्रत्येक स्वदेशाभिमानीके अध्ययन करने योग्य ग्रन्थ है। मूल्य दश आने।

९. चरित्रगठन और मनोबल।

डाक्टर राल्फ वाल्डो ट्राइनके 'करेक्टर बिल्डिंग थाट पावर' का सरल हिन्दी अनुवाद। मूल्य तीन आना।

और कई अच्छे अच्छे ग्रन्थ तैयार हो रहे हैं।

मैनेजर, हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग पो० गिरगाव-बम्बई।